

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक — पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[समान्य सचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

• • •

ग्रन्थाङ्क २१

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

बाँकीदासरी ख्यात

• • •

प्रकाशक

राजस्थान राज्य सस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JAIPUR

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

प्रकाशित ग्रन्थ

- (१) कान्हड़दे प्रबन्ध - महाकवि पद्मनाभ ।
- (२) क्यामखां रासा - नवाव अलफखां (कविवर जान) ।
- (३) लावा रासा - चारण कविया गोपालदान ।
- (४) राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १ ।
- (५) वांकीदासरी ख्यात - महाकवि वांकीदास ।

प्रेस में

- (१) उक्तिरत्नाकर - पं० साधुसुन्दर गणि ।
- (२) वसन्त विलास - अज्ञात कर्तृक ।
- (३) गोरा वादल पदमिणी चऊपई - कवि हेमरतन ।
- (४) मुंहता नैणसीरी ख्यात - मुंहता नैणसी ।
- (५) राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज - एस आर. भंडारकर ।
- (६) सुजान सबत् - कवि उदयराम ।
- (७) चन्द्रवंशावली - मोतीराम ।
- (८) जुगल विलास - कवि पीथल ।
- (९) वीरवांण - ढाढी वादर ।
- (१०) राजस्थानी दूहा-संग्रह ।
- (११) कविन्द्र कल्पलतिका - कवीन्द्राचार्य ।

बाँकीदासरी ख्यात

संपादन-कर्ता

प० नरोत्तमदासजी स्वामी एम् ए.

अध्यक्ष

हिन्दी-विभाग, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर

★

प्रकाशन - कर्ता

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जयपुर (राजस्थान)

★

[प्रथमावृत्ति, प्रति स० ७५०]

विक्रमाब्द २०१३ }

मूल्य

₹ ५०.००

{ ख्रिस्ताब्द १९५६

विषय-सूचि

विषय	पृष्ठ
प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य	
प्रस्तावना	
१. राजपूतोंरी वातां	१
२. राठौड़ोंरी वातां	१-८६
३. गहलोतोंरी वाता	८७-१०८
४. चादवांरीवातां	१०६-१२३
५. कछवाहांरी वातां	१२३-१३०
६. पड़िहारां आदिरी वाता	१३०-१४१
७. चौहाणांरी वातां	१४१-१६६
८. प्रकीर्णक राजपूत वंश, मराठां, सिख, जोगी, ओसवाळ, चारण, मुसळमान, फिरंगी आदिरी वातां	१६७-१६८
९. धार्मिक, भौगोलिक नै फुटकर वातां	१६६-२१८



प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

चारण-कवियों का हमारे इतिहास में विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। इन कवियों ने अपनी ओजमई वाणी से सदा ही हमारा मार्ग-प्रदर्शन किया है। चारणों में हजारों कुशल साहित्यकार हो गये हैं, जिन्होंने भिन्न-भिन्न विषयों पर रचना की है। चारणों का प्रसार मुख्यतः राजस्थान, मध्यभारत और गुजरात में हुआ है और इन्हीं देशों में चारण-साहित्य भी विशेष उपलब्ध होता है।

अपनी काव्य-प्रतिभा और उज्ज्वल चरित्र से चारण हमारी जनता में आदरणीय रहे हैं और समय-समय पर देश-सेवा में भी अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते रहे हैं। महाकवि दुरसा आढा, ईसरदास बारहठ, वाकीदास, मुरारीदान, महाकवि सूर्यमल, कविराजा श्यामलदास और केसरीसिंह बारहठ आदि हमारे देश के प्रमुख चारण साहित्यकार माने जाते हैं।

वाकीदास हमारे देश के एक महान् कवि और इतिहासकार हो गये हैं। अपनी काव्य-प्रतिभा से ही उन्होंने एक निर्धन चारण-कुल में जन्म लेकर जोधपुर के राज्य-दरबार में सर्वोच्च सम्माननीय आसन प्राप्त किया था। महाकवि वाकीदास की काव्यात्मक रचनाएँ वाकीदास-ग्रन्थावली के नाम से तीन भागों में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हो चुकी हैं और इनके देखने पर कवि के काव्य-कौशल की सराहना करनी पड़ती है।

राजस्थान के निष्प्राण नरेशों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अधीनता बिना ही युद्ध के स्वीकार कर ली थी। वाकीदास एक राष्ट्रीय विचारों के कवि थे और इसलिये उन्होंने अपनी रचनाओं में राजस्थानी नरेशों को अंग्रेजी शासन स्वीकार करने के कारण प्रताड़ित किया था। “आयो अंगरेज मुलकरे ऊपर” शीर्षक महाकवि का गीत राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध हो गया है और हाल ही में हुई खोज द्वारा महाकवि वाकीदास की अन्य राष्ट्रीय रचनाओं की जानकारी भी मिली है।

कवि होने के साथ ही वाकीदास एक इतिहासकार भी थे। प्राचीन काल में काव्य-लेखन इतिहास-लेखन से भिन्न नहीं समझा जाता था। यही कारण है कि प्राचीन काल के कई कवि इतिहासकार भी माने जाते हैं और कई इतिहास-ग्रन्थ पद्य में ही मिलते हैं। महाकवि सूर्यमल रचित “वशभास्कर” नामक ऐतिहासिक काव्य-ग्रन्थ इस कथन का एक अच्छा उदाहरण है।

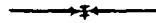
महाकवि वाकीदास की इतिहास-विषयक कृति “वाकीदासरी ख्यात” राजस्थानी गद्य में लिखी गई है। राजस्थान का पूर्ण क्रमिक इतिहास तैयार करने में यह रचना एक आधार-ग्रन्थ के रूप में महायुक्त हो सकती है। महाकवि वाकीदास को इतिहास का अच्छा ज्ञान था और समय-समय पर वे अपनी जानकारी को सक्षिप्त विवरण के रूप में लिपिबद्ध करते रहे थे।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान श्रीयुक्त ५० नरोत्तमदासजी स्वामी ने “वाकीदासरी

त्यात" के विवरणों को क्रमवद्ध किया है । राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर (Rajasthan Oriental Research Institute) के उद्देश्यों में एक प्रधान उद्देश्य राजस्थान के प्राचीन साहित्य को प्रकाश में लाने का है । तदनुसार "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला" के अन्तर्गत इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया जा रहा है । विद्वद्जनों के सम्मुख इस ग्रन्थरत्न को प्रस्तुत करते हुए हमें विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर, }
दीपावली पर्व, २०१३ वि०

शुनि जिनविजय
समान्य सचालक



प्रस्तावना

राजस्थानी भाषा का ऐतिहासिक गद्य-साहित्य और ख्यात

राजस्थानी में प्राचीन गद्य प्रभूत मात्रा में पाया जाता है। ऐतिहासिक गद्य उसका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। प्राचीन ऐतिहासिक गद्य की ऐसी प्रचुरता असमिया को छोड़ कर भारतवर्ष की किसी आर्य-भाषा में नहीं मिलती। असमिया भारत की प्राच्यतम भाषा है तो राजस्थानी पाश्चात्य-तम।

राजस्थानी के ऐतिहासिक गद्य के अनेक रूप हैं, जैसे ख्यात, वात, वसावळी, पीढिया-वळी, पट्टावळी, विगत, हकीगत, हाल, याद, वचनिका, दवावैत आदि। ख्यात इतिहास को कहते हैं। वात में किसी व्यक्ति या जाति या घटना या प्रसंग का सक्षिप्त इतिहास होता है। ख्यात बड़ी होती है और वात छोटी। वसावळी और पीढियावळी में पीढिया दी जाती हैं, जिनके साथ में व्यक्तियों का सक्षिप्त या विस्तृत परिचय भी प्रायः रहता है। पट्टावळी में जागीरदारों के पट्टे अर्थात् जागीरों का विवरण रहता है। जैनो की पट्टावलियों में विविध गच्छों के पट्टधर आचार्यों की पीढिया और उनका सक्षिप्त परिचय होता है। विगत का अर्थ विवरण है। हकीगत और हाल में किसी घटना या प्रसंग का विस्तृत वर्णन होता है। याद याददास्त को कहते हैं। वचनिका और दवावैत ऐतिहासिक काव्य होते हैं। इनमें गद्य-वाक्यों के युग्म होते हैं जिनकी तुकें मिलती जाती हैं। वचनिका में साथ में पद्य भी मिश्रित होता है। सबसे प्राचीन वचनिका चारण शिवदास की बनाई हुई 'अचलदास खीचीरी वचनिका' है, जिसकी रचना स० १४६० के लगभग हुई थी। दूसरी महत्त्वपूर्ण वचनिका खिडिया शाखा के चारण जग्गा की बनाई हुई 'राव रतन महेसदासौतरी वचनिका' है, जिसका रचनाकाल स० १७१५ के लगभग है।

विविध जातियों की वशावळिया भाट, मथेण आदि लिखते रहे हैं। जैन वशावळियों के १०-१५ बड़े-बड़े पोथे श्री अग्ररचन्द नाहटा के सग्रह में हैं। वच्छावत वशावळी आदि कई वशावळिया तो इतिहास के लिये बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। जैन श्रीपूज्य लोगो के 'दफ्तर' अर्थात् पत्र-सग्रह (Records) भी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक गद्य की कृतिया हैं।

विविध राज्यों की पीढियावळिया प्राचीनकाल से लिखी जाती रही हैं, पर उनमें से अधिकांश अब उपलब्ध नहीं। ऐसी कुछ कृतिया बीकानेर के अनूप सस्कृत पुस्तकालय जैसे कई-एक सग्रहों में विद्यमान हैं।

सत्रहवीं शताब्दी में सम्राट् अकबर हुआ। उसे इतिहास से बड़ा प्रेम था। उसके शासन में इतिहास-लेखन को बहुत प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। राजपूत राजाओं को भी उसने प्रेरित किया और तब से राज्यों की ओर से नियमित ख्यातें लिखी जाने लगी। इस समय उपलब्ध ख्यातें सत्रहवीं शताब्दी से ही आरम्भ होती हैं।

राजकीय ख्यातों के लेखक राजकीय कर्मचारी, पचोळी आदि लोग थे। पर कई व्यक्तियों ने स्वतन्त्र रूप से भी ख्यातें लिखी। इनमें नैणसी, दयालदास और वाकीदास के नाम

विशेष महत्त्वपूर्ण है। इनकी रूपांतो का महत्त्व ऐतिहासिक ही नहीं, किन्तु साहित्यिक भी है। तीनों ही कृतियाँ प्राचीन राजस्थानी गद्य की अत्यन्त प्रौढ और उत्कृष्ट रचनाएँ कही जा सकती हैं।

‘रूपांत’ के दो प्रकार किये जा सकते हैं —

(१) जिसमें सलग या लगातार इतिहास हो, जैसे दयालदाम की रूपांत।

(२) जिसमें अलग-अलग ‘वातों’ का संग्रह हो, जैसे नैणसी की रूपांत।

वाकीदास की रूपांत दूसरे प्रकार में अन्तर्भूत होती है, पर नैणसी की रूपांत से वह भिन्न प्रकार की है। नैणसी की रूपांत की ‘वातें’ बड़ी-बड़ी हैं जो कई पृष्ठों तक चलती हैं। उनको क्रम से लगा देने से सलग इतिहास बन जाता है। पर वाकीदास की ‘वातें’ छोटे-छोटे फुटकर नोटों के रूप में हैं। लेखक को जब जो बात नोट करने योग्य मिली, उसने तभी उसे नोट कर लिया। उनमें कोई क्रम नहीं है। क्रम से लगाने पर भी उससे शृङ्खलाबद्ध और सलग इतिहास नहीं बनता। अधिकांश वातें दो-दो अथवा तीन-तीन पक्तियों की ही हैं। पूरे पृष्ठ तक चलने वाली वातें कोई विरली ही हैं।

वांकीदास

वाकीदास आसिया शाखा के चारण थे। चारणों के दो भेद काछेला (कच्छ के) और मारु (मारवाड के) हैं। आसिया मारु चारणों की एक शाखा है, जिसका आरम्भ आसा नामक व्यक्ति से हुआ। राजस्थान में बहुत पहले नाग जाति का राज्य था, जिसके स्मारक के रूप में नागौर, नागदा, नागादरी, नाग तालाव आदि नाम अभी तक चले आये हैं। आसिया चारण नागों के पोळ-पात (याचक) थे। नागों के बाद मारवाड में प्रतिहारों (पड़िहारों) का राज्य हुआ। आसिया पड़िहारों के पोळपात भी रहे। पड़िहारों के बाद राठोड मारवाड के स्वामी हुये। मारवाड के राव जोधा ने आसिया पूजा को खाटावास गाव सासण में दिया। उसके कनिष्ठ पुत्र माला को सिवाणा के स्वामी राठोड देवीदास ने भाडियावास गाव दिया। माला की नवी पीढी में वाकीदास हुये।

१ पूजो, २. मालो, ३. वैरसल, ४. भीमो, ५. खेतमी, ६ नाथो, ७ सूजो, ८ सगतीदान, ९ फनैसिघ, १० वांकीदास, ११ भारतदान, १२ मुरारिदान (जसवन्त जसोभूपण के कर्ता)।

कविराजा वाकीदास का जन्म भाडियावास गाव में स० १८३८ में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता की देखरेख में हुई। सोलह वर्ष की अवस्था होने पर आगे शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वे रामपुर के ठाकुर ऊदावत अर्जुनसिंह के पास गये। अर्जुनसिंह ने जोधपुर में उनकी शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया। वचन में किये हुये अर्जुनसिंह के इस उपकार को वे कभी नहीं भूले। *

* एक दिन कविराजाजी महाराज मानसिंह के साथ हाथी पर चढ़े हुए जा रहे थे। मार्ग में अर्जुनसिंहजी मिले और उन्होंने पुरानी बातों की याद दिलाई। उस समय वांकीदास ने यह दोहा कहा —

माळी ग्रीवम माय, पोख मुजळ द्रुम पाळियो।

जिण-रो जस किम जाय, अत घण वठा ही. अजा ॥

संवत् १८६० में बाकीदास जोधपुर-नरेश महाराजा मानसिंह के गुरु नाथपथी आर्यस देवनाथ के संपर्क में आये । उन्होने बाकीदास को महाराजा के सामने उपस्थित किया । महाराजा उनकी विद्या और कवित्व-शक्ति को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें लाखपसाव पुरस्कार दिया, जिसमें उन्हें दो गाव भी मिले । आगे चलकर महाराज ने उन्हें अपना 'भाषा-गुरु' बनाया । महाराज उनका बड़ा आदर करते थे । राजस्थान के अन्यान्य दरबारों में भी उनका अच्छा सम्मान था ।

महाराजा के व्यवहार से प्रसन्न होकर बाकीदास ने 'अ-जाची' व्रत, अर्थात् महाराजा को छोड़कर और किसी से न मागने का व्रत, ग्रहण कर लिया । एक बार उदयपुर के गुणग्राही महाराणा भीमसिंह ने उनको पुरस्कृत करने के लिये अपने सरदारों को भेज कर बुलवाया पर उन्होने क्षमा-प्रार्थना करली ।

संवत् १८७० में जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ आये हुए कविवर पद्माकर का बाकीदास के साथ शास्त्रार्थ हुआ, जिसमें बाकीदास जयी हुए ।

बाकीदास का देहान्त स० १८९० में सावण सुदी ३ को जोधपुर में हुआ । मातमपुर्षी के लिए महाराजा मानसिंह कविराजा के स्थान पर पधारे और उनके विषय में ये मरसिये कहे—

मद्-विद्या बहु साज, बाकी थी बाका वसू ।

कर सूधी कवराज, आज कठी गो, आसिया ।

विद्या कुल विख्यात, राज-काज हर रहस-री ।

बाका ! तो विरा वात, किण आगळ मन-री कहा ?

(अनेक साजों वाली सुन्दर विद्या बाकीदास के कारण 'बाकी' थी । हे आसिया ! हे कविराज ! उसे 'सीधी' (अपनी बकिमा से हीन) करके तू कहा चला गया ?

कुल-विख्यात विद्या की, राजकार्य की, लालसा की और आनंद की मन की बातें, हे बाकीदास ! आज तेरे बिना किसके आगे कहे ?)

बाकीदास बड़ी स्वतन्त्र प्रकृति के और स्पष्ट वक्ता पुरुष थे । राजपूताने के राजाओं का बिना युद्ध के अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर लेना उनको बहुत अखरा और इसके लिये उनको उन्होने बुरी तरह फटकारा । इस अवधि में उनका यह गीत बहुत प्रसिद्ध है —

आयो अगरेज मुलक रै ऊपर, आहम लीवा खैच उरा ।

घणिया मरे न दीधी धरती, घणिया ऊभा गई घरा ॥

फौजा देख न कीधी फौजा, दोयण किया न खळा-डळा ।

खवा खाच चूडै खावद-रै उणहि-ज चूडै गयी यळा ॥

छत्रपतिया लागी नहँ छाणत, गढपतिया घर परी गुमी ।

वळ नहँ कियो वापडा वोता, जोता-जोता गई जमी ॥

दुय चत्र मास वादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस ।

पूगो नही चाकरी पकडी, दीधी नही मडैठो देस ॥

वजियो भलो भरतपुर-वाळो, गाजै गजर घजर नभ-गोम ।

पैला सिर साहब-रो पडियो, भड ऊभै नह दीधी भोम ॥

महि जाता, चीचाता महळाँ, अँ दुय मरण-तणा अवसाण ।
 राखो रे कीहिक रजपूती, मरद हिंदू की मुस्सलमान ॥
 पुर जोवाण, उदैपुर, जैपुर, पहु थारा खूटा परियाण ।
 आकै गयी आवसी आकै, वाकै आसल किया वखाण ॥

[अंग्रेज देश पर चढ़कर आया । उसने (सबके) पराक्रमो को खींच लिया । पृथ्वी के स्वामियो ने मरकर पृथ्वी को नहीं दिया । पृथ्वी तो उनके खडे-खडे ही, उनके जीते-जी ही (अंग्रेज के अधिकार में) चली गई ।

अंग्रेज की फौजो को देखकर किसी ने फौजें नहीं सजायी । शत्रुओ को टूक-टूक नहीं किया । विधवा स्त्री पूर्वपति के चूडे को फोड़कर दूसरे के घर जाती है, पर यह पृथ्वी, पूर्व-पतियो के जो पूरे चूडे पहने हुए थी, उन्ही चूडो के साथ अंग्रेज के घर गई ।

राजाओ को इसका दुख नहीं लगा । गढ़पतियो की पृथ्वी गुम हो गई । सत्या में बहुत होते हुए भी ये बेचारे बने रहे, जरा भी बल नहीं दिखाया । उनके देखते-देखते पृथ्वी चली गई ।

मराठा दो-चार मास लडा तो सही । उसकी भूमि भी चली गई । पर यह तो भावी का लेख था । पर उसने दासता तो नहीं स्वीकार की और न अपने हाथो अपना मराठा देश अंग्रेजो को सौंपा ।

भरतपुर का राजा भी अच्छा लडा । तोपो की गर्जना हुई जिसकी धूम आकाश और पृथ्वी में छा गई । पहले अंग्रेज का सिर कटकर गिरा फिर उसका कटा । वीर ने खडे-खडे, जीते-जी, अपनी भूमि नहीं दी ।

भूमि जा रही हो या कोई स्त्री सकट में चिल्ला रही हो — मरने के नियो ये दो अवसर है । अरे हिंदू अथवा मुसलमान कोई तो मर्द बनो और राजपूती की रक्षा करो ।

हे जोधपुर, उदयपुर और जयपुर के स्वामियो ! तुम्हारा वश समाप्त हुआ । भाग्य के अंको (लेख) से गई हुई यह भूमि अब भाग्य के अंको से ही वापिस आवेगी (तुम्हारे बल पर नहीं) । आसिया वाकीदास ने यह ठीक बात कही है ।]

वाकीदास आशुकवि होने के साथ साथ अनेक भापाओ के ज्ञाता भी थे । राजस्थानी, ब्रजभाषा, संस्कृत और फारसी के वे अच्छे विद्वान थे । इतिहास में उनको बड़ी रुचि थी । वे इतिहास-मन्त्रन्वी विषयो का निरन्तर संग्रह करते रहते थे । 'वाकीदास-री ख्यात' उनके इसी इतिहास-प्रेम का फल है ।

एक बार ईरान का एक शाही सरदार भारतवर्ष की सैर करता हुआ जोधपुर पहुँचा । उसके साथ भारत सरकार का एक मुशी भी था । उस सरदार ने जोधपुर नरेश से अर्ज परवाई कि आपके यहा इतिहास का अच्छा विद्वान हो तो मैं उससे मिलना चाहता हूँ । महाराजा ने वाकीदास को उनके पास भेजा । सरदार उनसे बातचीत करके बड़ा प्रसन्न हुआ । उनसे महाराजा को कहलवाया कि इतिहास का ऐसा विद्वान मेरी दृष्टि में दूसरा नहीं आया ; ईरान मेरी जन्मभूमि है, परन्तु ईरान के इतिहास का ज्ञान इनको मुझसे भी अधिक है ।

बाकीदास की जीवनी से सम्बन्ध रखनेवाली अनेक कहानिया है, जिनमें से कई-एक का संग्रह नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी, द्वारा प्रकाशित बाकीदास ग्रथावली, भाग १-३, की प्रस्तावनाओं में किया गया है।

बाकीदास की कृतियों के नाम इस प्रकार हैं—

१ सूर-छतीसी, २ सीह-छतीसी, ३ सुपह-छतीसी, ४ मुजस-छतीसी, ५ सिधराव-छतीसी, ६ हमरीट छतीसी, ७ कुकवि-बतीसी, ८ विदुर-बतीसी, ९ धवलपचीसी, १० वचन-विवेक-पचीसी, ११ कृपण-पचीसी, १२ दातार-बावनी, १३ सतोप-बावनी, १४ कायर-बावनी, १५ वीर-विनोद, १६ भुरजाळ-भूपण, १७ जेहळ-जस-जडाव, १८ मोह-मर्दन, १९ नीतिमजरी, २० चुगल-मुख-चपेटिका, २१ कृपण दर्पण, २२ बैसक-वार्ता, २३ बैस वार्ता २४ मावडिया-मिजाज, २५ भमाल-नखसिख और २६ गंगालहरी। ये २६ कृतिया बाकीदास ग्रथावली के तीन भागों में प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके अतिरिक्त इनकी निम्नलिखित अप्रकाशित रचनाये बताई जाती हैं—

१ कृष्णचद्रिका, २ विरहचद्रिका, ३ चमत्कारचद्रिका, ४ चद्र-दूषण-दर्पण, ५ मान-यशो-मडन, ६ वैशाख-वार्ता-संग्रह, (ऋतु वर्णन), ७ महाभारत का अनुवाद, ८ प्रकीर्णक गीत, ९ रस और अलंकार का एक ग्रंथ, १० वृत्तरत्नाकर भाषा (छंदग्रंथ)।

पर इनका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ ख्यात है, जो अब प्रकाशित हो रहा है।

बांकीदास-री ख्यात

ख्यात में लगभग २००० बातों का संग्रह है। ये बातें छोटे-छोटे फुटकर नोटों के रूप में हैं। लेखक को जो कोई बात महत्त्वपूर्ण लगी, उसे उसने नोट कर लिया। अधिकांश बातें दो तीन अथवा चार पवित्यों की हैं। दो-तीन पृष्ठों तक जाने वाली बातें कोई बिरली ही हैं। ख्यात के सम्बन्ध में स्वर्गीय श्री ओझाजी लिखते हैं—

“पुस्तक बड़े महत्व की है। ‘ग्रंथ क्या है इतिहास का खजाना है। राजपूताना के तमाम राज्यों के इतिहास-सम्बन्धी अनेक रत्न उसमें भरे पड़े हैं।’ उसमें राजपूताना के बहुधा प्रत्येक राज्य के राजाओं, सरदारों, मुत्सद्दियों आदि के सम्बन्ध की अनेक ऐसी बातें लिखी हैं जिनका अन्यत्र मिलना कठिन है। उसमें मुसलमानों, जैनों आदि के सम्बन्ध की भी बहुत सी बातें हैं। अनेक राज्यों और सरदारों के ठिकानों की वशावतियां, सरदारों के वीरता के काम, राजाओं के ननिहाल, कुंवरों के ननिहाल आदि का बहुत कुछ परिचय है। कौन-कौन से राजा कहा-कहा काम आये, यह भी विस्तार से लिखा है। अनेक राजाओं के जन्म और मृत्यु के सवत, मास, पक्ष, तिथि आदि दिये हैं।” [पुरोहित हरिनारायणजी के नाम ओझाजी का पत्र, बाकीदास-ग्रथावली, भाग ३, की प्रस्तावना में प्रकाशित, पृष्ठ, ६-७]

इस प्रकार ख्यात-साहित्य में बाकीदास की ख्यात का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रामाणिकता की दृष्टि से वह राजस्थान की अन्यान्य सभी ख्यातों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय है।

प्रस्तुत संस्करण

नैरासी, दयालदास और वाकीदास की ख्याते राजस्थानी भाषा की प्रथम कोटि की गद्य-रचनायें हैं। इतिहास की दृष्टि से भी वे अन्यान्य ख्यातो की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। मेरी बहुत दिनों में इच्छा थी कि इन तीनों के सुसपादित संस्करण प्रकाशित किये जाय। इस सम्बन्ध में कार्य का आरम्भ भी मैंने कर दिया था, पर वह पूरा नहीं हो सका। अब वांकीदास की न्यात का यह संस्करण मुनि श्री जिनविजयजी की कृपा से पाठको के सामने आ रहा है।

हर्ष की बात है कि वाकी दोनों ख्यातो का भी प्रकाशन-कार्य आरम्भ हो चुका है। नैरासी की ख्यात श्री बदरीप्रसाद साकरिया द्वारा सपादित होकर राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के ही तत्त्वावधान में मुद्रित हो रही है। दयालदास की ख्यात का एक अंश मेरे माननीय मित्र डा० दशरथ शर्मा तथा मेरे भूतपूर्व शिष्य श्री दीनानाथ खत्री द्वारा सपादित होकर प्रकाशित हो चुका है। श्री खत्री ने वाकी अंश के बहुत बड़े भाग को भी सपादित कर डाला है और आशा है कि संपूर्ण ग्रंथ निकट भविष्य में ही प्रकाश में आ जायगा।

वाकीदास की ख्यात से मेरा परिचय डाक्टर तासीतोर की सूचीपत्र से तथा श्री ओभाजी के उल्लेखों से हुआ। जब मैंने ख्यात के सपादन का विचार ओभाजी पर प्रकट किया तो उन्होंने तुरन्त उसकी एक हस्तप्रति, और उसकी अपनी प्रतिलिपि, दोनों मेरे हवाले कर दी।

ओभाजी की यह हस्तप्रति मारवाडी लिपि में पतले पीले कागज पर लिखी हुई है। उसे जोधपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय मुशी देवीप्रसादजी ने उनको तय्यार करवाकर दी थी। उसी की प्रतिलिपि उन्होंने अपने उपयोग के लिए देवनागरी लिपि में करवाई थी। इस संस्करण का सपादन इसी प्रतिलिपि के आधार पर किया गया है। मूल हस्तप्रति से भी आवश्यकता-नुसार सहायता ली गई है।

वाकीदास ने ख्यात की इन बातों का संग्रह बिना किसी क्रम के किया है। उनसे कोई शृंखलाबद्ध वृत्तान्त नहीं बनता। एक ही व्यक्ति के सम्बन्ध की बातें अनेक भिन्न-भिन्न स्थानों पर आई हैं। कई-एक बातें पुनरावृत्त भी हुई हैं, अर्थात् दुबारा-तिवारा भी आ गई हैं। श्री ओभाजी के शब्दों में—

“परन्तु उसमें कोई क्रम नहीं है। एक बात मालवे की है तो दूसरी गुजरात की और तीसरी कच्छ की। इस प्रकार एक महासागर सा ग्रंथ है। एक राज के ताल्लुक की बातें सौ पचास जगह आ जाती हैं। [पुरोहित हरिनारायणजी के नाम ओभाजी का पत्र।]

क्रम के इस अभाव के कारण ग्रंथ की उपयोगिता बहुत कुछ नष्ट हो जाती है। किसी व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त करती हो, उसे खोज निकालना सहज नहीं होता, इसके लिये नारा ग्रंथ टटोलना पड़ता है। ओभाजी ने बातों को क्रमबद्ध करना चाहा पर यह कार्य ही नहीं पाया। वे लिखते हैं—

“उम्को क्रमबद्ध करना बटे परिश्रम का काम है और अनेक पुस्तकें पास रखने से क्रमबद्ध हो सकता है। [उक्त पत्र]”

बातों को क्रमबद्ध करने के लिए वस्तुतः राजपूताने के समस्त राज्यों और ठिकानों के इतिहास की जानकारी अनिवार्य है। राजपूताना ही नहीं, मराठा, सिख, मुसलमान, जैन आचार्य, जैन आचार्य आदि के इतिहास का ज्ञान भी वैसा ही आवश्यक है।

ग्रंथ वास्तव में उपयोगी हो सके इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर संपादक ने ख्यात का संपादन करने के पूर्व बातों को क्रम से लगा देना अत्यन्त आवश्यक समझा। इतिहास का विद्वान न होने के कारण उसे पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, पर उन पर विजय पाने का भरसक प्रयत्न किया गया। फिर भी कई स्थानों में गलतियाँ हुईं हो, यह सम्भव है। अन्त में कुछ बातें ऐसी भी रह गईं जिनके ठीक स्थान का निर्णय नहीं हो पाया। उनको अन्त में फुटकर बातों में अस्पष्ट बातों का शीर्षक देकर रख दिया गया है।

ख्यात में अधिकांश बातें राजपूतों के इतिहास से सम्बन्ध रखती हैं। उनमें भी राठोड़ों से सबद्ध बातों की संख्या बहुत बड़ी है। क्रम लगाते समय सबसे पहले राजपूतों से सबद्ध सामान्य बातों को देकर फिर उनकी विविध शाखाओं के राज्यों को एक-एक करके लिया गया है। सबसे पहले राठोड़ों के जोधपुर राज्य को लिया गया है, फिर जोधपुर के ठिकानों को और फिर राठोड़ों के अन्यान्य राज्यों तथा ठिकानों को। राठोड़ों के पश्चात् गहलोतों, यादवों, कछवाहों, चौहानों आदि राजपूतों की अन्यान्य शाखाओं को लिया गया है। राजपूतों के पश्चात् मराठों, सिखों, मुसलमानों और अंग्रेजों की बातों को स्थान दिया गया है। इसके पश्चात् ब्राह्मण तथा ओसवाल आदि जातियों और जैनों के गच्छों की बातें दी गई हैं। आगे धार्मिक, भौगोलिक, तथा प्रसिद्ध व्यक्ति और वस्तुओं की बातें देकर अन्त में फुटकर बातें-इस शीर्षक के नीचे नीति सम्बन्धी बातें, दूहा-गीत आदि कवितायें तथा अस्पष्ट और अधूरी बातों को रखा गया है।

ख्यात के साथ हिन्दी अनुवाद और अनुक्रमणिका Index देने का भी विचार था। अनुक्रमणिका वास्तव में बहुत आवश्यक थी। पर यह अनुक्रमणिका बहुत बड़ी होती, स्वयं ग्रंथ से भी बड़ी क्योंकि ग्रंथ में आदि से अन्त तक व्यक्तियों और स्थानों की भरमार है। यह काम समय-सापेक्ष था। पुस्तक बहुत दिनों से प्रेस में थी। ग्रंथावली के सचालक मुनिजी महाराज ग्रंथ को शीघ्र ही प्रकाशित कर देना चाहते थे अतः वे अनुक्रमणिका के तय्यार होने तक ठहरने को राजी नहीं हुए।

इस सस्करण को तय्यार करने में मुझे अनेक दिशाओं से सहायता मिली। मेरे भूतपूर्व शिष्य, और अब डूंगर कालेज (बीकानेर) के इतिहास-विभाग के अध्यक्ष, श्री नाथूराम खडगावत तथा मेरे दूसरे भूतपूर्व शिष्य, और अब फोर्ट हाईस्कूल (बीकानेर) के हिंदी और इतिहास के शिक्षक, श्री दीनानाथ खत्री ने ख्यात की सब बातों को अलग-अलग चिट्ठों पर लिखा जिससे क्रम लगाने में सुविधा हुई। श्री अगरचंद नाहटा ने आरम्भ से ही इस सस्करण की तय्यारी में अभिरुचि ली। पुरातत्त्व मन्दिर के उत्साही सहायक श्री पुरुषोत्तम मेनारिया ने इसके प्रूफों को देखा है। सभी वन्वुओं का हृदय से आभार मानता हूँ।

यहां पर गुस्वर स्वर्गीय श्री ओभाजी तथा मुनि श्री जिनविजयजी के पुण्य नामों का स्मरण भी मैं आवश्यक समझता हूँ, जिनसे अपने साहित्यिक कार्य में, मैं निरन्तर प्रेरणा प्राप्त करता रहा हूँ, और जिनकी कृपा के फलस्वरूप ही यह सस्करण प्रस्तुत और प्रकाशित हो सका है।

राजस्थान भारती पीठ,
बीकानेर,
असन्तपचमी, स० २००६ }

नरेशभद्रास स्वामी

वांकीदासरी ख्यात

[१] राजपूतांरी वातां

१. धारा, उजीण, आबू परमारारा उत्तन ।
जायल खीचियारो उत्तन ।
नाडूल, सांभर चहुवाणारा उत्तन ।
परवतसर दहियारो उत्तन ।
टूक-टोडो सोळखियारो उत्तन ।
मडोवर पडिहारारो उत्तन ।
पाटण चावडारो उत्तन ।
ढाको गौडारो उत्तन ।
करणाटक, कुकण, वगलाणो, कल्याणी
अणकी - टणकी राठोडारा उत्तन ।
आसेरगढ टाकारो उत्तन ।
खेड गोयलारो उत्तन ।
नरवर कछवाहारो उत्तन ।
दिल्ली तुवरारो उत्तन ।

- भटनेर-तणोट वीजणोट, लोद्रवो,
भाटियारो उत्तन ।
वासगढ खखारो उत्तन ।
वाभणवाहो वारडारो उत्तन ।
दुरमाभ बूदी हाडारो उत्तन ।
जाळोर सोनिगरारो उत्तन ।
चित्तौड मोरियारो उत्तन ।
थोहरगढ नै खागीर काबारो उत्तन ।
मडाहड वेरांरो उत्तन ।
हळवद - पाटडी झालारा उत्तन ।
साम्त पाटवो हुलारो उत्तन ।
करणेचो गढ कालमारो उत्तन ।
तारागढ गुडारो उत्तन ।
जागळू-रुण साखलारो उत्तन ।
बाधूगढ बाघेलारो उत्तन ।

२. मागळिया मेहाजीनू पूजै । ई दा चामुडनू पूजै ।
देवरा नागणेचिया पूजै । गोगादे गुसाईजीनू पूजै ।
३ 'मलीनाथजीरा तेज-प्रतापसू' महेचा लिखै । 'महादेवजीरा प्रतापसू' सोढा
लिखै 'लिखमीनाथजीरा प्रतापसू' भाटी लिखै ।

[२] राठौड़ांरी वातां

राठौड़ांरी खांपां

- ४ राठौडारी खापा लिख्यते—

अयलाण १	अहण २	करनोत ३	करमसोत ४	कलावत ५
कूंपावत	कोटेचा	काधल	खापसा	खोखर १०

गूजड़	गूगक	गुडियाणा	गोगादे	चाचगदे	१५
चाहडदे	चांपावत	चालू	चैडी	छपनिया	२०
जांगी	जैतारणिया	जैतावत	डागी	डगी	२५
ढोसीग	दरकड़	देवराज	धवेचा	घाघक	३०
घूहड़	घूहडिया	नालू	पाता	पूनावत	३५
पीथड़	फीटक	बीडा	बूला	भादावत	४०
मंडळा	माडणोत	मुकट	मुहडा	मूडाळा	४५
मूळू	मेडतिया	मैया	मोडासिया	राजग	५०
राजपाल	रादा	रूपा	लोला	वाघेल	५५
वाजा	वानर	वीकानेरिया	वीजा	वेगड	६०
सतावत	समरद	सीमाळिया	सीघ	सुपेहा	६५
सैहटा	सोनवारिया	हथूडिया	सूडर	६९*	

५ वाटडा १, दोटा २, कसूवलिया ३, खीया ४, फळसूडिया ५, धारविया ६, गांवाणेचा ७ अँ खापां राठौडारै मांहे छै ।

६ राठौडांरी तेरह साखारा नाव— घनसूरा १, जळखरिया २, अभैपुरा ३, कपाळिया ४, वेरवदा ५, कुरहा ६, वरियोवस ७, जेवत ८, वगळाणा ९, देण १०, वीर ११, अहर १२, पारक अथवा पारकर १३ ।*

७. सीहाजीरै फडैरा राठौड ज्यारी विगत— घूहडिया १, मोट २, घाघल ३, महण ४, रांदा ५, आसल ६, वोला ७, पेथड ८, फीटक ९, कोटवो १०, मूया ११, जमानाळू १२ जाजड़ा १३, सीघल १४, जोगल १५, वादर १६, हाथूडिया १७, उखोवा १८, जोरा १९, सोहड २०, चाचक २१, ऊहड २२, वेगड २३, डांगी २४, महडीसिया २५, मोहण २६, खीवसा २७, गुडाळ २८, खोखर २९, मूळा ३०, वाढेल ३१, हाडा ३२, सीमाळिया ३३, क्रीतपाळ ३४, छटाणिया ३५, वालाड़ा ३६, वरसूवलिया ३७ ।*

८ राठौडारै जगमोहण पितर थेटू. पछै सायर पितर हुवो ।

९. आली १, मोहण २, उदैपुर ३, अँ तीन टिकाणा गुजरातमे राठौडारा वावागढ कनै है ।

राठौडांरी पीढियां

१० विजेचदरो राजा जैचंद १, दळ-पागळो कहाणो । वरदायीसेन २, सेन ३,

* इनमें कई ओक नाम अशुद्ध है ।

सेतराम ४, सीहो ५, आसथान ६, धूहड ७, रायपाळ ८, कान्हर ९, जाल-
णसी १०, छाडो ११, तीडो १२, सलखो १३, वीरमदे १४, चूडो १५, रिडमल १६,
जोधो १७, सूजो १८, बाघो १९, गागो २०, मालदे २१, उदैसिघ २२, सूर-
सिघ २३, गजसिघ २४, जसवतसिघ २५, अजीतसिघ २६, वखतसिह २७,
विजैसिह २८, गुमानसिह २९, मानसिघ ३० ।

सीहोजी

११. पालीसू सीहैजी कनवज जाय अन्हनू टीको दियो, आप गोयंददाणी गढ वसायो ।
चाळीस सासण दिया, वरस १७ राज कियो ।
पुरोहित साथ बेटा तीनू पालीमे मिलिया ।

आसथान

- १२ सीहाजीरै टीकै आसथानजी, खेड गोहिलारै परणिया पछै साला प्रतापसीनू
कह्यो — डाभी थाहरै वडा ग्रासिया है, इणनू काढ देवो. पछै काढ दिया
किताक दिना डाभी आसथानजीसू आय मिलिया डाभी डावा, गोहिल जीमणा.
तळाई माथै मार खेड लिवी डाभी - गोहिल जिण तळाई माथै मराणा उणरो
नांव पापेळाई दियो, हमै उणमे गेहू हुवै छै ।
- १३ आसथान सीहावत पाळी काम आयो ।
- १४ आसथानजी सीहावतरै गोयलाणी राज-लोक है . . . साथ बेटा ईंदी उछरगदे,
राणा वूढारी बेटा, दहिया जैमलनू परणायी हुती, उणसू अणवणत हुई,
आसथानजीरा घरमे पैठी. जैमलरा बेटा - बेटा साथ लिया आयी ही. ऊ
दहियो खेडहीज मोटो हुयो. उण राठौडरो वर लियो जिणसू दहियो तेरै
साखरो तिलक कहावै ।
- १५ बहू ईंदी उछरगदे, गोहिल जैमलनू परणायी हुती, राणा वूढारी बेटा, जैमलसू
वणियो नही, जद आसथानजीरा घरमें पैठी ।

धूहड

- १६ धूहड ईंदारो भाणेज आसथानजीरै टीकै वे घड़ी . . . पड़ियारसू कियो.
धूहडनू चहुवाणा मारियो ।
- १७ आसथानजीरा धूहडजी धूहडजीरा बेटारी विगत — रायपाळ महिरेळण १.
जोगाईत उडणो २ वेगड कटारमल ३ जालू गजउछाळ ४. क्रीतपाळ अतैउर-
सिणगार ५ पेथड हाक-ववाळ ६ कहाणो ।
१८. सरगधरीरी कोळू पाबूजीरो उत्तन. फलोधीरी कोळू काम आया ।

१९ राठौड़ जोपसारै बेटारी विगत — सीधल १. ऊहड २. जोवू ३. जोगो ४. राजग ५. मूळू ६।

रायपाळ

- २० रायपाळ घूहडरै टीकै. चहुवाणारो भाणेज ।
 २१ रायपाळ घूहडोतनू चहुवाणा मारियो ।
 २२. रायपाळ महिरेळणरा बेटारी विगत — कान्हाराव पाटवी १. केल्हण २. रादो ३. सूडो ४. मूपो ५. वेहड ६. महणसी ७. थांथी ८।
 २३ थांथीरै फिटक केल्हणरो कोटेचो ।

कन्ह

- २४ कन्ह रायपाळरै टीकै भाटियारो भाणेज ।
 २५ कन्हरै वहू देवडी सलखारी बेटा वेटा तीन — भीमकरण १. जालणसी २. विजपाल ३।
 दूहो— आधी घरती भीम आधी लोदरवै घणी ।
 काकनदी छै सीम राठौडा नै भाटिया ॥

जालणसी

- २६ जालणसी देवडारो भाणेज कन्हारायरै टीकै ।
 २७ जालणसी घाटो मारियो, मुलतानरी चौथ. लिबी ।

छाडो

- २८ छाडो जालणसीरै टीकै गोहिलारो भाणेजो ।
 सोढा कनासू डडमें घोड़ा लिया भाटियानू पजाया ।

तीडो

- २९ तीडो छाडावत सातलरी मदत अलाउद्दीनसू जंग कर काम आयो सिवाणै ।
 ३०. तीडा छाडावतरै तीन बेटा हुवा — कान्हडदे १. त्रिभुअणसी २. सलखो ३।
 ३१. महेवा वगैरै देसारो मालक. कान्हडदेनै मार मलीनाथजी खेडरो राज लियो. कंवरपदै ।

सलखो

३२. तीडा छाडावतरै टीकै. हुलारो भाणेज सलखो ।
 ३३ तीडारै टीकै चहुवाणारो भाणेज. बहू पडिहार रूपडिया राणारी बेटी ।
 ३४ मलीनाथजीरै तीन भाई, चौथा आप, वहन अेक विमलावाई, लोक वीवळीवाई कहै, घडसी रावळनू दीवी ।
 ३५. मालो, जैतमाल, पडिहारारा भाणेज . वीरम, सोभत, उमरकोटरो घणी सोढो जिणरा भाणेज ।

मलीनाथ

- ३६ रावळ मलीनाथ जसडारो भाणेज हो . नाम मालो हो . जोगी रतन रावळ मलीनाथ कहै वतळायो जदसू मलीनाथ कहाणो ।
 ३७. मालो नै महेवारो पीर, रूपादेरी मा सोढी चँद्रावळ, जगमालरी भावसी, इण री गोमती ।
 ३८. करडियो, कांवळी, हासली, घोडो जोड़ो - अै वसता वालै वदरै मलीनाथजीनू डायजै दीवी रूपादे परणाय ।
 ३९. हरखू सांखलो बगड़ी हुवो मलीनाथजीरै परणियो पोकरण गुढो डायजै दियो ।
 ४०. भाद्रेस माला रावळरी दियोडी है ।

मलीनाथोत राठौड़

४१. मलीनाथरो जगमाल, जिणरा पोहकरणा ।
 ४२ जगमाल मालावतरै बेटो लांको, जिणरा वाडमेरा राठौड़ ।
 ४३ महेवामें भाखर गायणो जठै कूपा मलीनाथोतरो रहणो हुवो . कूपारै मोलो हुवो ।
 ४४ कूपारै वंसरा गायणेचा राठौड़ है ।
 ४५. गांवणेचा राठौड़ कूपा मलीनाथोतरा है ।

जैतमाल सलखावत

४६. जैतमाल सलखावतरै वारा बेटा, ज्यामें १ खीमकरण प्रतापीक हुवो, जिण सोढानू मार अडताळीस गाव रा रा दबाया ।
 ४७. जैतमाल वाराही बेटानू कह्यो - जगमाल मोनू मारियो वो वैर विसार दीज्यो नै हाफानै सिवाणैरी घाटी सूपी इग्यारै जणा जुदा जुदा परदेसा जावज्यो जिणसू थारा जुदा जुदा ठिकाणा बधसी ।
 ४८. जैतमाल सलखावतरी बेटो ईंदो राणो उगमसी परणियो . मलीनाथजी तेरै

तुगा भाजिया जद उगमसी मलीनाथजीरी भीड़ आयो हुतो ।

सोवत सलखावत

४९. सोवत सलखावत, जिणारै वसरा सोहड़ ।

वीरम सलखावत

५०. वीरमजी जोइयासूं झगडो कर काम आया जोइयावाटीमें ।

घोडी आण समाध घर अममाध उपायी ।

५१. वीरम सोढारो भाणेज. जोइयारै वीठड़ै गयो उठै मराणो ।

५२. गोगादे १, देवराज २, जैसिंघ ३, बीजो ४, चुडाव ५, पाची ६, — वीरमरा ।

चूडो वीरमओत

५३. चूडो वीरमरै पाट, मागालियारो भाणेज, मडोवर ले नागोर लियो, नागोरमें चूडापोळ करायी लखीजगळरो घणी जलाल खोखरनै भाटी केलण केहररै .. आय नागोर राड़ कीवी चूडोजी काम आया ।

५४. चूडोजी नागोर काम आया, भाटी केलण खोखरसू वेढ कर ।

५५. चूडोजीरी वेटी हासीवाई, रिडमलजीरी सगी वहन, राणा लाखानै परणायी. भाणेज मोकल ।

५६. चूडाजीनू मार तुरकां नागोर लियो . पछे तुरकांनू मार राणै लाखै नागोर रिडमलजीनू दीघो . जोघपुर सता चूडावतरी ठाकुराई . नागोररै गाव मूडवै राणै लाखै लाखासर तळाव नागोर करायो हो ।

वीरमदेओत

५७. करमसी १, सहसमल २, केलहो ३, — अैं तीन गोगादे वीरमदेवोतरा वेटा ।

सतो चूडावत

५८. चूडारै पाट सतो . दाहू घणो पियै . राजरो काज भाई रणवीर चलावै । जठा पाछे टीको रिडमलजीनूं दियो छरावासू तेड़नै ।

५९. गांव वारी महव दूदावतनू सतराव चूडावत दीघी ।

रिडमल चूडावत

६०. राव रिडमल चूडारै टीकै, गहलोतांरो भाणेज . पीरोजखानसू युद्ध कर राव रिडमल मारिया ।

६१. लोला सोनगरारो वेटो सतो जिणनू जोघाजीरी वेटी सुंदरवाई परणाय राव

रिडमल सतानू पाली दीवी . नाडूलरा सोनगरा घणलासू चढ जाय मारिया,
ओ वैर रिडमलजी पोती परणाय बाढियो ।

६२. राव रिडमल ४१ वार जैसळमेर मारियो जद भाटिया बेटी दिवी, रिडमलजी-
नू राजा कहिया ।

६३. रावजी रिडमल घणलासू जाय नाडोळरा घणी सोनगरा सारा मार नाखिया.
रावजी या सोनगरारै परणिया हुता सोनगरा लालो रणधीररो . जैसळमेर
परणीजण पधारिया जद लालानू जोधपुर आण जोधाजीरी बाई परणायी .
वैर भागियो पाली पटै दीवी ।

६४. सवत १५०० चैत वद ६ गढ चित्तौड ऊपर चूक कर राणै कूभै मारियो राव
रिडमलनू ।

६५ रिडमलजीनू चित्तौड माथै चूककर मारिया सीसोदियै चूडै लाखावत ।

६६. चूडा लाखावत सामल होय नरवद सरावत चित्तौड माथै रिडमलजीनू चूक
करायो ।

६७ भाटी सतो लूणकरणोत राव रिडमलजीनू चित्तौड चूक हुवो जद कास आयो ।

६८ भीवराज चूडारो जिणरै वसरा भीमोत कह्यैजै ।

जोधो रिडमलोत

६९ राव रिडमलनू चूक हुवै चित्तौड माथै कवर जोधोजी तळैटीसू निसरिया,
चूडै लाखावत लारै लोक मेलियो, गजणरईरै घाटै वेढ हुई जठै प्रथीराज ईंदा
वगेरै जोधाजीरा रजपूत काम आया ।

७०. राव जोधो रिडमलरै पाट, देवडारो भाणेज सवत १४७२ रा वैसाख वद ४
बुधवाररो जनम, सवत १५१० जोधैजी राणारा थाणा उठाय घरती लिबी ।

७१ सोमेशर रावत लूणा कनैसू घोड़ा लिया, गुसाईजीरा कहणासू हरभू साखलै
जोधानू जीमण कियो. कह्यो म्हारी गोठरा मूंग थारा पेट-में इत्तै जिती
जमी पै घोडो फेरसी उवा जमी थारी रैसी गूदोच ताई घोडा फेरिया ।

७२ चोकड़ी बिलाडासू राणारा थाणा फटाया सोजत लिबी ।

७३ रावजी जोधोजी कवर नरवद सतावतरी लडाईमे घेठ नाव उभा हुवा ।

७४ जोधपुर वसाया पछै जोधोजी गयारी जात्रानू चढिया मारग मे जहानापुररो
मालक आय मिळियो रावजी उणरी मदत किवी बहलोलखारो भाई
सारगखा मारियो पछै गयारो कर दूर कियो ।

७५. संवत १५४५ जोधोजी देवलोक हुवा ।
७६. रावजी जोधाजीरै तेरै वेढारी विगत - सातलजी १, सूजोजी २, नीवो ३, करमसी ४, वीदो ५, वीको ६, भारमल ७, जोनो ८, दूदो ९, जगमाल १०, सिवराज ११, गोपालदास १२, वरसिंघ १३ ।
७७. वैरसलपुरा भटियाणी राव जोधाजीरी राणी जिणरै पुत्र तीन हुवा-
करमसी १, रामपाळ २, वणवीर ३ ।
७८. रावजी जोधाजीरै राजलोक वैरसलपूरां भटियाणी जिणरै वेढा तीन
करमसी १, रामपाळ २, वणवीर ३ ।
७९. सातल १, सूजो २, नीवो ३, हाडारा भाणेज ।
८०. वीदो १, वीको २, दोनू साखलारा भाणेज ।
८१. राव जोधाजीरै राणी हाडी कोडमदे जिण राणीसर तळाव करायो .
संवत १५१५ जेठ सुद ११ जोधपुर वसायो ।

राव सातल जोधावत

८२. सातल जोधावत सातलमेर करायो ।
८३. जोधाजीरै पाट सातल
- सीसोदियाँसू सुख कियो आवळै वावळै सीम किवी. रावजीरा वैरमें
सोजत लिबी ।
८४. सिरियाखानसूं कुसाणै सातल दूदे वेढ किवी ओ तीजणियां छुडाय लिबी.
दूदैजी सिरियाखानरा हाथी घणा लूटिया ।
८५. सातलजी तीन वरस राज कियो संवत १५४९ सातल काम आयो ।

नीवो जोधावत

८६. सोजत नीवै जोधावत वसायी . राणारा देसरी से उचळी सात वीसी जान
आयी हुती जिके सोजतमे राख्यां ।

राव सूजो

८७. राव सूजो जोधारै पाट संवत १४९६ रा भादवा वद ८ रो जनम ।
८८. संवत १५४८ मे सोजतसूं आय जोधपुर पाट वैठा ।
८९. सूजाजीरो संवत १४९६ रा भादवा वद ८ जनम. संवत १५४८ पाट वैठा.
संवत १५७२ रा काती वद ९ राम कह्यो ।
९०. मांगळिया राणावतानू हमीरोतरी बेटी सूजो जोधावत परणियो. सासरा-

रो नाम सरवगदेजी ज्यारा बेटारी विगत- ऊदोजी १, पिरागजी २, सागोजी ३ ।

९१. राव सूजारा बेटारी विगत- बाघो १, पाटवी कवर थका देवलोक हुवो, ऊदो २, सेखो ३, देईदास ४, पिरागदास ५, सागो ६, नरसो ७, तिलोकसी ८ ।

९२ सेखारै सहसमल ।

९३ देईदासरै अचलो १, हरराज २ ।

९४ नरारै गोइद १, हमीर २ ।

९५ कवर बाघो नरो भाटियारा भाणेज ।

९६ सेखो देईदास चहुवाणारा भाणेज ।

९७ मागळियाणी सरवदे राणा पातूरी बेटा जिणरा बेटा- ऊदो १, पिराग २, सागो ३ ।

कवर बाघो

९८ सवत १५१४ रा वैसाख वद ७ बाघाजीरो जनम, सवत १५७१ सुरगवास कियो बाघैजी ।

९९ सवत १५१४ पोम वद ६ जनम बाघाजीरो, सवत १५७१ रा भादवा सुद १४ राम कह्यो ।

१०० कवर बाघो सूजावत चितोड राणा रायमलरै परणियो हो ।

१०१ कवर बाघो सूजावत राणा रायमलरै परणियो हो ।

१०२ कवर बाघारा बेटारी विगत- गागो १, वीरमदे २, जेतसी ३, प्रतापसी ४, भीम ५ ।

राव गांगो

१०३ राव गागो बाघावत चहुवाणारो भाणेज, वीरमदे बाघावतनू सोजत दिवी गांगैजी, सवत १५४० वैसाख सुद ११ जनम गागाजीरो, सवत १५८८ रा जेठ सुद ५ रामसरण जोधपुर हुवा ।

१०४ सवत १५८८ रा चैत सुद ११ राव गागोजी कवर मालदेजी फौज ले सोजत आया, वैद मुहता रायमल खेतावतनू मार वीरमदे कनासू सोजत ली, वैसाख सुद ४ राव गागै ईडररी मदत किवी ।

१०५

दूहो-गागा त गवाळ, ऊगा हाई उर तणा ।

सोहै तो सुखपाळ, वडा प्रवाडा, वाघउत ॥

१०५ सोजत वैद मुहतो रायमल वीरमदेजीरै चाकर, रावजी गागैजी कवर मालदेजी सोजत माथै गया जद रायमल कवध हुवो, नेत्र भावसू तरवार चली, बेटारा बटका किया, लाखी लोवडी ओठाडी जद घोडासू जमी लोथ पडी, उण दिनरो ओखाणो-

मुहता माटी मारका, घररा गिणै न पारका ।

१०६. गुजरातरो पातसाह उदैपुर ईंडर ले लियो जद राव गागो, राणो सागो, वीरमदे दूदावत तीनू ही मिल अहमदनगर जग कर पातसाहनू भाज ईंडर ईंडरिया राठोडानू दियो ।

१०७ रावजी गागोजी, वीरमदे दूदावत, राणो सागो ईंडररा राजारी मदत ईंडरनू जावै जद साढ्यारा राईका रावजीसू अरज विवी-आप ईंडरनू पधारै है, कोटडिया दौडै है, सो रावळी साढ्यारा रंगारा जावता सारु सिरदारारी आसामिया अठै राख, पधारजै जद रावजी फुरमाया-थे कहो जिके ही अठै राखा आ कह्यो-तेनारा गोगादे नेतसी खेतसी महावतियानू साढारा जावतानू राखजै जद आ गोगादेओतानू देसमे राख रावजी ईंडररी मदत पवारिया कितार्क दिना कोटडिया साढिया लिवी राईका तेनै गया, जद तेनै ढोल वाजियो सारा गोगादे घोडा चढनै आया घोडो जीण कराय नेतसी अमल ले सूतो जद अेक राईको बोलियो-

पीपारा पीधो मेहारै घूटलवाळी ।

अरथ-पीपा राईकारा बेटा-पोतरा साढारो दूध पीधो, मेहरो बेटो घूटलवाळै पग समेट सूतो पछै नेतसी भाया-भडा सहित साढारी वार चढियो कोटडिया रामाजी मार्गनै साढा पाछी आणी तेनारै तळै पाणी पाय दोड कराय राईकानू दूध पायो उण समैरा हीडोळा-

साढा लोथ सोइनरो, जाघी साईरी माघ ।

चडि महीरा नेतमी, रातो तरगस वाघ ॥

नळी कटाडू नीली लय, घी अमापियो खाय ।

हाथ बैतरै आतरै, अै कोटडिया जाय ॥

वेतो पूछै नेतसी, नीळो घोडो काय ?

गया ईंडररी चाकरी, दियो ईंडरै राव ॥

उरली चारो राइका, म्हारा भालारी छाह ।

जो जासी तो आणसू, बाबा मेहारी बाह ॥

१०८ सेखोजी गागोजी एक दिन भरणामे भीर वाट जळछाटारो खेल कियो भाजणरी दोनानू परत बोले-बोले भारी हुवो जद सेखोजी घूसल करणो विचारियो आ खवर पाय रावजी गागोजी सेखाजीनू कह्यो-वरड ऊगी जिण जमीमे उवा थाहरी, भुरट जिणमे ऊगै उवा म्हारी सेखाजीरै परधान ऊहड़ हरदास आ वात मानी नही ।

दूहो-अेक वचन हरदास, ऊहड़ मन आणै नही ।

गाँगौ मगळो ग्रास, कै सेखै सौ सामठो ॥

१०९ सेखैजी नागोरी खान दोलतियो जिणनू मारवाड माथै आणियो गागोजी फौज ले सामा गया सेवकी वेढ हुई. दरिया जोरा हाथी फौजारै आगै हो रावजीरा हाथरो तीर लागो ऊ भागो दोलतियो ही भागो. सेखो काम आयो देईदास निमरियो सवत १५८६ रा मिंगसर सुद १ आ वेढ हुई. पचास पठाण काम आया हाथी दोलतियारा घणा लूटाणा रावजीरो उमराव किसनो चापावत पूरै लोहै पडियो रजपूत पाच आपरा काम आया इणनू रावजी थुनाडो दियो घावा उपडियो दिना पनरा रामसरण हुवो ।

११० सेखा सूजावतरै वसरा राठोड मुसलमान हुवा हाडोतीमे नाहरगढरो धणी नबाब वाजै है ।

१११ चाँद-बावडीसू राव गागोजी तीर चलायो हो सू गोळमे जाय पडियो है ।

११२ सीकरी राणा सागारी हार हुई जद साराही कही- राव गागो सामल होतो तो राणारी फतै होती ।

११३ सवत १५८८ रा जेठ सुद ५ सुरगवास कियो रावजी श्री गागैजी ।

११४ सवत १५८८ रा जेठ वद ५ राव गागोजी देवलोक हुवा ।

११५ राव गागाजीरी राजलोक सीसोदणी उत्तमदे राणा उदैसिघरी बहन पीहररो नाव पदमावती ज्या पदमसर तळाव करायो जोधपुर ।

११६ राव गागोजी देवलोक हुवा जद सीसोदणीजी पीहर हुता पाच पोहर सत रहियो भाई उदैसिघ बळण न दिवी पछै चित्तोड जूहर हुवो जद जूहरमे बळिया ।

११७ देवडी माणकदेजी पीहररो नाव पदमावाई जिणरै बेटा तीन-मालदे १, वैरसल २, मानसिध ३ ।

११८ गागोजीरी बेटा राय कवरवाई चित्तोड विकमाईतनू परणायी ।

११९ गागोजीरी बेटा सोनवाई जेसळमेर रावळ लूणकरणनू परणायी ।

राव मालदे

१२० राव मालदेजी सवत १५६८ रा पोस वद १ रो जनम . सवत १५८८ रा सावण सुद १५ पाट वैठा राव मालदेजी सवत १५९२ रा माह वद २ नागोर खानू मारियो, नागोर लियो . सवत १५९४ रा असाढ वद ८ सिवागो लियो, डूंगरसी जैतमाल कनासू सवत १५९६ रावजी वीरा सीवलनू मार भाद्राजण लिवी ।

१२१ सवत १५९८ वीकानेर लियो कूपोजी फौज ले गया हुता चैत वद ५ जैतसी मारियो . सवत १५९८ चैत वद १२ रावजी पधारिया वीकानेर . जून्नणू फतैपुर कूपाजीनू वधारामे दिया ।

१२२ पचोळी अभो जाजावत मालदेजीरै कामेती ।

१२३ सवत १६०२ रावजी डूंगरसी हमीरोत कनासूं ऋवी फळोधी ।

१२४ सवत १६०८ रावजी पोहकरण लिवी ।

१२५ जैतजी कूपैजी वीरमदे दूदावतनू मेडतै रियासू अजमैरसू डीडवाणा माहसू वाली माहसू काढियो ।

१२६ बोला वीरमदेजी कह्यो- कूपाजी ! अठासू तो थाहरो काढियो नही जासूं, भरसू कूपैजी कह्यो- तो मारसा जद जैतजी कूपाजीनू कह्यो- वीरमदेनू नारणो नही, वीरमदे वडो रजपूत है, जीवतो रयो तो क्याहिकनू आण आपणो मरण सुधारसी ।

१२७ उठानू वीरमदे माडवरा पातसाह कने गयो उण खरची दिवी पछै पूरवमें जाय सूर पातमाहनू आणियो ।

१२८. सूर पातसाह आयो जद वसी मिरोही मेला असी हजार घोडासूं रावजी वावरै जाय डेरा किया ।

दूहो-साह आलम मावाहियो, मालो अमळीमाण ।

वै पनमाह क ईगिया, पिड़ दाखवसी पाण ॥

कूपै कह्यो—

दूहो—तू ठाकर दीवाण तू, तो ऊभै सह कज्ज ।

राज सिवारो मालदे, करण मरण छळ लज्ज ॥

१२९. चापो जैसो भैरूदासोत जलाल जलूकारो घोडो पातसाहरा मूडा आगै लायो. पछै राव मालदेजी साथ पीपळोद गयो ।
१३०. भाटी साकर सूरारवत अजमेररो किलादार हुतो. अजमेररो गढ छूटो जद मरण माडियो हो पिण चाकरा मरण दियो नही असुर पातसाह जोधपुररो गढ लियो जद गढ माथै काम आयो, गढमे छतरी ।
१३१. राठोड रामसिध ऊहड, राठोड सीकर जैतसिघोत ऊदावत इत्यादिक गढ ऊपर काम आया ।
१३२. सूर पातसाह वरस १ जोधपुररै गढ रह्यो सवत १६०१ पोस वद ५ देहरो पाड मसीत करायी ।
१३३. पछै गोकुळदास पाज वधावी, तळावरी राग भरायी ।
१३४. सूर पातसाह गयो मारवाडसू जद भीगैसर पाच हजार घोडा थाणो राख गयो, रावजी जोधपुर आया थाणानू वेढ करि उगमो इतरा रावजीरै काम आया—राठोड ऊभो वरसिघोत माणस ४०० सू खेत रहियो, रावळ हाफो वरसिघोत लोहै पर उपडियो, राठोड अमो हाफो माणस ८०० घोडारा असवार ओठी पाळा महेवासू साथ लाया हुता ।
१३५. जैसिध भैरूदास चापावतरो लोहे पड उपडियो ।
१३६. सवत १६०० पातसाह सेरसाहसू हार राव मालदेजी सिवाणारी भाखरा गया ।
१३७. सवत १६०३ सलेमसाह मुवो जद तुरक जोधपुररो गढ छोड खवासपुरै नसेदलीखा खवासखा कनै गया मडोवररा माळी गढमे आया, रावजीनू खबर दिवी रावजी जोधपुर पधारिया पछै वरस सात रावजी मेडतानू लागा ।
१३८. सवत १६१० रा वैसाख वद २ मेडता ऊपर रावजी आया मेडतै कुडळ तळाव माथै जैमल रावजीसू राड किवी. जैमल वीरमदेवोत दैवजोगसू जीतो रावजीरा इत्ता ठावा मिनख काम आया—घनो भारमलोत बालो १, राठोड नगो भारमलोत बालो २, प्रथीराज जैतावत ३, राठोड जगमाल उदैकरण ४, राठोड,सूजो जैतसिघोत ५, सीहड पीथो जसवत ६ ।

- १३९ संवत १६१० रा अमाढ वद १३ राठोड देईदास जैतावतनै कंवर चदरसेणजीनू मालदेजी मेडता माथै विदा किया जैमलजीनू काढि मेडतामे अमल कियो ।
- १४० सवत १६१३ हाजीखानपू राजाजीरै अदावदी हुई जद राव मालदेजी आपरा उमराव हाजीखारी मदत मेलिया ज्यारी विगत-राठोड देवीदास जैतावत १, रावळ मेहराज हाफावन महेवारो धणी २, राठोड जगमाल वीरमदेवोत ३, राठोड जैतमाल जैसावत चापो ४, लखमण भादावत ५-इत्यादिक डोढ हजार घोडासू मेलिया ।
- १४१ सवत १६१३ फागण वद १२ हाजीखानसू राणा उदैसिंघजीरै अदावदी हुई हाजीखान पठाण हो हाजीखान राव मालदेजीसू साथी राव मालदेजी इनरा ठावा मिनख हाजीखानरी मदत मेलिया-राठोड देवीदास जैतावत १, राठोड रावळ मेघराज हाफावत २, राठोड जगमाल वीरमदेवोत ३, राठोड जैतमाल जैसावत ४, लखमण भादावत ५ ।
- १४२ राणा उदैसिंघरा साथरी विगत-राठोड जैमल वीरमदेवोत, राव कल्याणमल वीकानेरियो, रावळ प्रताप वासवाळारो, रावळ आसकरण डूगरपुररो, रावळ तेजो देवळियारो, खैराडो राम जाजपुररो धणी, राव रामचद्र तोडरीरो धणी, सोलकी राव सुरजण हाडो वूदीरो धणी, राव दुरगो रामपुरारो धणी, राव नारायणदाम ।
- १४३ राणाजीरा साथरी विगत-राठोड जैमल वीरमदेवोत १, राव कल्याणमल वीकानेरियो, २ रावळ प्रताप वासवाळारो ३, रावळ आसकरण डूगरपुररो ४, रावळ तेजो देवळियारो ५, खैराडो रामो जाजपुररो धणी ६, राव रामचद्र तोडरीरो धणी ७, राव सुरजण वूदीरो धणी ८, राव दुरगो रामपुरारो धणी ९, राव नारायणदास-इत्यादिक राणा कनै सिरदार अजमेरस् कोस १२ हरमाडो गांव जठै राड मडी सवत १६१३ फागण वद १२ राणाजीरो उमराव वालीसो सूजो जसवतोत राठोड देवीदास जैतावतरै हाथ रह्यो जैतारणिग्रो तेजसी डूसरसी ऊदावतरो राणाजीरो उमराव आछी तरह काम आयो खेत हाजीखानरै हाथ रह्यो ।
- १४४ हाजीखान पठाणसू सवत १६१३ रा फागण वद ९ राणै उदैसिंघ वेढ किवी जद ५०० सवारासू रावजीरा उमराव इता हाजीखा सामल हुवा- राठोड देईदास जैतावत १, राठोड जगमाल वीरमदेवोत २, राठोड जैतमाल जैतावत ३,

ऊहड जैमल जैतसिघोत४, राठोड प्रथीराज कूपावत५, रावळ मेघराज हाफावत६, राठोड महेमदास घडसिघोत७, राठोड लेखमण भादावत ८ ।

१४५ हरमाडै राणा उदैसिघजीरो उमराव सूजो वाली हो जिणरै देईदास जैतावतरै हाथरी वरछी लागी सूजो खेत पडियो जैतारणियो तेजसी डूगरसिघोत राणाजीरै काम आयो राणाजीरी फौज भागी रावजीरो सीधल देदो रणधीर काम आयो ।

१४६. सवत १६१३ रा फागण वद १२ अजमेरसू कोस १२ हरमाडो जठै राड हुई । राणा उदैसिघजीरो उमराव नाडूळाईरो धणी वालीसो सूजो जसवतोत माराणो राठोड देईदास जैतावतरै हाथ रह्यो राठोड जैतारणियो तेजसी डूगरसिघोत राणाजीरो उमराव काम आयो राणोजी जीता नही, खान जीतो ।

१४७ रावजी साथै पहुचावण जैपुर आया हुता उठै जासूसा खबर दिवी खान जीतो रावजी मेडता साथै आवणरी त्यारी किवी जद जासूसँ खबर दिवी—मेडतो खानी है, जैमलरो कोई नही है मेडतामे सवत १६१३रा फागण सुद १२ रावजी मेडतै पधारिया जैमलरा माणस बावरै गिररी समाळ केई दिन रहिया रावजी हळ जोताय मेडतियारी जायगाँ पडाय नखायी ।

१४८ रावजी जैतारण हुता जैतारणसू डोढ हजार घोडो हाजीखारी मदत मेलियो हो हाजीखान जीतो. अँ समाचार रावजीसू मालम कराया रावजी मेडतै पधारणरी त्यारी किवी जद जासूसँ खबर दिवी—जैमलजीरो कोई आदमी मेडनामे नही है सवत १६१३ फागण सुद १३ मेडतै पधारिया ।

१४९ जैमलजीरा माणस गिररी बावरै समेळ केईक दिन रह्या ।

१५० हळ जोनाय रावजी मेडतियारी जायगाँ पडायी ।

१५१ सवत १६१४ मेडतै मालकोटरी नीव दिरायी सवत १६१६ मालकोट सपूरण वणियो जद राठोड देईदाम जैतावतनू साथ घणासू मालकोट थाणै राखियो ।

१५२ सवत १६१८ रा आसोज वदमे राठोड देईदास जैतवात, राठोड पनो नगावत जाळोरगढ लियो मलिक वूढनखानू काढियो आसोज सुद ५ कवर चदरसेण जाळोरगढ चढियो ।

१५३ पछै जेमलजी वधनोरसू जाय अकबर पातसाहरा उमराव मिरजा सरफुद्दीननू पातसाही लसकर समेत मेडतै मालदेजीरा साथ सामै आणियो संवत

१६१८ रा चैत सुद ५ रावजीरा साथसू लडाईं किवी . फतै मिरजारी हुई, रावजीरा उमराव काम आया ज्यारी विगत-राठोड देईदास जैतावत १, राठोड महेस पचाइणोत करमसिघोत २, मागळियो वीरमदेव ३, राठोड भाखरसी डूगरसिघोत ४, ' ५, राठोड गोडद राणावत ६, राठोड अमरो रायावन ७. राठोड जैमल तेजसिघोत ८, राठोड भाण भोजराजोत रूपो ९, राठोड महेस घडसीहोत १०, राठोड पूरणमल प्रथीराजोत ११, राठोड भाखरसी जैतावत १२, राठोड ईसरदास राणा अखैराजोतरो १३, राठोड तेजसी सीहावन १४, राठोड पत्तो कूपो महराजोतरो १५, राठोड महमो रामावत १६, राठोड अमरो आसावत १७, राठोड अमरो रामावत १८, राठोड अचळो भाणोत १९, राठोड सागो रणधीरोत २०, राठोड ईसरदाम घडसीहोत २१, राठोड रायसिघ घडसीहोत २२, भाटी तिलोकसी परवत आणदोनरो २३, राठोड हमीर ऊदावतवालो २४, राठोड भीम दूडावत वालो २५, राठोड अखो जगमालोत २६, काक चादावतरो २७, राठोड जैतमाल पचायणोत मेडतियो २८, भाटी पीथो अणदोत २९, राठोड राणो जगनाथोत ३०, साखलो तेजसी भोजावत ३१, राठोड प्रिथी-राज ३२, सिवण अखैराजरो ३३, चहुवाण जैतसी ३४, वीरम दूदावतरो ३५, मागळियो देडो ३६, राठोड रणधीर रायमलोत ३७, जगमालजीरो चाकर आसामी ३८ आरा रजपूत छव काम आया मिरजारो साथ घणो काम आयो खेत मिरजारै हाथ रयो मेडतो लियो ।

१५४ रावजी कवर चंद्रसेणजीनू मेडतै देवीदासजी कनै मेलियो राठोड प्रथीराज कूपावत १, सोनगरो मानसिघ अखैराजोत २, राठोड सावळदास ३ और ही उमराव कुवरजीरै साथै मेलिया, दोय हजार घोडा साथै मेलिया ।

१५५ रावजी कह्यो-वेढ करणरो ढव हुवै तो वेढ कीज्यो, नही तो देवीदासजीनू लेनै उरा आवज्यो अँ मेडते गया पातसाही फौज सबळी देखी आ डेरा पाछा किया, देवीदासजी मुरड मालकोटमे पैठा ।

१५६ मुगला मालकोट घेरियो राठोड सावळदास उदैसिघोत मुगला साथै पडियो. चाकर खाटमे घाल ले निसरिया मुगल लारै चढिया च्यार कोस साथै आय पडिया सावळदाम भली भात काम आयो ।

१५७ मालकोट घेरो मुगल नित ढोवा करै रावजी नित देईदासजीनू लिखै-थे तो थारो नाव करो हो पिण म्हारी ठाकुराई खोवो हो ।

१५८ सवत १६१८ ग फागण वद घेरो अगो मालकोटरो वुरज अँक सुरगसू उटियो . मुगल हल्ला ऊपर हल्ला करै जद जैमलजीसू सरफुद्दीन वात

करी मालकोट बारै देवीदासजी निसरिया. जैमलजी सरफुद्दीन मालकोटरी पोल आगै ऊभा देख रावजी देवीदासजीनू दिव्री हुती बारा खिजमतदारै कने हुती अेक मुगल बढूक लेण भूँबियो जद कडियाळी गैडी मुगलरै माथै जडी. गैडीरा लगणासू नाकमे भेजी निसरी मुगल मर गयो ।

१५९ ओ काम देख जैमल सरफुद्दीननू कह्यो— देवीदास जीवतो जोधपुर गयो तो रावजीनू आपाँ ऊपर जरूर ले आवसी, इणनू मार लेणो, आसल करो. सरफुद्दीन जैमल फौज ले चढियां गाव सातळिया वासै जाय पोहता आरी फौजरो नगारो आ गोइददासजी सुण, घोडा ठामिया सवत १६१८ रा चैत सुद १५ वेढ हुई रावजीरी फौजरा इतरा काम आया—

राठोड देईदास जैतावत १	राठोड भाखरसी जैतावत २
राठोड पूरणमल प्रथीराजोत ३	राठोड जैतसी उरजणपचायणोत ४
राठोड सहसो उरजणोत ५	राठोड ईसरदास राणावत ६
राठोड पतो कूपा महाराजोतरो ७	राठोड भाण भोजराजोत ८
राठोड नेतसी सोदावत ९	राठोड रामो भैरूदासोत १०
राठोड अचळो भाणोत ११	राठोड गोइददास राणावत १२
राठोड अमरो रामावत १३.	राठोड सहसो रामावत १४
जैमल तेजसिघोत १५.	राठोड भाखरसी डूगरोत १६
राठोड महेस पचायणोत १७	राठोड रणधीर रायसिघोत १८.
राठोड महेस घडसिघोत १९.	राठोड ईसरदास घडसिघोत २०.
मागळियो वीरम २१.	साखलो तेजसी २२
भाटी तिलोकसी २३	भाटी पीथो २४.
खाती भानीदान २५	बारट जालप २६.
राठोड सागो रणधीरोत २७	राठोड राजसी घडसिघोत २८
राठोड राणो जगनाथोत २९.	भाटी पिरागदास भारमलोत ३०
बारट जीवो ३१.	तुरक हमलो ३२ ।

१६० आ वेढ हुवा पछै रावजी मेडता माथै कटक कियो नही ।

१६१. सवत १६१८ रा चैत सुद १५ राठोड जैमल मिरजै सरफुद्दीन गाव सातळियावास रावजी मालदेजीरी फौजसू जग कियो राठोड देईदास जैतावत वगेरै रावजीरा घणा उमराव माराणा ।

१६२ देवीदास जैतावत कनै घोडा पाचसै हुता नै जैमल कनै मिरजा सरफुद्दीन कनै घणी फौज हुती देवीदास रुस्तम ज्यू जग कर काम आयो ।

१६३. आ वेढ हुवा पछै मेडता माथै रावजी कटक कियो नही ।
१६४. सवत १६१९ रा काती सुद १५ राव मालदेजी देवलोक हुवा. इण राड हुवा पछै आठवै महीनै राव मालदेजी देवलोक हुवा ।
- १६५ राव चदरसेणजीरै भाइयासू अणवणत रही जिणसू मेडतारो नांव न लियो ।
- १६६ सरफुद्दीन दिली गयो जेमलरो बेटो वीठळदास मेडतारी जागीरी मुजाव घोडा रजपूत ले पातसाह अकवररी चोकरीमे गयो ।
- १६७ साभर १ सोजत २ मेडता ३ खाटू ४ वधनोर ५
 लाडणू ६ रायपुर ७ भाद्राजूण ८ नागोर ९ सिवाणो १०
 लोहगढ ११ जेखळ १२ वीकानेर १३ भीनमाल १४ पोहकरण १५
 बाढमेर १६ रैवासो १७ कासली १८ जोजावर १९ जोळी २०
 लारणो २१ नाडोळ २२ फळोधी २३ साचोर २४ डीडवाणो २५
 चाटसू २६ फतैपुर २७ अमरसर २८ समेईगाम २९ खावड ३०
 वणवीरपुर ३१ टूकटोडो ३२ अजमेर ३३ जाजपुर ३४ उदैपुर ३५
 भारादो ३६ — इत्ता ठिकाणा राव मालदेजी लिया ।
- १६८ संवत १६१९ रा काती सुदी १२ जोधपुर राव मालदेजी देवलोक हुवा । जोधपुर, सोजत, पोहकरण राव चद्रसेनरै, फळोधी उदैसिनरै, सिवाणा रायमलरै रह्या ।

राणियां और संतान

- १६९ उमादे भटियाणी रावळ लूणकरणरी बेटो जिणनै सवत १५९३ रा वैसाख वद ४ राव मालदेजी जेसळमेर जाय परणिया । सवत १५९५ अजमेर माहे रूसणो हुवो । सवत १६०४ रामकवरनै देसोटो हुवो जद साथे गया । सवत १६१५ रा काती सुद १५ रावजी लारै वळी । केळवै रायजीरी वसी माहे ।
- १७० कछवाही लाछळदे, भटियाणी उमादे—आ दोना रावजी मालदेजी लारै सत कियो, मेवाडरै गांव केळवै । उमादेजी लाछळदेरो बेटो राम जिणनू स्नाप दियो ।
- १७१ सरूपदे झाली मोटा राजारी मा जिण तळाव करायो सवत १६१५ माह वद ५ प्रतिष्ठा किवी नाव सरूपसागर लोक बहूजीरो तळाव कहै ।
१७२. सरूपदे झाली चंद्रसेणजीरी मा चंद्रसेणजीनै स्नाप दियो—“तै मोनूं राजरा चंदोवस्त वासतै रावजीसू वळण न दिवी सो थारो राज मत रहे जो रावजी लारै मतमे न वळी ।”

- १७३ पातररा पेटरा दोय-महेम १, डुगरसी २ ।
- १७४ ओळगणैरा बेटा आठ-तिलोकसी १, जैमल २, लखमीदास ३, रूपसिंघ ४, तेजसिंघ ५, ठाकरसी ६, ईसरदास ७, नेतसी ८ ।
- १७५ राठोड रायमल राव मालदेरो, सो बूंदीरा धणी हाडा राव सुरजनरी बेटा परणियो ।
- १७६ देहरो राव सुरजण जिणरी बेटा रतनकवर रायमल मालदेओत परणियो ।
- १७७, रायमल राव मालदेओतरा बेटारी विगत-कल्याणदास १, प्रतापसी २, कान्ह ३, बळभद्र ४, सावळदास ५ ।
- १७८ सवत १६६४ सिवाणै कळो रायमलोत राणियारी जमर कर सात जणांसू काम आयो माधो पातसारी डोढी पूगो ।
- १७९ कल्याणदास रायमलोत लाहोरमे अकसदी पातसाही चाकरनू भार सिवाणै चढियो. पातसाह मोटा राजानू आग्या दिवी- 'इणनू मारो' जद सिवाणा माथै गया कवर भोपत १, कवर जैतसिंघ २, ३, रावळ मेघराज ४, राठोड वैरसल प्रथीराजोत ५, महमदखा जावारी ६- इत्यादिक घणा साथै हा ।
- १८० परवतसिंघ देवडो मेहाजळोत राव कलारो भाई कल्याणदासजी रातीवासो दियो जद माराणो ।
- १८१ खीची गणसदास कला रायमलोतरो माथो काटियो ।
 उरळी चारो राइका, म्हारा भालारी छाहि ।
 जो जासी तो आणसू, बाबा मेहारी बाहि ॥
- १८२ कलाजीरा हिंडोळा-
 काणाणै काढै नीपजै, सिवाणै भरीजै भोग ।
 काकै भतीजै मारियो, काठा गहुवारै लोभ ॥
 रातो वागो पहरिया, कवळी मूछारो माण ।
 ज्या दीठो त्या सालसी, रायमलरो कल्याण ॥
- १८३ रतनसी राव मालदेरो सवत १५८९ रा आसोज सुद ८ जनम. रतनसीरा बेटारी विगत-सादूल १, सुरताणे २, सुदरदास ३, जैतसी ४, दळपत ५, नाथो ६, पचायण ७ ।
- १८४ महेस राव मालदेरो, टीपू पातररो बेटो मानो गूगो रोहिलै रहतो जिणरी बेटा टीपू महेसदासरै बेटा तीन-रामदास १, दूदो २, कल्याणदास ३ ।

पुत्रियां

- १८५ राजकवरी वाई बूदी हाडा सुरतागनू परणायी हुती. रावजी आपरी हाडीनू मारी हाडै वाईनू मारी. जदसू परणीजण परणावणरी अटक हुई ।
१८६. वाई पोहपावती डूगरपुर रावळ आसकरणनै परणायी हुती उवा रावळजी साथै बळी ।
- १८७ हासवाई कछवाहा लूणकरणनै परणायी, बेटो जायो मनोहर राव सजनीवाई रावळ हरराजनू जेसळमेर परणायी, बेटो भीम रावळ, इद्रावतीवाई गवाळेर राजा कछवाहा आसकरणनू परणायी ।
- १८८ वाई वाल्हवाई ऊमरकोटरा मोटा रायसलनू परणायी, पछै जोधपुर आयी, सावत कुवो पटै ।
१८९. वाई कनका गुजरातरा पातसाह सुरताण महमदनू परणायी, पातसाह मुवो जद जेसळमेर सजना वाई कनै आय रही ।
१९०. रतनावती वाई हाजीखानू परणायी हाजीखा मुवो जद चंद्रसेणजीरा विखा माहे आयी थी पछै मोटा राजाजीरै जोधपुर ओज आयी. सवत १६४९ मुयी पछै नागोर मेली उठै गुमटी है ।
- १९१ लालवाई सूर पातसाहनू परणायी ।
- १९२ अमरसररा सेखावतारी भाणेजी, राव रामारी बहन जसोदावाई नागोरी खाननू परणायी ।
- १९३ मानसिंह गागावतसू हमती दीठी जिणसू हाडी द्रोपदी महल वारै कढाय मारी ।
- १९४ पातररी बेटी रुखमावती पातसाह अकबरनू परणायी लखमी बाहरली ओळगण नगा भारमलोतरै घरमे पैठी नगा लारै बळी ।

राव चंद्रसेण

१९५. सवत १५८९ रा सावण सुद ८ चन्द्रसेणरो जनम सवत १६१८ रा पोस सुद ६ मालदेरै टीकै वैठा. सवत १६३७ रा माह सुद ७ सरियायरी गाळमे राज देवलोक हुवो ।
- १९६ सवत १६१८ लोहावट चन्द्रसेणजीरै नै उदैसिंहजीरै वेढ हुई रावळ मेघराज हा...वतरा हाथरी वरछी उदैसिंहजीरै लागी जद कलोजीसू, उदैसिंहजी अकबर कनै गया गवाळेर कनै समखळी ठिकाणै पटो पायो ।
१९७. मोटा राजारै हाथरी वरछी चन्द्रसेणजीरै लागी. रावळ मेघराजरै हाथरी वरछी मोटा राजारै लागी लोहावटरै खेत ।

१९८. मोटा राजारै सामै खवै बरछी लागी. घोडो पडियो, जद खीची.....रै घोडै साहणी नादै उपाडि चढाय काढिया ।

‘जोगा ऊपन जूवटो ऊदो वेलै आल’

१९९. जोगो सादाउत माडणोत राजाजीरै काम आयो ।

२०० नागोर पातसाह अकबरै जद मोटाराजा नै राव चद्रसेणजी अेक हुवा, रसाभास मेटियो मोटो राजा नै कवर रामसिंघ अकबर कनै रह्या. चन्द्रसेणजी भादरा-जून गया..कवर उगरसेण बूदी गयो ।

२०१ सवत १६१८ रा पोस सुद ९ राव चन्द्रसेणजी अकबररो उमराव खान-जहाँ जिणनू जाळोर सूपियो ।

२०२. सवत १६२० रा जेठ सुद १२ राव राम पातसाह अकबर उमराव हसन-कुलीखानू जोधपुर राव चदरसेणजी माथै लायो, रावजी कनासू सोजत इण राव रामनू दिरायी ।

२०३ संवत सौळासै बीस १६२० रा चैत वद ४ राव राम हुसेनकलीनू आण पाली मारी सोनगरो मानसिंघ अखैराजोत निकळियो सो उदैपुर गयो ।

२०४ संवत १६२२ रा मिगसर वद ४ राव चदरसेण हसनकुलीखानू गढ जोधपुर सूपियो ।

सवत १६३२ राव चदरसेणरा रजपूता सहबाजखानै सिवाणारो गढ सूपियो ।

२०५. राव चद्रसेणरी वहू सीसोदणी सुरजनदे राणा उदैसिंघजीरी बेटी सोजतरै गाव सिवराड हुती पचोळी नेतो भडारी मनो कनै हुता मोटाराजारी वहू कछवाही मनरगदे कुवरजी सूरजसिंघजीरी मा सिवराड सीसोदणीजीनै लेण आया सीसोदणीजी जोधपुर आया पछै मथुराजी पधारिया ।

२०६ राव चदरसेणरा बेटा दोय- आसकरण १, रामसिंघ २ निरवस गया उगरसेण चदरसेणोतरो वस रह्यो ।

२०७ उगरसेणरा बेटारी विगंत-करमसेन १, कल्याणदास २, कान्हू ३, करमसेणरै पटो अेक बार सोजत .. हो दिखणमे पठाण खानजहासू मामलो हुवो जठै करमसेण काम आयो ।

२०८ करमसेण उगरसेणोतरा बेटारी विगंत-किसनसिंघ १, स्यामसिंघ २, राजसिंघ ३, कुसळसिंघ ४, बळभद्र ५, मुकनदास ६, हरराम ७, रामसिंघ ८, मोहनदास ९, गिरधर १०, धरमसेन ११, जगनाथ १२ ।

- २०९ सीसोदणी सुरजणदेरो वेढो आसकरण सवत १६३७ रा माह सुदमे राव चंदरसेणरै टीकै वैठो ।
- २१० सवत १६३९ रा चैत सुद २ सारण भावमे भाई उगरसेण कटारी चलायी. आसकरण माराणो . . . सत कियो, उणहीज दिन आसकरण रावरै रजपूत सेखै साकरोत उगरसेणरा हाथमू कटारी जडकी उगरसेणरै चलायी आसकरण पहलां उगरसेण मुवो ।
- २११ कवर रामसिंघ नरुको . राजारो भाणेज ।
- २१२ पातसाह अकवर कावलमे जद रायसिंघ चंदरसेणोतनू सोजत दीवी ।
- २१३ रामसिंघ चंदरसेणोत काम आयो, तीन राणिया सती हुई सोजतरा तळाव वेपैलाव ऊनर संवत १६३७ रा मगनर वद ३ - कछवाही राजा आसकरणरी वेटी १, सोनगिरी भाण अखैराजोतरी वेटी २ ।
- २१४ संवत १६३६ भादराजण आय राव चंदरसेणजी विखा माहे देवड़ा विजा हरराजोतनू परणायी जोमैतीवाई ।
- २१५ चंदरसेणजीरी वेटी आसकवरीवाई कछवाहा माननू परणायी ।
- २१६ वेटी रुखमावती वाई पातसाह अकवरनू डोलो मेलियो ।
- २१७ संवत १६२६ रा पोस सुद ६ चंदरसेणजी आपरी वेटी करमैतीवाई राणा उदैसिंघनै परणायी ।
२१८. करमैतीवाई राणा उदैसिंघजीनू परणायी ।
- २१९ . . . खां नागोरीनू परणाई धनवाई ।

राजा उदैसिंघ

- २२० सवत १५९४ रा माह सुद १३ रवि राजा उदैसिंघरो जनम ।
- २२१ सवत १६२७ रा सावण सुद १५ उदैसिंघजी अकवररै चाकर रह्या ।
- २२२ मोटै राजाजी १६ आदमिया समेत मैणा हरराजियानु जोधपुर गढ माथै मारियो. सवत १६४२ रा जेठ माहे जद सुरजमल खीमाउतरै गोडै ठरडो लागो सोजत मोटाराजाजीनू हुई जद वगडी वाघ प्रथीराजोतनू पातसाहजीरी दियोडी हुती नै कटाळियो भोपत देईदासोतरै हुतो ।
२२३. सवत १६४१ मोटै राजा राव सुरताण सिरोहीरो घणी जिण माथै पेसकसी पीरोजी लाख दोय नै घोड़ा १३ ठहराया ।

२२४ नवा पेटै औलमे बाई राठोड किसना देवडा सामंतसी नोगारिया नै देवड़ो सामदास सूजावत देवडा प्रिथीराजरो भाई ओळिया राठोड भोपत पातावत. ऊहड गोपालदास साथै जोधपुर मेलिया ।

२२५. सवत १६४० नबाब खानखा मोटाराजा उदैसिघ राजपीपळा वेढ हुई गुजरातरो पातसाह मुदफरनू भाज गुजरात दिली कारे घाली सवत १६४१ राजपीपळा मुदफर पातसाह भागो खानखा आगै जद मोटा राजाजीरा चाकर भाटी सादूळ मानावत गोइददासजीना भाई सोरासू बळियो ।

२२६ समाडली पटै भाई अमल किया जद गूजरासू वेढ हुई राजाजीरा दोय मनख माराणा समाडली सोभानू सीकदार कियो ।

२२७ पलासळो १, गूजरावास २, धुणलो ३, जोगावास ४, भिटोरो खुरद ५, बुटैला ६, हाफत ७, कोटडो ८, जाइजो ९, रीसाणियो १० - अँ गाव दस सोजतरा कलां करणराजोतरा दियोडा चारणानू मोटै राजा उथापिया जद बारट अखै साकर आढै दुरसै धरणो कियो अखै दुरसै गळै घाली ।

२२८. चाहडवा १, रहतडी २, बोरतडी ३, सुगालियो ४, गोधावस ५, भेवली ६, खारिया ७, गिरवरियो ८, आकडावस ९, वासणी १०, गोडाग ११, भिणावणो १२ - अँ गाव बामणरा उथापिया ।

२२९ सवत १६५१रा असाढ सुद १५ राजा उदैसिघजी लाहोर देवलोक हुवा । पातसाह अकबर नाव बैठ सतियाँनू देखवा आयो जिण पहला लापो दियो. पातसाह कवर सूरजसिघजीनू बीजाहीनू दिलासा दिवी कयौ, सरब काज कर पछै म्हा कनै आवो ।

सौळैसै इक्काणवै, सुद पूनम आसाढ ।

देवलोक ऊदो गयो, गगहरो अवगाढ ॥

राणियां

२३० वडी बहू सोळकणीजी सावतसीजीरी बेटी, सोळकियानूँ वैर भागो जद परणियो मोटोराजाजी ।

२३१ कछवाहा राजा आसकरणरी बेटी बजरगदेजी मोटोराजा परणियो ज्यारा पुत्र सूरजसिघजी हुवा ।

पुत्र

२३२ मोटाराजा उदैसिघरै बेटा सूरसिघ १, अखैराज २, भगवानदास ३, नरहरदास ४, सगतसिघ ५, भोपत ६, दळपत ७, जैतसिघ ८, किसनसिघ ९, जसवतसिघ १०,

केसोदास ११, रामसिंघ १२, पूरणमल १३. सोळै सिरदार ।

२३३ भगवानदास भोपत सीसोदियारा भाणेज ।

२३४ राजा उदैसिंघजीरो कंवर भोपत जिणनू मसूदै परमार सादूळरै वेटै मारियो राजा मानरै ओ मामारो वेटो भाई जिणसू मान महाराज सूरजसिंघजीसू कही वर भंजायो सादूळरी वेटो महाराज सूरजसिंघजी परणिया. पवारजी महाराज साथै वळिया ।

२३५ मोटाराजारो नरहरदास जिणरा वेटारी विगत - कल्याणदास १, जगनाथ २ ।

२३६ सवत १६१४ आसोज वदी ४ जनम भगवानदासरो सवत १६१५ रा कातो सुद १२ मुवो ।

२३७ मोटाराजारो भगवानदास जिणरा वेटारी विगत - गोइददास १, गोपाळदास २, वळराम ३, अचळदास ४ ।

२३८ मोटाराजारो मोहणदास जिणरा वेटारी विगत - प्रतापसिंघ १, सवळसिंघ २, सादूळसिंघ ३. सवत १६२८ जनम सवत १६६७ कटारी खाय मुवो ।

२३९ सेखावतारो भाणेज अखैराज समावळी थकी खीचीवाडामे काम आयो ।

२४०: सगतसिंघ भाटियारो भाणेज ।

२४१ जैतसिंघ, माघोसिंघ, मोवणदास, कीरतसिंघ - च्यारू अमरसररा सेखावतांरा भाणेज ।

२४२: माघोसिंघ मोटाराजारो जिणरा वेटारी विगत - केसरीसिंघ १, महासिंघ २, विहारीदास ३, सवत १६३२ काती वद ५ जनम ।

२४३ मोटाराजारो जैतसिंघ जिणरा वेटारी विगत - हरिसिंघ १, अमरो २, कनीराम ३. पेर्सिंघ ४, भावसिंघ ५, राजसिंघ ६, गोवरघन ७, विजैसिंघ ८ ।

२४४ दळपत मोटाराजारो जिणरा वेटारी विगत - महेसदास १, कनीराम २, राजसिंघ ३, जसवत ४, प्रतापसिंघ ५, जुभारसिंघ ६ ।

२४५. सवत १६५४ राठोड दळपत मोटाराजारो लाहोर थो. कुरखेत सूघो दोडियो वुदेला रण धवळ वासै भाटी गोइददामजी भुलायो वुदेलो हाथ न आयो ।

२४६ इत्ता राठोड साय हुता राठोड भगवानदासजीरै राठोड दळपत राजावत १, किसनसिंघ राजावत २, राव सगतसिंघरो साय भाटी गोइददास मानावत ।

२४७ सवत १६६७ रा पोस सुद ११ राठोड भगवानदाम मोटाराजारो वेटो जिणरा वरमे वुदेलो दळमाह राजा हरधवळरो वेटो इतरा मिल मारियो ।

- २४८ राठोड गोइददास भगवानदासोत, राठोड राघोदास नरहरदासोत, राठोड भोजराज नराणदासोत, राठोड जगनाथ कल्याणदासोत, राठोड भगवानदास वाघोत, हुल मेघराज भाडावत, राठोड केसवदास दिखणी ।
- २४९ मोटाराजारी बेटी कमळावतीबाई मऊरा खीची राव गोपाळदासनू परणायी ।
२५०. प्राणमतीबाई डूगरपुररो रावळ सहसमल जिणरो बेटो करमसी जिणनू परणायी ।
- २५१ दळपतजीरी बहन किसनावतीबाई कछवाहा रुपसी वैरागररो बेटो तिलो-
कसी जिणनू परणायी ।
- २५२ चावडारी भाणेजी रुखमावतीबाई कछवाहा राजा महासिंघनू परणायी ।
- २५३ भाटी सूरजमल लूणकरणोतरी बेटी राणी सजनबाई जिणरी बेटी राजकवर
भाण सगतावतनू परणायी ।
२५४. सतोखदेजीरी दूजी बेटी सतभामाबाई हळवद झाला चदरसेणनू परणायी ।
- २५५ कछवाहा राजा रामसिंघनू परणायी सोळकणीजीरी बेटी तीन ।
- २५६ रभावतीबाई भाटी खेतसी मालदेओननू परणायी । धनबाई नू ।
- २५७ रूपकवर वाई ग्वाळेर परणायी बेटो नरहरदास ।
- २५८ कछवाही राजावत ग्वाळेररा राजा आसकरणरी बेटी मनरगदेजी ज्याँरा
बेटा सूरजसिंघजी, किसनसिंघजी, बेटी बाई माना पातसाह साहजहारी मा ।
- २५९ सवत १६४४ मानीबाई साहजादा जहाँगीरनू परणायी ।

राजा सूरसिंघजी

- २६० सवत १६२७ रा वैसाख वद ७ रो जनम सूरजसिंघजीरो, सवत १६५७ रा
असाढ वद ११ लाहोर पाट बैठा, सवत १६७६ रा भादवा सुद ८ राम
कह्यो दिखणमे महकरै थाणै ।
- २६१ सवत १६२७ रा वैसाख वद ६ फळोधी सूरजसिंघजीरो जनम सवत १६२६
सावण वद ७ राजा सूरजसिंघजीरो जनम सवत १६५१ असाढ सुद १५
सूरजसिंघजीनू लाहोर डेरा टीको दियो ।
- २६२ सवत १६६८ पातसाहरी फौज दिखण माथै जावै, सारा राजा, नबाब भेळा जद
महाराज सूरजसिंघजीरो उमराव भाटी जोगणीदास गोइददासोत जिणनू कछ-
वाहा राजा मानसिंघजीरा उमरावरै हाथी सूडसू पकड घोडासू उतार मोरो कर
दांतामे पोयोडी कटारी वाही हाथीरै कुभाथळ लागी, जोगणीदास मुवो ।

- २६३ ओ हाथी राजा मान महाराज सूरजसिंघजीरै मेलियो ओ हाथी पछै महाराज सूरजसिंघजी उदैपुरमे साहजादा खुरमनै दियो ।
- २६४ ओ हाथी राजा मान राजा सूरजसिंघजीरी निजर कियो किनाईक वरसा पछै ओ हाथी उदैपुरमे साहजादा खुरमरी निजर सूरजसिंघजी कियो ।
- २६५ चतुरभुज सेवा राणा प्रताप प्रनापीतरो जिणनू सवत १६६९ सिवाणारो गाव फरमावस गावा छवसूं वरस अंक रह्यो जोघाणनाथ दियो ।
- २६६ सवत १६७१ उदैपुर राणाजीरी मुहिम महाराज सूरजसिंघजी साथै हुता राठोड प्रथीराज वलूओत वैर दहियो मोवणदास राव रनन हाडारो चाकर घरे जावतो मारियो इतरा सिरदारा मिल ज्यारी विगत-राठोड पिरागदास मानसिंघोत काम आयो प्रथीराजजीरी भीरा, नरहरदास भागोत, चापो वीठळदास गोपाळदासोन ।
- २६७ घाघल पचायण सूरसिंघजीनू जहर न दियो, आप पियो ।
- २६८ पचायणरै ईसरदास, ईसरदासरै मनोहरदास, मनोहरदासरै वैटा तीन-अंक गोवददास जिणरा फेरू, दूजो उदैकरण जिणरा साल, तीजो केसवदास जिणरा मोकळावस ।
- २६९ संवत १६७६ रा मुकल पक्खमे दिखणमे महिकररा डेरां सूरजसिंघजी देवलोक हुवा ।
२७०. सवत १६७६ रा भादवा सुद दिखणमें महकररै थाणै सूरजसिंघजी देवलोक हुवा ।

राणियां और संतान

- २७१ महाराज सूरजसिंघजी लाहोररा डेरा कछवाहा दुरजणसाळरी वेटी सोभागदेजी परणिया पीहररो नाम किसनावतीवाई ।
- २७२ सवत १६८० रा फागण सुद ९ गोघूळीक सावै परवेजनू परणायी ।
- २७३ सेखावत दुरजणसाळरी वेटी किसनावतीवाई सासरारो नाम सोभागदेजी ज्यारा वेटा महाराज गजसिंघजी सवत १६५३ रा काती सुद ८ जनम लाहोरमें हुवो ।
- २७४ वेटी वाई मनभावती साहजादा परवेजनू परणायी, कछवाहा दुरजणसाळरा दोहिता महाराज गजसिंघजी ।
२७५. महाराज सूरजसिंघजीरो राजलोक डूगरपुररा रावळ सहसमलरी वेटी पीहररो नाव जसोदा, सासरारो नाव मुग्ताणदे ज्यारो वेटी सवळसिंघजी ।
संवत १६६४ रो जनम सवत १७०३ रा फागण वद ३ राम कह्यो ।

- २७६ बहूजी अहाडी सुरताणदेजी रावळ सहसमलरी बेटी ज्यारा बेटा सबळसिंघजी ।
- २७७ राजा सबळसिंघजी सूरसिंघोत महाराज गजसिंघजीरा छोटा भाई है, अेक हजारी मनसब, वरस ३९ री ऊमर हुई ।
- २७८ सांगा परमाररी दोहिती बाई आसीकवरी चतरगदेजीरी बेटी कछवाहा राजा भावसिंघ मानसिंघोतनू परणायी ।
- २७९ भाटी सहसमल मालदेवोतरी बेटी पारवतीबाई अमोलखदेजी ज्यारी बेटी अगावतीबाई कछवाहा राजा बडा जैसिंघजीनू परणायी ।
२८०. भाटी केलण गोयददासरी बेटी जोगणीदासरी बहन सुजाणदेजी महाराज सूरजसिंघजी परणिया सालवळी ।

राजा गजसिंघजी

- २८१ महाराज गजसिंघजी सवत १६५२ रा काती सुद ८ ब्रह्मसपति जनम. सवत १६७६ आसोज सुद १० पाट बैठा बुरहानपुरमे सवत १६९४ जेठ सुद ३ रवि राम कह्यो आगरै हवेली जमनारै उपकठ ।
- २८२ सवत १६५२ रा काती सुद ८ राजा गजसिंघजीरो जनम ।
- २८३ सवत १६७६ बिरहानपुर नबाव खानखा महाराज गजसिंघजीनू टीको दियो . आगरासू पातसाह जहागीर सपद माला साथै बिरहानपुर मेलियो हो ।
- २८४ सवत १६७६ पातसाह जहागीर आगराथी टीको बुरहानपुर मेलियो महाराज गजसिंघजीनै ।
२८५. सवत १६७७ अवर चपू महकर घेरा दियो महाराजा गजसिंघजी आछा हुवा ।
- २८६ सवत १६७८ खुरम आयो जद अवर चपूसू वात ठहरी वरस दोय विग्रह रह्यो ।
- २८७ सवत १६८१ रा काती सुद १५ महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीम अमर-सिंघोतनू जगमे मारियो ।
२८८. सवत १६८१ काती सुद १५ हाजीपुर पटणै गगा ऊपर साहजादा खुरमथी वेढ हुई महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीमनू मारियो भीमरा इत्ता काम आया-सीसोदियो मानसिंघ भाणावत, कूपावत कछरो, जसवत सादूळोतरो २ जैतारणियो हरिदासरीयोत ३ - राठोड राघोदाम घावै पडियो बळूओत जैतारणियो भीम कल्याणदामोत सीसोदियो गोकळदास भाणावत अँ घावै पडिया ज्यानू महाराज गजसिंघजी उपडाया जतन कर जिवाया ।
- २८९ सवत १६८४ रा असाठ वद ८ फतैपुर कनै सीसराधीरी गढी भेळी गजसिंघजीरै साथ जद इतरा राठोड काम आया नवान सिरदारखान पातलाही फौडरो

- मालक हुतो राठोड भगवानदास वाघोत १, राठोड गोकळदास विसनदासोत २, जैतारणियो दयालदास कल्याणदासोत ३ वगेरै ।
- २९० हाडा इण ठोड घणा काम आया नै सवत १६८४ रा असाढ वद ८ फतैपुर कनै सीसराळी गढी हुती ।
- २९१ श्री महाराजाधिराजजी श्रीगजसिंघजी महाराज कवर श्रीजसवतसिंघजी वचनानु आसोप कोटा पत राठोड गजसिंघजी दीसे सुप्रसाद वांचजो अठारा समाचार भला छै थारा ।
२९२. महाराजरी गुणपचास वरसरी ऊमर हुई, चौईस वरस राज कियो ।

राणियां

- २९३ सवत १६६३ कछवाहा राजा जगरूपरी वेटी कलियाणदेजी टोडै जाय परणिया महाराजकवार गजसिंघजी पैलो व्याव ।
- २९४ टोडै पधार परणिया कलियाणदेजी नाम ।
२९५. सवत १६६३ असोपालवैरो विहु महाराज सूरसिंघजी भाटी गोइददास मानावतनू दिया. इणहीज वरस तोडै कछवाहा राजा जगनाथरै राजा गजसिंघजी परणिया सीतळारी पीडा घणी हुई. गोइददास मानावतरो वेटो मोहणदास कवरजी माथै उवाराणो कवरजी वचिया, मोहणदास मुवो ।
- २९६ महाराजकवर गजसिंघजी तोडै कछवाहारै परणियो उठै सीतळा निसरी सू सीळ सावण आपडिया जद गोइददास मानावतरो वेटो मोवणदास कुंवरजी माथै तोडै उवाराणो कवरजीरै सीतळा आछी तरैसू तूठी. मोवणदास मुवो ।
- २९७ कछवाहा राजा मानसिंघ भावसिंघ मानसिंघोत वेटी सूरजदे महाराज गजसिंघजी आवेर जाय परणिया जिका आगरै महाराज साथै बळी ।
- २९८ संवत १६६९ माह वद ५ कवर गजसिंघजी जेसळमेर परणीजण पधारिया भाटी गोइददास साथै हुवो ।
- २९९ चहुवाण अमरतदे सिखरा महकरणीतरी वेटी सवत १६६४ गाव खेजडली पधार परणिया महाराज गजसिंघजी ।
- ३०० चहुवाण सिखरा महकरणीतरी वेटी अमरतदे सवत १६६४ गाव खेजडली पधार परणिया महाराज गजसिंघजी ।
- ३०१ चहुवाण सिखरो महकरणीत महाराज गजसिंघजीरो सुसरो ।

३०२ बहू सीसोदणी परतापदेजी रुकमावतीबाई भाण सगतावतरी बेटी सवत १६६४ मथुराजी व्याव हुवो नानै भाबुआरै राजा केसौदास मारु परणायी गजसिंघजीनू स० १६७९ जोधपुर राणीपदो पायो मगसर ५ महाराज जसवतसिंघजी ।

३०३ सवत १६७९ रा भादवामे सीसोदणी परतापदेजी कवर जसवतसिंघजीरी मा जिणनू राणीपदो दियो जोधपुर पधारनै महाराज गजसिंघजी ।

३०४. वाघेलो बाघूगढरो धणी राजा अमरसिंघ महाराज गजसिंघजीरी चद्रकवर परणियो ।

३०५ रीवा मुकदपुररा राजा वाघेला जिण राजा वीरासिंघदेव वाघेलो जिणरो राजा वीरभद्ररो राजा विक्रमादित्यरो अमरसिंघ महाराज गजसिंघजीरी बेटी परणियो जोधपुर ।

३०६ अनारो१, देसो २ — अँ दोनू बहना महाराज गजसिंघजीरी मरजीरी · लिवी ।

जसवंतसिंघजी

३०७. महाराज जसवतसिंघजीरो जनम बुरहानपुर हवेली सवत् १६८३ रा माह वद ४ बुरहानपुररो जनम महाराज जसवतसिंघजीरो ।

३०८. महाराजकवार जसवतसिंघजी बूदी राव चत्रसाळजीरी बेटी परणिया. दूजै दिन महाराज गजसिंघजी देवलोक हुवा कवरजी बूदीसू परबारा आगरै गया ।

३०९. पातसाहनू खबर हुई— जसू आया. जद साहजादा मुरादबख्सनू डेरै मेलनै मातमपुरसी करायी फुरमाया साहजहा— आछी सायत जोय हजूर आवो सवत् १६९४ रा असाढ सुद ४ सोमवार पातसाह उमराव दोय डोढी ताई मेलिया उणा ले जाय पावा लगाया श्री पातसाहजी महाराजनू छातीसू लगाय दिलासा दिवी सिरपाव मोतियारी माळा दे सदामदरो मनसव दे देसरी सीख दिवी ।

३१०. सवत् १६९५ रा असाढ वद ७ जोधपुररो टीको पायो जसवतसिंघजी ।

३११ सवत् १६९४ रा असाढ वद ७ टीको पायो महाराज श्री जसवतसिंघजी ।

३१२ आगरै साहजहा आपरै हाथसू महाराज जसवतसिंघजीनू टीको दियो ।

३१३ आगरै साहजहा पातसाह महाराज जसवतसिंघजीनू टीको दियो जद उमरावानू सिरपाव दियो ज्यारी विगत—

३१४ राठोड राजसिंघ खीमावतनै १, राठोड रतन राजसिंघोतनै २, राठोड भावसिंघ कान्होतनै ३, राठोड वीठळ गोपालदासोतनै ४, राठोड सुन्दरदास रायसिंघोतनै ५, रावळ भारमल जगमालोतनै ६, राठोड जगतसिंघ रामदासोतनै ७, राठोड

वनमाळीदासनै ८, आढा किसना दुरसावतनै ९, राठोड गोवरधन चादावत कूपा १०-आ दस आदमियानै ।

३१५ सवत् १६९७ रा फागणमे चापो महेशदास सूरजमलोत प्रधान हुतो महाराज श्रीजसवतसिंघजीरै ।

३१६ महाराज जसवतसिंघजी लोहाईरा डेरा सवत् १६९८ रा आसोज सुद १० वाईस घोडा चारणानू नै सिरदारानू दिया, दोय लाख-पसाव दिया, अेक लालस खेतसीनू, दूजेरो आढा किसनानू ।

३१७ श्री महाराजाजीरो साथ ले मुहणोत सुदरदास, चापावत लखधीर विठळदासोत गाव सीधलारै . सीधल बाघ आदमी ४०० सू गाव ।

३१८ सवत् १७०१ रा पोस सुद ७ महाराजा श्रीजसवतसिंघजीरै ज्वर निपट जोर कियो पातसाह साहजहा कूपावन राजसिंघ खीमावतनू हाथी जै जीतवा दियो हो सो हाथी महाराजा दान दियो त्रिग रामदास दिखणी हमै चाटसू रहै जिणनू रुपिया १०००) ऊपर दिया पछै रातरै समै सीतळा देखायी दिवी ।

३१९ रावळ मनोहरदास मुवो सवत् १७०६ रा काती सुद १५ जद पातसाहजी ।

३२० सवत १७०६ रा फागण सुद २ जसवतसिंघजी प्होकरणवासी महारावळ सवळसिंघ महाराजाजीरी फौज माहे हुतो रोजीना पचास रुपिया पावतो सारा सवार डोढ हजार अढाई हजार फौजमे पाळा हुता ।

३२१ सवत् १७०६ रा असाढ वद ३ जोधपुरसू फौज पोहकरण माथै विदा किवी राठोड गोपाळदास सुदरदासोत मेडतियो १, राठोड वीठळदास सुदरदासोत मेडतियो २, वीठळदास गोपाळदासोत चापो ३, नारखान राजसिंघोत कूपो ४, भंडारी जगनाथ ५, मुणोयत नैणसी ६, सिंगवी प्रताप ।

३२२ रावळ सवळसिंघ जेसळमेररा उमराव भाटी पोहकरण किला मांहे हुता ज्यानू वात कर काढ दिया दरवाररो अमल करायो भाटियारा जणा अढाईसै गढ माहे हुता ज्या माहसू तेरै जणा काम आया पडाव रहिया हुता जिके दूजा निसरिया ।

३२३ राठोड सुजाणसिंघ केहरसिंघोतरो रजपूत भाटी रुघ चापा अमरा सुरजनोतरा रजपूत काम आया सवत १७०६ रा आसोज सुद १५ पोहकरणमें अमल हुवो जसवतसिंघ महाराजरो ।

३२४ सहर उजेण सवत् १७१४ रा वैसाख वद ९ सुक्र ओरगजेव मुरादबखससू महाराज जसवतसिंघजी जग कियो ।

- ३२५ तोपखानारो मालक कासमखान औ . . . मैहारजा जसवतसिंघजी साथै विदा किया उजैण थाणै ।
- ३२६ हिंदुआरी विगत- हाडो मुकनदास, गोड अरजुण, भीम राठोड, रतन महेसदासोत, सूरजमलोत, सीसोदियो राजा अमरसिंघ, भीम अमरसिंघोतरो सीसोदियो, सुजाणसिंघ अमरसिंघोत-इत्यादिक बाईस आसामिया महाराजरै ताबै किवी पानसाह साहजहा ।
३२७. १२४२ आसामीदार काम आया ज्यारा राजपूत ७०१ काम आया . ३०० घोडा बढिया अेक हाथी माराणो राठोड सुजाणसिंघ केहरसिंघोत घावै पड उपडियो रजपूत १२ मुहता सूघा काम आया ।
- ३२८ ठाकुर च्यार तथा सात पैला उपाडिया भाटी रुघनाथ १, राठोड महासिंघ जगनाथोत २, राठोड रायसल केसरीसिंघोत ३ इत्यादिक ।
३२९. राठोड द्वारकादास बळूओत सीसोदिया रायसिंघरो चाकर काम आयो ।
३३०. जैतारणियो बळराम दयालदासोत, आसकरण बळरामोत, कुभकरण बळरामोत, वीरमदे मुकनदासोत, सुदरदास वेणीदासोत, करमसोत प्रथीराज, दळपतोत प्रमुख, धाधल किसनो नारणोत, भाटी रतन भीम प्रयागदासोतरो, सोनगरो जगतसिंघ रायसिंघोत पडि उपडियो उजीण पिरियत दळपत मनोहरदासोत, ऊहड मेघराज उरजगोत, मेडतियो गोपीनाथ गोकळदासोत, गरीबदास सुजाणसिंघोत मुरारीदास गोयददासोत प्रमुख खीची जोगीदास कलावत, पडियार सादो भीमावत, चारण जगमाल, जूजाणियो नारण बाघावत, भायल रामसिंघ कचरावत नै देदो सावळोत इत्यादिक उजैण काम आया १३० घायल हुवा तीर नै गोळीसू ।
- ३३१ चापावत वीठळदास गोपालदासोत, भीम वीठळदासोत, बीजो हरीदासोत, दयाळदास सूरजमलोत, किसनसिंघोत, खेतसिंघोत अै उजैण काम आया ।
- ३३२ राठोड रतन महेसदासोत साथै इतरा उजैण काम आया- राठोड साहबखा कुभकरण बाघोतरो जैतो, चहुवाण वीठळ किसनदासोत, चहुवाण कूभो ईसरदासोत, चहुवाण अमरदास नै भगवानदास सादूळ सावतसीहोनरा, भाटी कुभकरण सुरताण रामोतरो केलण, भाटी अजो केलण, राठोड गिरधरदास किसनदासोत गागो, गहलोत पचायण हरदासोत, राठोड नरहरदास वीकानेर, राठोड गोपीनाथ राव सगतसिंघरो पोतो, राठोड वेणीदास राजसिंघ सूरज-मलोतरो चापो, राठोड दुवारकादास बळू गोपाळदासोतरो चापो, राठोड भावसिंघ मेडतियो जैमलोत, माडल नाथारा बेटा तीन- सांगो १, रतनसी २,

रूपसी ३, वारट जसो वेणीदासोत, सोनगरो वीरमदे, कछवाहो स्यामसिंघ राजावत, राठोड हरीराम लखमावत, मुहतो सांवळदास रुपमीरो, पडिहार धनराज, थोरी भूरियो, दमामी गुणो ।

३३३ औरगजेव साहसुजा सामो गयो महाराज जसवतसिंघजी माथ हुता छाने साहसुजामू मिलिया साहमुजा कह्यो म्हे भाई भाई काले साथै जोधपुर पवारो. औरगजेवरै नै साहमुजारै जग हुवो पातसाही लसकररा डैरा लूटनै महाराज मारवाडनू पधारिया मारगमे पातसाही सहर मालू लूटिया ।

३३४ साहसुजानू जीत पातसाह दिली आय रायसिंघनू जोधपुर लिख दियो महाराजा सामी फौज मेली रायसिंघनू मारवाडमे आवण न दियो आ वात सुण औरगजेव मनमे कोप कियो ।

३३५ हरमखानो लूट इकवीस पालत बीज वाहणरा भरि महाराज डेरै आणी ।

३३६. राठोड रणछोडदास गोइददासोत महाराजा श्रीजसवतसिंघजीरी तरफसू नेवोजी अवम और गोइदराय साहजादा मुहम्मद मुअज्जिमरी तरफसू राजगढ सिवा कनै गया सिवै सिवारी मा रणछोडदासजीरै हाथ सिवारो बेटो संभाजी वरस ११ में महाराजरो बोल ले सूपियो ।

३३७ काती मुद ३ रा राजगढसू मिवै विदा किया तीनसै असवार संभाजी साथै राठोड रणछोडदासजीनू धोडो सिरपाव दियो दुगदुगिया न लिवी. अेक धोडो, अेक सिरपाव, अेक दुगदुगी खोजा अवमनू दियो, इतरो ही समाधान गोइदरायरो कियो. मिंगसर वद ५ रवि ओरगावाद आया संभानू महाराजरा पावा लगायो मिंगसर वद ६ सोम महाराज साहजादासूं मुलाजमत करायी तरै पाच हजारियांमें सभानू ऊभो राखियो, सिरपाव दियो पाचहजारीरो मनसब दियो महाराजरी कचहडी नजदीक संभारो डेरो हुवो ।

३३८. मिंगसर वद १२ रवि साहजादै सभानू विदा कियो धोडा २, कपडो, दुगदुगी १, पुणचियारो जोडो १ सभाजीनू इत्ता दिया कटारी जड़ावरी १, दुगदुगी अेक (७२००) री, थान नव कपडो सेवानू भेजियो. राठोड रणछोडदास गोइददासोत संभाजी साथै भेजियो दिन आठ सभाजी औरगावादमे रह्यो

३३९. महाराज श्रीजसवतसिंघजी लाहोररा डेरा सवत् १७२३ रा पोस वद ८ राठोड श्रीआसकरणजीनू मया कर देम सूबो दियो इत्ती चीजा हजुर इनायत किवी—मोनारी माकन धोडो १, सिरपाव वामो १, वधारारो हुकम कियो पंचोळी केसरीसिंघजी आनकरणजी मिल मारवाडरो काम करै ।

- ३४० सवत् १७३० महाराजनू काबुलनू विदा किया पठाण-माथै सुजातखा नवाब महाराजरी ताबीतमे ।
- ३४१ सवत् १७३० रा फागण सुद ५ सोमवार पठाणसू राड हुई सुजातखा काम आयो महाराजरो ही लोक काम आयो फतै महाराजरी हुई ।
- ३४२ औरगजेव खिताब दियो गस्त जसवतसिघ महाराजा दुवार मेडतिया गोपालदास सुन्दरदासोतनू जगनग नामा हाथी, चापा हाथी, कूपा गोवरधन चादावतनू रणजीत हाथी-जुमलै तीन हाथी सिरदारा तीननै जसवतसिघजी अके दिन दिया ।
३४३. मुलतानरा डेरा बनारसीदास जैनीनै महाराज जसवतसिघजी आग्या किवी-अध्यातम ग्रंथ वणाव ।
- ३४४ महाराज जसवतसिघजी लिखता सही श्री परब्रमजीरी छै ।
- ३४५ महाराज जसवतसिघजी राजा सबळसिघजी भूरजसिघोत ज्यांरी बेटी सवत् १७०७ रा काती वद ५ देवळियै परणायी जद हथणी चवेली डायजै दिवी ।
- ३४६ सवत् १७३५ रा पोस वद १० महाराज जसवतसिघजी देवलोक हुवा बीस गायणिया नै राणी चन्द्रावतजी रामपुरारा राव अमरसिघरी बेटी मडोवर जाय सन कियो जोधपुरसू ।
- ३४७ सवत् १७३५ रा चैत वद ५ अजीतसिघजीरो जनम. दुरगदास आसकरणोत १, चापावत महासिघ २, मेडतियो मोहकमसिघ जगावत ३, रूपो ऊदावत ४, पिरागदास भोजराज वीदावत ५-अै दिलीसू मारवाडमे आया ।
- ३४८ सवत् १७३५ सैताळीस सरदार दिली काम आया सवत् १७३६ रा भादवा वद ११ राजसिघ मेडतियो सेख सादूळनू मारियो मेडंतो लियो ।

राणियाँ और संतान

- ३४९ महाराज जसवतसिघजीरै राजलोकारी विगत - बहूजी श्री भटियाणीजी नाव जसरूपदेजी रावळ मनोहरदासरी बेटी, पीहररो नाव पेमकवर. सवत् १६९३ रा वैसाख सुद १२ घडी आठ रात गया जेसळमेर पधार परणिया कवरपदे ।
३५०. महाराज जसवतसिघजीरै राजलोक भटियाणी जसरूपदेजी रावळ मनोहर-दासरी बेटी ।
३५१. सवत् १६९८ रामपुरै परणिया राव चादारी बेटी कसमीरदेजी चन्द्रावत, गागैलाव फूटो हो सो आ फेर वधायो ।

- ३५२ वहूजी भटियाणीजी वाछळदेजी रावळ कलारी वेटी रामकवरवाई सवत् १६९८ जेसळमेर जाय परणिया रावळ भीम व्याव कियो गोडंददासजी साथै व्यावमे हुता ।
- ३५३ सोनगरा जसवतरी वेटी मनसुखदेजी भागवतीवाई सवत् १६९८ मणियारी पधार परणिया वेटी अमरसिंघजी ।
- ३५४ सवत् १६९१ रा चैत वद ७ गढसू उतर अमरसिंघजी पटो पायो वडैद जठे पधारिया ।
- ३५५ वाघेला सागारी वेटी वाघेली कसूवदेजी सोभा सीकदाररै घरै परणिया जोधपुर डोळो आयो थो ज्याका गढी तळाव नवो वधायो ।
- ३५६ नरुकी केसरदेजी चदरभाणजीरी वेटी संवत् १६७९ रै असाढ गांव पनवाड परणिया, परवेज साथ जाता सवत् १७३५ पोस वद १० जोधपुर सती हुवा ।
३५७. कछवाहा राजा भावसिंघजीरी वेटी सूरजदेजी राजा जैमिंघजी व्याव कियो आवेर जाय परणिया आगरै सहगवन कियो राजाजी साथ सवत १६९४ रा जेठ सुद ३ ।
३५८. सेखावतजी खडेलारा अतरगदे सासरारो नांव, जानकवर वाई पीहररो नाव, राजा वरसिंघ दुवारकादासोतरी वेटी महाराज जसवतसिंघजीरी राजलोक, कवर प्रथीसिंघजीरी मा ज्या तळाव खणायो, वधाय नाव जानसागर कोई लोग सेखावतजीरो तळाव कहै ।
- ३५९ वहूजी श्री हाडीजी नाम जसवतदेजी राव चत्रसाळरी वेटी सवत् १६९४ रा जेठ सुद २ सनी वूदी पधार परणिया जेठ सुद ३ महाराज गजसिंघजी देव-लोक हुवा पीहररो नाव कोमकवरी ।
- ३६० वहूजी हाडी जसवतदे चत्रसाळ वूंदीरा रावरी वेटी सवत् १७२६ रा वैसाख सुद १३ राणीपदो पायो औरगावाद में ।
३६१. चहुवाण जगरूपदेजी दयालदास सिखरावतरी वेटी सवत् १६९७ रा फागण सुद ३ लाहोर जाता डोळो आयो, विलाडै परणिया ।
३६२. वहूजी चहुवाणजी चहुवाण दयालदास सिखरावतरी वेटी पातारी भाणेज नाम जगरूपदेजी पीहररो नाव रायकवरी सवत् १६९७ रा फागण सुद ३ लाहोर पधारता गाव विलाडै डोळो आयो परणिया ।
३६३. वहूजी गोड जसरदे मनोहरदासरी वेटी सवत् १७०६ रा फागण वद २ राजा वीठळदास व्याव कियो गढ रणथभोर ।

३६४. कछवाही अतिरगदे वीरसिहरी बेटो सवत् १७०६ रा. जेठ सुद ८ परणिया खंडेलै जाय मेडताथी ।

३६५ कवर प्रथीसिंघ राजा जसवतसिंघ राजा गजसिंघोतरो दिली देवलोक हुवो. राठोड जुझारसिंघ दलपतोतरो जिणरी हवेली कनै दाग पडियो ।

३६६ कवरजी प्रथीसिंघजी जसवतसिंघोत दिली देवलोक हुवा राठोड जुझारसिंघ दलपतोत जिणरी हवेली कनै दाग दिराणो गोडजी सत कियो सत करता फुरमाया-महाराजसू मालम कीजो आगरै महाराज गजसिंघजी माथै जायगां करायी . . म्हारै ही जायगां करावै ।

३६७ कवरजीरै थडै सेवा करणनै व्यास सोभो रहियो ।

३६८ गोडजी सत करता फुरमाया-महाराजसू मालम कीजो माहरै अठै जायगां करावै महाराज गजसिंघजी माथै आगरै जायगां करायी जिसी ।

३६९. कवरजीरै थडै व्यास सोभो सेवा करणनू रह्यो ।

३७० दलथभणजी नरुकारा भाणेज महाराज जसवतसिंघजीरा बेटा ।

३७१ हिंगळाजजीसू रिधसिंघपुरी सन्यासी हररामपुरीरो चेलो काबुल आयो. मालम करायी, पांच वरस मै हिंगळाजरा चरणा तप कियो, माईरी अग्या हुई समाध लेनै जसवतसिंघरै कंवर होय, नवकोटीरो राज कर; जैसू मोनै समाध दिराडो. महाराज ठावा आदमी मेल समाध दिराडी, भडारो करायो इण कह्यो-राणी जादवके पेट आऊगा, महाराज हमारा मुख न देखै, म्हे महाराजका मुख न देखू सवत् १७३५ रा भादवा वद ९ सन्यासी दुपहररी समाध काबलमे लिबी बभूतरो गोळो, माल १, पोथी १ सूपी कह्यो-हू माग लेसू ।

अजीतसिंघ

३७२ दिली सरदार दुरगादासजी वगेरा पेमोरसू आया ज्या कनै तीन सौ च्यार सौ लोक हुतो ज्या माथै तीस हजार घोडो ले सीदी आयो ।

३७३ दुरगादासजी दिलीसू आपरी वसी साथ ले विखारी तयारी करी. सिरोही बीसलपुर गया ।

दूहो - दुरगो लड़्यो दिली दळा, जद आयो जोधार ।

वासै ले माणस वसी, विखो कियो तिण वार ॥

३७४. असूदखा अजमेर जिणसू सोनग वीठळदासोत सिसोदियो भीवसिंघ राणा राजसिंघरो बेटो जिणारी मारफत वातचीत करी - म्हारो गोर कीजै जद राजाजीरा बेटारै नै सोनगजीरै मुनमवरी वात ठहरती ही सवत् १७३८

आसोज सुद ७ गाव खुदळोतै सोनगजी राम कह्यो गोड सती हुई. वात यूहीज रही ।

३७५ सवत १७३८ मे डीडवाणारी पेसकसी ले चापावत अजवसिंघ वीठळदासोत मकराणो लूटियो काती वद १४ सहर मेडतो लूटियो. दिन दोय ईदावड रिया ।

३७६ असदखारो वेटो इकतारखा नै सिरदारखां पातसाही फौज ले आया. लड़ाई किनाईक सिरदारा सहित अजवसिंघ वीठळदासोत काम आयो. काती सुद १ वार सोम ।

३७७ इण भगडामे तीन चारण काम आया मेडतिया सिरदार तीन काम आया अजवसिंघजी सूधा पाच चापावत काम आया जुमलै राठोड इग्यारै काम आया ।

३७८ चापावत उदैसिंघ लखवीर वीठळदासोत नै करणोत खीवकरण आसकरणोत नै मेडतियो मोकमसिंघ कल्याणमलोत — आ सवत १७३८ रा कातीमें माडल मारिनै कासंमखा दिखण जातो हो जिणसू रोळो कियो ।

३७९ सवत १७४३ रा वैसाख वद ५ सिरोहीरै गाव पालडी महाराज अजीतसिंघ-जीनू पघराया सारा दरसण कियो चापो उदैसिंघ लखवीरोत पावा लागो वीजो ही साथ पावां लागो ।

३८०. सवत १७४३ रा आसोजमे राठोड दुरगदास आसकरणोत दिखणसू मारवाडमें आयो नै भोमिया जमीदार थापा मिजमानी मेली नै घोडा नजर किया नै पातसाही मुलक लूटिया आगरासू बीस कोस आतरै हसारो मुलक लूटियो ।

३८१ जेठ सुद ५ मालपुरै सइयद कुतव थो सामो आय लडियो सइयदरा आदमी सारा काम आया पछै पगा लागो ।

३८२. सवत १७४३ रा आसोज सुद १ गाव रतनथळ सइयदासू लडाई हुई सो सइयद मारिया राठोडा ।

३८३ सवत १७४४ रा सावण सुद १० भीवरळाई आय वाडमेर अकबररा वेटा सुलतान साहजादारै पगा लगा घर बैठा रया ।

३८४ पछै महाराज श्रीअजीतसिंघजी तलवडै मलीनाथजीरा दरसण पघारिया. पछै भीवरळाई काती वद १० पघारिया जद दुरगदास आसकरणोत सारा साथसू सामो आय पगा लागो सिरपाव दियो पछै सला ठहरायी श्रीमहाराज पीपळोदरा पहाड पघार विराजो नै म्हा कनै साथ सांवठो छै, धरतीमे घोडो फेर आवा छा ।

- ३८५ सवत १७४४ रा काती वद १३ हाडो दुरजणसिघजी, राठोड अखैराज, रतनो जोधो, राठोड दुरगदास आसकरगोत, चांगो मुकनदास - अँ सोजत जोधा सुजाणसिघ केहरीसिघोत माथै गया. उण सहर गढ सवायो. मामलो कियो. केईक राजपूत काम आया ।
- ३८६ सवत १७४५ रा मिंगसर वद ५ गूघरोटरा डेरा महाराजरा पगा दुरगदासजी लागा. दुरगदासनू नै उदेसिघनू सिरपाव देनै काम सूपियो. या दोनांरा कामदार मेलिया काम करता ।
३८७. सवत १७४५ रा फागण वद ८ जाळोररी पेसकसी लैणनू राठोड तेजकरण दुरगदासोतनू नै राठोड राजसिघ अखैराजोतनू मेलिया गाव सारणासू कूच करता दीवान कमालखारी फौजसू मामलो हुवो ।
३८८. चद्रावतासू राठोड अखैराज रतन महेसोतरो जिणरै वैर हुतो सँ महियारिया पूरणदासनू मेलनै चद्रावता कनासू दोय सगाई दिरायी नै केईक रुपिया दिराया अखैराजजी महाराज साहव सवत् १७४४ चैत सुद ५ ।
- ३८९ रानाडीरा सिरदाररो बेटो केहरसिघ तुरकाणीमे जोधपुर कनासू चौथ लिवी. सायद -
केहर चौथ जोधपुर कीवी ।
- ३९० जोधपुर व्यास हरकिसन हरवसरो तुरकाणी तुरकासू मिळियोडो हो साचोरा गिरधर रुघनाथरो चाकर दोय सपी मनसबरो ।
- ३९१ सवत् १७६५ सावण वदि ११ महारावखा जोधपुरनू अजमेरनू कूच करै ।
- ३९२ श्रीजी गढ पघार सवत् १७६५ रा सावण वद १२ सिंघासण विराजिया राजा सवाई जैसिंघजी टीको कर मोतियारा आखा चेठिया, हाथी - घोडा नजर किया बीजा ही नजर किवी.
- ३९३ सूरसागररा महल सवाई जैसिंघजीरा डेरा ब्रमकुड दुरगदासजी आसकर-णोतरो डेरो ।
- ३९४ सवत् १७६५ रा काती सुद १ आठ हजार कडाजूभ सिपाही घोडा सवार हो सइयद गैरतखा हसनखा हुसेनखा सहे आया पहोर ताई राड हुई तोपखानो घणोई सइयदरी साथै हुतो पिण फतै श्रीजीरी हुई ठाकुर दुरगदासजी नरुको सगरामसिंघजी ।
३९५. मेडतियै कल्याणसिंघ राजसिंघोत अरज किवी, राठोड हिंदूसिंघ अरज किवी. ठाकुर दुरगदासजी ही सामल रह्या, जद महाराज अजीतसिंघजी महारावखानू जीवतो जावा दियो ।

- ३९६ भेळा हुआ मता घणी हाथ आयी च्यार कोस ताई तुरकारी कतल किवी.
कूपो भीव सवळसी होत काम आयो ।
३९७. महाराज अजीतसिंघजी जाळोर थका तेजसिंघ आईदानोतनू हरजी दिवी.
जगनाथ आईदानोतनू आहोर दिवी ।
- ३९८ दिली खीवसी भंडारीनू महाराज अजीतसिंघजी लिखियो—गुजरातरा सोवारी
खिलत पहलां तोनू हवै नै उजीणरा सोवारी खिलत दोय घडी पछै भगतणके
तो माहारो आछो लागे भगतण जैसिंघजीरो नाव दियो हो ।
- ३९९ धायभाई बखतराय १, नानगराय २, खेरडो दलेलसिंघ ३, कहाहनीराय ४,
अै च्यार ही अजीतसिंघरा चाकर अइसीजीरा धावनिया ढेरिया हा ।
- ४०० वगड़ीरो घणी अरजुणसिंघ प्रतापसिंघोत अजीतसिंघजीसू वदळियो उदैसिंघ
लखधीरोत वदळियो पालीरो घणी ।
- ४०१ आ खवर सूरचंदरा डेरा महाराज अजीतसिंघजी पाय चैत वद २ महाराज
सूरचंदसू चढिया — चैत वद ५ सवा पहर दिन चढिया, जोधपुर पधारिया.
सूरचंदसू जोधपुर कोस १२० ।
- ४०२ फरखसियर महाराज अजीतसिंघजीनू गुजरातरो सूवो दियो जद भंडारी विजै-
राज सूवै रहियो पछै महमदसाह अजीतसिंघजीनू गुजरातरो सूवो दियो जद
रघनाथ आडो वैठो, अनोपसिंघ सूवै रहियो अभैसिंघजीनू गुजरात महमदसाह
दिवी जद रतनसिंघ सूवै रहियो ।
- ४०३ महाराज श्रीअजीतसिंघजी नागोर मधि पवारिया जद राव इदरसिंघजी,
कंवर गोपाळसिंघजी हैदरावादको नवावनू जग मुलमुलक जिणरै सामल हुता ।
कूपावत प्रतापसिंघजी ककडावरा घणी भावसिंघजी रो पोतो तिण नागोर
सभाळियो हजूर राजी हुवा. नजराणो ले वाला पधारिया ।
- ४०४ महामाया हिंगळाज प्रसादात छत्रपति महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीत-
सिंघ देव विजयते भानु तेज स्वरूपेण मही-मध्येषु राजते—अै आखर अजीत-
सिंघजीरी महोरमे ।
- ४०५ देवळियारा घणीरी वेटी कल्याणकवर महाराज अजीतसिंघजीनू परणायी.
आ मुई जद इणरी छोटी वहन अनोपकवर महाराज अजीतसिंघजी देवळियै
पधार परणिया ।
- ४०६ देवळियै सीसोदिया रावल हरीसिंघरा वेटा कुवर प्रिथीसिंघरी वेटी कल्याण-
कंवर महाराज अजीतसिंघजी देवळियै पधार परणिया ।

४०७ अभैसिघजी १, बखतसिघजी २, रामसिघजी ३, अणदसिघजी ४, सोभाग-
सिघजी ५, प्रतापसिघजी ६, रतनसिघजी ७, रूपसिघजी ८, सुरताणसिघजी ९,
उदोतसिघजी १०, छत्रसिघजी ११, किसोरसिघजी १२, गागोजी १३—इता
महाराज अजीतसिघजीरा कवर हुवा ।

४०८ किसोरसिघजीरी अेक माई बहन उदैपुर परणायी रामसिघजी बखतसिघ-
जीरै जग हुवो जद रामसिघजीरै सामल रह्या महाराज किसोरसिघजी ।

४०९ महाराज बखतसिघजी राजाधिराज कहावै, किसोरसिघजी तेगबहादुर कहावै ।

४१० महाराज अजीतसिघजी बेटी सूरजकवरबाई सवाई जैसिघजीनू परणायी,
सोभागकवरबाई राणा जगतसिघजीरा कवर प्रतापसिघजीनू परणायी
इद्रकवर परणायी कुळकवरबाई जैसळमेर रावल अखैराजजीनू परणायी ।

अभैसिंघ

४११ नबाब सेर बुलदखा काळीरा कोट कनै डेरा किया ।

४१२ आठ हजार सवार, दस हजार सवार प्यादल नबाब कनै हुता छोटी-मोटी
नवसै तोप नबाब कनै हुती ।

४१३. आसोज सुद ७ कोचर पालडी महाराज अभैसिघजी बखतसिघजी डेरा कर
मोरचा पाच सहरनू नै भदरनू लगाया च्यार मोरचा अभैसिघजीरी फौजरा,
अेक मोरचो महाराजा बखतसिघजीरी फौजरो ।

४१४ महाराज अभैसिघजीरी फौजरै अेक मोरचै ठाकुर अभैकरणजी महासिघजी नै
जीवणी मिसल भागीरथदासजी ।

४१५ दूजै मोरचै सेरसिंघ सिरदारसिंघोन, प्रतापसिंघ भीमोत डावी मिसलनै
पुरोहित केसरीसिघजी ।

४१६ तीजै मोरचै मारोठरो नै चौरासीरो साथ नै भडारी विजैराजजी ।

४१७ मोरचै चौथै गुजराती सिपाही नै भडारी रतनसिघ ।

४१८ राजाधिगजरी फौजरै मोरचै नागोररा सिरदार नै पचोळी लालो ।

४१९ भदरमे नवावरो कबीलो हुतो सो अेक बीवीरै गोळो लागो आसोज सुदी
१० सनीवार वडो फजर हो नवाब सेरसिंघ सिरदारसिंघोतरा मोरचा
माथै आयो जद अभैकरणजी नै चापावत करण राजसिंघोत दौडनै सेरसिंघ-
जीरै मोरचै आया उठे वेढ हुई तीनसै आदमी मियारा काम आया ।

- ४२० चापावत करण राजसिंघोत १, मेडनियो भोमसिंघ कुमळसिंघोत २, पुरोहित केसरीसिंघ ३, जोधो हरीसिंघ जोगीदामोत ४, धावल भगवानदास ५ ।
- ४२१ ठाकर अभैकरणी पूरा लोहा पाडिया महाराज डेरा मोरचासू अळगा हुता. सो आ खबर आयी तिण सायत श्रीमहाराज अभैसिंघजी वखतसिंघजी अमवार होय कटकरी अगाडी नाई पधारिया. इतै अरज मालम हुई, राड हो चूनी जद घोडा चलायासूं मिया मिया पूर उठै राखी आगै तो पाचल ऊभो रह्यो चौडै आयो नही जद दोनू साहिब ईसवररो नाम ले नै लूटता तोपखाना सामा घोडा उठायो सो तोपखाना लोप तरवारा भीळिया. अक पहोर भीक वागो मियारै साथ मनमवदार हाथियारा सवार हुता जिके इता काम आया—आवद अलीखा १, जमलुदीखा २, सइयद कायम ३, पठाण तरीनखा ४, सेख अलैयार ५, थानसिंघ ६, दुरजणसिंघ ७, अकहजारी ८. तीनसै सिपाही नवावरा और काम आया नवावरा इतरा घायल हुवा—सेख मुजायद १, सेख जमादी अलीखा २, आगा महमदरो वेदो ३. और सिपाही पनरै सै घायल हुवा. नवावरो तोपखानो खोस लियो नवाव भाज अक मसीतरै ओलै ऊभो रह्यो महाराजरी असमानी फनै हुई ।
४२२. महाराज वखतसिंघरै वीस तीर लागा ज्यामे तीन तीर तो चार आगळ वैठा दीजा मिलहमे रह्या गोळी अक, गोळो अक लागो श्रीरामजीरा प्रतापसू खैर हुई असवारीरा घोडारै दस तीर लागा अक भाटकै लागो ।
४२३. नवाव नास सैर माय गयो दूजै दिन सेख मुजायदनू वात गरै महाराजा अभैसिंघजी कनै मेलियो कह्यो—महाराजा फुरमावै सू करू दरवार फुरमाया—तोपखानो सारो छोड जा यूहीज हुवो मवत् १७८७ आसोज सुद १२ महाराजरो झंडो रुपियो अहमदावादमे ।
- ४२४ राजाधिराज जग कियो पछै महाराज अभैसिंघ जेसिंघरै सुलह हुई. हरमाडासू कूच कियां पछै जिता रुपिया जैसिंघजीरै खरच पडिया उता देणा किया महाराज अभैसिंघजी उवां रुपयामें भंडारी रतनसिंघनू नै भंडारी मनरूपनू ओळमें सुपिया ।
- ४२५ हरमाडासू कूच हुवो पछै जिता रुपया जैसिंघरै खरच पडिया उवां देणा कर भंडारी रतनचदनू अभैसिंघजी ओळमे दियो ।
- ४२६ अभैसिंघजी वखतसिंघजी गुजरात पधारिया जद कुहोहणरै धणी उगरै अजवेस भाडीमे वोळावो कियो तमक वाणा कोळी ।

- ४२७ मोकळसररै धणी वाळै उदैराज अभेसरी आग्यासू कोटनादरा धणी भाटी फतैसिघ समरावतनू मारियो अभेसरी आग्यासू जद गुडारो राणो सूरजमल भाखरसिघोत उदैराजरी मदत आयो हो ।
- ४२८ उदैराज खीवराज अखैराजोतरो सूरजमल भाखरसी साहिबखान ठाकुरसी ईसरदास उदैराज राणो सूरजमल मासियाळ भाई हुतो ।
- ४२९ सेरसिघ मेडतिया अहमदावाद जावता मारगमे कोळियानू घोडा दिया उवै दारू पीवण आया हा दारू साथ नही जिणसू वात उवारणनू सेरसिघजी घोडा कोळियानू दिया. कुसळसिघजी महाराज अभैसिघजीसू मालम किवी-सेरसिघ . . सिघोतरा घोडा मारगमे खोस लिया कूपै कनीराम वात हुई ज्यू मालम किवी दरवारसू घोडा सेरसिघ सामा मेलिया ७५० ।
- ४३० अहमदावाद भदर मायै अभैसिघजीरी फोज हल्लो कियो जद सेरसिघ निराट आछो हुवो जीवरखो भदर वाजै गुजरातमे ।
- ४३१ मेडतिया सूरजमल सिरदारसिघोत वखतसिघजी कनासू महाराज अभैसिघजी माग लिया गुजरातमे ।
- ४३२ अजमेररै गाव नामसू महाराज अभैसिघ ईसरीसिघजीरै मिळाप हुवो जद भडारी जैपुरसू उठ जोधपुर आयो ।
- ४३३ नागोरसू धाय पुसकरजी स्नान करणनू आयी जद महाराज अभैसिघजी फुरमाया-तू अजमेर आव, हू तो आगै छातीरो ढीब भराणो है सू हू फोडू राजाधिराजरा भयसू आ अजमेर न गयी ।
- ४३४ वीकानेरसू पधार अभेस पुरोहित जगूनू मदनरूपजीनू फरमाया कै माहो-माहरी ईरखा छोड अकमत होय राजकाज करो, हमै म्हारा सरीररी सगती घटी है ।
- ४३५ महाराज अभैसिघजी मिनख मारणरी सोगन पुसकरजीमे छानै लिबी थी ।
- ४३६ अभैसिघजीनू राजाधिराज कपटी कहता ।
- ४३७ जिण सराबसू मासरी बुध भिजोय साधा सरावरो वडो ही पियाक छक जावै उण सराबसू सीसी भर दिलीरै पातसाह महाराजा अभैसिघजीरी हजूरमे भेजी महाराज अक घडी सारी सीसी पी लिबी ।
- ४३८ अभेसनू गलीच विजय हू जवरनू नागोरी राम न्रप कहता ।
- ४३९ अभेसनू गलीच फते हु ज घरनू नागोरी राघव सटूळ कहता ।
- ४४० अभैसरी आण काढता ।

४४१. महाराज अर्भगिधजीरै अजीन गज ताकी ही गो होश मातेम मर्गियो मडन उठाव लेतो ।
४४२. सवन् १७८० रा भादवा वदी ८ महाराज अर्भगिधजी कछवाहा नाता जोगिधजी बेटी विचित्राकर पणिया ।
४४३. कछवाइजीनू पटा ननाउन हुजारो दियो महाराज अर्भगिधजी ।
४४४. गुजरान पधारना निगोहीरै गार पोताछिय निगोहीरा नाररी बेटीरा टांको आयो, महाराज अर्भगिधजी पणिया ।
४४५. लाठीरा धणीरी बेटी वडी भाटियाणीजी महाराज अर्भगिधजी पणिया गुजरान पधारना ।

रामनिध

४४६. सवत १८०५ महाराज रामनिधजी पाट बेठा. सवत १८२५ रामनिधजी देवलोक हुवा ।
४४७. लदाणीरो धणी नरुको केमरीनिध ज्याना दोहना कंदर रामनिधजी सवत १७८७ रा भादवा वद १० जनम पहन जोधपुरमे ।
४४८. वन्तनिधजी रामनिधजीरै छोटी-मोटी वाइन राउ हुई ।
४४९. मेडनै सेरसिधजी काम आया पछै नवम महीनै लोटांवन जादमनिधजी काम आया पछै छठै महीनै नोधपुर रामनिधजी रनाम् वन्तनिधजी लियो.
४५०. जीवण घमियारो १, वन्तो माणी नेडतिया सेरसिधजीरो चाकर २, बीजियो ३, अमीरुव ४ - अँ रामसिधजीरै मनीजता ।
४५१. जीवो घसियारो १, अमिओ डूव २, वन्तो माहणी गियारो चाकर ३, बीजियो ४ - अँ महाराज रामसिधजीरै मनीजता ।
४५२. उदैपुरम् टीको आयो जद जोधपुररा कामेतियांनू कह्यो - जीवण घमियारा कह्याम् राणोजी अमको लडाईरो हाथी अठै मेलै तो टीको लियां कामेतिया नरुकीजीम् मालम करि आपम् मालम करी. माजी फुरमावे है टीको ले लेणो, हाथी पछै ही राणोजी मेल देसी आ बात मान टीको ले लियो, किताईक महीना माजीनू कह्यो हाथी मगाय दियो या कह्यो-उवैही देसपती है, यू हाथी वयूकर मेलै ? जद ।
४५३. राम निरप फुरमाया जीवण घमियारारी अरजसू - राणो लडाईमे सेर अमको हाथी अठै मेलमी तो टीको म्हे राखसा राणाजीरो ।

- ४५४ जद नरूकीजी कहायो - हमै तो टीकारी सामगरी लिराय लेणी पछै ऊ हाथी उदैपुरसू नाठो जद नरूकीजीनू कहायो - अमको हाथी उदैपुरसू मंगाय दो जद नरूकीजी, . . . ।
- ४५५ उवैही राणा है, हाथी लडाईरो मेलसी नही जद राम फुरमाया - माटी मुवो तो पण राडरो मछर मिटियो नही ।
- ४५६ जोधमल भडारीरै गळै दोवडरो टेपो देनै गुजवर कटी ले लिवी उवा विजियानू दिवी राम नप ।
- ४५७ महाराज ईसरीसिंघजीरी बेटी कछवाहीजी १, झळायरा राजावतजी २, चावडजी ३, जाडेवीजी ४ - महाराज रामसिंघजीरै अँ च्यार राणी ।
४५८. चावडीजी, राजावतजी, जाडेवीजी, कछवाहीजी - अँ च्यार राणिया महाराज रामसिंघजीरै ।
- ४५९ झिलायरा राजावत ज्यारै मनीजता महाराज ईसरीसिंघजीरी बेटी कछवाही-वजीरो आध कम हुतो ।
- ४६० झिलायरा राजावतजीरो मान हुतो. कछवाहीजीरो मान नही हुतो रामरै ।
- ४६१ माधवेसरा राजावतानू कहिनै राजावतजीनू जहर दिरायो ।
- ४६२ माधवेस झिलायवाळानू कह्यो - यारी बेटीनू जहर दे मारो तो भ्हारी भतीजीरो मान करै महाराजा रामसिंघजी ।

बखतसिंघजी

- ४६३ राजाधिराज नागोर लियो जद चवदै हजार घरारी बसती हुती ।
- ४६४ राजाधिराज नागोर पधार पहला पवोळी लालानू दिवाण कियो पछै धायरा कह्यासू सिंघवी सायमलनू दिवाण कियो पछै इण मुवा इणरो बेटो अमरचद दिवाण कियो अमरचदनू मार सिंघवी फतैचदनू दिवाण कियो ।
- ४६५ महाराज अभैसिंघजीनू जळाजळी देण राजाधिराज नागोर समस तळाव पधारिया टेगण चढिया किताईक कह्यो - राजाधिराज पाळा है, किताईक कह्यो - राजाधिराज टेगण सवार है ।
- ४६६ महाराज अभैसिंघजीनू जळाजळी देण राजाधिराज नागोरमे समस तळाव है जठै पधारिया टेगण सवार हुया किताक कह्यो - आप पाळा मत पधारो किता लोगा कही-टेगण चढ समसराजाधिराज पधारिया ।
४६७. महाराज बखतसिंघजी जेसळमेर परणीजण पधारिया जद रावळ अखैसिंघनू कह्यो - सिंघरै मिया थाहनै मामलो दियो है क न दियो है ? रावळजी

कही - मिया म्हा कनै मामलो लै जिसा है महाराज फुरमाया अठै म्हारी फौज छव माम रहण दो तो मियानू अवजी मसका बाध आणा ।

४६८ सेरमिघ मेड़नियो काम आयो जद राजाधिराजरै साळो तुंवर सिरदार भाज गयो उणनू चाकरीमू राजाधिराज दूर कियो ।

४६९ सवत १८०८ महाराजा वखतसिघजी जोधपुर लियो मोकमसिघ १, दोलतसिघ २, लालसिघ ३, दोनू चापावत मूरजमल दुरजणमिघोत जोधो ४, महेचो सिरदारमिघ कानसिघोत ५, भाटी महेमदास ६, करनोत जैतकरण महकरणोत ७, धायभाई देवकरण ८, भाटी सुजाणमिघ ९, इत्यादिक गढ जोधपुरो राजाधिराजरी निजर कियो ।

४७० जोधपुर पधार राजाधिराज फुरमायो - अभैकरणजी मसार नही जद निणगारचोकी म्हारो आवणो हुवो ।

४७१ सत्तावन गाव झाडोदरा फतपुररा नवावरा महाराज वखतसिघजी दवाया ।

४७२. जासनु जास याची - राजाधिराज जोधपुर ले फुरमायो - महि राजवी है ज्यानू वाहर काढ आवो, रजपूतारै परणाय देसा मारै वंसरा अजीतसिघोत जोधा वाजसी ।

४७३ राजाधिराज गुजरातसू पधारिया पछै धावड वडिदाम तुरत हीज चलियो ।

४७४ प्रथम सवत १७९२ दिली पधारिया राजाधिराज दूसरै फेरै सवत १८०४ दिली पधारिया ।

गगवाणारा गोरमे, सेल धमाधम खाय,

भोळी नणदळ है हाथ्यारै हौदै वखतो मारु जग करै ।

४७५ नायजी महाराजसू राजाधिराज आपरै नै माधोसिघजीरै विचै मसजत माथै वसाया ।

४७६ राजाधिराज दिखण माथै जावणरी कमर बाधी किवी जद उजीणरै मुकाम सिरदार उठ गया हा मु राजाधिराज देवलोक हुवा ।

४७७ सिघरो मिया नूर महमद बोलियो-हिया माहलो नादरसा आज मुवो ।

४७८. राजाधिराजरी मृत्यु सुण लखनऊरो धणी नवाव मसूरअलीखा कह्यो - दिलीरो जोर घटियो, दिखणरो जोर बधियो हमै ।

४७९. राजाधिराज दिखण माथै चढिया जद उजैण इदौरै मुकाम सिरदार उठ गया आतकसू ।

४८०. जैसिंघजीरी राजाधिराज पाच घोडासू निसरिया ।
- ४८१ सिवसिंघ गाँव मेवाडरो भोमियो जिणनै पनरै हजाररा पटासू लोटोती दिवी राजाधिराज ।
४८२. जैसिंघजीसू राय हुई जद सिवसिंघ आछो हुवो इण चाकरीसू ।
- ४८३ लोटोतीरो सिरदार जोधो सेरसिंघ जिणरी नै कविया करणीदानरी अरज वादरसिंघजी राजाधिराज पगे . . . लियो जद अरज किवी ऊ सेरसिंघजीरी मानै करणीदानरी न मानी ।
- ४८४ मूडवै लाटा और ठीड कराया लाटारी ठोड खेत बागवानानू राजाधिराज इनायत किया ।
- ४८५ गाव हेनाणे च्यार हजार बीघा जोड हुतो, राजाधिराज उनाम करायो ।
- ४८६ जोधपुर पांचमै ताईका गरभणो — आ मरजाद राजाधिराज वाधी ।
- ४८७ कागसू मुडा खासा हाथीरी सवारी होकसू राजाधिराजरी मरजी थी ।
- ४८८ खास रुपियारो सिक्को पातसाह राजाधिराजनू इनायत कियो ।
- ४८९ बीकानेररो राजा गजसिंघजी जोधपुर रातानाडारा डेरासू जेसळमेर परणीजण गया जद महाराजकवार विजैसिंघजीनू राजाधिराज साथै मेलिया ।
- ४९० सवत १८१६ फागण सुद १ चापावत देवीसिंघ महासिंघोत १, ऊदावत केसरीसिंघ बखतसिंघोत २, कूपावत छतरसिंघ रामसिंघोत ३ — अँ तीनू सरदार धायभाई जगनाथ जोधपुर गढ ऊपर पकडिया ।
४९१. सोळोतरै फागण सुद १ देवीसिंघ दिकानू पकडिया ।
- ४९२ दूजा सिरदारा आतमारामजीनू काध दियो जद ससतर खोल दिया हुता देवीसिंघजी ससतर समेत काध दियो ।
४९३. जनानो पघारै है यू कहनै सिरदारा वेली लोहापोळ आडी दिवी सिरदारानू पकडिया जद ।
- ४९४ सिरदारानू गढ माथै पकडिया जद उमर भर गोवरधन पचेस्वर बोलियो ।
- ४९५ सिरदारानू हाथ पडियो जद वै उचाकख थको डोढी पर गोइददास बोलियो—
निगै राखो, रोळ काई करो हो दरबाररा आदमी होयनै ।
- ४९६ सिरदारानू पकडण हाथ पडिया जद डोढी दावै उवाक थको बोलियो —
रोळ काई करो हो ?

- ४९७ देवीसिंघजी वगरै पकडिया ज्यानू रस्सासू बाध भोजनमाळा हेटली ओरिया ज्यामे घालिया हाथा - पगामे वेडी तोखीर कडिया आयी नही जद कडिया मोटी घडाय आरा हाथ - पगा माह घाली ।
- ४९८ देवीसिंघरा हाथ घायभाई जगजी पकडिया कटार - तरवार खीची फन खोस लिवी ।
- ४९९ देवीसिंघ प्रभुखारा हाथ - पग लोहरा वधणरी कडिया घडागी पहला आनूं भोजनसाळा हेटली ओरिया माहे राखिया हुता । -
- ५०० देवीसिंघ महासिंघोत नै पकडाणो जद वोलियो - मै गढमे किवी जिसी गढ मोमे किवी ।
- ५०१ ऊदावत केहरसिंघरै गळामे भवरकडी रहती नित्य सेर पक्की खीचडी खातो हमै पालकीखानो है जठै कैदमे हुतो अढारोतरै देवलोक हुवो ।
- ५०२ ऊदावत केसरीसिंघजीरा गळामे भवरकडी रहती पालखीखानामे कैद रहता. सेर पक्कारी नित खीचडी खाता सवत् १८१८रै रामसरण हुवा ।
५०३. ऊदावत केहरसिंघरा गळारा तोखरी कडीरी साकळ भुरसमे दिवी हुती ।
- ५०४ केहरसिंघ ऊदावतरै गळारी तोखरी कडी भुरसमे दिवी हुती ।
- ५०५ प्रथम तेईसै, पछै अठाईसै, तीजक फेर छतीसै, चौथा फेर तयाळीसै—जुमलें च्यार नाथजीदुवारै वडा महाराज पधारिया ।
- ५०६ अेक वार कोटारा महाराज गुमानसिंघजीसू श्रीजी दुवारै मिलवो हुवो ।
- ५०७ सवत् १८३७ रा मिगसरमे चौवारी राड हुई नै सवत् १८३८ रा मिगसरमे अमरकोट रसद पहुची सिंधियासू राड हुई ।
- ५०८ सवत् १८३० महाराज विजैसिंघजी गयारी गास मारी छोडी ।
- ५०९ लखणेऊरै घणी मनसूरअलीखा विजैसिंघजीनू लिखियो—गुलावरो अतर लिखतो मेलो तिणरै लगावजै नही अखरैरा अतर लगावजै यूहीज कियो ।
- ५१० वडा महाराज सूरजमल सोभागसिंघोतनै फुरमाया—भीरुसिंघजी महर अपणायो जद थारा वडेरा तो महाराज रामसिंघजी तो गेला रता ज्यारो ही परी लाग न कियो म्हे तो सयाणा हा इण अरज किवी - खानाजादरा घड माथै माघोसिंघजी तो अै चरण खानाजाद छोडसी नही ।
- ५११ राजाधिराजरै सात पलारो वागो माहे रहतो, अठचारै पलारो ऊपर रहतो ।
- ५१२ महाराज विजैसिंघजीरै अठचारै पलारो माहे रहतो, इक्कीस पलारो ऊपर रहतो ।

५१३ अटलराज वखतसिंघजीनू, अरजुण विजैसिंघजीनू आतमाराम कहतो.
श्री हजूर फरमावै—

अर्घ-दग्ध-भटास्याज्या राज्ये राजा मनीषिणा ।

यथा त्यजति विश्वेसो वैष्णवान् बहिरुज्ज्वलान् ॥

- ११४ सेखावत किसनसिंघजीरी बेटी जैतकवरवाई बडा महाराज परणिया ।
- ११५ सवत् १८४९रा असाढ वद महाराज विजैसिंहजी देवलोक हुवा ।
- ११६ सवत् १८४९ रा असाढ सुद ८ महाराज भीमसिंघजी गढ दाखल हुआ ।
- ११७ विजैसिंघजी महाराजरी प्रथम गायण, पछै खवास, पछै पासवान हुई गुलाबराय गायणपणमे नाम सुणिया गोस्वामीजी दामोदरजी कनै गुलाबराय बावन ग्रन्थ महाप्रभु आचारज कृत सौ ग्रन्थ गोस्वामीजी कृत, सवत् १७२७ माह वद १३ श्रीजी चोखा कदमखडी पधारिया सकटस्थ कदमखडी अनकोट हुआ काती सुद १५ पाटोदीनू पधारिया श्रीजी च्यार महीना पाटोदी पाट माथै विराजिया, पाटोदीसू सिरोहीनू पधारिया श्रीजी गाव सरणासू पाछा पधारिया सो पुसकरजी होय मेवाड पधारिया, राणा राजसिंघरा भावसू साठ वरस मुथरानाथजी वूदी पधारिया श्रीजी पधारिया पहला सोळा वरसा द्वारकानाथजी मेवाडमे पधारिया इण कारणसू काकरोळीरा गोस्वामीजी राणाजीरा गुर है. गोकुळनाथजी आवेर पधारिया ।
- ५१८ महाराजा जालमसिंघ विजैसिंहोतरै वैजनाथजीरो इसट हुतो ।
- ५१९ नवानगररा महाजामनू, हळवदरा राणानू, ईडरा रावनू, डूगरपुर बासवाहळारा रावळनू जोधपुरसू अेक सरीखी लिखावट ।
- ५२० गाव जोधपुररा ७७ पोहकरणरा, २४६, सोजतरा ४४८, जाळोररा १४४, जेतारणरा ३८४, मेडतारा ६२, फळोदिरा १४९, सिवाणारा ८४, साचोररा महाराज सायबरै ।
- ५२१ मोटाराजा उदैसिंघजी, सवाई राजा सूरजसिंघजी, दळथभण गजसिंघजी, धूखलसिंघजी अभैसिंघजी, राजाधिराज वखतसिंघ —आ पदवी थी ।
- ५२२ चूडोजी मागळियारा भाणेज, रिडमलजी साखलारा भाणेज, जोधोजी भाटियारा भाणेज, सूजोजी हाडारा भाणेज, वाघोजी भाटियारा भाणेज, गांगोजी साचारो चहुवाणांरा भाणेज, राव मालदेजी देवडारा भाणेज, उदैसिंघजी झालारा भाणेज, सूरजसिंघजी कछवाहारा भाणेज, गजसिंघजी कछवाहारा भाणेज, जसवतसिंघजी सगतावतारा भाणेज, अजीतसिंघजी

जादवारा भाणेज, वखतसिधजी साचोरा चहुवाणारा भाणेज, विजैसिधजी रावळोतारा भाणेज, गुमानसिधजी देवडारा भाणेज, मानसिधजी साचोरा चहुवाणारा भाणेज ।

राठोडारी खांपारो इतिहास

सींघल राठोड

- ५२३ भाद्राजूनरो धणी भारमल सिंघल जिण सरवडी दीवी भारमलरो रामो, रामारो सतो, सतारो वीरो सवत १५८६ वीरा सतावतनू मार राव मालदेजी भाद्राजून लियो ।
- ५२४ वीरारै वीसळदे, वीसळदेरै तजो जिण जाळोरीमे गाव मेहेडो वसायो ।
- ५२५ लाविया भाद्राजण सींघलारै हुती ।
५२६. जैतारणरो धणी सींघल नरसिंघ वीदावत सुपियारदे साखळीरो धणी जिणरै वसरा मेवाडमे है, सोळै गावामे है ।
- ५२७ गाव वालाणो डोडियाळ पारवती है जठै सींघाल वाघ गोपाळदासोत रहै छे वरतीरो विगाड घणो करायो ।
- ५२८ सींघल रापावत कवळा वगेरै सोळा गाव जठै रहै जागीरदार थको. सींघल भाणावत वळाणा वगेरै वारह गाव ज्यामें रैवै, सींघल लांकावत कीड़ोमाल वगेरै गाव वधनोरा मदारिया विचै आडावळारी तळहटी ज्यामे रहै ।
- ५२९ सवत १७१२ वैसाख माहे वाळो केसोदास जैतसिंघोत नै महेचो रावळ भारमल साथ करिनै सींघाला ऊपर आया रावळ भारमल जगमालोत साथै सोढो अमरो भोजराजोत १, अमरो सुरताणोत २, सिपोदियो कभो ३, मनो-हरदाम भाखरमीहोत ४, किसनो ऊदावत ५, दळपत ६, बीजो ही साथ घणो हुतो ।
- ५३० सींघल वाघो वीदावत, वीदो सूजावन, सूजो सींहावत कवळा धणी ।
५३१. सींघल वाघो वीदारो, वीदो सूजारो, सजो सींहारो, सींहो भाडारो गांव कवळा १,५००) रेख ।
- ५३२ सींघल सावळदास मानसींहावतरो. गांव पावो, १०,०००) रेख ।
५३३. सींघल जमवतसिंघ रायसिंघ मालावतरो. गांव कुहेळाव ४,०००) रेख ।
- ५३४ सींघल केमगीसिंघ इदा अमंगवतरो गांव जाखोडो. रेख ४,०००) ।

५३५. सायद- वाघरा घरा सिर आग वूठी १ ।
हुवो चितोडसू वियो हेलो २ ।
काटकी आभसू बीज कवळै ३ ।
५३६. वड़ना मोरावास ऊहड अरजुन आसिया नेतानू दियो ।
५३७. सलखो १, जैतमाल २, खीमकरण ३, रावत राणो ४, वैरसाल ५, राघोदास ६, भाखरसी ७, सूरजमल ८, पातो ९, रतनसिंघ १०, आसकरण ११, मनोहर १२, केसरसिंघ १३, बळू १४, खीमो १५, सवाई १६, देवसिंघ १७ - नगररा रावतारी पीढिया ।
- ५३८ तेजमाल सलखावतरो बेटो हाफो जिणरै वसरा मिवणाचा कहावै. सिवणै राणो देवीदास बीजावत हाफारा वसमे हुवो ।
- ५३९ राठोड वरियैचा मलीनाथरा पोतरा है ।

महेचा

५४०. राव मडळक जगमालोतरै तीन बेटा हुवा-रावळ भोजराज १ जिणरा महेचा, खेतसी २ जिणरा कोटडै, वादियो ३ जिणरा जधोळिया ।
- ५४१ मेहवारो राव भोजराज मडळकोत रणखेत पडियो सन्यासिया उठायो ओ सन्यासी हुवो ।
५४२. वेगडो नरो खेतसी मंडळकोतरो जिण महेवो ले लियो नगर राज करै. रावळ भोजराजरी वेर सूरवदरी चहुवाण वेटानू ले सूरचद गयी ।
- ५४३ किताईक वरसा पछै रावळ भोजराज सन्यासी थको गुजरात सामासू जमात ले आयो नगरमे वेगडा नरानू मारियो. महेवारो मालक बीदानै कियो ।
- ५४४ रावळ भोजराज मडळकोत कठईक सन्यासिया घावा उपाडियो साजो हुवो जद सन्यासी हुवो इणरी राणी सूरचद गयी. राठोड वेगडै नरै खेतसी मडळकोतरै महेवो खोस लियो इणरो छोटो भाई रणधीर सिववाडी राज करै रावळ भोजराज सन्यासी थकै जमात आण नगरमे वेगडा नरानू मारियो. वैदा बीदानू टीको दे महेवारो धणी कियो ।
५४५. सवत १६९१ माह माहे पहला जाळोररो गाव मोर सीम मारी पछै निवाई गाव सिवाणरो महेचा मारियो, माह वद ४ गाया १४०, भैसा ३०, बैल ६३०, घोडी ८ ले गया असवार ३०, पाळा ३० हुता ।
५४६. सवत १६९१ माहमें राठोड महेचै महेसदास जाळोररो गाव मोरसीम आयो. हजार माणस लेनै गाव मोरसीम बाळियो लूटियो. धान घणो ले गया पादरियै वेढ कीवी जणा दस पादरियै काम आया. थोरी १५ महेचारा मुवा कै घायल हुवा डेरो कर मोरसीम लूटियो ।

- ५४७ महेवो सूनो कियो जद राठोड देईदास पतारो सांवळदास सोढो अमरो भोज-राजोत मनोहर सादूळ भाखरसी, रावळ महेसदास भारमल इत्यादिक राजाजीरा देसरो विगाड करता ।
- ५४८ सवत १६९१ रा जेठ माहे राठोड देईदास, महेसदासरो भाई सांवळदास, सोढो अमरो साडिया १२० वाळीसरथी ले गया ।
- ५४९ महेचो चद्रसेण वाघ कलावतरो राणा जगतसिंघरी चाकरीमें पटो हजार वारहरो पावै वसी गाव काकर ।
५५०. महेचो ईसरदास खेतसी जसवतोतरो सात हजाररो पटो पावै. वसी गोडवाररै गाव माडळ ।
५५१. साठ गाव महेचारै तीवडी लारै है हमै सिरदार जैतसिंघ उमेदसिंघोत है ।
- ५५२ इंदारो गांव भालू महेचै रायमल उदैसिंघोत मारियो फागण सुदमें इंदो भानो गोपावत जणा च्यारसू काम आयो रायमलरै साथ पाचसौ आदमी हुता, भाटियारो पिण लोक साथ हुतो रावळै गया ऊंट ४, छाळियां १००० महेचा ले गया ।

कोटडिया

- ५५३ वेगडो नरो १, रणधीर २, दूदो ३, वरसिंघ ४-अँ च्यारू खेतसी मडळकोतरा वेटा ।
- ५५४ वेगडो नरो १, रणधीर २, दूदो ३, वरसिंघ ४-अँ च्यारू राठोड खेतसी रावळ मडळक जगमालोतरो जिणरा वेटा ।
- ५५५ कोटडारा राणारी पीढी-रावळ मळीनाथ १, जगमाल २, राव मडळक ३, राव तखतजी ४, रावत दूदो ५, रावत चागो ६, राणो जैतसी ७, राणो वाघो ८, राणो रतनसिंघ ९, राणो भैरदास १०, राणो जोधो ११, राणो सूरु १२, राणो मळवंद १३, राणो उदैभाण १४ सिरदारसिंघ १५, मालदेव १६, धीरतसिंघ १७ ।
५५६. राठोड चापै दूदावत सिववाडीसू कोटडै राजस्थान वाधियो राठोड चापो दूदो खेतसीहोतरो वेटो सू वेगडो नरो माराणो जद नगरसू भागो. इणरो काको रणधीर खेतसीहोत सिववाडी राज करतो हो उठै आयो रणधीर दूदारो पेटियो कर दियो ओ चापो सिववाडी रहै ।
५५७. कितायक वरसा चापै दूदावत रावळ वीदानू कह्यो-म्हारै साथ सातवीस घोडारा सवार रजपूत मेल जद इहुं कही-जे चापा साथै जावो, ओ कस है

कीजो उठासू गाव खरीग जेसलमेररा रावळरी घोडियां ही उठै पावै. सू रावळजी चापै कही जूहीज क्रियो इण वाडी जाय रणधीरनू मार सिववाडी ले लिवी वीदै रजपूतनू कही—म्हारै कह्या बिना रणधीरनू मारियो, मोनू मू दिखावजो मती बै सातवीसी घोडा ही चापारै वास वसिया ।

५५८ आगै पहाड माथै परमारारो करायोडो पक्को कोट हो अेक कोट मांहे बाधियोडो कुवो हो, अेक कोट नीचे पहाडरी जडा बाधियोडो कुवो हो पछै परमारा माथै भाटी सीध देवराज कटक मेलियो जद ओ कोट पड़ाय नाखियो वेरा बुराय दिया चापै ऊदावत सिववाडीसू जाय आगला कोटरी नीम ऊपर तीन पडकोटा कराया, तीन दरवाजा तीनू कुवा उघडिया नाव कोटडो दियो राज-ठोड कोटडो कियो ।

५५९ 'नवलखा-दुरग-नरेस' बाघा कोटडियानू कह्यो—जिणसू जाणीजै है नवलखो दुरग कोटडानू कहै है ।

५६० 'बाघ कुअरा-वीद' बाघा कोटडियारै कुअर सोढी ठकुराणी हती ।

५६१ पीपा राईकारा बेटा-पोतरा साढारो दूध पीधो मेहरो बेटो घूटलवाळै पग समेट सूतो पछै नेतसी भाया भडां सहित साढारी वार चढियो कोटडिया रामाजी मारनै साढा पाछी आणी ते नोर तळै पाणी पाय दोड़ कराय राईकानू दूध पायो उण समैरा हीडोळा—

साढो लोप सो इतरो, गाधी साइरी साध ।
चड्ढि महीरा नेतसी, रातो तरगस बाध ॥
नळी कटाडू नीळी, लप घी अमापियो खाय ।
हाथ-वैतरै आतरै, अै कोटडिया जाय ॥
खेतो पूछै नेतसी, नीलो घोडो काय ।
ग्या ईडररी चाकरी, दियो ईडररै राव ॥

५६२ किलीक पीडिया कोटडै राणो दुरजणसाळ हुवो जिणकनैसू रावळ अखैसिध कोटडो ले लियो दुरजणसाळ सीवाणैरी नाळ जाय रहियो कोट नरेडो रावळ जेसलमेररै पडाव नाखियो ।

५६३. सवत् १८२१ रावळ मूलराजजी दुरजणसाळनू कोटडो दियो पेसकसीरा रुपिया ठैरायनै ।

५६४. फौज जोधपुररी कोटडा माथै आयी उठासू हाकम आण दुरजणसाळ कोटडा मांयसू जेसलमेररो हाकम काढ दियो उण दिनसू सीव जोधपुररा मुसद्दी हाकम रहियो ।

- ५६५ जैसलमेररै रावळ भीत्र रतनू धरमदास उवण गाव दियो. नरो जिणनू कोटडियारा राणा भैरवदास कनै मेलियो वचन दे भैरवदास भीव कनै आणियो भीव भैरवदासनू मारियो वडियाड़ारो ऊ नाम जैसलमेर हेटै घालियो ।
- ५६६ कोटडियो जैसो १, राजसी २, नरहर ३, मेघराज ४, भाखरसी ५. भाखरसीरी बेटो गोमावाई खीची गोवर्धनजीनू परणायी ।
- ५६७ खीमा १, वासाडा २, दोट ३, फळसूडिया ४, कसूवली ५, धारविया ६ - अँ खापा राठोडी महेवामे है धारवियो गाव कोटडारो है ।
- ५६८ वापडाऊरै ठिकाणे राठोड भीमै रतनावत वाढमेर वसायो ।

जैतावत

- ५६९ राठोड अखैराज रणमलोत सीधल चरडानू मार वगड़ी लीवी. चरडालीरो थान कोटडी माहे है. पहला सांभ सभै चिराक चरडाजीरै थान ले जावै पछै वगड़ीरा सिरदार आगै चिराक आणै. अजै आ रीत है ।

अकवररा दळ उळटिया, है घट आया हाल ।

छोटी छोटी लातणी, मोटी कीधी माल ॥

- ५७० पचायण अखैराजोतरै जैतावत वगेरै नव बेटा हुवा ।
५७१. वगड़ीरा सिरदार उरजणसिंघजीनू महाराज अजीतसिंघजी मरायो मेवाडमे सगतावतारा गांवामे उरजणसिंघजी मुवा पछै पहाडसिंघ जनमियो बीकम-कोहर मामालमें दरवाररा डरसू भटियाणीजी पहाडसिंघजी बैठा बेटानू लेने देवगढ गया पहाडसिंघजी देवगढ मोटा हुवा ठाकर राघोदास आगै मनाणा ।
५७२. उरजणसिंघजीरो बडो बेटो सामसिंघ जगावतारै गांव वहमाली परणियो हुतो सो ऊ वहमाली जाय वसियो. वहमालीसू वेगम गयो. उठै महाराज अजीतसिंघजी जहर देय मरायो ।
- ५७३ रामसिंघ उरजणसिंघरो भाई जिणनू चूक कराय घाटामें मरायो. अजीतसिंघजी जैतारण कनै फूलमाल जठारो दाहिमो सलेमावाद फरसरामदेवजीरो शिष्य नाम टीकमदास जिण आपरी वणायी साखां अँक दिन फरसरामदेवजीनू सुणायी जद आ कहीनू तो तत्तवेत्ता हुवो जदसू तत्तवेत्ता कहायो. टीकमदास

जैतारण आय भूतारै यानकमें वसिगा लोका कह्यो अठै भूत रहै है, आप अठै मत रहो. या साखी सुणायी.—

गूदी गोयदरायकी, आंगण रही वणाय ।

आये संत अनतके, भूत गये सब भाज ॥

उण दिनसू जैतारण द्वारो बांधो ।

५७४ वगडीमू विगडी सै वाता ।

५७५. वगडी जैताजी जैतापोळ करायी ।

कूपावत

५७६. महाराज अखैराजोतरै पुत्र कूपो हुआ सिवराव चडूसू महाराजजीरै रेणरो नाव कढा लियो. कूँजी वाईरो ब्याव आछो कियो जद माडै ही नाव प्रसिद्ध हुवो ।

५७७ कूपा महाराजोतरै वेटारी विगत—प्रथीराज १, राम २, प्रतापसिघ ३, माडण ४, तिलोकसी ५, महेस ६, उदैसिघ ७, ईसरदास ८, तेजसी ९ ।

५७८. प्रथीराजोतारी भोम चापडामे माडणजीरा आसोप तिलोकजीरा धणलै महेसजीरा कटाळियै सिरोपारी उदैसिघोत वसी, सीवा, चेळवस, ईसरदासोत माहडू चाडावळ. तेजसीहोत ईडररी धरतीमे है रामाठा चादेळाव रामावत ।

५७९ सवत् १५५९ रा मगसर सुद १० कूपा महाराजोतरो जनम सवत् १६०० काम आयो ।

५८० तेजसी कूपावत अमुतियां सीधलां मारियो तेजसी कूपावतरा वरमें माडण कूपावत सीधल सीहो मारियो संवत् १६२७ माडण कूपावत सीधल सीहो भाडावत मारियो ।

५८१ कनीराम रामसिघोत मार्यै सूरज आवतो जद गामतरै जावतो ।

५८२ आसोप दळयत कनीरामोत तळावरी पाळ ऊपर ब्रगलो करायो जिराणा भूमसू नेडो ओ वगलो करायो पछै अेक वरस दलपत जीवियो ।

५८३ आसोप रगसाळमे नाहरसिघ राजसिघोत गळियोडा अमलसू वकडिया भराया दासियानू कहीनै ठकुराणियानू तेडी बेटा बेटिया सहित ।

५८४ पत्तो कूपावत देईदास जैतावत भेळो मेडतै काम आयो ।

५८५ पातारो हमीर रतन रतनरै बेटा तीन हुआ—मालो १, कलो २, जैमल ३. पातानू बारह गावसू चोटाळो हुतो चोटाळासू जाय करणू वसायी ।

- ५८६ राठोड उदैसिंघ कूपावत जैमलजी पत्ताजी भेलो चित्तोड काम आयो ।
 ५८७ कटाळियारै धणी किसनसिंघ कूपावत आगानूर नवावनू मारियो ।
 ५८८. अमरसिंघ कूपावत वणवीर सोळकीनूं मार सिरियारी लीवी ।
 ५८९ कूपावत महेसदास दलपतोन कांदा विना जीमतो नही ।
 ५९०. राठोड कूपो किसनसिंघ जसवत सादूळोतरो देवळ वणवीर माथै कटक कियो हुतो. निरोहीरो राव अखैराज आयो हुतो पछै राठोड किसनसिंघ, जैसो देवडो भैरूरो सिकार गया हुता पूरणया कोस च्यार आगै पछै वणवीरै साथ आय आदमी तीस मारिया नै जणा वीस घायला किया. किसनसिंघ सादूळोत माराणो ।

वासणी

- ५९१ रामसिंघ १, सिरदारसिंघ २, जोवसिंघ ३, अगंदसिंघ ४, कूपो हरीसिंघ ।

चांपावत

५९२. पोहकरणरा सिरदारांरी पीढियां लिखैतै—रिडमल १, चांपो २, भैरूदास ३, जैतो ४, माडण ५, गोमळदास ६, वीठळदास ७, जोगीदास ८, भगवानदास ९, महासिंघ १०, देवीसिंघ ११, सवळसिंघ १२, सवाईसिंघ १३, सालमसिंघ १४ ।
 ५९३. चांगजीरै वेटा दोय—भैरवदासजी १, सनतोजी २ करण रिडमलोतरै वेटा दोय—लूणो १, नै माणकराव २. मेड़तारो गाव वीदावत खेतसिंघोत चांगवतारो जठासू उठ गोकुळदास चापावत ताळ भोपाळरा राव कनांसू भागली पई पायी ।
 ५९४. चापो गोपाळदास माडणोत १, चांपो सूरजमळ जैतमाळोत २, राठोड ईसरदास ३ नीवावत—अँ भाडवै काम आया ।
 ५९५. संवत् १६५८ चहुवाण वागडिया मानवाद वालारो रावळ उग्रसेणजी ज्यारो उमराव वागडसू छाड गया. पातसाह अकवररो चाकर रह्यो पछै चांपावत सूरजमल जैनमालोत जिण वुरहानपुर अकवररा डेरा उठे ही मान हुतो आ माननू मारियो, रावळ उग्रसेण राजी हुवो वागडमे ब्राह्मणनू कर लागतो सो सूरजमल छुडायो ।
 ५९६. हरनायसिंघ १, अनोपसिंघ २, रूपसिंघ ३—अँ तीन वेटा तेजसिंघ साईदानोत चांपावतरा ।
 ५९७. चांगवत ठाकुर भगवानदासजी भीनमाल जमी माथै ऊभा थका श्रीवाराहजीरै माथै छत्र बांधता, इता प्रचड हुता. हमै सेवग वाराहजीरो तिलक करै है नीसरणीरै तीजै पगोतियै चढनै ।

५९८. चापावत तेजसिंघजीरै तीन बेटा हुवा-बडो बेटो हरनाथसिंघजी ज्यांरा आउवै वीजो बेटो अनोपसिंघ ज्यांरा भीमाळियै तीजो बेटो रूपसिंघ ज्यांरा जाणियाणै वामसीण ।
५९९. हरनाथसिंघरा आउवै, अनोपसिंघरा वांतै भीमाळियै, रूपसिंघरा जाणियाणै वामसीण ।
६००. आउवै वखतावरसिंघजी खीची गोवरवनजी जगनाथोतरो दोहितो, माधो-सिंघजी खेजडलै किसनसिंघजी हठीसिंघोत जिणरो दोहिनो, सिवसिंघ बहेडै राणावत उदैसिंघ सिरदारसिंघोत जिणरो दोहितो, जैतसिंघ सलारी चहुवाण प्रतापसिंघ चतुरभुजोत तिणरो दोहितो, कुसळसिंघ लवरै भाटियारो भाणजो, हरनाथसिंघ दातै वारडारो भाणेज ।
६०१. राणावत उदैसिंघरी बेटो अवाबाई जोधारी भाणेजी जैतसिंघ परणियो ।
६०२. वागलीरो धणी चापावत जिणरी पीढिया- गोपाळदास १, खेमसिंघ २, नारखां ३, हरीसिंघ ४, कुसळदास ५, जालमसिंघ ६ ।
६०३. चापावत जैतमाल जैतावनरै बेटा च्यार-रूपसिंघ १, भाण २, सूरजमल ३, सुरजण ४ भालगढ जेठनरी भाणजीरा ।
६०४. चार-परिया वगेरै ठिकाणा सूरजमलोत वीजासगी नीबरै खारियै रूपसिंघोत. नीवली वातै सुरजणोत ।
६०५. हरसोळावरा सूरतसिंघ राम-उपासीक है उणरी लुगाया वणाया ज्यांरा नांव सीतासर नै इण तळाव खिणाया जिणरो नाव रामसर ।
६०६. चापावत सामसिंघ देवीसिंघोत बाईरो व्याव जैपुरमे कियो बाई उणियारारा राव राजा भीमसिंघजीनू परणायी चारणानू त्याग दियो ।

करनोत (समदडी)

६०७. समदडीरा सिरदारारी पीढिया लिखने-रणमल १, करन २, लूणकरण ३, वीदो ४, नीवो ५, आसकरण ६, दुरगदास ७, चैनकरण ८, मानकरण ९, इंदरकरण १०, सालमसिंघ ११ ।
६०८. राठोड करनो रिडमलोत चवा देहरो करायो सवत् १५८५ माह वद ५-ईंडो चढायो, ब्रह्मभोज कियो, हजार गायं दिवी, घन घणो खरचियो ।
६०९. संवत् १७२१ महा दुर्भिक्ष पडियो आसकरण नीबावत धान घणो वाटियो. राठोडा धणनू देसमें राखियो ।
६१०. सवत् १७२० गाव सालवे आसकरण नीबावत वेरो खणाय बघायो ।
६११. दुरगदासजीरी मा नै खीमकरणजीरी मा सगी भुवा-भतीजी केलण भटियाणी ।

६१२. दुरगदास आसकरणोत केलियारै घरै सरणै रह्यो ।
६१३. दुरगदास आसकरगोतरी वेटी विनैकवरवाई सलूवररा धणी रावत केसरीसिंघनू परणायी दूजी वेटी दुरगदासजीरो कुसळवाई ।
६१४. दुरगदास १, तेजकरण २, अणदकरण ३, रतनकरण ४ ।
६१५. दुरगदास आसकरणोतरी वेटी विनैकवर सलूवर रावत केहरसिंघजीनू
... .. दोहितो रावतलालजी ।
६१६. दूजी वेटी राजवाई साटोलै उमेदसिंघजीनू परणायी ।
६१७. करनोत रतनकरणरी वेटी धनवाई कुरावड कुवर जालमसिंघ उरजणसिंघोतनू परणायी दोहितो रावत जवानसिंघ ।
६१८. बहामीरो धणी करनोत रतनसिंघ जिणरी वेटी धनवाई कुरावड जालमसिंघ उरजणसिंघोतनू परणायी . उण वाईरो वेटी रावत जवानसिंघ ।
६१९. रतनसिंघजीरो वेटी दूजी राजवाई साटोलै उमेदसिंघनू परणायी ।
६२०. तुरकाणीमे दुरगदासजी जूनै बाहरमेड रहै जद झामररा जाट सारा बाहडमेररै गाव कवास घान नीपज्यो जद जितो हासलरो घान बाहडमेररा धणीनै देता इतो ही ठाकराँ दुरगदासजीनू देता हा ।
६२१. उदैपुर राणा जैसिंघजीरै नै कवर अमरसिंघजीरो अमेळ हुवो . कवर उदैपुर वैठो राणाजीनू उदैपुरमू काढ दिया . दस हजार रुपिया खरचीरा मेलिया सगा विवरा सनचार लिख मेलिया महाराज दुरगदासजी वगेरा उमरावांनू मेलिया इर्कलिंगजीरै देवरै कवरनू राणारा पगां लगायो कवर सागररी पैला गयो नै राणाजीनू उदैपुर वैसाणिया ।
६२२. बूदीरा राव अनिरुधिसिंघजीरै नै हाडा दुरजणसिंघजीरै आपसमे अमेळ हुवो दुरजणसिंघजी बाहर नीसर बूदीरो विगाड करता हुता . दिखणसू इण हीज काम पातसाहमू सीख किवी ।
६२३. राव अनिरुधिसिंघजी बूदी आया नै दुरगदास आसकरणोत अनिरुधिसिंघजीरै पगा दुरजणसिंघजीनू मेलिया मेळ कराय दियो ।
६२४. राणाजी सादडी दुरगदास आसकरणोतनू पटै दिवी ही दुरगदासजी नव बहिन-वेदिदारा व्याह सादडी क्रिया चारणानू त्याग दे जस लियो ।
६२५. उदैपुर अमरसिंघरा घोडा लारै दुरगदास आसकरणोतरो घोडो चित्र बीचमें ।
६२६. अस्सी वरस तीन महीना अट्ठाईस दिन, इत्ती ऊमर दुरगदास आसायतरी हुई ।

६२७. वालर वारीरी ठिकानै खीवकरण आसकरणोत गांव वंसायो ।
६२८. तेजकरण मेहकरणजी दोनू कानोडरा सारगदेओतरा भाणेज, अभैकरणजी राव चतुर्भुज चोहाणरा दोहिता. चैनकरणजी बीकमपुररै केलणारा भाणेज ।
६२९. तेजकरणजी महेसकरणजी दोय कुवर दुरगदासजी साथै मेवाडमे गयो अभैकरणजी महाराज जैसिंघजी कनै गया. चैनकरणजी समदडी हीज रह्या ।
६३०. भाखरजी १, करनजी २, काधलजी ३, पातोजी ४-च्यारू अेक माया भाई रोडमलजीरा बेटा ।

बालावत (मोकळसर)

६३१. रणमल १, भाखरजी २, वालोजी ३, भारमलजी ४, नगराजजी ५, जैतसी ६, केसोदासजी ७, माघोदासजी ८, अखैराजजी ९, खीमराजजी १०, उदैराजजी ११, नाथजी १२, लालजी १३, जवानसिंहजी १४ हमै मोकळसर धणी है ।
६३२. भाखरजी १, करनजी २, कांधलजी ३, पातोजी ४-च्यारू अेक माया रिडमलजीरा बेटा ।
६३३. मोकळसररै धणी वालै उदैराज खीमकरण अखैराजोतरै महाराज अभैसिंघजीरी आग्यासू कौटनोदरो धणी भाटी फतैसिंघ अमरावत मारियो गुडारो राणो सूरजमल भाखरसी साहिबखानोतरी मदत लेनै ।

वरसिंघोत

६३४. सोनगिरा खीवा सतावतरी बेटा चपा जोधाजीरी राजलोक जिणरै बेटा दोय हुवा-दूदो १, वरसिंघ २ ।
६३५. रावजी जोधाजी आनू भेलो मेडतारो परगनो दियो आगै सहर मेडतो नही हुतो आं मेडतो वसायो ।
६३६. वरसिंघ कितायक वरसा दूदानू काढ दियो दूदो वीकानेरमे गयो पछै वरसिंघ दुकाळमे पातसाही सहरमे सभर लूटियो अजमेर सूत्रै माडवरा पातसाहरो चाकर मलूखा हुतो उण बोल-कोल दे अजमेरमे वरसिंघनै पकड लियो हुल जैतो सह लोल अजो काम आया वीकानेरसू दूदै वीकै आय वरसिंघनू छुडायो ।

(झाबुओ)

६३७. जोधो १, वरसिंघ २, सीहो ३, जैसो ४, रामसिंघ ५, भीव ६, केसोदास ७, बडो रजपूतदूहुवो, केसोदास मारू कहायो ।

- ६३८ राठोड केसोदास भीवरो, भीव रामसिंघरो, रामसिंघ जैसारो, जैसो सीहारो, सीहो वरसिंघरो, वरसिंघ जोधारो, जोधो रिडमलरो ।
- ६३९ केसोदास मारु कहाणो जावुवो नवो ठिकाणो खाटियो ।
- ६४० जावुवारा राजारी पीढिया लिखते-केसोदास भुव्वा नायकनू मार भावुवो लियो भुव्वा नायकरो वसायोडो जिणसू भावुवो कहायो ।
- ६४१ भावुवो नवो राज खाटियो केसोदासरो मोहणदास, मोहणदासरो राजसिंघ ।
- ६४२ सीकरी राड हुई जिण पहलै दिनरै राठोड जैसो सीहा वरसिंघोतरो राणा सांगारी चाकरीमे हुतो सू पचसू मुवो ।
- ६४३ सावळदास उदैसिंघरो, उदैसिंघ जैसारो, जैसो सीहारो, सीहो वरसिंघरो, सावळदास देईदासजी सामल सरफुद्दीनसू जग कर राव मालदेजीरै काम आयो ।
- ६४४ कुसळगढरा धणी वरसिंघोत जोधा ज्यारी पीढिया- जोधो १, वरसिंघ २, तेजसी ३, आसकरण ४, माल ५, राम ६, जसवतसिंघ ७, अवरेला ८, अजवसिंघ ९, कीरतसिंघ १०, अचळसिंघ ११, भागोतसिंघ १२, जालमसिंघ १३, हमीरसिंघ १४ हमै कुसळगढ राज करै है ।
- ६४५ राठोड तेजसी वरसिंघोतरै भाई बेटै वडी रिया आयी चाडसूं सरवण कछवाहासू वेढ हुई जद तेजसी काम आयो ।
- ६४६ राव जोधारो वरसिंघ, वरसिंघरो तेजसी, तेजसीरो सहसो. सहसानू राव माळदेजी वडी रिया दिवी, वीरमदे दूदावत कनासू मेडतो लियो जद ।
- ६४७ केसोदास १, करण २, महासिंघ ३, कुसळसिंघ ४, इंदरसिंघ ५, वहादुरसिंघ ६, भीरमिंघ ७, कुवर प्रतापसिंघ ८-लखैसिंघोत जोधा है ।
- ६४८ राठोड खेतसी वरसिंघ जोधावतरो वडो रजपूत हुतो सीकरी सागा राणारै वावरसू वेढ हुई जद काम आयो वीरमदे दूदावत नीसरियो ।
- ६४९ खेतसी वीरमदेरै साथ हुतो राठोड ठाकुरसी कलारो, कलो खेतसीरो, खेतसी वरसिंघरो, वरसिंघ जोधारो ठाकुरसी कलावत वडो रजपूत हुवो सात-लियावास सरफुद्दीनसू जग कर राठोड सावळदास उदैसिंघोत राव माळदेजीरै काम आयो जद ठाकुरसी पूरै लोह पडियो जैमल वीरमदेओत इणनू उठायो पछै वासवाळै चाकर रह्यो वासवाळारै रावळ उग्रसेण चापावत सूरजमल जैतमलोत साथै ठाकुरसीनू मेलियो माना चहुवाणनू मारणनू सूरज-मलजी मानानू मारियो जद चहुवाण मानारी लान लागी. ठाकुरसी कलावत काम आयो ।

६५० राठोड ठाकुरसी कलारो, कलो खेतसीरो, खेतसी वरसिंघरो, वरसिंघ राव जोघारो. ठाकुरसी वडो राजपूत हुवो वासवाळारै रावळ उग्रसेणजी चापावत सूरजमल जैतमलोत साथ ठाकुरसीनू मेलियो चहुवाण मानानू मारण बुरहानपुर सूरजमल माना चहुवाणनू मारियो जद मानारी लात लागी ठाकुरसी कलावत मुवो ।

मेड़तिया (दूदावत)

दूदो जोधावत

६५१. वरसिंघ मुवो मेड़ता सायर माथै आदमी जोधपुरसू सातल जोधावतरा आय बैठा वरसिंघरै वेटो सीहो महाकपूत वरसिंघरी ठकुराणी साखली सयाणी जिण वीकानेरसू दूदानै तेडायो इण आय अजमेररा सूत्रदार सिरियाखांरा आदमी मेलिया जिके मेड़ता मायसू काढ दिया मेड़तो आधो दूदै अपणायो नै आधो सीहा वरसिंघोतरो मेड़तो ।

६५२ अजमेरसू सिरियाखा दोडियो देस उजाडियो विगाडियो दूदै अजमेर कनै जग कर सिरियाखानै मारियो पहला जग कर सिरियाखारा हाथी खोसिया हा ।

बीभ नह भेटिया, नह मोल वणजिया ।

.. .. . लाछ दूदै लिया ॥

६५३ दूदा जोधावतरै बेटा पाच हुवा—वीरमदे १, रतनसी २, रायमल ३, रायसल ४, पचायण ५. रतनसी रायसल दोनारै वस रह्यो नही पचायणोत पचास जणा है ।

वीरमदे दूदावत

६५४ वीरमदेव दूदावत कनासू राव मालदेजी मेड़तो लियो उण सलेमसाहनू अरज लिखी पातसाह आग्या किवी—वीरमदेनू अठै भेज दे जद वीरमदेव सलेमसारी हजूर गयो वीकानेरियो किलाणमल ही उठै गयो रावजीरी जबरीरी वाता सुणायी पातसाह वानू साथै ले आगरै आयो रावजी अजमेर आया. पातसाह अजमेर नजदीक रामसर आयो रावजी अजमेरसू दोय कूच पाछा किया पछै सलेमसाह डेरा किया रावजी गररी डेरा किया जद पातसाहजी वीरमदेनू कयो—तू कहतो राव भाज जासी, सो तो राव जोरमें है इण अरज किवी—राव भाज जासी, आप परतीत राखजे. पछै वारैट पत्तानू रावजीरी हजूर वीरमदे मेलियो. उण अरज किवी—

पातसाहरी फोज घणी, फतै होण ज्युं नही, कूपो जैतो झूठी अरज करै है.
आ वात सुण कूपाजी-जैताजीनू विना पूछिया रावजी गुगरोटरा पहाडांनू
रवाना हुवा ।

६५५. पछै कूपाजी, जैताजी, पचायणजी, अखैराजजी, बीदाजी वगेरै रावजीरा उमरावा
बीस हजार घोडांरी वाग उपाड सवत १६०० पातसाहसू जंग कियो प्रभातरै
समै. लरी नदीरै पार वेढ हुई पाच हजार आदमी काम आया ।

६५६ वीरमदे पातसाहनू ले जोधपुर गयो पछै हासम कासम खवास सइयद और ही
उमराव मारवाड़में राख कूच कियो बीकानेर किलाणमलनू दियो, मेडतो
वीरमनू दियो. सवत १५३४ रा मिगसर सुद १४ रो जनम सवत १६००रा
काती वीरमदे मुवो ।

६५७ मागळियो भादो वावड़ीरो वासी जिण राव मालदेजीरी निजर किया सिकारी
कुत्ता जद भादारा वेटा देवो जिणनू चाकरीमे राखियो देवानू वधारियो
सवत १५९४ रावजी जैतमलोत कनांसू सिवाणो लियो जद मांगळिया देवारै
हवालै कियो ।

६५८ देवो सिवाणै राम कह्यो — वीरमदे देवावत वडो सपूत हुवो रावजी मेडतो
ले वीरम देवावतरै हवालै कियो. रावजीरी चाकरी नही करै जिणसू
वळूदा मायसू बीडा वीरमोतनू कढियो ।

६५९ वीरमदे रिया सहसा माथै आयो जद रडोदर थाणासू कूपो मेहराजोत १,
राणो अखैराजोत चापो, जैसो भैरूदासोत इत्यादीक रावजीरा उमराव सहसारी
मदत आया. रियां परै कोस माथै जग हुवो रावजीरा चाकरांरी वारै
वरछी वीरमदे खोस लीवी दस वार छुरी कार घोडो रावजीरी फोजमें
नाखियो वडो पोरख परगट कियो पिण वीरमदेरी फतै हुई नही ।

६६०. संवत १६२४ मे उत्तियो अरजुन रायमलोत जैमल ईसरदासजी सामल चितोड
काम आयो ।

६६१. वीरमदे दूदावत जिणारै वेटारी विगत — जैमल १, सारंगदे २, ईसर ३,
कान ४, चादो ५, माडण ६, प्रथीराज ७, खेमकरण ८, जगमाल ९,
प्रतापसिंघ १०, सेखो ११ ।

जैमल वीरमदेओत

६६२. जैमल पातसाह अक्बररै पगा लागो जद संवत १६१८ जैमलनू मेडतो दियो
साठ हजार घोडासू मिरजा सरफुद्दीननुं मददकार जैमल साथै मेलियो ।

६६३. हुळ रायसळ रामावत जैमलजीरो उमराव बारै गांवासू गाव फालको पटै पावै, प्रथीराज जैतावत मेडतै रणभोम पड़ियो जैमलजीरै हाथ रहियो ।
- ६६४ हुळ रायसळरो भाणेज प्रिथीराजजी जिणसु आ भाणेज माथै छाया किवी. जैमलजी रिसाणा, हुल रावजीरै आय वसियो ।
- ६६५ अकबररी मा मक्का वगेरै मका-सरीफ ज्यारी ज्यारत करण गयी पातसाह मिरजा सरफुद्दीननु साथै मेलियो. अक पीर विलायतमें जिणरी ज्यारत सुहागवती करै, विघवा न करै. ज्यारत करण वासतै विघवा अन्य पुरखसू अवध करि निका पढ लै उण पीररी ज्यारत करणनू अकबररी मा मिरजा सरफुद्दीन साथ निका पढी. दिली अकबररी मा पाछी आयी. जद आ वात सुणी अकबर फुरमायो — आगै तो सरफुद्दीन हमारा चाकर रहा, अब हमारा बाबा है ।
- ६६६ आ वात सरफुद्दीन किणीकै पास सुण लिवी. जठै हुतो जठासू वीठळदास जैमलतनू साथ ले भागो सो मेडतै आयो जैमलजीनू कह्यो— म्हारा कबीला नागोरमे है सो मगाय लेणा जद जैमल आपरै बेटै सादूळनै नागोर मेलियो. सादूळ न.गोर गयो, उठासू मिरजारा कबीला ले मेडतानू खानै हुवो दोय सौ घोडासू नागोररो आमल आ पड़ियो सादूळ झगडो कर काम आयो मिरजारा कबीला मेडतै आया सादूळ चाळीस आदमियासू खेत रहियो ।
- ६६७ जैमल विचारियो—पातसाहमू करी, हमै अठै रहणो नही जद भाई-बेटानू कह्यो—माणस लेनै थे वधनोग्मे जावज्यो, हू सरफुद्दीननू पोछावणनै जाऊ छू जैमल सिरोही ताई मिरजारै साथै गयो पछै नागाणै आय मातारो दरसन कर मेवाडमें गयो ।
६६८. राणाजीसू मिलियो . वधनोर, करैडो, कोठारियो-अँ ठिकाणा राणाजी जैमलनू दिया सवत १६२४ रा चैत वद ११ अकबर चितोड़ लियो जद दोय सौ आदमियासू जैमल राणारै काम आयो ।

वीरतणै घर वीर, दोय णोपी हुई वाण ।

राव अहिरपुर राखियो, इक उदियापुर राण ॥

६६९. मेडतियो सारगदे वीरमदेओत बोलली दिसा गयो हो तैसू मामलो हुवो जठै सोळकिया मारियो. छोटा भाई माडण समेत उण वरमें जैमलजी सोळकियारै परणिया . चादै वीरमदेओत चितोड़ माथै नारायणदास सोळकीनू मारियो ।

६७०. जैमल वीरमदेओतरा वेटांरी त्रिगत-सादूळ १, वीठळदास २, माधोदास ३, सामदास ४, सुरताण ५, नरायणदास ६, केसोदास ७, रामदास ८, हरदास ९, कल्याणदास १०, द्वारकादास ११, गोइददास १२, नरिसंघदास १३, मुकंददास १४ ।

६७१ वडी सोळवणीजीरो वेटो सुळताणजी. जैमळजी छोटी सोळखणीजीरा वेटा तीन-केसोदास १, माधोदास २, गोयददास ३ जैमलजी मांडवरै पातसाह राजा पदवी वीरमदे दूदावतनू दीवी ।

६७२. जगनाथ १, सावळदास २, सूरदास ३, नाथो ४, वलराम ५ पाच वेटा गोयंददास जैमलोतरा ।

६७३ जगनाथ १, सुरदास २, सावळदास ३-तीनू राठोड गोइददास जैमलोतरा वेटा ।

जगनाथोत मेड़तिया

६७४. मेड़तिया जगनाथ गोइददासोतरै नव वैटा हुवा ।

६७५ गोपीनाथ जगनाथोत राव इंदरसिंघजीनू नागोर मायसू कवर मोहकमसिंघ काढ दियो हुतो इण पाछो रावनू नागोर वैसाणियो रावजी नागोररा गांव दिया ।

६७६ मेड़तियो भावसिंघ प्रयागदास जगनाथोत जिण बळाघणारा पातावत वारटनू मातगयण हाथी दियो ।

६७७ नागोररा, मेड़तारा परवतसररा गांव जगनाथोतारा है ।

६७८ मेड़तियो गोपाळदास सुरताण जैमलोतरो, पातसाही चाकर, दिखणमे वीडमी वेढमें काम आयो ।

६७९. राठोड दुवारकादास जैमलोतमे राधा वडो मामलो कियो आज पहला किण-ही राठोड इसो न कियो सवत १६५५ पातसाहरै काम आयो ।

६८०. राठोड केसोदाम जैमलोत गोपाळदास साथै वीडरी लडाईमें काम आयो आयो मेड़तो पटै हुतो ।

६८१ राठोड गिरधरदाम केसोदासोत जैमलोतरानू पातसाह पदमावती पटै दिवी ही, परवतसर पटै हुवो सवत १६८६ खानजहारी वेढमे काम आयो ।

६८२. किसनपुर मेड़तिया सुरताणोत वैरागिया सुजे वैरागियारै भेळा वहै जठै जावै पुण्यरो लेवै, पागमें मोरपत्र राखै. राजावत सिआनै परणावै; उणरै परणीजै महंत सेवादासजी है गाव तावापत्र है ।

६८३. प्रथीसिंघ अखैसिंघ दोनू सामसिंघरा प्रथीसिंघरा खालड बोरावड नै अखैसिंघरा बूढसू मानाणै ।

मेडतिया (घाणेराव)

६८४ वीरमदे १, प्रतापसिंघ २, गोपाळदास ३, किसनदास ४, दुरजणसिंघ ५, गोपीनाथ ६, सूरतसिंघ ७, प्रतापसिंघ ८, पदमसिंघ ९, किसनसिंघ १०, वीरमदे ११, दुरजणसिंघ १२, अजीतसिंघ १३, घाणेरावरा धणी ।

६८५. प्रतापसिंघ वीरमदेवोत मेडतियानू राणौजी पचास हजाररा पटासूँ गाव जनोद मेवाडरो दियो ।

६८६ वीरमदे दूदावतरो बेटो प्रतापसिंघ जिणनूँ राणौजी पचास हजाररा पटासूँ जनोद दीवी ।

६८७ प्रतापसिंघरै गोपाळदास, गोपाळदासरै किसनदास, किसनदासरै घाणेराव महल कराया ।

६८८. गाव घाणैरो बामणारो सासण हुतो अेक वास गूजरगोडारो, अेक राजकुरारो, अेक वास गुँदचारो-जुमलै घाणेरै तीन वास हुता ।

६८९ गूजरगोड, राजगुर, गूदेचा-आ तीन जातरा ब्रामणारो गाव घाणीरो जठै किसनदास गोपाळदासोत महल कराया घाणेराव गावरो नाव परगट हुवो ।

६९० किसनदास मेडतियो आय रहियो जूदमूँ घाणेराव कहाणो ।

६९१. किसनदासरै दुरजनसिंघ, दुरजनसिंघरै गोपीनाथ, गोपीनाथरै सूरतसिंघ, सूरतसिंघरै प्रतापसिंघ, प्रतापसिंघरै पदमसिंघ, पदमसिंघरै किसनसिंघ, किसनसिंघरै वीरमदे, वीरमदेरै दुरजणसिंघ, दुरजणसिंघरै अजीतसिंघ ।

६९२ गोपीनाथजी रामपुरै चालिया राणा अमरसिंघरी वारमे ।

६९३ राणै अमरसिंघ फोज देनै गोपीनाथ मेडतियानू सिरौही माथै विदा कियो, इण बहार गाव सिरौहीरा गोडवाड हेटै चालिया, सिरौहीरी माडीरो दाण राणाजीरो ठैरायो गोपीनाथरी पोतीरो सबध रावरा कुवरसू हुवो ।

६९४ राणै अमरसिंघ . . . घोडै चढिया मेडतिया गोपीनाथ अरज किवी ।

६९५ राणो राजी हुवो ।

६९६ राठोड गोपीनाथरा बेटारी विगत-सुरतानसिंघ १, अनोपसिंघ २, अभैराम ३, हवतसिंघ ४ ।

६९७ सूरतसिंघ १, मोहणसिंघ २, अभैराम ३, अनोपसिंघ ४-अ च्यार बेटा गोपीनाथरा ।

६९८. राणो अमरसिंघ तळाव फोडावतो हो सुरताणसिंघ गोपीनाथोत अरज कर रखायो ।
- ६९९ महाराज अजीतसिंघजी कनै दिली अभैराम गोपीनाथोतनू राणो अमरसिंघजी उकील भेजियो ओ राणारो काम सुधार पाछो आयो . नो . . . ।
- ७०० राणो अभैरामसू उदास हुवो मनने जद सिसोदियो पूरावत कह्यो-अभैरामजी तो आपरी चाकरी पूगा है सू वासू राजी रह्यो जोग है जद राणोजी अभैरामजीसू राजी हुवा ।
- ७०१ नारळाई सादडरारा धणी कोठारियो गाम अभैराम गोपीनाथनू राणै जैसिंघ दियो राम राव माळदेरो जिणरा वंसरा जोधा ज्यारै चाणोद हुई, तिका वा अनोपसिंघ गोपीनाथोतनू दिव्री ।
- ७०२ किसनसिंघ १, विसनसिंघ २, नाथूजी ३, खुमाणसिंघ ४, पहाडसिंघ ५-अ पाच वेटा पदमसिंघजीरै ।

मेड़तिया (रियां)

- ७०३ रियारा सिरदारारी पीढिया लिखते-जैमल १, माधोदास २, सुदरदास ३, गोपाळदास ४, प्रतापसिंघ ५, अचळसिंघ ६, कुसळसिंघ ७, सिरदारसिंघ ८, सेर्गसिंघ ९, जालमसिंघ १०, अमानसिंघ ११, सादूळसिंघ १२, हमै है, पहला रिया इणरा पडदादारै हुतो ।
- ७०४ मिरदारसिंघ १, सूरजमल २, जैवानसिंघ ३, वखतावरसिंघ ४, विरदसिंघ ५, सिवनाथसिंघ ६, हमै रियारा धणी है ।
- ७०५ कुसळसिंघ १, सरदारसिंघ २, सूरजमल ३, जवानसिंघ ४, वखतावरसिंघ ५, विरदसिंघ ६, सिवनाथसिंघ ७-रियांरा सरदारारी पीढी ।

मेड़तिया (आलणियावास)

- ७०६ सुदरदास १, गोपाळदास २, प्रतापसिंघ ३, राजसिंघ ४, कल्याणसिंघ ५, रामसिंघ ६, पदमसिंघ ७, लखधीर ८, फकीरदास ९, भारतसिंघ १०, हणवतसिंघ ११, अजीतसिंघ १२-आलणियावास ।
- ७०७ आलणियावासरा सिरदारांरी पीढिया-प्रतापसिंघ १, राजसिंघ २, कल्याणसिंघ ३, रामसिंघ ४, पदमसिंघ ५, लखधीर ६, फकीरदास ७, भारतसिंघ ८, हणवतसिंघ ९, अजीतसिंघ १०-हमै आलणियावास भोगवै ।
७०८. आलणियावाससू वारसरै दिन राजसिंघजी वगैरे माधोदासोत नै उदावत दोनू खाशंरा मिरदार पुसकरजी तह्वरखासू जग करण चालिया राजसिंघजी प्रतापसिंघोत रथ सवारहुवा रजपूता कही-घोडै असवार होयजे आ कही-

म्हारो पेट ढूँहै है पछै ऊदावत टळ परानू चालिया लोका आनू कह्यो. हू आईज वात वाछतो थो, ओ अवसाण तुरकानू मारि धर चाड धणीरी चाड गऊरी चाड पुसकरराज माथै मरणरो पुसकरराज मोनूं हीज दियो. सो पुसकर-राज म्हारी अरज मानी, घोडो लावो राजसिंघजी घोडै सवार होय कह्यो—पुसकर ! अेक म्हारी हमै आ अरज, आपरा पाणीरो दरसण करि म्हारी लोथ पडै पछै सरस्वतीरा नाळसू वेढ सरु हुई, ब्रह्मघाट माथै जाता लोथा माधोदासोतारी पडी ।

७०९ माधोदासोत राजसिंघजी वगेरै नव सिरदार पुसकरजीरा ब्रह्मघाट माथै काम आया तहवरखासू जग करीनै ।

७१० आलणियावासरो घणी ईसरोत विजैसिंघ छोटो भाई राजसिंघ विजैसिंघजी मुवा पछै विजैसिंघजीरी ठकुराणी बजरगदेजी मरदानी पोसाक कर सस्त्र बाध घोडै चढती तुरकाणीमे वडो डको रह्यो ।

७११. चमाळीस गाव आलणियावासरा नै चारसू ढूढाडरी अजारै दोनू ठिकाणा लिया. सारो राज-काज बजरगदेजी हाथा करता ।

७१२ आलणियावासरो चमाळीसो वानै हो बजरगदेजीरै सात बरस छोड रह्यो, पछै बेटो हुवो ।

७१३. दुरगदासजीरै पटै मेडतो जद आलणियावासरा चमाळीसारा रुपिया भरो अै नटिया पछै मेडतासू बजरगदेजी चढिया रियारी नदीमे वेढ हुई दुरग-दासजी भागा बजरगदेजी जीता—

दोय कोस दोरी दुरगेस ।

७१४ देवराजसिंघ आनू कळक दे मारिया नै बजरगदेजीरो बेटो ही मारियो. बज-रगदेजी कह्यो—मोनू थे झूठो कळक दे मारी है तो राजसिंघ ! थारो नास होय, जो तै साचो कळक दे मोनू मारी है तो थारो तार ही बिगडजो मती ।

७१५. गाव माजी नागोररो तारकीनजीरा मुजावरारै पातसाहरो दियो हुतो उठै विखामे माधोदासोत मेडतिया सरणै हुता ।

मेडतिया (कुडकी)

७१६ श्रीरमदे १, जैमल २, माधोदास ३, सुंदरदास ४, गोपाळदास ५, प्रतापसिंघ ६, अचळसिंघ ७, कुसळसिंघ ८, सिरदारसिंघ ९, सेरसिंघ १०, अमानसिंघ ११, सादूळसिंघ १२, मेडतिया कुडकीग धणियारी पीढिया ।

मेड़तिया (कुचामण)

७१७ कुचामणरा सिरदारारी पीढिया लिखते-रिडमल १, जोधो २, दूदो ३, वीरमदे ४, जैमल ५, गोईददास ६, सावळदास ७, रुघनाथसिध ८, किसोर-सिध ९, जाल्मसिध १०, सोभागसिध ११, सूरजमल १२, सिवनाथसिध १३ ।

७१८ गीत कुचामणरा सिरदारानू वांकीदास कहै-

किसू गणावे पीढिया ख्यात सारी कहे, दुनी प्रव प्रव प्रगट सुजस दीधो ।
कदीही कियो नह रूमणो कुचामण, कुचामण साम-ध्रम सदा कीधो ॥ १ ॥
मृजडै काळ नप विजपती सेवियो, सुख भण गयो विया कमधजा साथ ।
लोह वळ मुरवरा-तणा केवळिया, सूह दूढाड धर हूत सिवनाथ ॥ २ ॥
काकिया जनमिया जिका चाळा किया, टूट रज-वट तिका हूंत दाखी ।
अवरकै रचे रणजीत फोजा अणी, रज करी सरी गत धणी राखी ॥ ३ ॥
दुआ रुघनाथ दूदाणरा विवाकर, वार थारी भली थाळ वागो ।
पहलही मान यह तणा लागो पगा, लगा धम चक अभग आभ लागो ॥ ४ ॥

७१९. सवत १७१५ रा मेड़तिया रुघनाथसिध सावळदासोत . कनासू मारोठ लिबी ।

७२० सवत १७१५ रुघनाथसिध सावळदासोत गोडा कनासू मारोठ लिबी ।

७२१ सवळसिध रुघनाथसिधजीरो, सवळसिधरो इदरसिध, इदरसिधोत विजैसिधोत मारोठमे है ।

७२२. वीरमदेवोत भाटिया कनैसू सराणो रुघनाथसिधजी लियो. जाणियाणो रूपसिधजी लियो ।

७२३ मेड़तिया रुघनाथसिधोत हजूररी . . न चढै, ऊटारै जावतै न चढै घोडो चढ नै फरावै हाथी चढ खवासी न करै . . ।

७२४ रूपसी रुघावत रिमां-राह, आसाम कीध मारत अथाह ।

७२५ रूपसिध १, केहरसिध २, अणदसिध ३, अमरसिध ४-अँ रुघनाथसिध सावळ-दासोतरा वेटा च्यार नरूकारा भाणेज सवळसिध १, विजैसिध २-अँ दोय सेखावतांरा भाणेज ।

७२६. मेड़तिया वनैसिधोत महासिधोत सगतसिधोत मीठडीमे है ।

७२७. मेड़तिया विमनदासोत ज्यारै पहलां जाजपुर पटै रहियो पछै खेरवो पटै रहियो पछै खोड़ पटै पायी राणो जैसिध भाणेज ।

७२८ पुसकरजी कनै चापावतारो ठिकाणो वसी कडैल जठारो भाणेज सीकररो घणी देवसिंघ ।

७२९ मेडतियारै नागणेची ब्रह्माणी है, मीठी कोळी भोग लागै ।

करमसोत

७३० करमसी आपरी बहन भागाबाई नागोररा खाननू परणायी साळा कटारीमे आसोप खीवसर दियो ।

७३१ राठोड करमसी आपरी बहन भागाबाई नागोरी खानू परणायी जद खान साळ कटारीमें आसोप खीवसर दिया ।

७३२ करमसी जोधावत लूणकरण वीकावतरी चाकरीमे रहतो नारनोळरै गाव दुसियै वेढ हुई सू करमसी लूणकरण साथै काम आयो ।

७३३ करमसी भलो राजपूत हुवो लूणकरण वीकानेरियारो चाकर हो . लूणकरण वीकावत नारनोळ ऊपर गयो जद भोमियासू वेढ हुई लूणकरण, कवर प्रतापसिंघ, राठोड करमसी जोधावत गाव दुसियै काम आया ।

७३४ मागळियो भोज हमीरोत जिणरी बेटो दूलदे करमसी जोधावत परणियो पचायण १, धनराज २, नारायण ३, पीथूराव ४-अै च्यार बेटा करमसीरै हुवा मागळियारा भाणेज ।

७३५ उदैकरण १, नारायण २, पचायण ३, पीथूराव ४, धनराज ५-अै पाच बेटा। करमसी जोधावतरा ।

७३६ करमसीरै टीको उदैकरणनू हुवो वरस ४० आसोप यारै रही सेवकी राव गागाजीरै नागोरी खानसू वेढ हुई उदैकरण रावजीरै सामल नै हुवो जद रावजी आसोप जबत कीवी ।

७३७ उदैकरण करमसीरो जिणरै आसोप च्यार वरस रही पछै रावजी गागाजीरै नै नागोरी खानरै सेवकी वेढ हुई उदैकरण रावरी चाकरीमे न गयो रावजी आसोप ले लिवी ।

७३८ उदैकरण करमसोतरो बेटो भानीदास मागळिया वीरमरी चाकरीमे हो वीरमदे साथै काम आयो ।

७३९ उदैकरणरो भवानीदास मागळिया वीरमरो चाकर हुतो सो वीरम साथै काम आयो ।

७४० भवानीदासरै राम, रामरै केसोदास, केसोदासरै प्रागदास ।

- ७४१ रामरै दयालदाम, दयालदासरै बेटा तीन हुवा-लखमीदास १, कुभो २, हरदाम ३ ।
७४२. करमसोत कान्हू खीमावत सोयळा वाळारै वडेरै पीपाड पटै पायी ही ।
- ७४३ हमीर नरा सूजावतरो फळोधीरो धणी गोपाळ नरा सूजावतरो पोकरणरो धणी ।
७४४. पोहकरणा दोडनै विगाड करनै गाव बयाळीस नरावता कनासू लिया ।
- ७४५ गोडद नरावत भाखर माथै पोहकरण कनै गढ करायो नाव सातलमेर दियो हो राव मालदेजी नरावता कनासू पोहकरण लिवी जद सातलमेर पाड सातलमेररा कवाडासू पोहकरणरो कोट करायो ।
- ७४६ नरावतारी वहन-बेटी सासरामे सातलमेरी कहीजै ।

ऊदावत

- ७४७ राव ऊदो सूजावन गाव लोटोती तळाव करायो नाव सूजैळाव दियो ।
- ७४८ सवत १६१४ रा चैत वद ९ अजमेरसू कासमखा फोज ले जैतारण माथै चडियो रतनसी खीवा ऊदावतरो जणा ३५ पैतीससू काम आयो ।
- ७४९ कल्याणदास रतनसिध खीमावतरो जिणरा बेटांरी विगत-दयालदास १, भीव २, मुकनदास ३, वेणीदास ४ ।
- ७५० दयालदासरा राव सुर भीव राड वगेरै भीवदासरा माराही घोळीमे मुकन-दासरा रास नीवाज ।
- ७५१ मुकनदासरै बेटा दोय-मनीराम १, छोटो विजैराम २ जिण रास पटै पायी. पहला रास जो धोळी ।
- ७५२ पीपाड लाव माथै जगराम विजैरामोत पीपाड पटै पायी ।
- ७५३ ऊदावत जगरामसिध पीपाड, कुअर कुसळ जगमालोत कोकलै, अमरसिध कुसळसिधोत दहिया वडी, माधोसिध अमरसिधोत देवगाव वघेरे, कल्याण-सिध अमरसिधोत ताल, दौलतसिध सभूसिध नीवाज मुवा, सुरताणसिध जोधपुर काम आँयो ।
७५४. मुभराम जगरामोत सीरो लियो, पीपाडनै लिवी नही ।
- ७५५ अमरसिध कुसळसिध जगरामोतरै सीरो छोड पीपाड लिवी जगरामजी देवलोक हुवा पछै ।
- ७५६ ऊदावत अमरसिधजीरा वडो बेटो माधोसिधजी वडो अडपदार हो . ऊ चलिया पछै कल्याणसिधजी अमरसिधोत नीवाजरो धणी हुवो ।

- ७५७ अमरसिंघनूं हडोर तकियो जिणसू माघोसिंघ अमरसिंघोत तकियो ले लियो विना दियां ही ।
- ७५८ ऊदावत अमरसिंघरी बेटी देऊबाई राजा उमेदसिंघजीनू परणायी उमेदसिंघजी जीवता राम कही ।
- ७५९ अमरसिंघरी छोटी बेटी गुमानाबाई सायपुरै उदोतसिंघ उमेदसिंघोतनू परणायी उण नीबाज सत कियो ।
- ७६० नीबाज मदन परमार विसनू-अरथ मदिर करायो जद खेजडलासू भेसादरी मूरत आय विराजी ।
७६१. ऊदावत सुखसिंघ वखतसिंघोत केहरसिंघरै छोटे भाई राजा किशोरजीनू मारिया ।

७६२ रास ऊदावत वखतसिंघोत महाराज किसोरसिंघजीनू मारिया अजमेर मे ।

रतनोत जोधा (भाद्राजण)

- ७६३ राव मालदे १, रतनसी २, सादूळ ३, मुकनदास ४, उदैभाण ५, बिहारी-दास ६, वाघ ७, उदैराज ८, उमेदसिंघ ९, जालमसिंघ १०, वस्तावर-सिंघ ११-अै भाद्राजणरा सिरदारारी पीढिया ।
७६४. जोधा रतनसिंघोत गाव गोधणसू उठ मडला कनासू भाद्राजण, सोनिगरा कनासू वालो, डूगरोता कनासू गाव भीवरी लीवी ।

महेसदासोत जोधा (पाटोदी)

- ७६५ जोधा पाटोदीरा ज्यारी पीढियां-राव मालदे १, महेसदास २, रामदास ३, गोइददास ४, सबळसिंघ ५, दुरजणसिंघ ६, सूरजमल ७, जालमसिंघ ८, जवानसिंघ ९, भारतसिंघ १० ।
- ७६६ महेस मालदेवोतरो बेटो रामदास, रामदासरो गोइददास, गोइन्ददासरो सबळसिंघ, सबळसिंघरो दुरजणसिंघ, दुरजणसिंघरो सूरजमल, सूरजमलरो जालमसिंघ, जालमसिंघरो जवानसिंघ, जवानसिंघरो भारतसिंघ-पाटोदीरा ।
- ७६७ राठोड जोगीदास रामदासोत महाराज गजसिंघजीरी आग्यासू बूदेलानू दिल्लीमें मारियो, रामसिंघ जोधारो वैंर लियो पाटोदीरा जोधारो वडैरो जोगीदास ।
- ७६८ पाटोदी नथूसिंघ सूरजमलोत बागडिया देवडारो भाणेज जालिमसिंघ सूरज-मलोत चावडारो भाणेज ।
- ७६९ नथूसिंघरी बेटी लाडूबाई जेसळमेर परणायी मूळराजजीनू बेटो मानसिंघ पाटोदी घोडासू पड मुवो कवरपदै पाटोदी इणरी छत्री है ।

७७०. रात्रळ जैतमाल आगे दुरजणसिंघ जोवो भाज भाद्राजण गयो पाटोदी छोडनै ।
 ७७१. जोधा सवळसिंघरै सात वेटा हुवा पात्र पाटोदी रहिया दोय फळसूड वसिया ।
 ७७२. महेसरो दूदो दूदारा पोता घडसीरै वाडै रहै. महेसरो कल्याणदासरा पोतरा गाव सरवडी रहै ।

रतनोत जोधा (दुगोली)

७७३. मोटो राजा उदैसिंघ १, जैतसिंघ २, हरिसिंघ ३, रतनसिंघ ४, किसनसिंघ ५, सावतसिंघ ६, सिरदारसिंघ ७, राघोदास ८, ग्यानसिंघ ९, सिवनाथसिंघ १०, कवर वखतावरसिंघ ११—जोधा दुगोली ज्यारी पीढिया ।

गोयंददासोत जोधा (खैरवा)

७७४. खैरवारा घणियारी पीढिया लिखते—राव मालदे १, राजा उदैसिंघ २, भगवानदास ३, गोइददास ४, रणछोडदास ५, भीम ६, प्रतापसिंघ ७, इदरसिंघ ८, सवाईसिंघ ९, मानसिंघ १० ।
 ७७५. खैरवै प्रतापसिंघ भीमोतरी बेटी, इदरसिंघरी वहन, देलवाडारो घणी राजा राघोदेव परणियो ।
 ७७६. जोधा केहरसिंघ नरसिंघदासोतरा वेटारी विगत—इन्दरभाण १, चंदरभाण २, गोपीनाथ ३, किसनदास ४, उरजण ५ ।
 ७७७. खाटू किसनदासोत सामै उरजणोत उमरकोटमे रसत घाली जद जोधा केहरसिंघोत छव सिरदार काम आया इकतीस रजपूत काम आया. वधासी घावा उपडिया ।

पातावत

७७८. पातो जोगीदास चाखू पड़ियाळरो घणी मुकुनदास रामचंदोतरो बेटो महाराज वखतसिंघजीरी फोज फळोवी लागी जद महीना कोटमे लडियो पछै प्रोळा खोल महाराज रामसिंघजीरै काम आयो ।
 ७७९. जोगीदाम छोटी भाई तिलोकसी काम आयो रूपावत पाळीरो घणी जोधसिंघ महाराज रामसिंघजीरै काम आयो जोगीदासरै साथ ।
 ७८०. जोगीदास काम आयो जोगीदास पातारा भाई-बेटा पूगळ गया अमरकोट टाळपुर घेरो दियो जद रसद पहुचावणनै जोगीदासरानू विदा किया. केहरसिंघोत रूपावता पाता रसद उमरकोटमे घाली जग कर महाराजरी फर्त किवी जद जोगीदासरानै सामै आया ।

७८१ जोधसिधरो करनसिध, करनसिधरो सिरदारसिध, पाळीरो धणी, भामट भीमसिधजी महाराजरै काम आयो ।

७८२ कळावत जैतमळोत दोय बडा धडा पातावतामे नै आ पछे तीन धडा-गागावत, पातावत, पीथावत ।

७८३ गागावतारो गाव नागोररी पट्टीमे ही है ।

पाळी

७८४ जगतसिध १, पेमसिध २, राजसिध ३, अखैराज ४, लखवीर ५, बीठळदास ६, गोपाळदास ७-पाळीरा सिरदारारी पीढी ।

रोयट

७८५. रोयटरो धणी भगोतसिधजी जिणरी बेटो अक धुलै मेघसिध रुघनाथसिधोतनू परणायी दूजी माहर परणायी. तीजी सामोद नाथावत अजीतसिध सुरताणसिधोतनू परणायी दोहितो रावळ बैरीसाल ।

७८६. महाराज विजैसिधजी बूदी परणिया जद रोयटरै धणी भगोतसिधजी अस्सी घोडा भाटा-चारणानू दिया ।

७८७ राठोड रोयट दळपत गोपाळदासोतनू महाराज गजसिधजी दिवी पछे कल्याणदास दळपतोतरै रोयट रही सगतसिध आइदानोत थोभ छोडी, रोयट लिची ।

नागोर

राठोड़ अमरसिध गजसिधोत

७८८ सवत १६९१ रा पोस वद ९ साहजहा पातसाहरै पाय लागी-कुवर अमरसिध गजसिधोत ।

७८९ अढाई हजार मनसब अमरसिधजीनू दीनो पाच परगना पातसाहजी दीना वडोदर रूणनू १, आतरोदी २, सागोद ३, झोलाव ४, बाळपो ५ ।

१,५०,०००) मे वडोद

७०,०००) सागोद

३,७५,०००) में झोलाव

१,६०,०००) मे आतरोदी

२०,०००) बाळपो

जुमलै ७,७५,०००)

जुमलै ७,७५,०००) रुपियारी जागीर अमरसिधजीनै इनायत हुई ।

- ७९०- राव अमरसिंघ गजसिंघोत पातसाहरो वखमी सालावतखा सादिक वारो बेटो मारियो ।
- ७९१ खलीलखां रावजीरै झटको कियो हाथ ऊपर रावजीरै लागी पछै गौड वीठळदासरै बेटै गौड अरजुण झटको कियो राव पड़ियो ।
- ७९२ सवन १७०१ रा सावण सुद ३ सैद खानजहा पातसाहरो मेलियो आगरै अरमसिंघरी हवेली माथै आयो राठोड वळू भावसिंघ वगेरा काम आया ।
- ७९३ चापो वळू गोपाळदासोत रजपूता पाचासू काम आयो आगरै ठाकुराणी टाकणी सती हुई ।
- ७९४ कूपो भावसिंघ कान्होत काम आयो राजपूता नवसू ।
- ७९५ चापो भीनोकरण भोपतोतरो च्यार रजपूतासू काम आयो ।
- ७९६ वळूजी सामल राठोड सामसिंघ कान्होत कूपो पातसाही दरवारमे अमर-सिंघजीरै साथै काम आयो भावसिंघरो भाई ।
७९७. सोनगरो भोजराज जगनाथोत राव चत्रसालरो चाकर हुतो सो रावजी अमर-सिंघजीरै काम आयो ।
- ७९८ सोगनरो नाथो मानावत काम आयो ।
- ७९९ भाटी गोइददासजी नजदीक था पिण भेळा न होय सकिया चहुवाण तिळो-कसी मेहकरणोत अमरसिंघजीरै काम आयो ।
- ८०० मुहतो जोधो वछावत अमरसिंघजीरै काम आयो ।
- ८०१ सोनगरो जगनाथ जसवत भागसिंघोतरो काम आयो ।
८०२. जोवो केसरीसिंघ नरसिंघदास कलावतरो, वारट चावो- कूपो गोयन्ददास खीवो मांडगोतरो काम आयो ।

रायसिंघ

- ८०३ सवन १६८० अमाढ सुद १० जनम स० १७०१ साहजहा पातसाह राय-सिंघ अमरसिंघोतनू टीको दियो ।
८०४. इद्रसिंघजी ईमरीसिंघजी रायसिंघजीरै कुंवर दोय ।

इन्द्रसिंघ

८०५. महाराज जसवन्तसिंघजी देवलोक हुवा पछै पातसाह औरगजेव नागोररा राव इद्रसिंघ गयसिंघोतनू जोवपुर इनायत कियो इणरी अवाई सुण सिरदारा

जोधपुर गढ सजियो-चापावत सोनगजी, उदैसिंघजी जैतावत परताप-सिंघजी, सूरजमल ऊदावत, जोधो मुकददास, कूपावत हरिसिंघ, वालो प्रयाग-दास, ऊहड भगवानदास, किलैदार ईदो रुघनाथ, पुरोहित अखैराज-इत्यादीक घणी आसामिया मिलनै गढ सजियो ।

८०६ इदरसिंघजी जोधपुर आया विसटाळा फेर ललपत करी साच-भूठ करी पट्टारो लालच दिखाय पातसाहरो जोर दिखाय गढसू सोनगजी वगेरा सिरदारानू उतार आप गढ चढिया पछै सोनगजीरै डेरै कुंवरनै मेलियो ।

८०७ इदरसिंघ रामसिंघोत पातसाह ओरगजेबसू कोल कियो हो-मोनू जोधपुर दीजै, जोधपुर जाय राठोड सतरै कुवधी है ज्यारा माथा काट अठै मेलस्यु ।
दूहो- इदरसिंघ सोनग कनै, दीनो कवर पठाय ।
पख भाद्रव सुद पचमी, बरस छतीसै ताय ॥

८०८ इदरसिंघजी गढ ऊपर गया जद डोढी ताई इदरसिंघजी सामा आया ।

८०९ सवत १७३६ रा भाद्रवा सुद ७ मगळवार राव इदरसिंघजी जोधपुररै गढ टीको लियो पछै राम भाटीनू चूक कर मरायो ।

८१० रावजी अजमेर पातसाहरा पावा गया राठोडारी जोरावरीरा समाचार मालम किया ।

औरगसा अजमेर गढ, आयो दूजी वार ।

जससुणिया जसराजरा, जुडिया सौ जोधार ॥

८११. नाथावत व्यास देवदत्त सोजतरै गाव हुतो जठै रावजी आदमी मेलिया उवा जाय देवदत्तनू कह्यो-रावजीरो हुकम है, बेडी पहर लै, व्यास बेडी पहरी नही, वाजनै काम आयो जगतमें रावजीरो अपजस हुवो ।

८१२ नागोररा राव रामसिंघजी इदरसिंघजीरै खास परवाना ऊपर लक्ष्मी दामो-दररो नाम लिखीजतो ।

८१३ इदरसिंघ नागोररो कोटवाल रूधो मोहिळ कियो विणजारी छती रूधारी खवास जिणरा घाघरारा नाडा मोहर बाधी रहती ।

८१४ पातसाह उदैपुर माथै गयो दहवारी भेली कूपावत उग्रसिंघ काम आयो. राणो राजसिंघ नास पहाडा गयो ।

८१५ राव इदरसिंघजीनू वधनोर थाणै पातसाह मेलिया ।

८१६ सत्यानद सन्यासीरा दुखसू रैत नागोररी दिळी जाय पुकारी इदरसिंघजीरो मनसब जबत कियो औरगजेब जद कूपावत प्रतापसिंघ भावसिंघजीरो पोतो कवर मोहकमसिंघनू ले दिल्ली गयो नागोररी साहिबी पगा राखी ।

८१७ आगँ हुती जिका सिगगार चोकी ढवायनै नवी करायी. डोढीरो वारणो दिखण दिसामें करायो जोधपुररी ख्यतनू घणो दुख दियो रावजी अनीत वरतायी सोनगजी वगेरैरो क्यूही बटै नही सिरदार छाड दुर्गादासजी कनै गया आ कह्यो—नागोरी तरहदार है, हू तो पहलांमूं ही जाण गयो, हमै सारा थोक भला करसा ।

वीकानेर

वीको जोधावत

८१८ वीको जोधावत जागळूरा साखळारो भाणेज ।

८१९. राठोड वीका जोधावतरा वेटारी विगत—लूणकरण १, घड़सी २, बीसो ३, नरो ४ ।

लूणकरण वीकावत

८२० हुसियो गाव नारनोळ कनै है जठै लूणकरण वीकावत काम आयो ।

८२१. उरजण सतावत वीका जोधावतरै काम आयो मोहिळ मारियो ।

८२२. सावत उरजणरो वीकानेररा लूणकरणरै काम आयो ।

जैतसी

८२३ वीकानेरसू सात कोस ऊपर सोहुवो गांव है जठै वीकानेररो घणी राव जैतसी लूणकरणोत कूपा महाराजोतरै हाथ रह्यो ।

८२४ ठाकुरसी जैतसिघोत गयी भोमरो बाळणहार हुवो वीकानेर ।

८२५ राठोड ठाकुरसी जैतसीहोत लूणकरणोत जैतपुरसू जाय तेलीसू मिल निसरण्यां लगाय राठा कनैसू भटनेर लियो ।

८२६ ठाकुरसी भटनेररा तेलीरो दिल हाथ लेनै मूतरा रस्तारी नीसरणीसू तेरह सौ जणांसू भटनेररै किळै चढियो भाटियांनू मार काढिया भटनेर अपणाय लियो ।

८२७ ठाकुरसीजी जैसलळमेर परणिया हुता ।

८२८ वीकानेरियै कल्याणमल जैतसिघोत आपग छोटा भाई ठाकुरसी जैतसिघोतनू जैतपुर ठिकाणो दियो ।

८२९ ठाकुरसीरो बाघ अकवर आगँ कुत्ता ज्यू बाघनूं पकड़ आणियो ।

८३०. ठाकुरसीजीरै वेटो बाघजी हुवो. अकवररी आग्यासू बाघसू बाधिया पडण कमर बांधी बाघ कुत्ता ज्यू हुय गयो. पातसाह घणो राजी हुवो ।

- ८३१ मेडतियो केसोदास सुरताणोत नवावनै मार आगरै रायसिघ कल्याणमलोतरै डेरै आयो इण वाघ ठाकुरसिघोतरै डेरै मेल दियो वाघ केसोदास भेळा काम आय यवनासू जग करियो ।
- ८३२ आ दोनारा माथा कटाय आगरारै दरवाजै वधाय पातसाह जावतानू चौकीदार राखिया. पछै नारणोत वळभद्र राजा रायसिघजीरा कह्यासू दोनारा माथानू जमनारै तट दाग दियो ।
- ८३३ पछै मेडतियो केसोदास सुरताणोत आगरामे नवावनू मार वाघरै सरणै आयो. वाघ केसोदास पातसाहरा सीखासु जग कर काम आया आरा माथा आगरारै दरवाजै टाकिया पातसाहरा हुकमसू माथा ऊपर चौकी बैठी पछै नारणोत वळभद्र माथानू दाग दियो जमनारै तट प्रिथीराजजी कह्यो—
भाई जिके कहीजै वलभद्र जो..... ।

राव कल्याणमल जैतसीहोत

- ८३४ राव कल्याणमल जैतसिघोतरा वेटारी विगत — रायसिघ १, प्रथीराज २, सुरताण ३, रायसिघ ४, गोपाळदास ५, भाण ६, राघवदास ७, अमरो ८ ।
८३५. वीकानेर राव कल्याणमलरै वेटारी विगत — रायसिघ १, प्रथीराज २, सुरताण ३, रामसिघ ४, गोपाळदास ५, भाण ६, राघवदास ७, अमरो ८ ।
- ८३६ राठोड प्रथीराज कल्याणमलोतरै ह्साररी वावनी पटै हुती हमै प्रथीराजोत उठै हीज रैवै है ।
- ८३७ स० १६३८ रा वैसाख सुद ३ सोमवार प्रथीराज कल्याणमलोत रूपक वेल नामे वणायो ।

राजा रायसिघ कल्याणमलोत

- ८३८.....विक्रमाख्यनृपस्य पुत्र श्री लूणकर्णोऽपि न लूणकर्ण ।
श्रीजैत्रसिहोऽहित नागसिंह कल्याण मल्लोऽखिलशत्रुगल्य ।
श्रीराजसिंहस् तनुजोऽस्य राजा, विराजते धर्म-पथस्य गोप्ता ॥
- ८३९ राजा रायसिघजी वारट सकरनू सवा कोड दीवी जद पाडसर साजनसर दोय गाव तावापतर दिया वीकानेररा ।
८४०. वूहो राजा रायसिघ कहै—
करमचद करसो किसू, अन धन जोड अपार ।
नवी जग खाटो नही, ले जासो की लार ॥

८४१ वीकानेर गढ कोट राजा रायसिंघ करायो अधकोस सहर छै जूनो वीकानेर वीकानेर सूरजपोळ बंधा ऊपरै हाथी वे है जैमल पत्तो है बड अेक मोटो वारणो छै बावन बुरज छै उगवणनू पोळसू पडकोटासू तीन पोळ है. पोळ अेक पश्चिम दिसा छै वारी अेक उत्तरनू छै छत्तीस गज कोट ऊचो घरतीथी हाथ पैताळीम कोट नै गज १४ आडो छै गज नव कोट दोळी खाई ऊडी भीन आगणो मगळा छव गज छै कुवा तीन पुरस साठ पाणी मीठो पहला वारै हुता त्या दोळो कोट कराय माय लिया. तळाव घड़सीसर सहरथी कोस दोय पाणी सात मास रहै आठ कुवा सहरकी गिरद साठ पुरस. पाणी मीठो बीस नाडिया पाणी मास दोय तथा तीन रहै सूरसागर पाणी मास छव रहै ।

८४२. लाहोर सम्मन बुरज राजा रायसिंघजी भुरटियारी करायोडी आछी है ।

८४३ वीजा हरराजोतनू रायसिंघ वीकानेरियै सिरौही मायसू काढियो जद आठ हजार पीरोजिया दीवी राव सुरताण पेसकसीरी राजा रायसिंघनू ।

८४४ रायसिंघ कल्याणमलोतरा वेटारी विगत— दळपत १, सूरसिंघ २, भोपत ३, किसनसिंघ ४ ।

८४५. रायसिंघ किलाणमलोतरै वेटारी विगत — दळपत १, सूरसिंघ २, भोपत ३, किसनसिंघ ४ ।

दळपतसिंघ रायसिंघोत

८४६ सवत १६५९ रा सावण वद १ कुवर दळपत रायसिंघोत रायसिंघरा रजपूतां कनासू नागोर लियो ।

८४७. दळपत रायसिंघोत पकडाणो जद वीदासररो घणी दळपतरी चाड जंग कर मुवो ।

८४८. काजी गडगडी चढा'र अजमेररा डेरां दळपत रायसिंघोतनू मारियो जहांगीररी आग्यासू ।

८४९ राठ वैराडी साथ ले दळपतरी मदत आया हुता ज्यानू वीकानेररा उमरावा वमक दे काढ दिया ।

सूरसिंघ रायसिंघोत

८५०. सूरसिंघ भुरटियारी चाकरीमें गाडण चोलो, मीसण चाचो, अेक सीवड जुमलै अै तीन जण चाकरीमें रह्या ।

करणसिंघ सूरसिंघोत

- ८५१ सवत १६९९ रा काती वद ११ रवीवार वीकानेररो राजा करण नागोररो राजा अमरसिंघजी आरी फौजारै जग हुवो गाव सीळवै जद भोपत गोपाळदासोतरा बेटा तीन काम आया अखैराज १, करण २, साहबखान ३ ।
- ८५२ करण सूरसिंघोतरा बेटारी विगत - अनोपसिंघ चन्द्रावतारो भाणेज १, पदमसिंघ हाडारो भाणेज २, केसरीसिंघ सेखावतारो भाणेज ३, अजबसिंघ अहाडारो भाणेज ४ ।
९५३. करण सूरसिंघोतरा बेटा - अनोपसिंघ चन्द्रावतारो भाणेज १, पदमसिंघ २, मोहणसिंघ हाडारा भाणेज ३, केसरीसिंघ सेखावतारो भाणेज ४, अजबसिंघ अहाडारो भाणेज ५ ।

अनोपसिंघ करणसिंघोत

८५४. राजा अनोपसिंघ करणसिंघोतरा बेटारी विगत - सरूपसिंघ कवरपदै देवलोक हुवो १, सुजाणसिंघ २, अणदसिंघ ३, सुदरसिंघ ४ ।

सरूपसिंघ अनोपसिंघोत

- ८५५ वीकानेर अनोपसिंघजीरी गादी देवळियारो भाणेज सरूपसिंघजी बैठा छव महीना राज कियो. सीतळासू मुवा ।

सुजाणसिंघ अनोपसिंघोत

- ८५६ पछै अनोपसिंघजीरी गादी सुजाणसिंघजी बैठा सुजाणसिंघजी अणदसिंघजी दोनू कछवाहा नरवदरा भाणेज राजा गजसिंघजीरा दोहिता ।
- ८५७ अणदसिंघजी रिणी काका केहरसिंघजीरै खोलै गया ।

जोरावरसिंघ सुजाणसिंघोत

- ८५८ जैमलसररो रावत खीवो भाटी, नापासर वेळासररा साखळा प्रोहित सीवड नागोर महाराज वखतसिंघजीसू मिलिया आ कनै वीकानेर आयो आ कयो-वीकानेररा किळामें राजाधिराजरो अमळ कराय देसा, जोरावरसिंघजी वीकानेररो राजा ज्यानू सुपनामे अै समाचार श्री करनीजी फुरमाया जोरावरसिंघजी आठा साखळानू मारिया प्रोहित भाज गया खीची सुदरो खालो पड भागो वीकानेरसू चीधडारो लोक ताकीदसू किळामे आय गयो राजाधिराज देसणोक परासू पाछा पधारिया नागोरनू वीकानेररो गढ हाथ आयो नही ।

- ८५९ राजा जैसिंघजी जैपुरमे राजा जोरावरसिंघ वीकानेररो धणी जिणनू फुरमायो-थारै देसमे मुख है या कही लालसिंघ दोडै है सेखावतारो लोकनै वीकानेररो लोक भादरा माथै गयो लालसिंघनू पकड जैपुर आणियो चीलरै टोळै चढायो ईसरीसिंघजी पाट वैठा जद महाराज अभैसिंघजीरा फुरमावणसू लालसिंघ छूटो ।
- ८६० राजा जैसिंघजीसू वीकानेर-पति जोरावरसिंघ सुजाणसिंघोत मिळियो जद भूकरकारो सिरदार कुसळसिंघ जिणसू मिळ जैसिंघजी फुरमायो-डणारी जिती बहादुरी सुणी ही उती . . . जद हरनायसिंघ नरूकै दीपसिंघ कुभाणी अरज किवी-रजपूतरै मूडै थोडी मूछ हुवै जिकोही काम पड़ियां माठी जणावै आरै मुहडै तो बाथ भरी मूछा है । अ जणावै जिणरो काइ इचरज है ?
८६१. वीकानेररो राजा जोरावरसिंघजी वणाइरा डेरा महाराज जैसिंघजीसू मिळिया जद कुसळसिंघजी भूकरकारा धणी, सांडवारो धणी इद्रसिंघ, महाजनरा धणीरो भाई छोटो भीमसिंघ - अ सिरदार साथै हुता ।

गजसिंघ अणदसिंघोत

- ८६२ वीकानेर राजा गजसिंघ अणदसिंघोत खडेळारा भाणेज कवर राजसिंघ गजसिंघोतरी बेटी सिरदारकवर जैपुर राजा प्रथीसिंघजीनू परणायी महाराज गजसिंघजी ओ व्याव आछो कियो ।
- ८६३ गजसिंघजीरी बेटी पनैकवर बूदीरा रावराजा विसनसिंघजीनू परणायी ।
- ८६४ राजा गजसिंघजीरी वहन इदरकुवर रावराजा उमेदसिंघजीरा बेटा सिरदारसिंघजीनू परणायी ।
- ८६५ वीकानेर प्रथीसिंघजी परणिया जद वरवाडारै राव माचेडीरै धणी प्रतापसिंघजी सेखावत डेरा लुटायो ।
- ८६६ चित्रकवर, विचित्रकवर, सुखकवर-अ तीन बेटी वीकानेररा राजारी राणा राजसिंघजीरा कुवर सिरदारसिंघजी, सुरताणसिंघजी, जैसिंघजीनू परणायो ।
- ८६७ महाराज गजसिंघजीरै भाई तारासिंघजी अणदसिंघजीरी जायगा रिणी दाव वैठा जद मुहतो वखतावरसिंघ फोज ले रिणी गयो काधळोत लाळसिंघरै हाथ तारासिंघजी रह्यो ।
८६८. तारासिंघजी महाराज गजसिंघजीरा छोटो भाई रिणी दाव वैठा मुहतो वखतावरसिंघ महाराजरी विना मग्गी रिणी माथै गयो तारासिंघजी फोज

सामा आया कह्यो—मोनू कुण मारसी ? जद काधळोत लालसिघ तारमिघनू मारिया ।

८६९. तारासिघजीरी बेटा गजसिघजी परणायी . उमेदसिघ रावराजारा बेटा सरदारसिघजीनू परणायी ।

सूरतसिघोत गजसिघोत

८७०. नव दुर्गारा नव मंदिर महाराज सूरतसिघजी कराया वीकानेर ।

८७१ सवत १८८५ रा चैत सुद ८ वीकानेर सूरतसिघजी देवलोक हुवा सवत १८८५ रा चैत सुद १४ उदैपुरमे राणो भीमसिघजी देवलोक हुवा ।

८७२ वीकानेररी हदमें गाव परमारसररो धणी परमार माधोसिघ तिणरा भाणेज तीन महाराज सूरतसिघजीरा कुवर तीन — रतनसिघ १, मोतीसिघ २, लिखमीसिघ ३ ।

वीकानेररा राजा काम आया

८७३ लूणकरण वीकावत दुसियै गाम काम आयो जैतसी लुणकरणोत काम आयो रायसिघ कल्याणमलोत बुरहानपुर देवलोक हुवो. छतरी तापी उपर है वर्ष तिहत्तररी ऊमर हुई सूरसिघ रायसिघोत दिखणमें सहर आभीरी जठै देवलोक हुवो राजा करण सूरसिघोत औरगावाद देवलोक हुवो राजा अनोपसिघ करनसिघोत आदूणी देवलोक हुवो . दिखणमें आदूगी अनोपगावमे छतरी है पदमसिघ करणसिघोत कोकणमे काम आयो ।

फुटकर

८७४ वीकानेररो राजा मूनरो नाम ले सोभवळीरा नाम कहावै ।

८७५ वीकानेर लक्ष्मीनारायणजी धूडजी औ सेव्य साळिग्राम है ।

८७६ वीकानेर राजाजीरै सेवामे करडमे करनीजीरी मूरती रहै करनमहलमे सेवा हुवै पाछो करड निजसेवामे थापित हुवै ।

८७७ वीकानेर पुस्तकसाळामें अक देवी विराजै है ।

कांधलोत राठोड़

८७८ खाटी काधळजीके बाधी वीका ।

८७९ वीका वीकानेर दमोडी काधळा राठानू मार कांधळजी जमी दावी . वीकानेरसू अस्सी कोस उत्तराधनू धमोरो गाव जठै काधळजी ठाकुराई बाधी ।

८८० काधळ रणमलोत हसार काम आयो ।

८८१ चूरुरा काधळ वणवीरोत है ।

वीदावत

८८२ जोधायणमे साख वहै -

अजीतजी स वरदायी, वसुधा जोधै भली वसायी ।

८८३ अजीत मोहलनू मार रावजी जोधैजी जमी लिवी जिका वीदाजीनू दिवी गाँव १७० वीदाहदरा छै, वीदावत द्रोणपुरा कहावै द्रोणपुरो हमै सूनो छै ।

८८४ राठोड वीदा जोधावतरा बेटारी विगत - उदैकरण १, हरीचद २, सहसारचद ३, भीमराज ४, भोजराज ५, वैरसल ६, डूगरसी ७ ।

८८५ वीदा जोधावतरै बेटारी विगत-उदैकरण १, हरचद २, भोजराज ३, भीवराज ४, ससारचद ५, वैरसल ६, डूगरसी ७ ।

८८६ वीदावत द्रोणपुरा कहावै ।

जींजणियाली

८८७ जीजणियालीरो सिरदार भाटी उदैसिंह रामसिघोत जिण वोगनी आईरा मिसणारो भाणेज रतनू राजो मारियो राजै सगा मायानू बोगनी आईमे मारियो इण खूनसू ।

(जाट)

८८८ जाखाणपट्टीरा गाव वीशवतारै पटै जाखड जातरा जाट रय्यत ।

८८९. सीहाकोटीरा गाव १४० महाजनका सिरदारकै सीहाक जाट रय्यत ।

७९० गोदारा जाटारा गाव १४४ भडाणरा वीकानेररा राजारै खाळसारा ।

किसनगढ

किसनसिंघ उदैसिंघोत

८९१ किसनसिंघ राजा उदैसिंघोत जोधपुर हुता जद आरै पटै गाव दुधण्ड हुतो ।

८९२ राठोड घडमी वीत मेवासी हुता ज्यानू मार किसनसिंघ उदैसिंघोत धरती ले किसनगढ वसायो ।

८९३ किमनसिंघजी किसनगढ वसायो जद गुदैलाव कनै गाव वसी १, जिर २, मीरारा मालक मेर किमनसिंघजी इण जमीरा मालक हुवा जद उवा मेरासू मवध मेट मारवाडमे मुमळमानाँसू सवध करणा सरु किया जात माजवी उवासी है ।

८९४. अजमेर राजा किमनसिंघ उदैसिंघोत काम आयो जद करनसिंघ उदैसिंघोतरो यो राठोड करमसेन उग्रसेनोत नागपीठ सौ घाव लागा ।

रातै पूछ कमो वड रावत ,
कल्लै मुख धोळै केवाण ॥

- ८९५ सवत १६७१ जेठ सुद ८ राजा किसनसिंघजी काम आया ।
८९६. किसननू छोड नह जाय किरतो ।
८९७ किमनसिंघजी उदैसिंघोत ज्यानू सोनगिरै उदै रतनसिंघोत राजसिंघ कूपावतरै प्रधान मारिया वळूदरि घणी जगनसिंघजी वै सूरसिंघजीसू मालम किवी ।
८९८ राजा किसनसिंघोत उदैसिंघोतरै बेटा च्यार हुवा-सहसमल १, भारमल २, हरिसिंघ ३, जगमाल ४ भारमलजीरो वस रह्यो तीन निरवस गया ।
८९९ सहसमल १, भारमल २, हरिसिंघ ३, जगनाथ ४-अ च्यार बेटा राजा किसनसिंघरै, सहसमल सात वरस राज कियो ।
९०० हरिसिंघ, सहसमल, जगमाल-आरो वस रह्यो नही ।

रूपसिंघ भारमलोत

९०१ राठोड रूपसिंघ भारमल किसनसिंघोतरो सवत १७१४ घोळपुर राड हुई दारा-सिकोहरै नै औरगजेब मुरादबगसरै जठै काम आयो साहजहारी तरफ. वडो डील हो ।

९०२. रूपसिंघ भारमलोत पातसाहजी सू जागीर पावै जिणरी विगत-

५०,०००)	परगनो किसनगढ
८२,५००)	परगनै अराई
३५,०००)	सलेमावाद
२५,०००)	बाघल सीदरी.
१८,८४६॥)	परगनै अजमेररा गाव
६८,७५०)	परगनै हमनपुर खोहरी
५७,५००)	पटी इदाणारी परगनै नागोररी
१,८७,५००)	परगनो नैणवाय
५४,४०३॥)	परगनो जीडोतो पल्लास
२०,१४७=)	परगनै पीपळाज.
२,००,०००)	परगनै माडळगढ.
२,००,०००)	परगनै अकबरावाद

९,९९,६४७=) री कुल जागीर ।

९०३ सूरसिंघजी हाया चीरो लियो - वंदोवस्तमें हीज रह्या वीरसिंघजी ज्यांरै वेटा अमरसिंघजी कीरकेडो छोटा वेटा सूरसिंघजी वहादुरसिंघजी किसनगढ राज वावियो भाटियांरी साखलारी, जोइयांरी, मोहेलारी, राठारी जमी वीकानेर हेठे दीवी ।

वहादुरसिंघ

- ९०४ किसनगढरा राजा वहादुरसिंघजी लवाणरा बीकावतारा भाणेज हुता ।
- ९०५ हिन्दुस्थानी मुसलमान और मरहठा मुजरो सलाम करता जद वहादुरसिंघजी माथै हाथ लेगावता ।
- ९०६ वहादुरसिंघजीरै नागोरी धमाको खवामे रहतो लोहरी मूठ लोह रातै नाळरी तरवार गलडवै रहती अधोडीरो गलडवो रहतो. नव पलारो मीथो रहतो दम पलारो लवायचो रहतो जाडी पीडिया ताई काछ रहती ।
- ९०७ महाराज वखतसिंघजी जोधपुर ले सिणगारचौकी विराजिया जद घाघळ कनैसू चवर ले वहादुरसिंघजी चवर करण लागा देवीसिंघजी चापै अरज कीवी-वहादुरसिंघजीरी निगाह कीजै जद राजाधिराज वहादुरसिंघजीरो हाथ पकड वहादुरसिंघजीनै बैठाया ।
- ९०८ गाजूदीनखा नवावरै सामा कोस महाराज वहादुरसिंघजी पधारिया किसनगढ दीवाणखानामे गानी माथै गाजूदीनखा वैठो, विछायत माथै वहादुरसिंघजी वैठा महाराज चवरी हाथमे लीवी जद गाजूदीनखा पाल दिया ।
- ९०९ महाराज वहादुरसिंघजी फुरमावता - गाजूदीनखा सरीखो सहूरदार जावनी भासामे प्रवीण दीठो नही ।
- ९१० सवत १८३८ वहादुरसिंघजी देवलोक हुवा जद विरदसिंघजी चाळीस वरसमे हुता, प्रतापसिंघजी २१ वरसरी वयमें हुता ।
- ९११ किसनगढ राजा वहादुरसिंघजीरै पाच वेटी-गुलाबकवर नरवररा राजानू परणायी १, अखैकुवर वूदी अजीतसिंघजीनू परणायी २, रूपकवरवाई जेसलमेर रावळ मूळराजजीनू परणायी ३, वाई अेक उदैपुर राणा अडसीजीनू परणायी ४, वाई अेक देवळियै दिवाण सावतसिंघजीनू परणायी ५ ।

विरदसिंघ

- ९१२ किसनगढ विरदसिंघजीरै च्यार वेटी हुई - अेक उदैपुर राणा अडसीजीरै कुंवर हमीरसिंघजीनू परणायी १, अेक जेसलमेर रावळ मूळसजजीरा कुवर रायसिंघजीनू परणायी २, अेक वणहडै राजा हमीरसिंघजीनू परणायी ३ ।

९१३. किसनगढ विरदसिंघ मद पीतो पण मास खातो नही ।

९१४ चमाळीसै विरदसिंघजी विरदावतामै देवलोक हुवो किसनगढरो राजा ।

सामंतसिंघ (नागरीदास)

९१५. महाराज राजसिंघजी ज्यारा वडा वेटा सामंतसिंघजी नागरीदासजी कहाणा ।

९१६. फतैसिंघजी उण ठिकाणै फतैगढ बाधियो डूगरपुरसू परणीज महीरै तट आय डेरो कियो उठै देवलोक हुवा हाडीजी सत कियो ।

किसनगढरा राजावारा मोसाळ

९१७. किसनगढ मानसिंघजी चूडावतारा भाणेज राजसिंघजी देहचियारा सीसो-दियारा भाणेज बहादुरसिंघजी राणावतारा भाणेज विडदसिंघजी गोडारा भाणेज प्रतापसिंघजी सायमुरारा राणावतारा भाणेज. कल्याणसिंघजी नरवररा धणीरा भाणेज ।

ईडर

९१८. सवत १७८६ रायसिंघजीरो आणदसिंघजीरो अमल ईडरमे हुयो ।

९१९. सरकोटैरो धणी परमार उदैसिंघ बेर। जिणरा हाथरी बरछी महाराज अणद-सिंघजीरै लागी खेत रहिया ।

९२०. महाराज अणदसिंघजीरी बेटी उदैकुवरवाई रावराजा उमेदसिंघजीनै परणायी रायसिंघजीरी बेटी भानकुवरवाई रावराजारा छोटा भाई दीपसिंघ जिणनू परणायी ।

आंबझरा

९२१. आबझरा राठोडारी पीढिया लिखँते—राव गागो १, राव मालदे २, राम ३, कलो ४, राव जसवतसिंघ ५, राव जगन्नाथ ६, राव केसरीसिंघ ७ ।

९२२. जुजारसिंघ ११, राव सर्वाईसिंघ १२, राव अजीतसिंघ १३, हमै आबझरै राज करै हैं ।

९२३. केहरीसिंघ जगनाथोत आबझरारो धणी जैतगर लियो ।

रतलाम

९२४. रतलाम राजारी पीढिया लिखँते—उदैसिंघ १, दलपत २, महेसदास ३, रतन ४, छत्रसाल ५, केहरसिंघ ६, मानसिंघ ७, पदमसिंघ ८, परवतसिंघ ९ ।

९२५. राजा दळपतसाहरो भोपतसाह भोजपुर जिणरो नाम पातसाह जहागीर मुकट-
मणि दियो पच सही हुवो मुकटमणिरो दुरजणसिंघ साहजादा सूजारै चाकर ।
- ९२६ मेडतै राड हुई जद महेसदास दळपतोत आपरी छाती आगै जगरामजीनू
राख दिखणिया माथै चलाया आ कही-आज् काकाजी जगरामजीनू सारां
सिरे करसू महेसदासरा घोडा वाग उपड़ी जद ओ निसर गजसिंघपुरै आयो ।
- ९२७ महेसदास दळपतोतरै गढ गाढो करणरी, गढमे लड मरणरी सदा मनमें रहती ।

दूडो-मघकरका जूझारमल, राजड जिसा निगेम ।

अै पाचू दळ साहरा, पांचू पाडव जेम ॥

- ९२८ दळपत उदैसिंघोतरै अै पाच बेटा-महेसदास १, कनीराम २, जुभारसिंघ ३,
गजसिंघ ४, जसवतसिंघ ५ ।
९२९. चहुवाण वळू सामतसी मेहकरणोतरो महेसदास दळपतोतरो चाकर सवत
१६८५ महेसदास मोहनखारै वसियो जद वळू अदो मोहवतखारो चाकर रहियो.
दिखण मेट्यो हाथ . . . पछै महोवतखां मुवो तद वळू महेसदास दोनू
पातसाहरै चाकर रहिया महेसदासनू जाळोर, वळूनू साचोर दिराणी ।
९३०. रतन महेसदासोतरा बेटा दस - रामसिंघ १, रायसिंघ २, नाहरसिंघ ३, करणसिंघ
४, सत्रसाळ ५, उखैसिंघ ६, प्रिथीसिंघ ७, केहरसिंघ ८, सगतसिंघ ९, जैतसिंघ १० ।
- ९३१ रतलामरो राजा प्रिथीसिंघजी ज्यारी बेटा सुखकवर राणा राजसिंघनू
परणायी ।
- ९३२ भणायरा घणियारी पीढी - राव मालदे १, चंद्रसेण २, उग्रसेण ३, कर्मसेण ४,
स्यामसिंघ ५, उदैभाण ६, केसरीसिंघ ७, तखतसिंघ ८, कवर वखतसिंघ ९,
सालमसिंघ १०, दलेलसिंघ ११, उदैभाण १२, सूरजभाण १३ ।

भिणाय, देवळिया, वघेरा

- ९३३ देवळियारी जोधारी पीढी लिखते - राव माल १, चंद्रसेण २, उग्रसेण ३,
कर्मसेण ४, स्यामसिंघ ५, उदैभाण ६, नाहरसिंघ ७, रघुनाथसिंघ ८, मोहवतसिंघ ९,
दुरजणसिंघ १०, सिवदानसिंघ ११, अजीतसिंघ १२, अखैराज १३, कवर
सादूळसिंघ १४ ।
९३४. वघेरारा सिरदारारी पीढी-उदैभाण १, नाहरसिंघ २, देवकरण ३, कंवर
मालमसिंघ ४, उदैसिंघ ५, कंवर जोरावरसिंघ ६, कुमेरसिंघ ७,
रणजीतसिंघ ८ ।

- ९३५ मोहवतखान कर्मसेण उग्रसेणोतनू सोजत दीवी छव महीना अमल कर्मसेणरो सोजतमे रह्यो ।
- ९३६ विना वैंर राठोड धर्मसेण कर्मसेण उग्रसेणोतरो, बूडीरात्र सत्रसालरो चाकर, जिणनू हाडै बिहारीदास मारियो ।
- ९३७ रामसिंघ कर्मसेणोत वडो दातार, वडो भुजाइयो हुतो राणा जगतसिंघरै वास घणा वरस रह्यो गाव जोजावर घणा गावासू पटै हुवो देवळियैरो धणी रावत जसवतसिंघनू मारियो राणाजीरा कहणासू ।
- ९३८ राठोड रामसिंघ कर्मसेण उग्रसेणोतरो वडो दातार वडी भूजाइया हुती राणा जगतसिंघरो चाकर गाव जोजावर पटै हुतो ।
- ९३९ इण जगतसिंघ राणारा हुकमसू देवळियारो धणी रावत जसवत मारियो पछै पातसाहजीरै, चाकर रह्यो पछै वरवाडो पायो पछै सवत १७१३ काती माहे जगनाथ ईडरियो मूवो जद पटै ईडर पायी सवत १७१४ रा जेठमे घोळपुर काम आयो ।
- ९४० रामसिंह कर्मसेणोत दोय हजारी जात दोय हजार सवार ।
- ९४१ राठोड सेरसिंघ रामसिंघ करमसेणोतरो जिण सवत १७१६ ईडर पायो सवत १७१९ ईडरियो गोपीनाथ आयो भीलानू ले नै ईडर घेरो दियो बुरै हवाल सेरसिंह धर्मद्वार नीसरियो ।
- ९४२ सामसिंघ करमसेणोतरै पटै रेण भिणाय पातसाह अेक वर सालेर मालेर पटै दियो थो ।
- ९४३ किसनसिंघरै विसनदास, इद्रसिंघ अैं दोनू बेटा हुवा इद्रसिंघ दारासाहरै काम आयो ।

पीसांगण

- ९४४ उदैकरणरो सगतो, सगतारो मनोहरदास स० १६७२ महाराज सूरजसिंघजी मनोहरदासनू पटै पीसांगण दीवी ।
- ९४५ पछै वीकानेरिया राजा सूरसिंघ मनोहरदासनू मरायो इण ठाय जोधपुर वीकानेर धण वध वधियो हो ।
- ९४६ पीसांगण सुजाणासिंघ केहरसिंघोतरो कुवर किसनसिंघ वीजैपुररै धणी गौड गरीबदास मारियो वघेरै पछै सुजाणसिंघ गरीबदासनू मार वैंर लियो किसनसिंघरो सुसरो गरीबदास गौड ।

- १४७ तीनू गावासू पीसागण सुजाणसिंघरै पिता केसरीसिंघ अपणायी. केकड़ीरी चमाळीसी सुजाणसिंघ अपणायी ।
- १४८ मुजागसिंघरो पोतो राजसिंघ जिण सपोतरारा ठिकाणा जूनिया महरू वगैरा केकड़ीरी चमाळीभीमे सुजाणसिंघोत जोधा ज्यारा मुहडा आगै आद खांपरा गाठोड है—पुनावत, वाळावत, पातावत सतावत ।
- १४९ जोधो राजसिंघ किसनसिंघ सुजाणसिंघोत जिणनू पातसाह-पुर माडळरो परगगो दियो जगावतारो ठिकाणो पीथसवमपुर माडळरो है जगावता जमने दिवी राजसिंघ पीथावस आय झगडो करना ललुहाणी कोसीथळरा धणिया सहित पीथावसरा धणीनू मारियो ।
- १५० किसनसिंघ सुजाणसिंघोतरा जूनिया जुझारसिंघ सुजाणसिंघोतरा पीसागण आरै करणसिंघ सुजाणसिंघोतरा वडी खिहरू ।
- १५१ राजा उदैसिंघ १, माधोसिंघ २, केहरसिंघ ३, सुजाणसिंघ ४, किसनसिंघ ५, राजसिंघ ६, सिवसिंघ ७, वज्रतसिंघ ८, रूपसिंघ ९, हरनाथसिंघ १०, वैरीसाल ११—अै जूनियारा सिरदारारी पीढिया ।

मसूदो

- १५२ मसूदै परमाल सादूळरै बेटै कुवर भोपत मोटा राजा उदैसिंघजीरो जिणरो ठावो आदमो हुल माडो वीकाउत जिणनू बोली-चाली में वाद वध मारियो ।

प्रकीर्ण

- १५३ आली १, मोहण २, उदैपुर ३—अै तीन ठिकाणा गुजरातमे राठोडारा पावागढ कनै है ।



[३] गहलोतारी वातां

९५४ गुजरातमे तिलगापुर पाटण अठै राजा ग्रहादित्य हुवौ तिणसू गहलोत कहाणा ।

९५५ गहलोतारै वायण चुडाय दीप देवी तिलगापुर पाटणसू उठिया ।

९५६ चौईस साख गहलोतारी लिखते— गहलोत १, मागळिया २, डाहलिया ३, टीबाणा ४, चद्रावत ५, सीसोदिया ६, आसावत ७, मोटसीरा ८, मोहल ९, वला १०, आहडा ११, केलवा १२, गोदारा १३, तिवडकिया १४, बुटिया १५, पीपाडा १६, मगरोपा १७, भावला १८, धीरणिया १९, गोतम २०, हुल २१, मेर २२, बूटा २३, गुहिल २४ ।

९५७ मोरी वस इद्रसू प्रगट हुवौ चित्राग मोरी चित्तोड किञ्चो करायो सीसोदियै रावळ बापै मोरिया कनैसू चित्तोड लियो जद मोरी भाज सोरठ देमनू गया ।

९५८ राणारी वसावळी— रागो महय १, रागो महिपाळ २, रागो गुरवी ३, रागो रूपदेव ४, रागो हरसूर ५, रागो नरसूर ६, रागो नगपाळ ७, रागो तेजपाळ ८, रागो भुवनसिध ९, रागो भीमसिध १०, रागो अजैसी ११, रागो लखमसी १२, रागो अरसी १३, रागो हमीर १४, रागो खेतो १५, रागो लाखो १६, रागो मोकल १७, रागो कुभो १८, रागो रायमल १९, रागो सागो २०, रागो उदैसिध २१, रागो प्रताप २२, रागो अमरसिध २३, रागो करण २४, रागो जगतसिध २५, रागो राजसिध २६, रागो जैसिध २७, रागो अमरसिध २८, रागो सप्रामपिह २९, रागो जगतसिध ३०, रागो अरसी ३१, रागो भीमसिध ३२ ।

९५९ गुहादित्य १, विजयादित्य २, केशवादित्य ३, भोगादित्य ४, आसावरादित्य ५, श्रीदेवादित्य ६, महादेवादित्य ७, गुरुदेवादित्य ८, रावळ बापो ९, रावळ काळभोज १०, रावळ खुमाण ११, रावळ श्रीगोविंद २२, रावळ आळू १३, रावळ सिध १४, रावळ सगतकुमार १५, रावळ गाळिवाहण १६, रावळ नरवाहण १७, रावळ अबप्रसाद १८, रावळ श्रीकीरत १९, रावळ करणादित्य २०, रावळ भादो २१, रावळ गोतम २२, रावळ प्रियहस २३, रावळ जोगराज २४, रावळ भैराडू २५, रावळ वरसिध २६, रावळ तेजसी २७, रावळ समरसी २८, रावळ रतनसी २९, पछै रागो हुवो थो ।

९६० चापो चाहडदेरो करण रावळरो देव रागो १, नरु रागो २, राहप रागो ३, हरसूर रागो ४, जसकरण रागो ५, नागपाळ रागो ६, पुण्यपाळ रागो ७,

पीयड राणो ८, भुवणसी राणो ९, भीमसी राणो १०, अजैसी राणो ११, लखमसी राणो १२ ।

१६१ स० ४२० रावळ बापो हुवो स० ७३१ राजा भोज हुवो स० १२१२ रा सावण वद १२ अदीतवार रावळ जैसै जैसळमेर वसायो सं० १४८६ राणा-पुर प्रमाद मडायो कोट वावडी कराया स० १४११ रा आसोज वद १३ रात्र चूडै गाव चामड वा चामडरो देहरो करायो ।

१६२ हारीत रिख बापा रावळनै वर दियो. इकलगजीरो लिंग प्रगट हुवो पैतीस गज बापारो सरीर वधियो ।

१६३ भोगादित्यगे बापो रावळ बापारो खुमाणं रावळ ।

१६४ आणददे बापा रावळरो वेटो जिणरा मागळिया ।

१६५ चित्तोडरो धणी रतनसेन प्रथम पञ्चिमरा समुद्रमे जहाजा वैस दक्षिणरा समुद्रमे सिंघळदीप जठै कण्टसू पुहतो महाकण्टसू पदमावती लायो ।

१६६ सवत १३५५ राणा रतनसेनरा उमराव गोरो वादळ अलाउद्दीनसू जग कर चित्तोड काम आया ।

राणा साखा

१६७ चित्तोड भुवणसी राणो कहाणो पैला चित्तोड रावळ कहीजता. भुवणसीरो राणो भीमसी ।

१६८ चित्तोड सीमोदियो कहायो जठैसू चित्तोड-पति राणा कहीजै भुवणसीरो भीवसी, भीवसीरो तेजसी, तेजसीरो भड लखमणसी ।

हमीर अडसीहोत

१६९ चित्तोड राणो हमीर चदाणा भोज वणवीरोतरो दोहितो चंदरावरा चंद्रावत कहावै ।

१७० सवा पहोर दिन चढतो जिनै राणा हमीररा माथारा जूडा माहसू गगाजळ नीसरतो ।

१७१ हमीररो भाई चद्रराव सिरोहीरा रावत वीजड पातावतरो दोहितो. चंदरावरा चद्रावत कहावै ।

१७२ राणा अडसीगे दोहितो चाद राव अडसी हेम सिरोही रावत वीजड पातावत जिणरो दोहितो चद्रराव रात्र चद्रावत ।

खेतो हमीरोत

१७३. राणो खेतो हमीगेत जाळोर मालदे मूछाळा सावतसीहोतरो दोहितो ।

- १७४ राणो खेतो जाळोररा धणी चहुवाण मालदे मूछाळो सावतसीहोत जिणरो दोहितो ।
१७५. राणा खेतारै करमा खातण खवास. जिणरै बेटा तीन हुता - चाचो १, मेरो २, अखैराज ३ ।
१७६. राणा खेतारै मेदनीमल खातीरी बेटा करमा खातण खवास हुती जिणरा बेटा चाचो मेरो ।

लाखो खेतावत

१७७. राणो लाखो खेतावत खीची जायळरा धणी धार आनलोतरो दोहितो राणो लाखो जायळरा धणी खीची धार आंदलोतरो दोहितो ।

मोकळ लाखावत

- १७८ राणो मोकळ लाखावत मंडोवर चूडा वीरमदेवोतरो दोहितो. राणो मोकळ राठोड मंडोवररो धणी चूडो वीरमदेवोत जिणरो दोहितो ।
- १७९ नागोरी खानरी सिरकारमें देसमें जिता ही वछेरा हुता उवै राणा मोकळरी नजर हुता, चित्तोडरै तबेलै बंधीजता नागोरी खान राणा मोकळरी ताबैदारी करतो ।
- १८० मोकळरो भाई चूडो सिराही सलखा लूभावतरो दोहितो ।
१८१. चूडो लाखावत सिराही रावत सलखो लूभावत जिणरो दोहितो ।

कुंभो मोकळोत

- १८२ राणो कुंभो मोकळोत रुण सांखळा राणा राजा घडसीहोतरो दोहितो राणो कुंभो रुणरो धणी सांखळो राणो राजो घडसीहोत जिणरो दोहितो ।
- १८३ पेडूरा डूगर माथै राव रिडमलजी चाचा मेरानू मार कुभानू चित्तोड माथै राणारो टीको दियो ।
- १८४ राणै कुंभै समसखा ददानी नागोररो धणी जिणरी मदत किवी पनरै लाख रुपया लेनै नागोरसू हणुमानजीरी मूरत उठाय कुंभळमेर पधरायी ।
- १८५ जोगी नरहर रावळ जिणरी दवासू राणो कुंभो मुवो ।
१८६. खीमो मोकळोत वागडियो चहुवाण पाता वीसलोतरो दोहितो ।
- १८७ महाराज खीमो मोकळोत वागडियो चहुवाण पातो वीसलोत जिणरो दोहितो ।

रायमल कुंभावत

- ९८८ राणो रायमल कुंभावत अजमेर गौड मोटमराव नरसिंहोतरो दोहितो ।
 ९८९. राणो रायमल अजमेररो घणी गौड मोटमराव नरसीहोत जिणरो दोहितो ।
 ९९० ऊदो कुंभारो वूदीरो हाडो राव वैरो वरसिंहोत जिणरो दोहितो ।
 ९९१. ऊदो कुंभारो वूदीरा राव वैरा नरसिंहोतरो दोहितो ।
 ९९२ राणा रायमलरै बेटा-प्रथीराज १, सांगो २, जैमल ३, किसनो ४ ।
 ९९३ राणो सांगो, प्रथीराज, जैमल तीनू हळवदरा भाळा जोधा वाघीतरा दोहिता ।
 ९९४. राणा रायमलरो बेटो प्रथीराज उडणो कहाणो इणरी खवासरै बेटे वणवीर चित्तोड राज कियो. उण कनैसू चित्तोड उदैसिंघजी लियो ।
 ९९५ जैमल रायमलोतनू मार सांगा रायमलोतनू उवार वीदो जैतमालोत सेवन्नी काम आयो ।
 ९९६ प्रथीराज, जैमल, सांगो अैं तीनू राणा रायमलरा कंवर नैं साळो काम आया. पछै काठलैरो प्रगनो दवायो कार्क सूरजमल खेमावत उगमसी भाटी राणी रूपादेरो गुर ।

सांगो रायमलोत

९९७. राणो सांगो हळवदरो घणी झालो राणो जोधो वाघीत जिणरो दोहितो ।
 ९९८. सं० १५६६ रा जेठ सुद ५ वुध राणो सांगो पाट वैठो ।
 ९९९. सलूवररो घणी रतनसी, सादड़ीरो राणो अजोजी, डूगरपुररो रावळ उदै-करणजी, मेड़तिया रतनसीजी, रायमलजी हुदावत इत्यादिक सीकरी काम आया ।
 १०००. राणो सांगो दस करोड़ी वाजतो लाख घोडो चाकरीमे रहतो ।
 १००१ सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ जनम राणा सांगारो. सं० १५८८ भाद्रवा सुद ११ जनम राणा उदैसिंघरो. सं० १६२८ राम कह्यो ।
 १००२ राणा सांगानू कुवर वाघा सूजावतरी बेटो तीन परणायी. धनवाईरो बेटो रतनसिंघ सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ रो जनम सांगारो सांगारी गादी वैठो ।
 १००३. वाघ सूजावतरी बेटो धनवाई चित्तोड राणा सांगानू परणायी. वाईरै बेटो हुवो रतनसी सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ जनम सांगारो ।

१००४. हाडो राव सुरजण नरवदोत बूदीरो घणी जिणरी बेटी सांगो राणो परणियो.
हाडांरा भाणेज सांगारै बेटा तीन- विक्रमादित्य १, उदैसिंघ-२, भोज ३ ।
१००५. राणो उदैसिंघ, विक्रमादित्य, राणो भोज तीनू भाई बूदीरा नरवद भांडावतरा
दोहिता ।

विक्रमाजीत सांगावत

१००६. सं० १५७७ जेठ सुद १२ मांडवगढरै पातसाह चित्तोड बादरसाहजी
विक्रमपाळ राणा कनांसू लीवी जद राठोड उदैदास मूजावत सीसोदियो वाघो
सूरजमलोत काम आया ।
- १००७ सं० १५८९ राणा विक्रमादित्य कनांसू चित्तोड लियो पातसाह बहादुरसाह
मांडवरै घणी ।

उदैसिंघ सांगावत

१००८. राणो उदैसिंघ बूदीरो घणी राव नरवद भाडावत जिणरो दोहितो ।
१००९. सं० १६२४ पातसाह अकबर चित्तोड लियो जद राठोड जैमल वीरमदेवोत
नै पत्तो सामल काम आया ।
१०१०. चित्तोड माथै पदमणीरो तळाव, जैमल पत्तैरो तळाव है ।
१०११. चित्तोड माथै कूकडेसररो कुड अति ऊडो है. जैमल पत्तै साको कियो जद
तोपा सिलहखाना खजाना वगैरै इणमें नाखी ।
- १०१२ अकबर चित्तोड लागो जद चित्तोडरा किलानू सुरग लगाडी सुरग पाछी
फूटी अकबररो घणो लोक उणसू जान हुवो ।
१०१३. चित्तोड ऊपर अकबररै झिलमरै गोळारी फेट लागी ।
१०१४. हजार मैखी दसतो हाथमें पहरियां जैमलजी रातरा तीनू पहरारी चोकीमें
चित्तोडमें आप फिरता. सग्राम नामा बद्रूक अकबररा हाथरी छूटी. गोळी
जैमलरै लागी ।
- १०१५ अकबर चित्तोड भेलियो जद पहलां बावन हाथी मघकर दळसिगार वगैरै
गढरा दरवाजानू चलाया. पहाडखा वगैरै महावत हाथियां चढिया हाथिया
माथै जगी हौदा. जंगी हौदामें तमचा, कडाबीणा, तीर, कवाण, जाळिया
सिपाह बैठा हाथियासू झगड्या राठोड ईसरदास वीरमलोत कीनो निराट
आछो झगडो कियो ।
- १०१६ चित्तोड मिळियो जद साढै तीन सै लुगायारो जवर हुवो ।

१०१७. चित्तोड़ भिल्लियो जद्वि चाळीस हजार सिपाह अकबर पातसाहरो काम आयो, अठारै हजार लोक राणाजीरो काम आयो जिणमे आठ हजार सिरकाररा तावेदार नै दस हजार रअय्यत ।
१०१८. दोय हजार लोक गढमाहलो गढ भिल्लता चोजकर निसर गयो. अक मेवाड़नू मुसलमानरै भेख दूजै मेवाड़ै पकड लियो. इण तरह दूजासू निसरिया ।
१०१९. राणे उदैसिंघरै कंवरांरा मामलांरी विगत - प्रताप माली सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो दोहितो ।
१०२०. उदैसिंघरा वेठारी विगत- परताप सोनगरीरो . पाच वेठा भटियाणीरा- जगमाल १, साह २, सगर ३, अगर ४, पंचायण ५. बीजा कंवर- सगतसिंह १, रामजी २, कान्ह ३, सादूळ ४, रायसिंह ५, कल्याण ६, रुद्रसिंह ७, नगो ८, जैतसिंघ ९ ।
१०२१. जगमाल १, सगर २, अगर ३, साहजी ४, पंचायण ५, राणा उदैसिंघरा वेठा जैसलमेररा रावळ लूणकरण जिणरा दोहिता ।
१०२२. जगमाल १, सगर २, अगर ३, साहजी ४, पंचायण ५, अ पाचू जैसलमेर रावळ लूणकरण जैतसिंहोतरा दोहिता ।
१०२३. राणो प्रताप १, सगतो २, सगर ३, अगर ४, जगमाल ५, साहजी ६, पंचायण ७, रुद्रसेण ८, नगो ९, कानो १०, जैतसिंह ११, सुरताण १२, नेतसी १३, वीरमदे १४ इत्यादीक राणा उदैसिंघरै वेठा ।

प्रताप उदैसिंघोत

१०२४. राणो प्रताप सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो दोहितो ।
१०२५. राणो प्रताप स० १५९६ रा जेठ सुद ३ जनम . राणा प्रतापरै वेठा- अमरसिंह १, सेखो २, सहसो ३, पूरो ४, मानसिंघ ५, कल्याण ६ ।
१०२६. संवत १६६२ सावण वद ७ कछवाहो मान भगवंतदासोत अकबररी फौज ले आयो हळदीघाटै राणै प्रताप वेढ कीवी पातसाहरा उमराव तीनु काम आया. राजा रामसाह ग्वालेररो घणी १, रामसाहरो वेठो साळवाहण २, राजा बीठळदास ३ ।
१०२७. हळदीघाटी राणा प्रतापरा चाकर काम आया ज्योरी विगत- कान्ह १, कलो २. दोय भाई प्रतापरा काम आया ।
१०२८. मेड़तियो रामदास जैमलोत जणा ९ सू काम आयो ।

१०२९. सोनगरो मानसिंह अखैराजोत जणा ११ सू काम आयो ।

१०३०. राठोड साईदास पचायणोत जैतमल जणा १३ सू काम आयो. सीधल वागो १, नै जैमल २, चहुवाण दुरगो ३, वागडियो ४, मेघो खावडियो ५ ।

१०३१. सं० १६३२ पातसाह अकबररै उमराव सहवाजखा गढ कुभळमेर लियो जेद सीधल सूजो सीहावत, सीधल कूपो भाडावत, सोनगरो भाण अखैराजोत, मुहतो नरवद गढरो सिलैदार, मागळियो जैतो जैमळ काको नै भतीजो इत्यादीक काम आया ।

१०३२. सं० १६१३ पातसाह अकबररी फौज कुभळमेर लियो. सीधल कूपो भाडावत, सीधल सूजो सीहावत, सोनगरो भाण अखैराजोत काम आया ।

उदैसिंघरा दूजा बेटा

१०३३. सगतो तोडो सोळकी प्रथीराज सुन्द्रसेनोतरो दोहितो ।

१०३४. भाण सगतावत मोटा राजारी बेटो राजकवरवाई परणियो भाणजीरी बेटो महाराज गजसिंघजी परणिया जसवतसिंघजीरै सगो मामो सामसिंह भाणावत ।

१०३५. गोकुळदासरा बेटारी विगत— सुंदरदास १, जुझारसिंघ २, दूदो ३, अजबसिंघ ४, फतैसिंघ ५, रुघनाथ ६, जगनाथ ७, वीरमदे ८, कल्याणसिंघ ९, हाथीसिंघ १०, हिम्मतसिंघ ११ ।

१०३६. सुंदरदास जुझारसिंघ दोनू पातसाहरा चाकर ।

१०३७. रुघनाथसिंघ काम आयो रामसिंघ भीम अमरसिंघोतरै आगै ।

१०३८. केसोदास भाणावत मोटा राजारो दोहितो. भाटियाणी सजना नानी हुती. अ केसोदासजी घणा वरस नानी कनै रह्या गाव सेरेचो मोटा राजारो दियो पटै हुतो ।

१०३९. अचळदास सकतावत रावत कहावै, वेगमरो धणी हुतो इणनू राणै अमरसिंघ कह्यो—तू ही मोनू दुखदायक सगर ज्यू ही है ।

१०४०. अचळदासरा बेटारी विगत—नरहरदास १, नारायण २, राणो सगर नारायणदासनू रावताई दीवी ।

१०४१. वळू सगतावत ऊटाळै काम आयो, राणा अमरसिंघजीरो उमराव ।

१०४२. भगवानदास सगतावत राणाजी वूढ पटै दीवी ।

१०४३. जोधो सगतावत ।

- १०४४ माडण सगतावत मऊ खीचियारो चाकर ।
१०४५. सवत १६१६ रा भाद्रवा वद ३ सीसोदिया सगर उदैसिघोतरो जनम. पातसाह जहागीर मया कर अजमेर नागोर चित्तोड दे राणाई दीवी. वाराहजीरो मदिर पुष्कर इण करायो ।
- १०४६ सगर उदैसिघोतनू पातसाह रावताई दे पूरवमें जागीर दीवी, राणै अमरसिघजी चाकरी कबूल कीवी जद ।
- १०४७ सगररा वेटारी विगत— इद्रसिघ १, मानसिघ २, आसकरण ३, मोहणसिघ ४, हरीराम ५ इद्रसिघ सेखावतारो भाणेज कुंवरपदै मुवो. मानसिघ सेखावतारो भाणेज ।
- १०४८ सं० १६३८ माह सुद १४ रो जनम सगरजीरै पाट रावताई पायी, पूरवमें जागीर पायी ।
१०४९. महोकम मानसिघोत मानसिघरै पाट काबुल उरै पेसोर जठै धारयो छै ।
- १०५० मोहणसिह कवरपदै देवलोक हुवो इणरो वेटो मदनसिह जिणनू महोवतखां कह्यो—मै तोकू जागीर दू पिण तेरा काका मानसिघ वरजै है आ वात सुण मानसिघ पेट कटारी खाय मुवो ।
- १०५१ खीचीवाड़ै परै उमरी भोदारो अ ठिकाणा सीसोदिया सगर उदैसिघोतरा छोरुआरा है ।
- १०५२ अगर राणो उदैसिघजीरो, जिणरो जसवत पहला राणा सगररै चाकर हुतों पछै रावळै चाकर रह्यो सं० १६७२ सोजतरो सिणलो गांव पटै हुतो. सं० १६७३ वुरहानपुर छाडियो महोवतखारै वसियो सं० १६७२ रावळ वेसियो सोजतरो धवळहरो गाव ११ सू दियो पछै महोवतखा कहायो इण कुमत राखी जद सं १६८० सीख दीवी ।
- १०५३ साहजी राणा उदैसिघरो, जिणरै दुरजणसिघ कछवाहा राजा वडा जैसिघजीरो मामो ।
- १०५४ साहजीरा वेटारी विगत—दुरजणसिघ १, माधोसिघ २, मथुरादास ३ ।
- १०५५ नगो वीकानेरिया कल्याणमल जैतसिहोतरो दोहितो ।
- १०५६ कानो राणा उदैसिघरो परमार करमचदरो भाणेज ।
- १०५७ कान्ह मेदडेचा चहुवाण नैघण अमरावतरो दोहितो ।
- १०५८ रुद्रसिघ १, जैतसिघ २, हळवद झाला सजा राजघरोतरो दोहितो ।

१०५९ कानो राणा उदैसिंघरो परमार करमचंदरो भाणेज ।

१०६० रुद्रसिंघ राणा उदैसिंघरो जिणनू सुरजण वालीसै मारियो जद नाणवे डावा ले सास छूटो ।

१०६१ सुरताण १, सादूळ २, चद मेहराजोत खीचीरा दोहिता ।

राणा प्रताप

१०६२. राणा प्रतापरा कंवरा रा मामला विगत - अमरसिंघ १ पूरबिया परमार मयारखखा असोकमलोतरो दोहितो ।

अमरसिंघ प्रतापसिंघोत

१०६३. राणो अमरसिंघ पूरवरो परमार मयारखखा असोकमलोत तिणरो दोहितो ।

१०६४ राणो अमरसिंघ पवारारो भाणेज पातसाह जहागीर अजमेर आयो जद साहजादा खुरमनू अजमेर मेलियो साहजादै गोगूदै तखत करायो राणो अमरसिंघ गोगूदै खुरमसू मिलियो ।

१०६५. राणो अमरसिंघ सं० १६१६ रा चैत सुद ७ जनम सं० १६६६ उदैपुर पाट बैठो ।

१०६६ सं० १६६६ रा फागण सुद ११ वेढ हुई नवाब अबदुल्लाखारै नै राणा अमरसिंघरै जद इणारा इता उमराव काम आया - मेडतियो मुकददास जैमलोत १, जैतारणियो हरिदास वळू तेजसिंघोतरो २, सीसोदियो दूदो सांगावत ३, भालो भोपत ४ ।

१०६७ सं० १६७१ राणा अमरसिंघजी गोगूदे राजा सूरसिंघजी नवाब अफजलखारी वाहसू खुरमसू मिलिया चाकरी कबूल कीवी जद सगरनू रावताई दे पूरबमे जागीर पातसाहजी दीवी ।

१०६८. सं० १६७४ रा फागुण सुद २ राणो अमरसिंघ साहजादासू मिलियो जद साहजादारा दरबारमें मिलिया नै तीन बैठा - राणाजी, राजा सूरजसिंघजी, नवाब अफजलखाजी ।

१०६९. राणारा कवर करणनू ले खुरम अजमेर आयो सवत १६७१ रा फागणमे करण जहागीररै पगा लागो ।

१०७०. सं० १६१६ रा चैत सुद ७ अमरसिंघरो जनम सवत १६७६ राम कह्यो ।

राणा प्रतापरा दूजा कंवरांरो

१०७१. सीहो राणा प्रतापरो भोपतसीहोत राणा जगतसिंघरो मेलियो पातसाहजीरी

हजूर रहतो वडो दातार वडो ठाळवरो सिरदार हुवो. उणरै वेढा केसरीसिंघ ।

- १०७२ कचरो वेदळै पुरविया चहुवाण परवतसिंघ रूपसिंघोतरो दोहितो ।
 १०७३ सहसो गोपाळदास तोडै सोळकी रामचद प्रथीराजोतरा दोहिता ।
 १०७४ पूरो होथी जोधपुर भोजराज राव माल मालदेवोतरा दोहिता ।
 १०७५ पूरणमल राणा प्रतापरो जिणनू हजूरसू सवत १६६४ मेडतारो गाव डोभडे पाचांसू दीवी स० १६६६ गाव ढाही मेडतारो गांवा पाचासू हजूर वगसियो ।
 १०७६ कल्याणदास मालपुरै परमार पचायण करमचदोतरो दोहितो ।

राणा अमरसिंघरा कंवर

- १०७७ राणो अमरसिंघ स० १६१६ रा चैत सुद ७ जनम कंवरांरी विगत—
 करण १, भीम २, सूरजमल ३, वाघ ४, उरजण अपतियो ५ ।
 १०७८ राणा अमरसिंघरा कंवरांरी माळरी विगत— करण तुवर साळवाहण
 रामसिंघोतरो दोहितो ।
 राणो करण तूवर साळवाहण रामसिंघोत जिणरो दोहितो ।
 भीम वीरपुरा अखैराज कान्हावतरो दोहितो वाघ १, सूरजमल २, हळवदरा
 झाला मानसिंघ जैतावतरा दोहिता ।
 सीसोदियो वाघ राणा अमरसिंघरो सवत १६६५ आगरै रावळासू सर गांव
 दूधोड गाव २०सू पटै देता हा पिण इण वात न मानी. वाघरो सवळसिंघ ।
 सूरजमल सुजाणसिंघ राणा अमरसिंघरो वेढो डीलायती पटै फूलियो ।
 राणा अमरसिंघरो सूरजमल. सूरजमलरो सुजाणसिंघ वडो डील, पटै
 फूलियो ।
 उरजण देवडा भानीदास हरराजोतरो दोहितो सीसोदियो अरजणजी राणा
 करणरी तरफसू पातसाहरी चाकरी रहतो राणाजीरो साथ लिया ।

करण अमरसिंघोत

१०७९. सवत १६४० रा सावण सुद १२ जनम राणा करणरो सवत १६७६ उदैपुर
 पाट वैठो सवत १६८४ फागुणमें देवलोक हुवो ।

राणा करणरा कंवर

१०८०. राणो करण सवत १६४० रा सावण सुद १२ जनम वेढारी विगत—
 जगतसिंघ १, गरीवदास २, छत्रसिंघ ३ ।

- १०८१ राणा करणरा कवरारी विगत-जगतसिंघ महेचा जसवत कलावतरो दोहितो ।
 १०८२ महेची जमनां कला मेघराजोतरी राणो करण परणियो जिणरो बेटो राणो जगतसिंघ ।
 १०८३ राणो जगतसिंघ महेचा जसवंत कलावतरो दोहितो ।

जगतसिंघ करणसिंघोत

- १०८४ स० १६९० मे राणो जगतसिंघजी देवळियारो धणी रावत जसवतसिंघ जिणनू चूक कराय मरायो राठोड रामसिंघ करमसिंघोत मुडासै राणारो भाणेज उमराव दूजा ही राणाजीरै साथै हुता रावत जसवतसिंघ राठोड सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो ।
 १०८५ राणो जगतसिंघ करणसिंघोत सं० १६६४ रा भाद्रवा सुद १२ रो जनम सवत १७०९ काती वदी ४ वार रवि घडी ५ पाछलै दिन थका राम कह्यो ।
 १०८६ राणिया सत कियो ज्यारी विगत - छपनीजी राठोडी १, राणी वालोतणीजी चहुवाण २, छोटी मेडतणीजी ३, राणी परमारजी ४, राणी ईडरेची ईडर सत कियो ५, राणी भाली हरदासरी बेटो झालावाडमे सत कियो ६ ।
 १०८७ लालजी वागड़िया चहुवाण जसवतरो दोहितो ।
 १०८८ गरीबदास हलवद भाला भोपत जसावतरो भाणेज ।
 १०८९ राणो जगतसिंघ सवत १६६४ रा भाद्रवा सुद २ जनम कवर - राजसिंघ १, अरसी २ ।
 १०९० राणा जगतसिंघरा कवरारी विगत - राजसिंघ अमरसिंघोत मेडतिया राजमिह विसनदासोतरो दोहितो ।

राजसिंघ जगतसिंघोत

- १०९१ राणो राजसिंघ स० १६८६ रा काती वदी १ जनम ।
 १०९२ सवत १६८६ रा काती वद १ राणा राजसिंघ जगतसिंघोतरो जनम सवत १७०९ रा माहमें टीकै बैठा ।
 १०९३ मानजी जती राजविळास नाव रूपक राजसिंघरो वणायो ।
 १७९४ सवत १७३२ रा माह सुद १५ राणै राजसिंघ राजसागररी प्रतिष्ठा किवी ।
 १०९५ अेक हजार गाय, छियासी हजार रुपया, च्यार गाव सासण ब्राह्मणानू कृगर्पण दिया प्रतिष्ठारै दिन ।

१०९६. तुळा रूपारी पाच हुई जिणरी विगत - रूपारी तुळा १, राणाजीरी राणी परमारजी कीवी रूपारी तुळा १ ऊदावतजी टूक तांडारो राजा रामसिंघ भीमरो जिणरी मा नूतै आया उवा कीवी रूपारी तुळा १ सौदै वारट केहरीसिंघ खीमराजोन कीवी रूपारी तुळा १ पुरोहित गरीवदासरै वेटै कीवी ।
- १०९७ सोनारी तुळा दोय - अक पुरोहित गरीवदास कीवी अक राणै राजसिंघजी कीवी, आवघा सूधा तुळा वैठा ।
- १०९८ वूदीरो रावराजा भावसिंघजी ज्यारो प्रवान सावतसी सौनू तो लै आयो च्यार घोडा, २०००) रुपया हाथीरा, ३५००) रुपया रोकड़ टीकारा ।
- १०९९ राजा रायसिंघ भीम अमरसिंघोतरो जिणरी मा नूतै आयी छै घोड़ा निजर किया, २०००) हाथीरा निजर किया ।
- ११०० रामपुरसू नूतो आयो घोड़ा च्यार, हाथी अक सैदरूप, रुपया १५०००) रोकड़ नूतो ।
- ११०१ हीरै टोकडियै राणा राजसिंघजीनू बहकाय राजसिंघजीरा कुवर सुरताण-सिंघजी सिरदारसिंघजी राणाजीग हाथसू मराया ।
- ११०२ पछै कुवर भीमसिंघजीनू राज देणो तेवडयो नै राणाजीनू कुवर जैसिंघजीनू चूक तेवडयो साह दयाल नूरपुरीमें हीरारो चाकर राणाजीसू मालम कीवी राजसिंघजी कुपित कर व हीरानू मरायो हीरो मामघीहो कहीजै है ।
- ११०३ उदैपुरसू आय राणा राजसिंघरो कवर औरंगजेवरा पगां लागो दरगाह आया. जद पातसाह भारी मरपाव मोनी दिया. राणानू सिरपेच जडाळ भेज्यो ।

जैसिंघ राजसिंघोत

११०४. राणा जैसिंघजी घाणेराव पधारिया जद आडावळामे कोठारिया वड़ जठे डेरा किया रावत केहरसिंघजी केळवाडारी स्याहजी साथ हुतो ।

संग्रामसिंघ अमरसिंघोत

- ११०५ राणो संग्रामसिंघ अमरसिंघोत कोठारियारो राव वखतसिंघजी ज्यारो भाणेज ।
- ११०६ राघो हरी पागियो दिखणी अडसीजी फौज सामल हुतो पटैलसू राड़ हुई जद ।
- ११०७ राणै अडसीजी कोठारियै डेरा किया अमरचद वडवानू फुरमाया - विना हांसल चुकाया श्रीजीरै द्वारै रसत मोल गयी उदैपुरसू सो श्रीजीद्वारासू

खेचल करणी, जद पीरोजखा, चदर, मलंग वगेरै सिंधी विदा किया — उवै श्रीजीद्वारै रोडिया सिधवी भीवराजजी दरबारसू श्रीद्वारै हुता अै चढिया भगडो हुवो. सिंधी मलंग देवडा सवाई नोसरा वाळारी गोळी लागी. मुवो फतै जोघाणनाथरी हुई ।

११०८ राणारी सवारीरो घोडो वेराड दलेळसिध लियो नै छत्र चवर ही इण लियो ।

११०९ राणारा घोडा कनै वहण वाळा चोपदार दोनू हाथानू जोर करी अजीतसिध-जीरै माथै सोनारी छडीरा टुकडा किया अजीतसिधजीरै माथो ऊपरसू जोजरो हुवो ।

१११० रूपोजी १, जीधोजी २, कीकोजी ३ अै तीन सगा भाई गूजर राणा अडसी-जीरा धायभाई ।

११११ रूपै धायभाई रूपनारायणरो मंदिर करायो उदैपुर उरै नदी वहै जिणरी पुळ वंधायी ।

१११२ राणा भीवसिधरी बेट्टी देवकुवर कल्याणसिधजी परणियो सिवदानसिध महाराजारी बेट्टी सिणगारकुवर मोतीसिधजी परणियो ।

१११३. कूभारी मोती राणा भीमसिधरै मरजीरी खवास है ।

१११४ मखदूम गुलाम मुहम्मद भीमसिधजीरै वखत आयो हो उवलारी हो ।

१११५ स० १८८५ चैत सुद १४ उदैपुरमे राणो भीमसिधजी देवलोक हुवा ।

१११६ पूनारो उकील राणाजीरी तरफसू पीपलियारो धणी सगतावत राणोजी दूसरा वारो सिरपाव देता सो पेसुआनू कनै जाय देता, पेसवो सामो आय लेतो ।

१११७ राणाजीरै मेवाडरा परगनारा गावारी विगत —

चित्तोड गाव ३०१, गोढवाड ३६०, जसावरा गाव ५२, गरवारा गाव १४०, मदारीरा गाव २००, कुभळमेररा गाव ७००, देवळियारा गाव १२०, भैमरोडगढरा गाव ५००, छपनरा पाच परगनारा गाव १६०, पटारा गाव ३६० ।

मेछल भीलवाडारा गाव परगना दोय उदैसिध राणै गमिया अकबर पातसाह चित्तोड लियो जद — बूदी १, रामपुरो २, गाव १५०० रामपुरारा, गाव १००१ बूदीरा, गाव १३५१ डूगरपुररा, गाव १३५० वासवाळारा, गाव ३६० वधनोररा, गाव ८४ वेगमरा, गाव २४० माडळरा, गाव ३६० भीमचरा, गाव परगना रै पाच पातसाह जहागीर राणा अमरसिधनू

दिया, कुवर करण अजमेर पातसाहरा पगां लागो, राणो अमरसिंघ गोगूदै साहजादा खुरमसू मिलियो जद चाकरी वदळ . . . ।

- १११८ दसरावारा दिनामे कोठारियारो राव, सादडीरो राजा, वेदळैरो राव, सलूवररो रावत अँ च्यार सिरदार ज्यारै डेरै श्रीदीवाण पघारै ।
- १११९ उदैपुर चाकरारी लुगायां राणियारै पगा लागै नही, ओढणारो पल्लो हाथमें लेनै तीन वार हाथ जमी लगाय सलाम करै ।
- ११२० उदैपुर राणाजी ही चाकरानू विदा करै जद वीडा दै राणियां रणवासां चाकरारी त्रियानू वीडा दै ।
११२१. राणाजी देवलोक हुवै जद पाटवी कुवर पछेवडा ओढ लै राणाजीनूं दाग दे पाछा आवै तरै उमराव दरवारमे जद कोठारियारो राव कुंवर माथासू पछेवडो दूर करै ।
११२२. उदैपुर नगर सोमवार चहुवाणारी चोकी वेदळारो राव नांवै नै पारसोली कोठारियारो राव चौकी आवै मगल राणावत चौकी आवै बुधरै दिन प्रधान कानोडरो रावत बीजोळियांरो राव और अरग जो चौकी आवै. गुरुवाररै भाला चौकी आवै सादडीरो राजा जीम डेरै जावै देलवाडो गोगूंदो चौकी रहै गुरुवरै दिन राठोड चौकी आवै गनीचररै दिन सगता चौकी आवै ।
- ११२३ उदैपुर उमराव राणैजीरै चौकी आवै जिणरी विगत - रवी चूडावतारी चौकी, सलूवररो वणी पातियै जीम डेरै जावै. वेगम, आवेट, देवगढ चौकी रहै ।
११२४. उदैपुर सोळै उमरावानू सात सीकरो वीडो दिरीजै देसनिकाळो दै जिणनू तीन सीकरो वीडो दै ।
११२५. उदैपुर आवदारखानो पाणैडो कहावै कपडारो कोठार निकारी ओडी कहावै. दवाखाना ओखघरी ओरी कहावै तवोळ खानारी ओरी वीडा वणै सिंघळखानारी ओरी ससतर रहै ।

मेवाडरा सरदार

वनेडो

- ११२६ वणहडारी राजारी पीढी लिखते - राणो राजसिंह १, भीमसिंघ २, सूरजमल ३, सुरताणसिंघ ४, सिरदारसिंघ ५, रामसिंघ ६, हमीरसिंघ ७, भीमसिंघ ८ ।

- ११२७ वीकानेररा राजारी बेटी रायसिंघजी वणहडारो राजा परणियो ।
 ११२८ रायसिंघजी वणहडा कनै राजपुर वसायो वणहडारो राजा रायसिंघ
 उजैण घावा पडियो, मारगमे मुवो ।
 ११२९. जगमालोत राणावत रतनसोत जोधा औ आठ उमराव वणहडासू अढाई
 कोस गाव वामणियो जठारा जोधारी भोम पैला वणहडामे हुती ।
 ११३० ओसवाळ डागळिया खीवसरा वणहडै कामेती है ।
 ११३१ ओसवाळ वरढिया वणहडै कामेती है, भडारी कहावै ।

झाला

- ११३२ सादडीरो राजा झाला जिणसू राणोजी राणो लिखै दूजारा नगारा
 देवारीमे न वजै छै इणरो नगारो ईकरको दहवारीसू जगन्नाथरायजीरा
 मंदिर ताई वजतो जाय, छत्र चमर ही उडता जावै ।

वेदळी

- ११३३ वेदळा घणी राव रामचदजी जिणनू राणैजी बीडो छै सीकरो दियो इण
 वेदळारो पट्टो निजर कियो राणैजी फुरमायो तबोळीनू लावो, सजा कर
 करो छव सीकारो बीडो क्यो वणायो आ खबर पाय तबोळीरा राव राम-
 चदजीरा घोडारै सरणै गयो रावजी तबोलीरो गुनो माफ करायो ।
 ११३४ वेदळै आवा औ पहाड सजळ है सिकार राजनू उढै घणा है आरासरी
 अवाय कहावै ।

कोठारियो

- ११३५ चूडावत जगै सीधावत चहुवाण ठाकुरनू बहिन परणाय कोठारियो आपरै
 पटै हो सो परो दियो, मदारियो आपरै राखियो ।
 ११३६ चूडावत जगो सीधावत वागडमे चहुवाण मारियो ।
 ११३७ सहर सूरतमें राणो प्रताप गोसरे हियो विखामे उमरावा कुवरा समेत सूरतरा
 सूबेदारनू मार घोडा चलाया राणारा हाथरी बरछीसू सूबेदाररा अग
 रही कोठारियारै राव जायनै आणी ऊ दिन दसरावारो गाहणा समेत
 सिरपाव राणोजी कोठारियारा घणीनू दियो । जिणसू हर दसरावै राणोजी
 दसरावारो सिरपाव गहणा समेत कोठारियारा रावनू वगसै ।
 ११३८ कोठारियारो घणी कुरब वेदळारा घणीनो दिगणो है राणाजीरा दरवारसू ।

सलूवर

- ११३९ मठूवररा रावनारी पीढी लिखते-राणो लाखो १, चूडो २, काधळ ३, रतनसी ८, साईदास ५, खगार ६, किसनो ७, जैतो ८, मानसिंघ ९, रघुनाथसिंघ १०, रतनसी ११, काधळ १२, केहरसिंघ १३, कुवेरसिंघ १४, भानसिंघ १५, भवानीसिंघ १६, पदमसिंघ १७ ।
- ११४० सिमोदिया मिघ काधळ चूडावतरा वेटा तीन हुवा- जगो १, सुरताण २- महाराजकुवार गजमिघजी तोडै कछवाहा जगन्नाथरी वेटी परणिया तोडा थका सीतळा नीसरी वण स्या पडिया कवरजीरै वडो खेद जद भाटी गोइददाम मानावनरो वेटो मोहणदास मर गयो ।
- ११४१ चूडावत मानसिंघ जैतावतरा रजपूत मानसिंघ मूजावत तेजो वोलियो . रागाजी कनैसू पटी लिखाय वभौरी सारगदेओता कनासू ले लियो . रावत मानसिंघरो अमल वभौरीमे कियो ईडररा वणीरा उमराव छपनियो राठोड मार छपनडी प्रगनो राणाजीरै घरै आणियो ।
- ११४२ गुदोच सेरसिंघरी वहन अभैकवरवाई सलूवर रावत भीमसिंघजीनूं परणायी ।

वींजोळियो

- ११४३ हमै वींजोळिया राय केसोदास सुभकरणोत है. इणरी वेटी राणा भीम-सिंघजीरा कवर अमरसिंघनू परणायी उणनै सत कियो ।

देवगढ

- ११४४ देवगढरा रावतारी पीडियां लिखते - राणो लाखो १, चूडो २, काधळ ३, सिंघ ४, मागो ५, हूदो ६, ईसर ७, गोकळदास ८, द्वारकादास ९, सग्रा-मसिंघ १०, जसवतसिंघ ११, राघोदाम १२, अनोपसिंघ १३, गोकळदास १४ ।
११४५. देवगढरा रावतारो वडेरो ईसरदास जिणनूं मेर मोटै कीट मारियो हो-
कीट कटारी चालवी, खटकी खूमाणाह ।
मोटै ईसर मागियो, डाकी भरडाणाह ॥
- ११४६ सागो गीघोत तळाधूवानरा पीर कनै गयो जद पीर लखमीनाथ वावाजी घोडी दीवी, कटारी दीवी, कह्यो-थारो नांव ववसी देवगढ लखमीनाथरी नामती रहै घोड़ी पायगामें ।
- ११४७ राणोजी घटावळीजीरै मगरै वाघ मारण गया जद सागै वाघनू मारियो. अक हाथ मागारो जन्ममी हुवो राणाजी केळवो दियो ।

११४८ पुर माडळरै पीर जानै सागानू नगारो दियो कही - थारा वसरो माझी काम आसी तरै फतै हुसी ।

११४९ सिरै दूह सग्रामरा जसवत नै जैसिंघ जसवत देवगढ, जैसिंघ सग्रामगढ ।

वेगू

११५० वेगमरा रावतारी पीढी लिखते-राणो लाखो १, चूडो २, काधल ३, रतनसी ४, साईदास ५, खगार ६, गोइद ७, मेघ ८, राजसिंघ ९, महासिंघ १०, अनोपसिंघ ११, हरिसिंघ १२, देवसिंघ १३, मेघसिंघ १४, प्रतापसिंघ १५ ।

११५१ वेगम वाळो चूडावत वल्लभकुळ-सेवक है द्वारकानाथजीरा मदिररो ।

देलवाडो

११५२ गुदोच सेरसिंघरी बेटी उदैकवरबाई देलवाडै राजा कल्याणसिंघजीनू परणायी ।

आमेट

११५३ आंबेटरा रावतारी पीढिया लिखते - लाखो १, चूडो २, काधल ३, सिंघ ४, जगो ५, ६, करण ७, मानसिंघ ८, माधोसिंघ ९, गोवरधनसिंघ १०, दूलैसिंघ ११, प्रथीसिंघ १२, मानसिंघ १३, फतैसिंघ १४, प्रतापसिंघ १५ ।

कानोड

११५४ कानोडरा रावतारी पीढी लिखते - राणो लाखो १, अजो २, सारगदे ३, जगो ४, नरवद ५, नेतो ६, भाण ७, जगनाथ ८, मानसिंघ ९, महासिंघ १०, सारगदे ११, प्रथीसिंघ १२, जगतसिंघ १३, जालमसिंघ १४, अजीतसिंघ १५ ।

भींडर

११५५ भींडररा महाराजारी पीढिया लिखते - राणो उदैसिंघ १, सगतो २, भाण ३, पूरो ४, सबळसिंघ ५, मुहकमसिंघ ६, अमरसिंघ ७, जैतसिंघ ८, उमेदसिंघ ९, कुसाळसिंघ १०, मुहकमसिंघ ११, जोरावरसिंघ १२ ।

११५६. भींडररा महाराजरी मा वाई राजबाई जे मोटा पली तीने लीकी पातसाहरी दीवी है दसरावारो डूगलो, गणगोरीरो सिपराव, वलाणो घोडो सलूवरसू भींडर-महाराज पावै ।

- ११५७ पानसलरो सगतावत भीडर खोळै आयो है ।
- ११५८ सावररो धगी सगतावत इद्रसिंघ जिणरो दोहितो वधनोर अखैसिंघ ।
- ५१५९ मेडतिया पदमसिंघ प्रतापसिंघोतनू उदैपुर हवेली ऊपर राणाजी साथे मेल मरायो नवेगडीरो सिरदार राणाजीरो उमराव जिण उदैपुरसू आय काहणारा तळाव माथै डेरा किया गोठरै मिस कवर किसनसिंघनू घाणेरावसू तेड़ अंकत ले डेरामे मारियो. चीणो चाकर किसनसिंघरो कूजा वरदार काम आयो जातरो डागळियो जिणरी सोराणजीरी मुतसदी कुंभळमेरसू घाणेराव आयो राणाजीरो अमल कियो ।
- ११६० पदमसिंघजीरा कवीला वसी धण ले कूपावतारै गया उणा आछी तरहसू राखिया ।
- ११६१ मेडतियो उरजण रायमलोत चितोड काम आयो जैमलजी ईसरदासजी साथ ।
११६२. जैमलरै टीकै सुरताण जिणनू सवत १६४२ पातसाह अकवर मेड़तो दियो ।
- ११६३ सुरताणरै कईक दिन परगणो मलहारणो पिण रह्यो ।
- ११६४ सीळ भाखरी स्वेत पाखाणरो स्वरूप मेड़तियै दाणीदास गोपाळदास सुरताणरै काविलरी हदसू आणी पवरायो ।
- ११६५ जगन्नाथ गोइंददासरो १, सावळदास गोइंददासरो २, सुदरदास गोइंददासरो ३, गोइंददास जैमलोत ।
११६६. वानसीरा सगतावता माहला सगतावत दोय कलावत दोय वला ।
- ११६७ पारसोली माहेला चहुवाण ।
- ११६८ वीदा जैतमालरो वेटो नैतसी राइधारासू मवाड़ आयो . राणोजी पटो दियो . उणरा हमै केळवै है ।
- ११६९ किसनदास जैतमालोतरै पटै वणेल थी, पछै देसूरी पटै पायी पछै केळवो पटै पायो ।
- ११७० सवळसिंघ रामसिंघोत वेदळै राव . केहरीसिंघ रामसिंघोत पारसोली राव ।
११७१. अदळ लियो वदळो नकू राखिज्यो बुधारी ।
ओ गीत आसिया हरराम उदैभाणोतरो कह्यो है ।
- ११७२ कोटा सुरसा भास्कर सोळखी प्रतापसिंघ बेटी वीरमदे समेत उदैपुर आयो जद टीकड़ियो तुळछीदास जात सोळखी राणाजीरै मनीजै . इणरी हवेली जाय प्रतापसिंघ उणारो होको पियो इण देसूरी दिरायी ।

गहलोतांरा दूजा राज

देवलियो-प्रतापगढ़

११७३. नव लाख रुपयारी पैदास देवळियारा धणीरै हुती ही डूगरपुररा धणीरै इती ही वांसवाळारा धणीरै ।
११७४. साहपुरो देवलियो दोय पाख उदैपुररी अै ।

साहपुरो

११७५. साहपुरारा राजारी पीढिया लिखते- राणो अमरसिघ १, सूरजमळ २, सुजाणसिघ ३, दोलतसिघ ४, भारतसिघ ५, उमेदसिघ ६, हमीरसिघ ७, भीमसिघ ८ ।
११७६. सायपुरै राजाई भारतसिघजी पायी ।
११७७. गेरसिघजी १, सिरदारसिघजी २, कुसळसिघजी ३, उमेदसिघजी ४, जसकरणसिघजी ५ अै पाच बेटा सहापुरारा राजा भारतसिघजीरै ।
११७८. साहपुरै उमेदसिघजी पिता भारतसिघजीनू कैद किया हा साहपुरा राजा उमेदसिघ पिता भारतसिघनू कैद कियो हो सो छोडियो नही ।
११७९. पाटवी कवर उदोतसिघनू जहर दे मारियो उदोतसिघरा बेटा रणसिघनू मारण सिपाही मेलियो उणरा हाथरो घाव रणसिघरा मूडा माथै लागो जद चुवदै वरसरो भीमसिघ रणसिघरो कवर जिणरी तरवार चली ऊ सिपाही मार राखियो बेटा जालमसिघनू साहपुरै मालक करणरी उमेदसिघ विचारी ही ।
११८०. जगमाल उदैसिघोतरै वसरा राणावत १, कानावत २, कछवाहा सुरताणोत राजावत ३, राठोड चादावत ४, अै च्यार उमराव साहपुरै ।
११८१. कोठिया धनोप अै चादावतारा ठिकाणा साहपुरा हेटै पडिया ।
११८२. देवळियारा रावतारी पीढी लिखते राणो मोकळ १, खेमो महाराज २, सूरजमल ३, वाघ ४, रायसिघ ५, वीको ६, तीजो ७, साखो ८, जसवतसिघ ९, हरीसिघ १०, प्रतापसिघ ११, प्रथीसिंह १२, गोपालसिघ १३, सालमसिघ १४, सावतसिघ १५ ।
११८३. देवळियारो धणी रावत कहीजै गाव सात सौ है हजार घोडांरी साहवी ।
११८४. देवळियारा धणी सीसोदिया ज्यारै नानाणारी विगत लिखते-सूरजमल खेमावत सोनगरा रणवीर वणवीरोतरो दोहितो ।

११८५. सूरजमलरा कवरारी मामलरी विगत वाघ १, संसारचद २, सहसमल ३, रणमल ४, कलो ५, पाचू ६, वीकानेर लूणकरण वीकावतरा दोहिता ।
११८६. रावत सूरजमल खेमावतरै वेटा - वाघ १, किसन २, वीको ३, रावत वाघरै तेजो. तेजारै मानो रावत वरम दोय राज कियो पछै सैद उमरावसू लडाई हुई मानो रावत काम आयो. इणरै वेटी अेक ही जिका सिरोही राव अखै-राजनू परणायी मानारो टीको भाई सीयानै आयो रावत सीयारो जसवंत ।
११८७. रावत वाघरा कवरारा मामलरी विगत - रायसिंघ बागडियो चहुवाण वीरसलदे वरसिंघोतरो दोहितो ।
११८८. रावत रायसिंघरा कवरारा मामलरी विगत-वीको वेगम हाडा जीतमल देवावतरो दोहितो ।
११८९. रावत वीकारा कवरारी मामालरी विगत-तेजमाल छपनिया राठोड़ जैमले जैचदोतरो दोहितो ।
११९०. किसनसिंघ मेडतै रायमल दूदावतरो दोहितो ।
११९१. रावत जसवतसिंघनू स० १६९० राणै जगतसिंघ चूक कराय मरायो ।
११९२. राठोड़ रामसिंघ करमसेणोत वीजो ही साथ विदा कियो हो रावत जसवतसिंघरै साथ बडो वेटो महासिंघ काम आयो ।
११९३. रावत जसवतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो ।
११९४. संवत १६९० मे राणै जगतसिंघ देवळियारा रावत जसवतसिंघनू चूक कराय मरायो जद मुदै चूकमे राठोड़ रामसिंघ करमसेणोत और ही उमराव राणाजीरा साथै हुता रावत जसवतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो ।
११९५. संवत १६९० मे राणै जगतसिंघजी देवळियारो धणी रावत जसवंतसिंघ जिणनू चूक कराय मरायो राठोड़ रामसिंघ करमसिंघोत मुडासै राणारो भाणेज उमराव दूजा ही राणाजीरै साथै हुता रावत जसवंतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो ।
११९६. रावत जसवतसिंघरो पाटवी कुवर महासिंघ रावत साथै काम आयो ।
११९७. जसवतसिंघरो वेटो हरसिंघ जसवंतसिंघरै पाट वैठो ।
११९८. जसवंतसिंघरी गादी रावत केसरसिंघ ।
११९९. देवळियारा दीवाण सावंतसिंघजीरो कुवर दीपसिंघजी पहलां भिंणाय परणियो हुतो पछै फतैगढ परणियो ।

१२००. देवळियै दीपसिघ सावंतसिघोतरो वडो बेटो केसरीसिघ भिणायरो भाणेज ।
 १२०१. दीपसिघरो दूजो बेटो दळपतसिघ फतैगढरो भाणेज डूगरपुर-रावळ जसवत-
 सिघरै खोळै ।
 १२०२. देवळियै च्यार सिरायत-रायपुर १, साकधजी २, भातळा ३, धमोतर ४ ।

डूगरपुर

१२०३. डूगरपुररा रावळारी पीढी लिखते-समरसी १, कालीकान्ह २, पातो ३, गोपीनाथ ४, सोमदास ५, गगेव ६, उदैकरण ७, प्रथीराज ८, आसकरण ९, सहसमल १०, करमसी ११, पूजो १२, गिरधर १३, जसवंतसिघ १४, खुमाणसिघ १५, रामसिघ १६, सिवसिघ १७, बैरीसाळ १८, फतैसिघ १९ ।
 १२०४. डूगरपुररा रावळारी वसावळी-करमसीरो रावळ कानडदे श्रीमन्नारायणसू १२९ पीढियां छै ।
 १२०५. कानडदेरो परतापसी, परतापसीरो गेपो जिण डूगरपुर गैबसागर तळाव करायो, गेपारो स्यामदास, स्यामदासरो गागो, गागारो उदैसिघ, उदैसिघरो प्रथीराज, प्रथीराजरो आसकरण, आसकरणरो सहसमल ।
 १२०६. रावळ आसकरण प्रथीराजोत राव मालदेजीरी बेटो पुहपावती बाई परणियो हुतो. विखामे चद्रसेण मालदेवोत डूगरपुर गयो. रावळ आसकरण वडा हीडा किया ।
 १२०७. डूगरपुररो धणी रावळ उदैकरणजी सागा राणारी मदत सीकरी काम आयो कुवर जगमाल घावा उपडियो उणरै वसरा वांसवाळारा रावळ ।
 १२०८. चावडा गोपाळदासनू मारियो पछे प्रतापसी रायमलोत डूगरपुररा रावळारी सभामे बैठा चावडानू मारियो पछे राव चद्रसेणजी विखामे डूगरपुर गया जद कुवर आसकरणजीनू चावडा परणाया ।
 १२०९. रावळ सहसकरण आसकरणोत डूगरपुररो धणी जिणरी बेटो महाराज सूर-सिघजी परणिया कुवर सवळसिघजी सहसमलरा दोहिता ।
 १२१०. साढी सतरैसी गाव सेवाय सगवाडी सहरवटमे आयो डूगरपुररा रावळरै सगवाडा वदळै आडाईरो तळाव वासवाळारै रावळरै आयो ।

वांसवाडो

१२११. वांसवाळारा रावळारी पीढी लिखते-समरसी १, कालीकान्ह २, पातो ३, गोपीनाथ ४, सोमनाथ ५, गगेव ६, उदैकरण ७, जगमाल ८, जैसिघ ९,

कल्याणमल १०, अग्रमेण ११, उदैभाण १२, समरसी १३, कुसळसिंघ १४, अजवसिंघ १५, भीमसिंघ १६, विसनसिंघ १७, प्रथीराज १८, विजय-सिंघ १९ ।

१२१२ वासवाळै रावत प्रथीसिंघरो रावळ विजैसिंघ, विजैसिंघरो उमेदसिंघ, उमेदसिंघरो भवानीसिंघ हमै है ।

१२१३ वासवाळै रावळ कुसळसिंघजीरा मोता चाकर राखिया पूणा दो सौ गाव पटै दिया वागडिया चहुवाण छाड गया था जद रामोतारो मुदै ठिकाणो कुसळ-गढरो घणी महीपडरो राज कहावै है ।

१२१४. वांसवाळारो रावळ सिंघ वाहण देवी जिणरी आण काढै ।

गोहिल

१२१५ साळवाहण गोहिलरो वेढो सुद बुद सावलिंगारै सासरै पारानगर जोगीरो भेख आयो हुतो ।

१२१६ राजपीपळीरो घणी गोहिल भीम जिणरा वेढा अरजुण-हमीर सोमहिया महादेवरी वाहर खूनी अलाउद्दीनसू जग करि जाळोर काम आया ।

१२१७. यारो छोटो भाई कलो जिणरै वसरा रामोत वरसिंहोत मेडतिया है । ओळी १४ रा राजपीपळा है ।

१२१८. हमीर-अर्जुणरै साथ दातीवाळरो घणी कोळी वेगरो रात काम आयो आटियो वाणियो, रुद्रवो वामण, धूडियो भील ।

रामपुरारा चंद्रावत

१२१९ श्रीराम-उपासक चंद्रावत राव महोहकसिंघ अमरसिंघ सुत- औ आखर रामपुरारा रावरी महोरमे ।

१२२० आवडसू उठ चंद्रावत रामपुरो जीवदानोजी भदाणो १, भाट २, खेड़ी ३, मुळेरी ४, पाहेडी ५, करडावावण ६, अजैपुरो वगेरा रामपुरारा राव उमराव जारा ठिकाणा ।

फुटकर

१२२१ गाव दोय सौ गहलोतारा दिली-मडळ मे है राणो नरपतसिंघ उठै हुवो, हमै अंक राणो वाजै दूजा गहलोत चौधरी वाजै ।

[४] यादवारी वातां

भाटी

१२२२. भाटियांरी खाप लिखते-जेचद १, जेतुग २, बुध ३, केलण ४, सरूपमी ५, सीहड ६, लेना ७, छीकण ८, पोहडे ९, पाहू १०, नहु ११, वारुसी १२, जेतसी १३, हमीर १४, ऊनड १५, धुवड १६, रायधर १७, राय १८, सामतसी १९, अणगा, २०, अडकमल २१, वरसिंघ २२, खीया २३, जेहर २४, अरसुरमोत २५, वारणरासोत २६, तेजमालोत २७, विहारीदासोत २८, उदैसिंघोत २९, मालदेओत ३०, सगतसिंघोत ३१, पचायणोत ३२, देरावरिया ३३, पूगळिया ३४, गुगजी ३५, सोम ३६, मूल ३७, सिधराव ३८, वानर ३९, जेड ४०, गोपाळदेओत ४१, हडवा ४२, लूणराव ४३, सभा ४४, सागेजा ४५, कदल ४६ ।

१२२३. मेहामल, देवत, सीधत, अँ भाटियारी खापा है ।

१२२४. करनोत, धनराजोत अँ दोय धडा आय वसियो ।

१२२५. नानग छाबहडो वरदायी हुवो पोकरण आय वसियो ।

१२२६. जैसळमेर पाट बैठा ज्यारी विगत अनुक्रमसू-वछू १, म . २, दुसाभ ३, बीजो ४, जैसळ ५, साळवाहन ६, केल्हण ७, चाचग ८, करण ९, लखणसेन १०, पुनपाळ ११, जैतसी १२, मूलराज १३, हूदो १४, घडसी १५, केहर १६, लखमण १७, वेरसी १८, चाचगसी १९, देवीदास २०, जेतसी २१, लूणकरण २२, मालदे २३, हरराज २४, भीम २५, कल्याणदास २६, मनोहरदास २७, सबळसिंह २८, अमरसिंघ २९, जसवतसिंघ ३०, जेतसी ३१, अखैसी ३२, मूलराज ३३, गजसिंघ ३४ ।

१२२७. रावळ जैसल १, वेल्हण २, लूणकरण ३, चाचिग ४, तेजराव ५, रावळ जैतसी ६, मूलराज ७, देवराज ८, रावळ केहर ९, लखमण १०, वैरसी ११, चाचो १२, देईदास १३, जैतसी १४, लूणकरण १५, मालदे १६, हरराज १७, कल्याणमल १८, मनोहरदास १९, रावळ मनोहरदास निरवस गयो ।

१२२८. धरणीधर वराहरी बेटी नाम होरड सिंघ देवराजनू परणायी. धरणीधर वराहरी राणी नाम रवाब टावरी १, वोडाणा २, मिधराव ३, सोळकी अँ च्यारू खापा बीकमपुर राजपूता माहे मुख्य है ।

१२२९ पहला भाटियारी राजधानी लुद्रवै हुती भाटी साळवाहणरै टीक भोजदेव वैठो भारी जैसळ दिल्ली फोजा आणी भोजदेवनू मार लुद्रवै धणी हुवो. जैसळ लुद्रवै कोट करावण लागो जद ब्राह्मण नाव इसो अेक सौ बीस वरसरी ऊमरमे तिण जैसळनू कह्यो-म्हारा खेत कनै रडो है, जठै श्रीकृष्ण गदासू पाणी प्रगट कर पाडवानू पायो नै कह्यो कलूमे म्हारो वस डण ठोड रहसी, सो तू उठै कोट कराय जैसळ वात मानी गदासू कूप कृष्ण कीनो जिण कूप ऊपर सिला हुती सो दूर कीवी और वधायो. नाव दियो जैसळो कूवो गढ अठै करायो गढरो नाव दियो जैसळमेर ।

१२३० जैसळ १, काल्हण २, लूणकरण ३, चाचिग ४, तेजराव ५, वडो रावल जैतसी ६ ।

१२३१ भाटी जैसळरो कालण भाटी काल्हणरै वेटा दोय हुवा - लूणकरण १ सीहड २. लूणकरणरो चाचिग, चाचिगरो तेजराव, तेजरावरो वडो रावल जैतसी ।

१२३२ जैतसी ऊपर दिल्लीरी फौज आयी वारह वरस विग्रह रह्यो जैतसी रावळ विग्रहमे मुवो पछै मूळराज जैतसिघोत रावळ हुवो ।

१२३३. मूळराज रावळरै आगै राणो रतनसी हुवो आगै जैसळमेर आ मरजाद हुती रावळरा मूडा आगै अेक राणो रहै ।

१२३४ रावळ मूळराज ऊपर तुरकांरी फोज आयी घेरो गढरै लागो घेरासूं जैसळमेररा गढरो सामान खूटो जद रावळ मूळराजरो कंवर देवराज और राणा रतनसीरो कवर घडसी दोय जणा तो अै नै जणा तीन दूजा जुमलै पांच तुरकानू अमान सूपी जैसळमेररा गढरा दरवाजा खोल मूळराज रतनसी काम आया ।

१२३५ मूळराज रतनसीनू मार तुरक परा गया. जैसळमेररो गढ सूनो पडियो जद रावळ मालो जैसळमेर आपणावण आपरी फोज मैली फोज उठे गयी सामान भार जिनसा खजानो प्रभातरो गढ माथै चढाय दियो नै राव मालारा भडां कह्यो - कपडा घोय आपै साभूरा गढ माथे जासा मोमत्तो मन वोवणरै घवै लागा ।

१२३६ वडा रावळ जैतसीरै वारह वरस घेरो रयो जद भाटी जसहडरा वेटा पाच दूदो १, तिलोक २, आसकरण ३, सीधण ४, वागण ५, ज्यांनूं जुगतसू घेरा मायसू काढिया हुता अेक जणो दम खीच मडो वणियो हो नै चार जणा

साचिया के उणरा माचासू उपाड गढसू बाहर नीसर वचिया हुता उठै पाचू ही साठा जणासू गढ माथै चढिया अँ तोला पाहू कनै हुता. तोला पाहू ही आं साथै आयो. गढ रावळ मालारा साथरै हाथ न आयो ।

१२३७. गढ या पाचा अपणाय लियो तोला पाहनू अँ वदै नही, तोलो हियासू खराई करै. अँक दिन तोलारै तिलोकसी झटकारी दीवी तोलारो माथो कटीज दर पडियो काटियै माथै तोलै पाछो झटको वाह्यो सो थाभो कटाणो, थांभो अजैस है ।

१२३८ जसहडरा बेटा वरस २१ राज कियो पछै पातसाही फोज आ माथै जैसळमेर आयी आसकरण तुरकानू भेद दियो गढ भिळियो दूदै तिलोकसी साको कियो पाचू भाई काम आया. गढमे तुरकारो थाणो बैठो ।

१२३९ देवराज रावळ मूळराजरो बेटो नै घडसी राणा रतनसीरो बेटो अँ दोनू मूळराज रतनसी काम आवणरै तुरकानू सूपिया सू अँ मोटा होय पातसाहरा सू नाठा घडसी महेवै रावळ माला कनै गयो रावळ मालारी बहन विंवली घडसी घरमे घाली, रावळ मालै आपरो साथ मेल वीकमपुरमे घडसीरो अमल करायो ।

१२४० घडसी आपरी वसी वीकमपुर राखी, सिंधरा पातसाहरी चाकरी लागो सिंधरा पातसाहसू जग हुवो जद घडसी पहला पातसाहरी असवारीरो सफेद हाथी जिणरी सूड काटी, सिंधरै पातसाह राजी हुय घडसीनू जैसळमेर दियो ।

१२४१ देवराज पातसाहरा . सू भाज घाट थर पारकरमे गयो, उठै परणियो, इणारै बेटा दोय हुवा केहर नै हमीर ।

१२४२ देवराजनू घाटरै दहइयै मारियो, पछै जैसळमेरसू रावळ घडसी केहर-हमीरनू तेडणनू थाट मिनख मेलिया, आप तळैरी हुतो, जसहड भाटिया आसकरणरा बेटा घोडै सवार घडसीनू झटको कियो, घडसीरो माथो दूर पडियो, घोडो घडनू ले गढ माथै गयो, घडसीरै बेटो नहो हुवो, रावळ मालारी बहन विंवली केहरनै टीको दे घडसीनू चूक हुवा पछै नवमै दिन सत कियो ।

१२४३ केहररो रावळ लखमण, लखमणरो वैंसी, वैंसीरो चाचो, चाचारो रावळ देईदास, देईदासरो भीम पछै भीमरो छोटो भाई कल्याणमल रावळ हुवो, कल्याणमलरो रावळ मनहरदास निरवस गयो ।

- १२४४ रावळ चाचानू परणाय सोढां मारियो हुतो सो देईदास चाचारो चाचारै पाट वैंठो सोढानू मार वापरो वैंर लियो ।
- १२४५ रावळ जैतसी देवीदासोतरै राणी भावकदे राठोड हाफा वरसिघोतरी वेंटी मेहवै १ ।
- १२४६ जैमळमेर रावळ जैतसीरै वेटारी विगत-लूणकरण १, भीवराज २, जगमल ३, प्रथीराज ४ ।
- १२४७ भाटी रावळ लूणकरण भाटी रावळ जैतसी देवीदासोतरो वेटो वाडमेरारो भाणेज ।
- १२४८ रावळ लूणकरणरै वेटारी विगत-मालदे १, सिवदास २ ।
१२४९. रावळ मालदे लूणकरणोत सीसोदिया अखैराज कुंभकरणोतरो दोहितो ।
- १२५० रावळ मालदे लूणकरणोत राणी महेची महमादे मेघराज हाफावतरी ।
- १२५१ रावळ मालदेरै वेटारी विगत-हरराज १, खेतसी २, नेतसी ३, सहसमल ४ ।
- १२५२ रावळ हरराज जोधपुर राठोड नाथो राव सूजारो वेटो जिणरो ओ दोहितो ।
- १२५३ खेतसी रावळ मालदेरो वेटो कोटड़ियारो भाणेज ।
- १२५४ खेतसी मालदेवोत राव जैतसी वीकानेरियारो दोहितो मोटा राजाजीरी वेंटी रभावती परणियो हुतो ।
१२५५. मालदेरो खेतसी वीकानेरिया राव जैतसीरो दोहितो. खेतसीरो दयालदास, दयालदासरो सवळसिघ, सवळसिघरो अमरसिघ, अमरसिघरो जसवतसिघ, जसवतसिघरो जगतसिघ, जगतसिघरो अखैसिघ, अखैसिघरो मूळराज, मूळराजरो गजसिघ ।
१२५६. रावळ हरराजरै वेटारी विगत-भीव १, कलो २, सुरताण ३ ।
- १२५७ रावळ भीम हरराजरो वेटो जोधपुररा राव मालदेजीरो दोहितो ।
- १२५८ सवत १६१८ रा मिगसर वद ११ भाटी भीम हरराजोतरो जनम. संवत १६७० जैसळमेर देवलोक हुवो ।
१२५९. सवत १६५४ पोस वद ६ जहड गोपाळदास जैमलोत नै जैसळमररै भाटियां वेढ हुई भाटियारो घोडो डोढ हजार हुतो. गोपाळदास रजपूता पैतीससू खेत कर पडियो कोटणसू अधकोस ।
- १२६० रावळ मेघराजरी वेंटी महेची वाला रावळ भीमरै राजलोक ।
- १२६१ वाला महेची वना मेघराजोतरी रावळ भीमरै राणी ।

- १२६२ भीम ऊत गयो भीम पछै कल्याणमल हरराजोत जैसळमेर रावळ हुवो ।
- १२६३ रावळ कल्याणदास हरराजरो बेटो कोटडियारो भाणेज ।
- १२६४ सवत १६७२ रावळ कल्याणमल अजमेर पातसाह जहागीररी हजूर आयो हो ।
- १२६५ रावळ भीमरै भाई कल्याणमलरी बेटो महाराजकुवर गजसिंघजीनू परणायी सवत १६६८ जैसळमेर ।
- १२६६ रावळ भीवरै बेटा हुवा नही रावळ कलो हरराजरो जिणरो बेटो मनोहरदास पाट बैठो ।
- १२६७ भाखरमी हरराजोत आछो राजपूत हुवो ।
- १२६८ रावळ मनोहरदास कल्याणदासरो कोटडियारो भाणेज ।
- १२६९ जैसळमेर रावळ मनोहरदास महेवें रावळ दूदा मेघराजोतरो दोहितो ।
- १२७० इणरें मामा महेचो तेजसी दूदावत. जैसळमेर भेली गोठ कीव्ही तेजसी तेजसीरै पुत्र हुवो नही ।
- १२७१ रावळ मनोहरदास जैसळमेररो धणी जसोळ माथै आयो जसोळ भिळी जद जसोळियो वीरम काम आयो ।
- १२७२ सवत १६९३ रावळ मनोहरदासरी बेटो महाराजकवर जसवतसिंघजी परणिया ।
- १२७३ रावळ मनोहरदासरै बेटो महाराज जसवतसिंघजी गजसिंघोत परणिया पुत्र मनोहरदासरै हुवो नही ।
- १२७४ सवत १७०७ रावळ मनोहरदास जैमलमेर देवलोक हुवो भाटी रामचद टीकै बैठो ।
- १२७५ जैसळमेर रावळ मनोहरदास कल्याणदासोत मुवो अपुत्र जयसिंघरो बेटो रामचन्द गादी बैठो जैसळमेर पछै महाराज श्री जसवतसिंघजी जैसळमेर सबळसिंघनू ले दिया जद सबळसिंघ रामचन्दनू डेरो दियो । डरिया भाटी रामचन्दोत है ।
- १२७६ रावळ सबळसिंघ दयालदासोत राठोड कला रायमलोतरो दोहितो ।
- १२७७ रावळ मालदे १, खेतसी २, दयालदास ३, सबळसिंघ ४, अमरसिंघ ५, जसवतसिंघ ६, जगतसिंह ७, अखैसिंह ८, मूलराज ९, गजसिंघ १० ।

१२७८ रावळ मालदेरो खेतसी जिणरै वेटा च्यार ईसरदाम १, दयालदास २, सगतो ३, सामदास ४ ।

१२७९. भाटी दयालदाम खेतसीरो वेटो राठोडा वीदावनांरो भाणेज ।

१२८० रावळ दयालदामरो वेटो मवळसिघ ।

१२८१ मवत १७१० ग भाद्रवामे रावळ सवळसिघ जैसळमेररै धणी मोढा ईसरदाम राणानू उमरकोट माहेसू काढियो सोढा जोनिगदेनू राणो कर उमरकोट वैसाणियो ।

१२८२- जैसळमेर रावळ अखैमिघ खावडियारो भाणेज इकमायो इणरै भाई जोरावरसिघ ।

१२८३ रावळ जसवतसिघ जैसळमेररो धणी जिणनू पणायी नगर रावळ भारमल जिणरी वेटी रूपावाई जिणरै वेटा च्यार हुवा - जगतसिघ १, मरदारसिघ २, तेजसिघ ३, ईसरीसिघ ४ ।

१२८४ रावळ जमवतसिघरो तेजमिघ, जिण जगतसिघरी गादी जगतसिघरो वेटो बुधसिघ रावळ सगो भतीजो उणनू गर लातु मारी । आय रावळ होय गादी बैठो निर्जळा इग्यारसरै दिन घडसीसररी लासमे तेजसिघरो काको हरी-सिघ अमरसिघोत जिण पिला लाला नामो परधान जिणनू मारी तेजसिघनू मारियो - अखैराज जगतसिघोत जैसळमेररा किलानू न गयो, ठाणनू भागो ।

१२८५ जैसळमेर रावळ जगतसिघरो वेटो अखैसिघरो वडो भाई बुधसिघ रावळ हुतो उणनू मार तेजसी जसवतमिघोत मारियो घडसीसररी पाळ माथै ।

१२८६ सवत १७५१ रा मिगमर वद १४ अखैसिघजीरो जनम सवत १७८१ रा सा० सुद ८ दिल्ली राजनिलक हुवो ।

१२८७ मम्है जाणतै मेलियो, विसहे ऊपर पाव ।
होवो माया कारमी, भवै साची थाव ॥

इण दूहारी पैली झड जैसळमेररै रावळ कही तीन झडा तेमडा रावरी कृपासू साठियारै वीठू वोहाड कही रावळजी सावेरै गया ठकुराणिया माह तेडिया महलरी देहली अर्तन नाग सोभित कियो लवायमान रावळ इणरै माथै पग दियो उण वेळा झड वणायी - मै जाणतै मेलियो ।

१२८८ सीसोदियो जगमाल राणा उदैसिघरो दत्ताणी काम आयो जणा १६ सू लुगाया छव सती हुई ।

- १२८९ जैमळपेर अनपूरणारो कोठार रावळ भीम करायो. जनाना महल, गोख हरराज कराया सूरजपोळ, वाडीरा महल रावळ लूणकरण कराया ।
- १२९० मकराणारा पाहणरी मूरत नवी देवी चडेस्वरी घळाव मूळराजंजी जैसळमेर मंदिर नवें पधरायी ।
१२९१. पची धाय नाथीरी जिण जैसळमेर वडा कमठाणा कराया लखमीनाथजीरी दोनू आखमे माणक जडाय ।
- १२९२ रतननाथजीरा कानारा दरसण जैमळमेर है. रावळजी नित दरसण करै ।
- १२९३ चीरामी गाव जैसळमेररा रावळरै पालीवाळारा है ज्यारो हासल आवै ।
- १२९४ सालमसिंध मुहत्तो जैसळमेर जिणरी मा वीकानेररी हुती उवा वीकीजी कहीजती ।
- १२९५ जैसळमेररा कामदारारा बापरी महेसगणी त्रिया बायेची कहावै, पोहकरणरी त्रिया पौरणजी कहावै घाटमै परणीज जैसळमेररा मुहत्ता त्रिया घरा आणै उवा घाटणजी कहावै ।

जैसळमेररा सिरदार

वरसलपुर

१२९६. वरसळपुररो भाटी राव मान जिणरी भाणेजी महाराज सूरजसिंधजीरी बेटी गुलाबकवरबाई ।
- १२९७ भाटी केलणरा राजमे तुरक जैसळमेररो गढ घेरियो जद भाटी चरढो कोट कूद माह आयो जद केलण कह्यो — स्यावास । म्हारा वानर, भलो आयो जदसू चरढो वानर कहाणो ।
- १२९८ वानर साळब्राह्मणरो बेटो ।
- १२९९ भाटी केलणरै तेरै बेटा जारी विगत — रणमल १, चाचो २, अको ३, दीपो ४, हरभय ५, भोज ६, वीकम ७, सोहड ८, लूणो ९, करन १०, नादो ११, खुमाण १२, धीरो १३ ।
- १३०० भाटी केलण केहररो. केहर देहरो देह मूळराजरो मूळराज जैतसीरो ।
१३०१. केलण भाटीरा बेटा दोय धीरो १, खुमाण २, मुसळमान हुवा ज्यारा वसरा राठ ।

- १३०२ गाव वारह माडमे केलणाग हे आवा गावामे रणमल केलणोतरा पोतरा है नै आधा गावामे अक्का केलणोतरा पोता है ।
- १३०३ सोमसी भाटी गायारी वाहर काम आयो गाय खोसी जद लोक कहै — सोम भाई सोम ।
- १३०४ सोम भाटी राठोड जैमिघ जारा गाव फळोदीरी गट्टीमें आगै घणा हुवा ।
- १३०५ भाटी मुलवाणी वीकानेररो गाव खानूमर जठारी मगरों भाटी रावन भदो परणियो इणमे देवनपणो हुतो ।
- १३०६ गाव लाठी जमोडारा पैतीम गाव ज्या मांहलो है पछै गावळजी ले लियो ।
- १३०७ सायबखान वाहडमेरासू वचन लेय वीकमपुररो राव हरनाथसिघ मगायो. टुटिया हाथरो किमोईकी ।
- १३०८ सं० १६९० भाटी गोपाळगम आसावतरी माडिया नीवरा खारिया कनै चरती चाणरा मैणा ले गया ।
- १३०९ माडमे वारह गांव जडा भाटियारा जडे कहावै माडमे अडकमला भाटियारा गाव वारह भभारो कहावै ।
- १३१० गाव पैतीस माडमे जसोडा भाटियारा, ठरडासू आथमणा खाडाळमें गाव हवूर भाटी ऊनड ज्यारा ।
- १३११ चाहडू गाव छपाळो अै गाव दोय माडमे हमीरा भाटी धीरा सीहडा भाटियारो गाम अेक ब्रह्मसर जठै ब्रह्मकुड है ।
- १३१२ माडमे गाव दोय पाहू भाटी ज्याग है ।
- १३१३ गाव अेक काळो रूपमिया भाटियारो है ।
- १३१४ मावत सीहा भाटियारो गाव अेक कोटडी माडमे है ।
- १३१५ सोमगाव वगेरै आठ गाव गोगली भाटी ज्याग माडमें है ।
- १३१६ अेक गांव साहको अणगा भाटियारो है ।
- १३१७ घाणैली १, सूजियो २, दहो ३, अै तीन गाव रायधरा भाटियारा है ।
- १३१८ भीरमदेवोत भाटी ज्यारै पटै जाणियाणो सराणो हुता जाणियाणी तेजसिघ आईदानोत ले लियो सराणो रुघनाथसिघ मुजाणसिघोत ले लियो ।
- १३१९ वीकमपुर कनै गाव ढावरियाळो टावरिया रजपूतारो है ।
- १३२० देवराज समरोटू अै ठिकाणा वावल खानखानैमें खारखखा भाटिया कनांसू लिया ।

जादू

१३२१ जादू राजपूत केईक मुसळमान है . जाटवारो वडेरों पीर हुवो है जिणरो नाव लोड ।

करोली

१३२२ करोलीरो राजा मानपाळजी जादव महाराज प्रतापसिंघजीरो सुसरो जैपुर आयो जिण कही अभैकुवरवाई म्हारी भाणेज है ।

खेजडलारा भाटी

१३२३ खेजडलारा सिरदारारी पीढिया लिखते - जेसळमेर देवराजरै बेटा दोय हुवा - वडो केहर सो तो रावळ, दूजो हमीर ।

१३२४ केहररै बेटा तीन- लखमण १, कलकरण २, केलहण ३ रावळ केहरर भाई देवराजरो बेटो हमीर, हमीररो लूणकरण, लूणकरणरो सतो ।

१३२५ हमीर १, लूणकरण २, सतो ३, अरजुण ४, सावळ ५, सीहो ६, रायपाल ७, आसो ८, गोपाळदास ९, दयालदास १०, केहरसिंघ ११, सूरसिंह १२, हठीसिंघ १३, किसनसिंघ १४, देईदास १५, जसवतसिंघ १६, सादूळसिंघ १७ ।

१३२६ भाटी रायपाळ सीहावत राव मालदेजीरै चाकर रहतो पटै खीवसर, अटवडो, खेजडलो नागोररा गाव इतरा हुता रावजी चद्रसेणजीरी चाकरीमे रह्यो रायपाळ ।

१३२७ भाटीरायपाळोत राजा भगवानदास कछवाहेरो चाकर ।

१३२८ भाटी गोपाळदास आसावत पातसाही चाकर हो सो सवत १६७१ रावळ वसियो किताईक गावासू दुधोड पटै पायी ।

१३२९ दयालदास गोपाळदासोन सवत १६७७ रावळ वसियो डलैवीरो पटो दियो पछै सवत १६७८ भाद्राजग गावा २४सू परै दिवी पछै जाळोररी हाकमी दिवी ।

१३३० जाळोर हाकम जद दयालदास महेचा रायमल उदैसिंघोतनू पकड रोकियो थो पछै छोडियो दुधोडसू वाहर गुडो दियो हो उण गुडामे दयालदास हो रायमल मेवाडसू महेचा चादा वाधावतनू ले दुधोड दयालदास माथै आयो दयालदास माराणो दयालदासरो वडो डील हो ।

- १३३१ भाटी दयालदासरा वेटारी विगत - केमरीसिंघ १, राजसिंघ २, छीतरदाम ३, तेजसी ४, भगवानदास ५ ।
- १३३२ भगवानदास दयालदाम भेल्लो काम आयो ।
- १३३३ छीतरदाम पहला गोपालदासजीरें वढलें चाकरी कर्तो सबत १६९२ छाडाणो कर अमरसिंघजीरें गयो पछै जोधपुर आयो भाद्राजण राजसिंघ भेल्लो पटै पायी. पछै राजसिंघ छीतरदामनै मारियो ।
- १३३४ केमरीसिंघ दयालदासोन खेजडलो पटै पायो ।
- १३३५ केमरीसिंघरा वेटारी विगत - हरिसिंघ १, मूरसिंघ २, उर्दमाण ३, चतुरभुज ४, वोडारो भाणेज ५, सुजाणसिंघ ६, हरिसिंघ ७ ।
- १३३६ केसरीसिंघ राव रायसिंघोत ममरसिंघोतरे चाकर रह्यो ।
- १३३७ हरिसिंघरें वेटारी विगत - वीरमदे १, लाखो २, दुरजणसिंघ ३ ।
- १३३८ भाटी आसा गयमलोतरा वेटारी विगत - नारायणदाम १, रूपसी २, डूगमी ३, ठाकुरमी ४, सुरजण ५ ।
- १३३९ नराणदाम रायमलोतरो कछवाहा राजा मानरें आवेर चाकर रह्यो ।
- १३४० भाटी गयमल सीहावतरा वेटारी विगत - जैसो १, राणो २, अखैराज ३, भाखरसी ४, किमनदाम ५ ।
- १३४१ जैतमाल सीहावतरें काम आयो छोरु न हुवो ।
- १३४२ मावन उरजणोतरें वेटो आपमल, आपमलरें आल्हण, कूपो महाराजोतरें चाकर हुवो सो कूपै माथै काम आयो ।
- १३४३ आपमलरो वीरम मोहलामू भगडो कर काम आयो लाडणू सीहाजीरें वैर ।
- १३४४ भारमल मावनरो ।

लवेरारा सिरदारांरी पीठियां

- १३४५ कलकरण १, जैसो २, आणद ३, नीवो ४, मान ५, मुरताण ६, रघुनाथ ७, भीम ८, इद्रभाण ९, साहवखान १०, मुजाणसिंघ ११, अणदसिंघ १२, दोलतसिंघ १३, जैसिंघ १४, केसरीसिंघ १५, उमेदसिंघ १६ ।
- १३४६ भाटी केहररो कलकरण, कलकरणरो जैसो जैसारें चार वेटा हुवा - अणद १, जोवो २, भैरुदास ३, वणवीर ४ ।
१३४७. पहला लद्रवो भाटियारो वाम हुतो पछै गोइददास मानावन आवादान कियो नाम लवेरो प्रमिद्ध हुवो ।

१३४८ भाटी जेहो हडबू साखलारो दोहितो ।

१३४९ जैसाजीरी बेटी लखमीबाई रावजी सूजाजीरी राणी कवर वाघाजीरी मा ।

१३५० अणदरै नीवो, नीबारै मानो, मानारै गोइददास ।

१३५१ लवेरारा सिरदाररो वडेरो भाटी नीवो जैताजी कूपाजी साथ समेळ काम आयो ।

१३५२ महाराज सूरजसिघजीरै कवरपदै ही गोइददास प्रधान हुता ।

१३५३ सवत १६६३ लवेरो आसोप दोनू महाराज सूरजसिघजी गोइददासजीनू पटै दिया ।

१३५४ सवन १६७१रा जेठ सुद ८ अजमेर काम आया ।

१३५५ पतो भादावत वडो डील हो गोइददासजी साथ अजमेर काम आयो ।

१३५६ गोइददासरै बेटो जोगणीदास पटै गावा च्यारासू गाव बीजवाडियो महाराजा सूरजसिघजीरो उमराव जिणानू राजा मान कछवाहारा चाकररो हाथी मस्त जिणा घोडासू उठाय सूडसू दातासू सालियो जोगणीदास दातामे पोयोडै तीन कटारी हाथीरै कुभाथल वाही राम कह्यो सवन १६६८ पातसाहरी फौज दिखणमे आवै जद ।

१३५७ रामसिघ १, प्रथीराज २ गोइंददास मानावतरा बेटा महेची पूरावाईरी कूख उपन्या पाचवो बेटो वेणीदाम गोइददास मानावतरै ।

१३५८ भाटी नरहरदास गोइददास मानावतरा साता गावासू डावर पटै ।

१३५९ ओ हाथी राजा मान राजा सूरजसिघजीरी निजर कियो. किताईक वरमा पछै ऊ हाथी उदैपुरमे साहजादा खुरमरी निजर सूरजसिघजी कियो ।

१३६० भाटी सुरताण मानावतरा मुहतो केसो जिणनू गोइददास मानावत रावळरै वापो सवत १६६८ महाराज सूरजसिघजी दिखणमे हुता उठासू वीख सुरताणजी घरै आय केसो मुहतानू मारियो गोयंददामजी सुरताणजीनू घरती माहेसू कढाया ।

१३६१ सुरताणजी नागोर राणा सगररो चाकर रह्यो. सगरजी भीवडा दिवी राठोड नरसिघदास कला रायमलोतरा सूरसिघ सुदरदास रामसिघोत आमू भावका खानाजगी हुई नरसिघदास सूरदास सुदरदासनू मार मुवो सुरताणजी सवत १६६८ रा जेठ सुद ८ ।

१३६२ भाटी रुघनाथ उजैण धावो पाडियो जद बुदेलै भावसिघ सुखपाळमे घाल उठायो जतन किया. किसनो पातो रुघनाथरै साथ धावा पडियो हो ।

- १३६३ भाटी प्रथीराज गोडदामोतरी सोढा मोढे भगवानदाम शिवी सोढांरी वार भगडो कर भाटी सुंदरदास काम आयो ।
- १३६४ नरहरदाम गोयददासोन जिणरै पटै डावर गावा मातसू ।
- १३६५ वेणीदाम गोयददामोतरै पुरामे है निणसू वेटा दोय हुआ - माममिघ १, प्रथीगज २ ।
- १३६६ भाटी सुंदरदाम सुरताणोन काम आया निणरो उवाको मवन १७०४ वरसे माह वद ५ हवो ।
- १३६७ नागोररो गाव डेह भाटी सवलदाम सुंदरदाम सुरताणोनरो मत्ताईम जणांसू काम आयो गाव डेह लाडणूसू जोधो डदरभाण केहरमिघोन माथे आयो जद ।
- १३६८ उग हीज दिन मवलसिघरा रजपूता जोधा डदरभाणनू मारियो ।

वीकमकोररा भाटी

- १३६९ भाटी सुरताण १, अचलदाम २, महेमदाम ३, किसोरसिघ ४, जैतसिघ ५, गुमानसिघ ६, हिंदूसिघ ७, पहाडमिघ ८, जुझारमिघ ९ - अ वीकमकोररा सिग्दरारी पीढिया ।

वालरवारा भाटी

- १३७० भाटी जैसो १, जोधो २, गमो ३, किसनो ४, कान्ह ५, हरिदास ६, मुकद-दास ७, गममिघ ८, रणछोडदाम ९, उदैभाण १०, जैतसिघ ११, रतनसिघ १२, वृधमिघ १३, कवर साडूळसिघ १४ - वालरवारा सिरदारारी पीढियां ।

माणकलावरा भाटी

- १३७१ भाटी जैसो १, भेरुदास २, मूरो ३, साकर ४, डूगरसी ५, हरदास ६, ईसर-दाम ७, कूभो ८, राम ९, जैमिघ १०, सूरतसिघ ११, सगतसिघ १२, रतन-मिघ १३ - अ माणकलावरा भाटी भाया भेरुदामोतरी पीढिया ।

- १३७२ राम कूभावत भाटी गाव रामपुरो वसायो ।

वालरवो

१३७३. रुधै मुहते पातारा विसर वणाया हुता जिणनू पाता रुधानू मारियो. वालरवारै सिरदार रुघनार्थसिघ भाटी रुधारा वैरमे पातानू मारिया ।

सरढ

१३७४. रावजी जोधाजीरी वारमे सरढरो धणी जसाभाई भाटी रावत भादो हो.
हमै सरढ वरसिंघा भाटियारै है ।

सेत्रावो

१३७५ रावत लूणो सेत्रावारो धणी रावजी जोधाजीरो माहडो जिण सारण घोडी
जोधाजीनू दिवी ।

गुडो

१३७६ ईसररो ठाकुरसी जिण दुरगदासरी मदतसू चवरी पोतरारा किंवाड गुडै
आणिया, राणाई पायी ।

१३७७ ठाकुरसी १, सायवखान २, भाखरसी ३, मालदे ४, जीयो ५, जैसिंघ ६,
ठाकुरसिंघ ७ ।

१३७८ सवत १७४० रो जनम कनीराम रामसिंघोतरो संवत १८३२ रा जोधपुरमे
रामसरण हुवा बरस तयाणूरी ऊमर हुई सवत १८२५ कानीरामजी
मनीवज बीकानेरसू जोधपुर आया ।

१३७९ राठोड प्रथीराज प्रभुओत, राठोड महेसदास दळपतोत, ऊदावत भीम
कल्याणदासोत - या तीनानू अक सरीखी लिखावट महाराज शिवजीरा खास
रुकामे पछै महेसदासजी जाळोर पायी, गढपती हुवा जिणसू लिखावट
आगै न रही प्रथीराजरै मनसब घणो हो जिणसू वचनात् नही नै लिखावतू
लिखीजतो ।

जसोल

१३८० रावळ तेजमाळ भारमलोत फाटा तळाव माथै सातवीसू जसोल ठाकुराई कीधी।

समा यादव

१३८१ वेळावल समो सिंघमे वडो दातार हुवो ।

१३८२. समारै जिसी सखावत किणमे ही न हुयी ।

१३८३ वगो वलार भेळा वतळायीजै ।

जाड़ेचा यादव

१३८४ माहोरमे . . .

१३८५ सिकदर फीरोज फतैखा वगेरा प्रतापीक जाम हुवा जामा कनासू भाटी
ऊनड सिंघा सात ही लिवी ऊनड जाम कहाणा ।

- १३८६ जाम ऊनड साढा तीन करोड़ रुपियारो सिंघासण छत्र दे सात ही सिंघ सूघा कवी सावळनू दिवी ।
- १३८७ जाम ऊनडरा बेटा चावडा कनासू कछ लिवी ।
१३८८. जाडेचा हमीररा बेटा तीन — खगार १, राहिव २, साहिव ३ ।
१३८९. रावळ जामरै जै राव खगाररै बडो जग हुवो है ।
- १३९० झारो मिरहर डूगरा, कारो वेकाणाह ।
माभी खेगो वकडो, नमै न सुरताणांह ॥
१३९१. समहर छूटो सिंघ ज्यू, बूटो बडी बलाय ।
चोखी करि-करि चाकरी, खाग-तणै वळ खाय ॥
१३९२. मुसळमान बूटो चचर राव खगाररी चाकरीमे रह्यो पबो, मोकळसी — अँ ही राव खगाररी चाकरीमे रह्या ।
- १३९३ राव खगार हालानू कछ माहेसू काढिया उवै जाय हालाहर वसिया ।
खाटी राव खगार, भारमल भुगती घरा ।
- १३९४ भारमल दिलीरा पातसाह आगै वाघ मारियो. पातसाह राजी होय मोरवीरो परगणो दियो ।
- १३९५ जाडेचामें साहव थाटरो घणी, खगार पाटरो घणी ।
- १३९६ भुज सहर राव खंगार वसायो ।
१३९७. भुजरा रावांरी पीढी लिखते — फूलो १, लाखो २, हमीर ३, सूमल ४, लाखो ५, ऊनड ६, सिधराज ७, जाम ८, लाखण ९, भीम १०, अमर ११, जेहो १२, हमीर १३, नगराज १४, खगार १५, भारो १६, मेघ १७, तमायची १८, रायघण १९ पराग २०, गहडर २१, देसल २२, लाखो २३, गहडर २४, रायघण २५ ।
- १३९८ पावर कछरो परगनो है ।
१३९९. चवदै चाळा कछ चवदै पडगना है पडगनानू चाळ कहै कछ घरा खावै परा जीतै नगो कोम. आसापुरारो वर हो कछनू कोई जीतसी नही ।

सरवहिया यादव

- १४०० सरवहियो नवघण गिरनार-पती जिणरी घाय वहन नाम जायल, अहीरण जात, अति रूपवती, देवीरो अवतार, घणो वित्त ले सिंघमे गयी सोरठ त्रिण-काळ पडियां सिंघरो पातसाह सूमरो जिण जायलनू घरमे घालणी

विचारी अँ समाचार जायल नवघणनँ लिखिया. नव लाख घोडासू नवघण सिंधमे आयो नव लाख लोवडियाळरी कगसू सूमरानू मार सिंध लिवी ।

१४०१. आघो अरब सरवहियँ राव खगार लूणपाळ मिहडनँ दियो ।

१४०२. गिरनार राव खगार सरवहियो हुवो जिण पचास कोड नँ नवमी सोरठा महडू लूणपाळनू दिवी दूजो राव खगार जाडेचो हुवो जिण भुज वसायो ।

१४०३. जूनागढरो घणी राव खगार जिणनू वावळरी डाळ माथै बैठै छुमण चारण दया पाळण तयार कियो-

हँ जाणू ब्रह्म वञ्जडी, जिण भाखे जिण लग्ग ।

ओ दूहो सुणाय नँ ।

१४०४. राव खगार गिरनाररो घणी सरवहियो हुवो. कछरो घणी जाडेचो हुवो ।

कछवाहां

१४०५. कछवाहांरो राज थेटू पूरवमे रोहितासगढ जठै उठासू नरवर वसिया नरवरसू दोसै ठकुराई बाधी दोसासू आबेर आबेरसू जैपुर ।

१४०६ आबेररा राजारी पीढिया लिखते-राजा दूलैराय १, राजा काकिल २, राजा हणुमतसी ३, राजा महड ४, राजा पजून ५, राजा मलैसी ६, राजा बीजळसी ७, राजा राजळ ८, राजा कल्याणसी ९, कुतल १०, जूणसी ११, उदैकरण १२, वीरसिंध १३, वणवीर १४, चद्रसेन १५, प्रिथीराज १६, भारमल १७, भगवतसिंध १८, मानसिंध १९, जगतसिंध २०, महासिंध २१, जैसिंध २२, रामसिंध २३, किसनसिंध २४, विसनसिंध २५, सवाई जैसिंध २६, माघोसिंध २७, प्रतापसिंध २८, जगतसिंध २९, सवाई जैसिंध ३० ।

१४०७ राजा उदैकरण कछवाहो आबेर-पत जिणरँ तीन बेटा हुवा - वरसिंध १, नरसिंध २, वालो ३. वरसिंध आबेररी गादी बैठो जिणरा राजावत. नरसिंधरा नरुका. वालारो मोकळ, मोकळरँ सेखो सेखारा सेखावत ।

१४०८ कछवाहारी वसावळी-कुतल १, जीवणसी २, उधरण ३, चादणो ४, प्रिथीराज ५ राजा प्रिथीराजरा राजावत कहाणा

१४०९ राजा प्रिथीराजरँ बेटा तेरह-भारमल १, रतनसी २, भीव ३, सागो ४, बळभद्र ५, सुरताण ६, परताप ७, जगमाल ८, रूपसी वैरागर ९, डूगरसी १० कल्याणमल ११, गोपाळ १२, चत्रभुज १३ ।

१४१०. नाथो गोपाळरो जिणरा नाथावत कहीजै जगमालरो खगार तिणरा खगारोत कहावै ।

१४११. कछवाहा राजा प्रिथीराजरो भीव, भीवरो राजा आसकरण ।
१४१२. प्रिथीराजरो राजा भारमल संवत् १६३० सीकर मुवो, सती हुई ।
- १४१३ राजा भारमलरा वेटा — भगवतदास १, भगवानदास २, राजा जगनाथ ३, सिलहदी ४, सुदरदास ५, सादूळ ६ ।
- १४१४ राजा भारमलरा वेटा — छवसिंघ १, हिंदूसिंघ २ ।
- १४१५ सूरसिंघ १, माघोसिंघ २, प्रतापसिंघ ३, राजा मान ४, अँ राजा भगवंत-सिंघरा वेटा ।
- १४१६ भारमलरो राजा भगवतदास भगवतदासरो राजा मान राजा मानरै वेटा—जगतसिंघ १, भावसिंघ २, सगतसिंघ ३, दुरजणसिंघ ४, सवळसिंह ५, कल्याणसिंघ ६, हिम्मतसिंघ ७, स्यामसिंघ ८ ।
- १४१७ मानसिंघ भगवतसिंघोत परमार पचायण करमचंदरो दोहितो ।
- १४१८ कछवाहो राजा मान राव मालदेजीरो रायमल जिणरी वेटी सतभामावाई परणियो ।
१४१९. महाराजा रायसिंघजीरी वेटी अहजनकवर जैपुररो राजा मानसिंघ जिणनू परणायी ।
- १४२० कछवाहै राजा मान बाघूगढरा राजा रामसिंघ कनासू पेसकसी लीवी नहीं ।
- १४२१ अटकरो किलो कछवाहै राजा मान करायो अकवररै नवाब ।
१४२२. कंवर जगतसिंघ मानसिंघोत कछवाहै खुरासाणियारै तरवारारै लोहरी मूठ दूर करायी, काठरी मूठ दिरायी ।
- १४२३ मान राजा कछवाहो जिणरो वेटो जगतसिंहजी जैतारणरो घणी रतनसिंघ खीवा ऊदावतरो दोहितो कुवर पदै देवलोक हुवो ।
- १४२४ मानसिंघ भगवतसिंघोत महासिंघ जग(त)सिंघोत ।
- १४२५ सवत १६७३ महसिंघजी देवलोक हुवा जद दोसारो टीको जैसिंघजी पायो, छव वरसरै दोसो पायो ।
१४२६. संवत १६७८ भावसिंघ मानसिंघोत राम कह्यो जद इग्यारै वरसरै वडै जैसिंघ आंवेर पायो ।
१४२७. सवत १६७८ राजा भावसिंघ राम कह्यो जद आंवेर जैसिंघ पायो ।
१४२८. राजा जैसिंघ महसिंघोत सवत १६६८ जनमियो आसाढ वद १ वार सुक्र सवत १६७३ राजा महसिंघ राम कह्यो जद दोसारो टीको राजा जैसिंघ पायो, आंवेर राजा भावसिंघ मानसिंघोतरै हुवो ।

१४२९. संवत १६६८रा प्रथम आषाढ वद १रो जनम कछवाहा राजा वडा जैसिघरो ।
१४३०. मानसिघ भगवतसिघोत महासिघ जगतसिघोत मेडतिया मधोदासोत जैमलोतरो दोहितो जैसिघ महासिघोत सीसोदिया साहजी उदैसिघोतरो दोहितो जैसिघ विसनसिघोत खैरवै जोधो कासीदास जिणरो दोहितो ।
- १४३१ कछवाहै राजा वडै जैसिघजी दिलीमें जैसिघपुरो वसायो ।
- १४३२ आबेररो राजा जयसिघ महासिघोत राजा सूरजसिघजी उदैसिघोतरी बेटी मरगावतीबाई परणियो जोधपुरमे ।
- १४३३ बुरहानपुर हाडा राव रतनरी हवेली कनै डेरा हुवा वडा जैसिघजीरै मास दोय असमाध रही, पक्षाघात हुवो ।
- १४३४ संवत १७२४रा आसोज वद ५ बुधवार रात घडी ६ पाछली हुती जद सहर बुरहानपुरमे राजा जैसिघजी राम कह्यो पक्षाघात हुवो हो, दोय महीना खेद रही ।
- १४३५ संवत १७२४रा आसोज वद ५ बुधवार रात घडी ६ पाछली रही जद राजा कछवाहै वडै जैसिघ राम कह्यो बुरहानपुरमे ।
- १४३६ तपती नदीरै माथै मोहणी-सगमरै घाट दाग दिराणो ।
१४३७. राजाजीनै दाग पडियो तपती नदी ऊपर मोहणी-सगम जठै ।
- १४३८ हाडा राव रतनरी हवेली कनै डेरो हुतो राणी अक राठोड वीकावतजी सत कियो वडारण पातर खवास अ ११ बली ।
- १४३९ राणी अक राठोड वीकावत साथ बली डग्यारै पातर खवास साथ बली ।
१४४०. राजा जैसिघ सात हजारी जात सात हजारी अरदुअस्पा सह अस्पा मनसब हो ।
- १४४१ जैसिघजी देवलोक हुवा जद आपरै सात हजारी मनसब हो च्यार हजारी मनसब कुवर रामसिघरै हुतो दोय - हजारी मनसब कुवर कीरतसिघरै हुतो ।
- १४४२ कवर रामसिघ जैसिघोत मनसब च्यार - हजारी जात च्यार हजार असवार ।
- १४४३ कवर कीरतसिघ जैसिघोत मनसब दोय - हजारी जात अठारहसौ सवार ।
- १४४४ कुल मनसबरा दाम बीस करोड इक्तालीस लाख ज्यांरा रुपिया इकावन लाख अठाईस हजार ।
- १४४५ जैसिघ विसनसिघोत खैरवै जोधो कासीदास जिणरो दोहितो ।
- १४४६ संवत १७८८ सवाई जैसिघ जैपुर वसायो आबेर राज करता कछवाहांनू हजार वर्ष हुआ जठा पछै जैपुर राजधानी ठहरायो ।

१४४७. राजा सवाई जैसिंघजी वैरागणियानू परणाय मथुरामें, वृंदावनमें वैरागपुरो वसायो ।
१४४८. विवाह करम जान करमादी करता देख हित राधा वर लेलियानू व्रंदावन माहेसू सवाई जैसिंघजी काढ दिया हा ।
१४४९. सवाई जैसिंघ हाडा महाराव भीमसिंघजीनू भीमडो कहतो ।
१४५०. पछै गोपाळसिंघ भदावररो जिणरो वेटो भदोरियो राजा जिण कनै अठारै लाख रुपया ले सतारै गयो ।
१४५१. पछै सवाई जैसिंघजीरा लिखणमूं वाजेराव उजीण आयो. उजीणरा सोवेदार नागर ब्राह्मण छवीला वहादुर, दया वहादुर ज्यां दोनानू मार मालवा सतारा, लारै घालियो ।
१४५२. दीपसिंघ कुभाणी पुसकरजीमें महाराज जैसिंघजीरै हाथरो संकळपरो जल] ले रतनवारो सासण नागल जवत हुवोडो वहाल करायो ।
१४५३. गगवाणै राजाधिराजरै नै सवाई जैसिंघरै राड हुई जद सेरसिंघजी कुसळ-सिंघजी राजा जैसिंघजीरै काम आया ।
१४५४. जैपुररो राजा माघोसिंघजी हाथरी दसही आगळियामे वीटियां राखता, आ राणाजीरी चाल ।
१४५५. जिलायरा राजावतजी राम-सरण हुवा माघोसिंघजी काण करावण आया. राघवसिंघ सभामें नाला मारिया ।
१४५६. तुवरावाटीरो गांव मांवडो मडोली जठै जाटरै जग हुवो कछवाहांसूं ।
१४५७. घुलारो धणी दलेलसिंघ रथसूं उतरतो हो गोळारी लाग रज-रज हो गयो ।
१४५८. वारै हजार घोडो जाटरै कनै हुतो कछवाहासू जग हुवो जद ।
१४५९. सवत १८२४ जाटसू कछवाहां राड कीवी ।
१४६०. मालपुरारो गांव ईंदोळी भगडो हुवो लखुआ आगै राजा प्रतापसिंह भागो जैपुररो घणी ।
१४६१. हकीम पैदरुसजीनू आगरासू महाराज जैसिंघजी आणिया जैपर. वां फिरंगीरो दारु काढियो ।
१४६२. जैपुररो राजा पाट वैसे जद मैणो तिलक करै
१४६३. आवेरमें मुदे मानका केकान केकानरा पोता पारीक पुरोहित कछवाहांरा गुरु है ।

- १४६४ जैपुररो राजा सदा रामानुजरो तिलक करै गोविंद-देवजीरै मंदिर जावै जद माधव सप्रदायरो तिलक करै गोकुळचंद्रजी १, मदनमोहनजी २, गोकळनाथजी ३, आरै मंदिर जावै जद वल्लभकुलरो तिलक करै. सिव सकती, गणेशरै दरसण जावै जद छव तिलक करै ।
१४६५. वेस्यारी, भाडारी चौथाई जैपुर राज्यमें लिरीजै आ रीत जैसिंघजीसू बंधी. उण चौथाईरो पईसो वार-तिहुवार वेस्यावानूं दिरीजतो. राजरै हराम हुतो ।
१४६६. आंबेर थाप-उथापरा धणी खगारोत नाथावत है सेखावत नरूका नगारा चार है ।
- १४६७ आबेर सात उमराव जिके साता किलेदार है किलेदारी उतरै नही ।
१४६८. ढूढाडमें बारहे कोटडिया है जिके लिखीजै है नाथावत १, खगारोत २, सुरताणोत ३, कल्याणोत ४, कुभाणी ५, पूरणमलोत ६, बळभद्रोत ७, सिव ब्रह्म-पोता ८, पचारसोत ९, वाकावत १०, भारमलरा ११ ।
१४६९. वांडी नदीरो उगवणो तट तो राजावतारो, आथमणो सेखावतरांरो ।
- १४७० जैपुररा सारा उमराव जैपुर राजारी खिदमतमे रहै, उणियारै राव राजा रहै ।
१४७१. नगरसू उठ रावत ईसर गोडोन वसायो ।
१४७२. राजावत सग्रामसिंघरै पाच बेटा हुवा — गजसिंह १, विजैसिंघ २, अणदसिंघ ३, रूपसिंघ ४, हिम्मतसिंघ ५ ।
- १४७३ कछवाहो राजावत फतैसिंघ मूळी कहीजतो मूल नक्षत्रमे जनमियो हो तिणसू वरवाडा वगेरै ठिकाणा राजावत फतैसिंघोत है ।
१४७४. वरवाडै राजावत मोहनसिंघोत विक्रमादितजी हुलकर मल्हारावसू आछो लड़ियो जद महाराज माघोसिंघजी राव पदवी दीवी ।
१४७५. विक्रमादीतरो जवाहिरसिंघ, जवाहरसिंघरो रामसिंघ, रामसिंघरो सलामत-सिंघ हमें वरवाडै भलो दातार है ।
१४७६. धुलारा राजावत दुरजसिंघोत ।
१४७७. नराणारो धणी खगारोत भोजराज पातसाही चाकर दिखणमे गढ नळदुर्ग जठै काम आयो ।
- १४७८ गीजगढ़ ठिकणो ढूढाडमे चापा सामसिंघ देवीसिंघोतरो ।
१४७९. खाचरियावासरा सिरदाररै पहला रामगढ हो, खाचरियावास ढूढाडरो है ।

- १४८० मनोरपुररो घणी सेखावत लूणकरणजी ज्यांरो छोटो भाई रायसलजीनूं वेक गांव दियो. रायसलजी पातसाहरी चाकरी लागा दिलीरै पातसाह वारह-हजारी मनसब दियो रायसलजीनै ।
- १४८१ सेखावत रायसलजीरै वारा वेटा जिणमे पांच निरवस गया, सातारो वंस रह्यो ।
- १४८२ गिरधरजी १ भोजराजजी २, लाडखानजी ३, ताजखानजी ४, हमीरमलजी ५, फरमरामजी ६, हररामजी ७ - आ सातारो वस रह्यो ।
- १४८३ निरमलजीरा सेखावत रावजीका वाजै निरमलजी रावजी कहाणा सीकर रावजीरा है ।
- १४८४ लाडखानजी, ताजखानजी अै पातसाहरा दिया नाम है ।
१४८५. खडेलारो राव सेखावत केहरसिंघजी नवाव अबदुल्लाखासू जग कर काम आयो-जद साथ नव चारण काम आया ज्यामे दोय वारट, दोय नगरीरा काम आया ।
- १४८६ खडेलै राजा केहरसिंघ अबदुल्लाखा नवावसू जग कर काम आयो. इन साथ नव चारण काम आया
- १४८७ सीकररा घणीरी पीढिया - रायमल १, निरमलराव २, गंगाराम ३, सामराम ४, जसवतसिंघ ५, दोलतसिंघ ६, सिवसिंघ ७, चांदसिंघ ८, देवीसिंह ९, लिछमणसिंघ १० ।
- १४८८ सेखावत सिवसिंघ सीकररो घणी जिण नवाव कनासू फतैपुर लियो वीकारो भाणेज सेखावत सादोजी जिणनू मासीरै घणी जूजणूरै घणी दिवाणजी पुत्र कर राखियो दिवाणजीरै पुत्र नही जिणसू जूजणू सादाजी अपणायी ।
- १४८९ सेखावत सिवसिंघ फतैपुर लिगो जिण ठाय फतैपुररो नवाव कयामखानी जानी साहब तीन महीना सीकर लडियो, सीकर छूटी नही
- १४९० सेखावत सादा महाराज वखतसिंघजीरी तावीतमें रामसिंघजीसू भगडो हुवो जद गाव रिया डेरा सेखावातांनू खबर आयी-कयामखानी गुड पाखर फतैपुर आया, मदन करण वेगा आवज्यो, हाल तो म्हे गंतिया छै. जद कुवर चांदसिंघ सिवसिंघोत नै किसनसिंघ सादावत दोनू पांच हजार लोक ले चडिया कयामखानी भागा सेखावता वटका कर वगाय दिया ।
- १४९१ तीस हजार मिपाही ले पठाण मोडै चढ मुरतजाखां दिलीसू खिलत ले ढूँडाइ माथै आयो. सीकररै घणी सेखावत देवीसिंघ भायानू साथ ले खाटू

कजियो कियो रिख-पूनमरै दिन. तीन हजार दादूपथी काम आया, वलारारो धणी खेतावत काम आयो देवीसिंहरा भुजरै तीर लागो मुरतजाखा भागो. पठाण घणा माराणा फौज लूटी गयी फतै सेखावत कीवी ।

१४९२ इण चाकरीसू पचास रूपिया देवीसिंघरी थाळीरा रोजीना जैपुरसू कर दीना ।

१४९३ सीकर सेखावत सिवसिंघरो बडो बेटो समरथसिंघनै अक बाई जोधारी भाणेज बाईनू साहपुरै उमेदसिंघजीनू परणायी

१४९४. कीरतसिंघ १, उमेदसिंघ २, पालीरा चापावतारा भाणेज सेखावत सिवसिंघरा कवर बडा जोरवान ज्यानू सिवसिंघ मराया समरथसिंघरै हाथ ।

नरुका

१४९५. पाघररा पातसाह—ओ नरुकारो विरद ।

१४९६ राजगढ १, प्रतापगढ २, रामगढ ३, लिछमणगढ ४, गोवदगढ ५, किसनगढ ६, वलदेवगढ ७, पिरोजपुरो ८, गाजीरो थाणो ९, माला खेडो १०, अलवर ११—इत्यादिक वावन गढ माचेडीरा रावराजारै है ।

१४९७ माचेडीरो रावराजा प्रतापसिंघ जैतावतरो भाणेज वारणा वालारो ।

१४९८. रावराजा वखतावरसिंघ माचेडीरो पहला कुचामण परणीज पछै त्रिसिंघिया वडगूजरांरै परणियो ।

१४९९ कछी सिंघरी गाया, कछरी साढा, पटियाळ ह्यरफरी भैसिया, घोड़िया काठियावाडरी, हजारो रावराजा वखतावरसिंघ मगायी ।

१५०० पथ हर देव ओजो १, माणक मेथीलनी २, सबलनाथ जोगी ३, पालावत बारट उमेदजी ४—आ च्यारानू रावराजा वखतावरसिंघ मानिया ।

१५०१ समरथसिंघ मर गयो सीकररो धणी नाहरसिंघ समरथसिंघोत जैपुर हुतो जद चादसिंघ बुधसिंघ वैरीसू आया पठाण मसतेखानू मार मैसरी चितलागियो जात नाव दीपचद नाहरसिंघरो कामेती जिणनू मार सीकर लीवी ।

१५०२. मेडतियो सेरसिंघ लुळवारो धगी जिणरी बेटो साहिबकवर सिवसिंघजी परणियो चादसिंघ, बुधसिंघ दोय बेटा हुवा ।

१५०३. भडैचसू कजियो हुवो जद परमरामजीको उमेदसिंघ और चादावत भाई जालमसिंघ दोनू आछा हुवा सीकर देवीसिंघजी आनू वधाया ।

- १५०४ जूजणूरा भोजराजोत ज्या हेटै नव सौ गाव है ।
१५०५. खलारै सलार ठिकाणो. गुवाररै जैसिघ, जैसिघरो वाक्रो, वाकारो वीरम, वीरमरो रतनो, रतनारो भुजबळ, भुजबळरो साकर. ठिकाणो मांडो ।
- १५०६ साकररो साडल, साडलरो सावळ, सावळरो देईदास पटै मोडी ।
१५०७. सेखावाटीमे करनोतानू नीवावत कहै ।
- १५०८ भटकैरो मारियोडो साकररो जानवर सेखावत न खावै सूर न खावै. नगारारै झालरी नीळी राखै ऊटारी जुन नीळी राखै नीलां निसाण राखै. सेख बुरहानरी दवासू मोकळजीरै सेखो हुवो जिणसू ।
- १५०९ सौ गाव कासलीरा तीन सौ गांव फतैपुररा, दोय सौ गांव खडेलारा, छव सौ गाव सीकर हेटै छै ।

टोडा

१५१०. रामसिंघ तोडारो राजा भीव अमरसिंघोतरो, राठोड जेतारणिया नराणदास पता डूगरसिंघोतरो दोहितो —

तोडा-वाळा रसिया । म्हारै अमल किया घर आव ।

पडिहार

१५११. पडिहारारै गोत्रजण देवी ।
- १५१२ पडियार नाहडराय मडोवर गढ करायो, पुसकरजी बघायो ।
१५१३. पडियारा कनैसू रायपाळ धूहड़ोत मडोवर लियो, छूट गयो ।
- १५१४ अेह न मदची रूपडा,
बुध घर पडियार ।
- १५१५ पडियार रूपडियै राणै अग्यारमी बेटी बुधा भाटीनू परणायी ।
- १५१६ पडियार राणो रूपडियो जिणरै वारै बेटी हुई गयाजीमे इण कही — वारै ही कन्या वारै रावानू परणावसू इग्यारै कन्या तो इग्यारै रावानू परणायी. वारमी कन्यानू राव न मिळियो जद भाटी राव केल्हणनू वारमी बेटी परणायी उण दिनसू पडिहारा भाटियारै सनमध हुवो ।
- १५१७ पडियार वेळो बीकाजी साथै गयो बीकानेर उठे वेळासर गाव वसायो ।
- १५१८ पडियार अेक भाई तवेलारो, दूजो भाई तोपारो दरोगो जोधपुर ।
१५१९. पडियार नाहडराय पूरवसू आय गजणरो वर पाय मारानू मारि मारवाड लिबी ।

ईदा पड़िहार

१५२०. ईदारीवसावळी—नाहडराय १, रूपदे २, मालदे ३, दूलहराव ४, जीवराज ५, भीमो ६, काकू ७, सूर ८, ईदो ९—ईदादा ईदा कहाणा ।
१५२१. ईदो सूररो बेटो नाहडरावजी उरै आठ पीढिया हुवो जिणरै वसरा ईदा कहावै ।
१५२२. सूअै पड़ियार ईदारा बेटा गोपाळनै मारियो गोपाळसर गाव जठे—गोपाळ ईदारो देवळ है जाझैरीरो जुहार कहावै ।
- १५२३ जाभैरी भगडो हुवो, चित्तो वाग ग्रहेह ।
सूजो मागै भोडकी, भट गोपाळ न देह ॥
- १५२४ ईदो १, बीजळ २, महासिंघ ३, बूटो ४, राणो ५, भीमाळियो ६, टोहो ७
तुरका कनैसू मंडोवर रोहै ले दीधो चूडाजीनू ।
- १५२५ गोगूदे उगूणावत जैतमाल सलखावतरो दोहितो नै रावजी चूडाजीरो सुसरो ।
- १५२६ भीमलियारै बेटै ईदो टोहै रावजी चूडाजीनू मंडोवर ले दियो ।
- १५२७ टोहो रावत कहाणो टोहारो लाखणसी राणो कहाणो ।
- १५२८ राणो १, बूटो २, भूमळिरो ३, रावत ४, सगरामसी ५, अभूणो ६ जिण
उगूणरै सगरामसीहोतनू रावळ माल टीको दियो—लाखणसी टोहावनरै
आठ ही बेटा कपूत हुआ जिणसू ।
- १५२९ राणा बूटावतरो बेटो हरभू, हरभूरो लाखो वीका जोधावत साथै
ईदावाटीसू वीकानेरगयो लाखो १, राजधर २, रूपसी ३, गोगादे ४, दूवो ५—
वीकानेर रिया रामसिंघरै जोधपुर हुतो जद ईदो दूदो गोगादेओत
सीकदार हुतो ।
- १५३० दूदारै बेटो हरदास वीकानेरसू छाड जोधपुर चाकर रह्यो पछै नवाब
खानखानै माग लियो वडो डील, वडो धरमातमा, वडो पाटाबध ठाकर
हुतो सवत १६७७ बुरहानपुर राम कह्यो ।
१५३१. कानो राणो उदैसिंघरो परमार करमचदरो भाणेज ।
१५३२. ईदा जैतसिंघरै बेटै विजैसिंघ भगू सोढानू मारियो चारण वणि पछै
वडलूरा ऊहडारै परणियो हुतो सासरै गयो ऊहडा मार नाखियो जदसू
ईदारै ऊहडारै वर छै ।
१५३३. कलो हरराजोत सायजादारै चाकर रह्यो ।

- १५३४ कुभो हरराजोत करीमवारै चाकर रह्यो सू इणरै भायै काम आयो ।
- १५३५ दयालदास हरदासोत अमरसिंघजीरै चाकर रह्यो ।
- १५३६ कूकडू १, केचवाळ २, देवळ ३ अँ रजपूत पटियारिया रजपूता माहेसू निसरिया ।
- १५३७ रामचद देवळा तणो राजा ।
- १५३८ लोहियाणै राणो प्रतापसिंघ देवळ, जिणरो रामचद, रामचदरो सेरसिंघ, सेरसिंघरो पन्नो छोटी-मोटी वावन कोटड़िया सुधामें देवळारी है ।

सोळंकी

१५३९. सोळकियारै भारदवाज गोत्र, खेत्रज चामुडा दोय देवी, महिपाळ पितर, परवर तीन, खिडियो चारण, वागडियो भाट, कंडारियो ढोली ।
- १५४० सोळकियारै कुळदेवी कटेस्वरी ।
- १५४१ वहीचरा देवी अरथ कुक्कटवहणी लोक वहचरा कहै ।
१५४२. सोळकियारी साखरी विगत — दारिया १, भाणगोती २, वाघेला ३, लराहा ४, वालणोत ५, वीरपुरा ६, नाथावत ७, वाराह ८, खाजीय ९ — इत्यादिक है ।
१५४३. सोळकियारी पीढिया लिखते — सोळकियारी राजधानी अँलणपुर पाटण— गुजरातमे. वागला १, सुकर २, अरजण ३, अजैसिंघ ४, दैपाळ ५, मूळराज गुजरातरो राजा चावडो सामतसी मामो नगो जिणनूं मार भाणेज सोळकी मूळराज अँलणपुर पाटण लिबी, गुजरातरो राज लियो ।
- १५४४ मूळराज १, दोणगिर २, राव वळ ३, भीम ४, करणसिंघ ५, राव जैसिंघ ६, ईनपाळ ७, कीरतपाळ ८, वाळपसाव ९, वहोडो १०, गोइदराज ११, कान्हडदे १२, मिहला १३ ।
- १५४५ आगै गुजरात चावडारै हुती सावतसिंह चावडो गुजरातरो घणी जिणनूं मार सोळकी मूळराज गुजरात लिबी सावतसिंघरो भाणेज मूळराज ।
- १५४६ मूळराज १, चामुंडराव २, वलभराज ३, दुर्लभराज ४, भीमराज ५, कर्णसिंघ ६, राव जैसिंघ ७ ।
१५४७. भीमदेवरो खेमराज, खेमराजरो देवप्रसाद, देवप्रसादरो त्रिभुअणपाळ, त्रिभुअणपाळरो कुमारपाळ ।
१५४८. सिंघराव जैसिंघ भीमदेवरो पोतो करणरो बेटो. इणरै मरजीरो हाथी सिकळस नामै. धजाआमे कूकडारो चिह्न ।

१५४९. आडावळामे लखमीनाथ जोगी तापतो हो उणरी कपासू सोळकी राजा करणरी राणी कवळावतीरै पुत्र सिधराव जनमियो ।
१५५०. सिधराव जैसिधरी मा कजीजर तळाव खणायो, सहर बाबर वसायो, आडावळा नजीक ।
- १५५१ जैसिधरै पुत्र हुवो नही जद कुमारपाळ राज पायो ।
- १५५२ सो सवत ११९९रा मगसर वद ४ पुख नखत्र सूरजवार जद अलहणपुर पाटण सोळकी कुमारपाळ सिधराव जैसिधरी गादी पायी ।
- १५५३ सवत ११९२ कुमारपाळ जनमियो सवत १२१५ कुमारपाळ राज पायो. संवत १२३९ कुमारपाळ रामसरण हुवो ।
- १५५४ दही थळी वारै गावासू त्रिभुअणपाळरै हती इणरो बेटो कुमारपाळ अठारै देसांरो राज कियो ।
१५५५. सोळंकी कुमारपाळ- सात वसनरा परतला करा चढाय अठारै दिसा बाहर काढिया ।
१५५६. कुमारपाळ राज - रस्त्री चवदै चमाळीस जिन मदिर कराया ।

वाघेला

१५५७. वाघेला भीलउरा उठियोडा है ।
- १५५८ पांच पीढी वाघेला अणहलपूर पाटण राज कियो ।
- १५५९ वसतुपाळ तेसठ जग जीतो मोजूदीन पातसारी फौज आबूरी घाटीमें कतल कीनी जद आबूरो वणी परमार धारावरस हुतो ।
- १५६० वसतुपाळ धोळकारा राजा वीरधमळ वाघेलांरो मन्त्री हुवो ।
१५६१. वाघेला भास - नरेस वहीजै ज्यारा ठिकाणा पाच - कोठ १, पीथापुर २, गामर ३, साणर ४, गाघारी ५ ।
- १५६२ बाधूगढ राजा रामचद वीरभाणरो वाघेलो वडो दातार हुवो. च्यार कोड़पसाव एक दिन किया - नरहर महापात्रनू अेक, भइया मधुसूदन नरहररो पुत्र जिणनू , कलावत मिया तानसेननू . . . ।
१५६३. बाधूगढरो वाघेलो राजा जैसिधदेव जिणरी बेटी विजैकवरवाई राणा भीवसिधरा कवर जवानसिधजी परणिया ।
१५६४. विस्वनाथसिध, बलदेवसिध, लछमणसिध अै तीनू कवर जैसिधदेवरै ।
- १५६५ खानजी मोरवाड़ियो वाघेलो ।

वालणोत

१५६६ माडळगढ आगै वालणोतां सोळकियारै हुतो ।

वीरपुरा

१५६७ सोळकी अणहलपुर पाटणसू लूणावाडा कनै वीरपुर है जठै वसिया जिणसू वीरपुरा कहाणा ।

१५६८. लवणेश्वररी कपासू पाच सै गावामें अमल कियो पावागढरा सुतरामपुररा, रावणपुररा गांव वीरपुरा दयाया ।

१५६९. वीरपुरारी वेटी अवस्य पतिसहगवन करै, वर है ।

नाथावत

१५७०. हाडोतीमे नाथावतां सोळकियारो ठावो ठिकाणो पतारां ।

१५७१. हाडोतीमे नाथावतां सोळकियारो ठावो ठिकाणो पतारा है. राव राजा बडो मुलायजो राखै है ।

१५७२. तोडै मिहलू वास कियो. मिहलू १, दुरजणसाल २, हरराज ३, सुरताण ४, ऊदो ५, वैरो ६, ईसरदास ७, दळपतिराव ८, आणदराव ९, राव साम १०, वनन तोडडीजी ।

१५७३ बहूजी गोडजी कवरजी श्रीपिरथीसिंघजीरो राजलोक ज्यारो नानो राव स्याम ।

१५७४ राव स्यामरो राव महासिंघ जिणरा बेटारी विगत - जसवत १, भीव २, अरजण ३, हरराज ४ ।

१५७५. सोळकियारी ख्यात लिखते सगरा १, सगरारो देवो २, देवारो त्रिभुवण ३, त्रिभुवणरो भोजो ४, भोजारो पतो ५, पतारो रायमल ६, रायमलरो सावतसी ७, सावतसीरो देवराज ८, देवराजरो वीरमदे ९, वीरमदेरो जसवत १० ।

१५७६ जसवत वीरमदेओतरै बेटा च्यार - दळपत १, दयालदास २, अचळदास ३, चतरभुज ४ ।

१५७७ सोळखी रायमल पतारो पाटणथी राणा रायमल कनै आयो मेवाड माहे जद पहला भोज गांव दियो थो पछै मादड़े सोथा आल्हण अमरानू मार देसूरी लिबी ।

१५७८. सोळकी सावतसी रायमलोतरी वेटी मोटो राजा उदैसिंघजी परणिया. सावतसीरो दोहितो कुवर नरहरदास ।

- १५७९ सोळंकी वीरमदे देवराजोत राणाजीरो चाकर पटै देसूरी हुती अंक वार रावळै चाकर रहतो जद पटै धणालो दियो हो पछै राणोजी मनाय लियो ।
१५८०. वीरमदे सोळकीरै बेटा आठ हुवा — जसवत १, आसकरण २, सादूल ३, अखैराज ४, किसनसिंघ ५, भावसिंघ ६, हिंगोळदास ७, वीजो ८ ।
१५८१. जसवत वीरमदेवोतरै पटै देसूरी हुती सवत १७०२ विस हुवै मुवो ।
१५८२. जसवत वीरमदेवोतरै बेटा च्यार — दळपत १, दयालदास २, अचळदास ३, चतरभुज ४ ।
- १५८३ सोळकी सादूल वीरमदेवोतनू मेरा मारियो ।
- १५८४ सोळंकी किसनसिंघ वीरमदेवोत रावळै चाकर रहतो जद पटै मोसरो दियो हो ।
- १५८५ किसनसिंघरै बेटा ७ — राजसी १, उरजण २, बळ ३, पीथो ४, राघोदास ५, सूजो ६, सबळसिंघ ७ ।
१५८६. राघोदास काम आयो सबळसिंघ काम आयो ।
१५८७. सोळकी गोपाळदास देवराजोतरै कचरो १, कचरारो रतनो २ जसवतरै वास ।
- १५८८ सोळकी सावळदासोत देवराजोतरै बेटा दोय — धरमराज १, पचाइण २, पचाइणरै मोहणदास ।
१५८९. सोळंकी खेतसी सावतसिंघोतरै राजा सूरसिंघजी परणिया कवर गजसिंघजी भाटी गोइददासजी फौज लें गया जद खेतसी सावतसिंघोत राणा अमरसिंघरै काम आयो ।
- १५९० सोळकी सागो खेतसीरो नै सोळकी भोपत खेतसीरो राठोड रामसिंघ करमसेणोत वालीसा माथै फौज ले गयो जद भोपत राजा जगतसिंघरै काम आयो ।
- १५९१ सोळकी पूरणमल खेतसिंघोत रावळै रहतो पछै सिरियारी दिवी हुती ।
- १५९२ सोळकी वैरसी खेतसिंघोत रावळै चाकर ।
१५९३. पूरणमलरै बेटा — हरीदास १, केसोदास २ ।
- १५९४ सोळकी वैरसीरै बेटा — सूरजमल १, उरजन २ ।
१५९५. सोळकी कचरो खेतसीरो प्रथीराज कचरारो, भलो रजपूत, राणाजीरै चाकर ।

- १५९६ सोळकी खान सावतसिंघोत सो खभणोर राणा प्रतापरै नै पातसाह अकवररै वेढ हुई जद राणाजीरै काम आयो ।
- १५९७ हमीर सावतसिंघोत सोमेशररो धणी ।
१५९८. हमीररो राणो काधल राणारो, भोपत राणारो, मोहणदास राणारो, सहसमल राणारो, महेसदास राणारो, लाखो राणारो, कान्ह राणारो ।
- १५९९ दुरजणसाल हमीररो दुरजणसालरा बेटा - अमरो १, सुंदरदास २, भाण ३ रतनो ४ ।
- १६०० सोळकी साकर रायमलोत जैसिंघजी साकररो. नारायणदास जैसिंघरो ।
- १६०१ नारायणदासरा बेटारी विगत - जगमाल १ मैरा मारियो, जोधो २, भार्वसिंघ ३, कान्ह ४ पटै जवडिया ।

पंवार

- १६०२ परमारारै यजुरवेद माध्यदिनी साखा, वसिस्ट गोत्र, धारायसचियाय दीप देवी, मालाहेत पितर, पीपळरी पूजा ।
- १६०३ वाकळ १, सचियाय २, सालण ३, कल्याण कुवर ४, कपादे ५, जोग ६-औ छव देवी परमारांरा वसमे हुई ।
- १६०४ परमारारी पैतीस साख लिखते - परमार १, पाणीस २, बलसी लोदा ३, धरिया ४, सुर ५, गोहलडा ६, सोढा ७, वहिया ८, जेपाळ ९, भाथी १०, ढल ११, कलोळिया १२, साखला १३, वाला १४, फागुआ १५, कछोटिया १६, टेवल १७, कूकणा १८, भाभा १९, छाहड २०, काला २१, जागार २२, पीथळिया २३, भायल २४, मोटसी २५, ऊमर २६, कालमुहा २७, दूठा २८, सूवड २९, धंध ३०, खेर ३१, डोड ३२, पेल ३३, गूगा ३४, फावा ३५ ।
- १६०५ परमार राजा श्रीहरस जिणरो वडो बेटो मुज छोटो बेटो सिंधुराजरो भोज ।
- १६०६ करनाटकरो राजा तेलपदेव जिणा अणालवती वहनरा कहासु घर घर भीख मंगाय मुजनु सूली दियो ।
- १६०७ परमार राजा मुज मत्रिया वरजता गोदावरी उलाधि करनाटकरा राजा तेलपदेव माये गयो जगमे तेलपदेव इणनु पकड लियो भाखसीमें दियो. किताईक वरसा वहन अणालवतीरा कहासु आपरा सहरमे घर-घर भीख मगाय मुजनु सूली दियो ।
- १६०८ रिख कपाट जडि गुफामे बैठो हुतो राजा जाय कह्यो - किवाड खोलो. जद रिख कह्यो - कुण है ? राजा कह्यो - हू राजा छू जद रिख कह्यो -

राजा तो इद्र है. जद भोज कह्यो — किंवाड़ खोलो, हू दाता छू. जद रिखि कह्यो — दाता तो करण हुवो. भोज कह्यो — किंवाड़ खोलो, हू क्षत्रिय छू. जद रिखि कह्यो — क्षत्रिय तो अर्जुन हुवो. जद भोज कह्यो — खोलो किंवाड़. रिखि कह्यो — कुण छै ? भोज कह्यो मिनख छू. जद रिखि कह्यो — मिनख तो धारापति भोज है. तो हाथ लागा विना खोलिया किंवाड़ खुल जासी यूं हीज हुवो ।

१६०९ सालवीनू धारारै कोटवाल कहायो — अमुको कवि भोजराज पास आयो सो पावसमें थारै घरे उण कविरो डेरो हुसी. तू कवि नही जिणसू थारो घर कविनू दिरीजै सालवी राजा कनै जाय काव्य सुणाया —

कवयामि वयामि यामि च ।

१६१०. आबूरै घणी पाल्हण परमार सरब धातू माहे भरतरो भरियो थीतकररो वीख हुतो सू मलाय अचळेसर है. नादियो भरायो जिण विख घालणरा पापसू पाल्हणरै कोढ उघड़ियो जीददेवरो नावो लिख भराय थापित कियो जद कोढ मिटियो.

१६११. राव जगमलरो बेटो मेहाजळ जिणरा बेटारी विगत— रायमल १, पचायण २, जैतमाल ३, कान्ह ४, करण ५, परबतसिंघ ६, परबतसिंघरो सूजो ७, सूजारो लूणो ८. घीगाणै रहे ।

१६१२. रायमलरो बेटो केसौदास राणाजीरै चाकर ।

१६१३. पचायणरो लिखमण जाळोर रहै ।

१६१४. कन्हुरै केसरीसिंघ ।

१६१५. परमार मालदेरो सादूळ जिण सादूलरै बेटो रायसलरा बेटारी विगत — जुझारसिंघ १, गर्जसिंघ २, अजबसिंघ ३, बखतसिंघ ४, आणदसिंघ ५, केसरीसिंघ ६ ।

१६१६. परमार आणदसिंघनू राठोड गिरधरसिंघ करमसिंघोत मारियो राणाजीरी धरतीमें ।

१६१७. परमार सत्रसाल सादूळरो ।

१६१८ परमार कलो मालदेओत जिणरा बेटारी विगत — रामचद १, भानीदास २, गोइददास ३, किसनदास ४, भगवानदास ५, वीठलदास ६, सामदास ७ ।

१६१९. मालदेरै वडो बेटो कलो ।

१६२०. भानीदास कलावतरा वेटारी विगत - नारायणदास १, नरवद २, अखैसिंघ ३, मेवाड माहे छै, सूरसिंघ घोड़ारो चाकर देईदास जगरूप मेवाड माहे छै ।
- १६२१ परमार आसकरण मालदेरो अऊत गयो ।
- १६२२ परमार सुजाणसिंघ मालदेरो काम आयो कछवाहा मानसू वेढ हुई जठै ।
- १६२३ परमार रावत जैसो पचायणरो जिणरै ठाकुराई जैतरै हुती. पुत्र किणरै ई हुवो नही ।
- १६२४ परमार रावत उदैसिंघ पचायणोत जैसा पछै पाट पायो संवत १६५२ रा सावण सुद १ ।
- १६२५ रणथभोर चहुवाण हमीरदेव साको कियो ।
- १६२६ परमारांरी ख्यात - रावत सागो १, उणरो रावत महपो २, उणरो रावत राघो ३, उणरो रावत करमचद ४, उणरो पचायण ५, राजा कछवाहा मानरो नानो ।
- १६२७ संवत १५८९ विक्रमादीतजीसू चितोड़ पळटियो जद जैठ सुदी २ पचायण काम आयो ।
- १६२८ पचायणरो रावत मालदे पातसाहसू छाड राणा उदैसिंघरै वसियो, जाजपुर राणाजी पटै दियो ।
- १६२९ सादूळ मालदेरो सागो ही मालदेरो जिणरी वेटी सूरजसिंघजी अराई जाय परणिया इणरी दोहिती आसकवरवाई ।
- १६३० परमार सादूळ मालदेरो जिण श्रीनगर वसायो पातसाह जहागीर अजमेररो सोवो इणनू दियो. सीसोदियो भीम अमरसिंघोतरा कहणासू साहजादा खुरमरी आण मे वापराअजमेरय खुरम सामल हुवो ।
- १६३१ सादूळरै रायसल. रायसलरै जुझारसिंह श्रीनगररो धणी १, रायसल २ ।
- १६३२ श्रीनगररो राजा परवतराज कहावै आगै लाख पायदळरी ठाकुराई हुती- पहाडमे राजा उमराव सरव झपानमे वैसै वासरी करड़ी झपान कहावै. च्यार जणा उपाडै ।
१६३३. परमार राजा कलसाह धारा नगरीसू उठ कमाऊंरो राजा लखमीचंद जिणरी चाकरीमें रह्यो लिखमीचंद लोहवोगड इणनू पटै दियो पछै कलसाहवे फरमावरदार होय कमाऊरी आधी धरती दवायी, लोहयोगड अपणायो. गढ़वार कहीजै ।

१६३४. कलसाहरा वंसमे महीपतसाह हुवो जिणरी राणी चहुवाण करणावती जिण पातसाहांरा उमरावा नीजाबतखा पहाडा माथै आयो, तुरकांरा नाक काटिया जिणसू नकटी राणी कहाणी. करणावती महीपतसाह मर गयो हो, बेटो छोटो हो, जद करणावती फतैसिघ . . . ।

१६३५. कलसाहसू चोथी पीढी सहजसाह हुवो जिण श्रीनगर वसायो ।

१६३६. कमाऊरो राजा गुसाई कहावै ।

१६३७. परमार राजा दूलहराव उजीणसू उठ भोजपुर वसियो. भोजपुर पटना उरै कोस पचीस ।

साखला

१६३८ परमार चाहडरावरै घरवासै अपछरा हुती जिणसू बेटा दोय इणरै हुवा सो दोने बाघवां सख वजायो जिणासू बाघरे वसरा साखला कहाणा ।

१६३९ परमार चाहडदेरा बेटा दोय-अेक सोढो, दूजो साखलो. बेटी मायदे सगत हुई ।

१६४० तीजी बेटी देवी कल्याणकुवर अपछरासू हुई ।

१६४१ रासीसर साखलो खीमसी रायसलरो बेटो रहै. दहिया जागळू राज करै. दहियारो ब्रामण गूजरगोड केसो है जिण दहियानै कहियो-थे कहो तो हू जांगळू अमकै ठिकाणै तळाई खिणाऊ दहिया कह्यो-अमको ठिकाणो तो घोड़ा दौडावारो सराडो है, अठै तळाई मत खिणाव जद खीमसी साखलासू केसो मिलियो खीमसी कनैसू दहिया मराय जांगळू खीमसीरो अमल करायो. पछै केसो केसोतळाई जागळू खिणायी रायसलरो खीमसी चरूसू गाळ गाळ जिण वीठूनू दोयड पसाव दिया, पोळपात थापियो इणरी बेटी ऊमा गढ गोगुरण खीची अचळदासनु परणायी ।

१६४२. खीमसीरो कवरसी, कवरसीरो जैसो, जैसारो मूजो, मूजारो ऊदो, ऊदासू साखला पतळा पड़िया ।

सोढा

१६४३. परमार धरापसावरो बेटो आसराव जिणरै वसरा सोढा पारकरा दूजो बेटो धरापसावरो दूजणसल जिणरै वसरा सोढा घाटेचा ।

१६४४. पारकरा सोढा ज्यारै प्रोळपात मिहडू ।

१६४५. सुवेरामे पुरलारै गांव ७०० है धणी परमार राणो पदवी राणा रतनसिघनू वागडियै चहुवाण उदेसिघ मारियो गंभीरसिघरा वैरमे परमार मदनसिघनू राणो कियो ।

१६४६. पारकर राणो चंदण गोईंदरावरो वाघेलारो भाणेज ।

१६४७. दूहो -

पडे छवाहड़ पाच सौ,
सोढा बीसा सात ।
अेकण तीतर वासतै,
इण राखी अखियात ॥

१६४८ छवाहड़ांनूं मार पारकरा सोढा मूळी . . . लीघी ।

१६४९ मूळीरै घणी रतन सोढै उवा साथ विया विचै परवत मीसणनै दीनो, पचास लाख नगद, पचास लाख भरणो ।

१६५०. ऊमरकोटरा सोढा पदवी राणा ज्यारी परियावळी - राणो गागो चांपारो, पातो गागारो, चंद्रसेण पातारो, महाराजा सूरजसिंघजी राणा चंद्रसेणरै परणिया हुता, भोजराज चंद्रसेणरो, ईसरदास भोजराजरो सवत १७१० रा भादवामे भाटी रावळ सवळसिंघ ईसरदासने ऊमरकोट मांहेसू काढियो. सोढा जैसिंघदेनै ऊमरकोट राणो कियो ।

१६५१ गागो १, मानसिंघ २, जोघो ३, जैसिंघदे ४, राणा गांगारो पड़पोतो जैसिंघदै ।

१६५२. सोढो रतनसी राणा गागारो जिणरी बेटी भाटी रावळ मनोहरदास परणियो ।

१६५३ सोढो करण राणा चांपारो तिणरो खीवो, खीवारो भाणो, भाणारो मनोहरदास - पातसाही चाकर, ऊमरकोट परसोरण जठै रहै ।

१६५४ गोडै चापारै गळै सोढा तणी सरम ।

१६५५ ऊमरकोट सोढा सुरताण ज्यांरो ठिकाणो छाछरो १, फागलियो २ ।

१६५६. सोढा भोजराज ज्यारा ठिकाणा तीन - छोळ १, खुहडा २, ठिगारी ३-अै ।

१६५७ सोढा गागदास ज्यारा ठिकाणा च्यार - राडरातो कोटू खीपरो मुथूण २, अवरसिया ३ ।

१६५८ सोढारा ठिकाणा पाच - सुरताण उबुल वार सोढा राम ज्यारा छै ।

१६५९ अेक दिन घोड़ा सातवीस ऊमरकोट राणै खीमरा चोपडा मइयानू दिया विणसू रीजी ।

१६६०. वीरवावरा सोढारी पीढी - काधल १, कांधलरो राम २, रामरो मनहर ३, मनहररो नोतो ४, नोतारो सतो ५, संतारो बीजो ६, बीजारो मोडो ७, मोडारो पजो ८ - ओ हमै वीरवावरो सिरदार है ।

१६६१. मनहररो पांचो, पांचारो अजो, अजारो जेहो जिण सताजी कनांसू गोडीजी लिया, विरावाव लिवी ।
१६६२. पछै मोडाजी सताजीरै पोतै जेहाजीनू जेहाजीरा बेटा दुरगजी हाथीजीनू मारियो वीरवाव. गोडिया रस माथनू लिया जगतसिंघ चहुवाणनू मदत आने ।
१६६३. पछै सोढो तेजमालजी हारो भतीज सहेत यह राणै सोढा वाकीजीरै सरणै गयो वीरवावसू निसरनै ।
१६६४. गोडीजी इष्ट सोढारै जिणसू वीरवाव कोटमे मद-मांस वापरै नही. जेहा सोढारो बेटो हाथी गुडै सूरजमल राणारी बेटा परणियो हो अेक दिन सूरजमलरी बेटा बोली मोनू म्हारै बाप वाणियानू परणायी उण दिनसू हाथी मद-मांस छानै आपरै महलमे वपरायो जेहाजी माथै गोडीजी कोपिया नै मोडजी खानपुर हुता उठैसू पत्र दियो पछै जेहाजीनू मार मोडजी वीरवाव लियो ।

भायला पंवार

१६६५. भायल पदमसीरो सजन वडो रजपूत हुवो सीधल चापारी व्हू देवडी इणरा घर माहे पैठी पछै किताहीक वरसां माहोमाह लड़ चापारे हाथ सजन रह्यो, सजनरै हाथ चापो रह्यो. देवडी सती हुई हाथ वाढ नै चापारै घड़मे नाखियो नै वळी सजनरै साथै ।
१६६६. सिवाणै सजनरा गिर छै सजनरै रावळ, चहुवाण सिवाणारो राव सातल जिणरो दोहितो इण अलाउद्दीनसू मिल सिवाणो मिळायो पातसाह सिवाणो इणनू दियो पछै रावळनू पातसाह मरायो ।

चौहाण

१६६७. चहुवाणारी चोईस साख लिखते — हाडो १, खीची २, सोनगरो ३, बाली ४, सोभादर ५, चोमालहण ६, गोरवाळ ७, भदोरिया ८, मीरवाण ९, वाकुर १०, चील ११, थेथा १२, दूदळोत १३, सेपटा १४, गरावा १५, पबइया १६, पावचो १७, सतवाळ १८, चाभुलेया १९, खेवर २०, चाहिल २१, मोहिल २२, भडारी २३ वाणियामें, चीतामेर २४ राठोडारा भाट रामचंद कनै लिखी ।
१६६८. सोनगरा माहेसू देवडा निसरिया देवडां माहेसू वोडा निसरिया. वालोत २, चीवा ३, अबीह ४—अै खापा निसरी ।

१६६९. चहुवाणारै कुळदेवी अवाय है, माणकदे चहुवाणनू साख भरी. तूठी लाखणसीनू. आसापूरी तूठी जदसू लाखणसीरा आसापूरानू पूजै है ।
१६७०. सवत १६०८ सांभर चहुवाण माणक हुवो ।
१६७१. संवत ८२२ वीसळदे चहुवाण अजमेर पाट बैठो ।
१६७२. वीरपाळ साहरी बेटी गौरज्या विधवा वरस तेरहरी पुसकरजी ऊपर तप करती. नवे वरस च्यार हुवा जद जवरीसुं वीसळदे इणसू रत कियो. गोरज्या वाणियाणीरै पुत्र वीसळदेसू हुवो नाव आनो. गोरज्यारा सरापसू वीसळदे सकस हुवो ।
१६७३. प्रथीराजरा सामत ज्यामें दोय सावत खीची - पीळपीजर १, प्रसंगराव २ ।
१६७४. हमीरदेव रणथभोररा किलामे लडै जद हमीरदेवरा उमराव रणमल १, प्रतापसी २, पातल ३, चाहडदे ४, इत्यादिक अलाउद्दीनसू मिल गढसू निसर अलाउद्दीन कनै आया हमीरदेव काम आया. पछै अलाउद्दीन आनू मराय नाखिया ।
१६७५. चोहाण गोगाजीरी मा वाछगंदे, पिता जीवराज, घोड़ो नीलो, हरद देवरो ।
१६७६. खीचियारै वारठ नाथू, मोठियो ढोली, प्रोहित काथड़ियो, भाट तिलवाडियो, आसापूरा देवी ।
१६७७. राघोगढ १, वजरंगगढ २, खिलचीपुरो ३ - अँ खीचियारा ठिकाणा ।
१६७८. खिलचीपुररो खीची दिवाण कहीजतो ।
राघोगढरो खीची राजा कहीजतो ।
१६७९. खीचिया . . . पको कोट करायो हो, पछै उवा पथररो पको कोट करायो हो. पाछै उवा पथररो पको कोट फळोघी हमीर नरावत करायो ।
१६८०. खीची थारु जायलसूमे तीन कोट करायो. खीची गोपाळदास ।
१६८१. मोटा राजारी बेटी जैतसिधरी बहन परणियो ।
१६८२. खीची सारगदेरो जीदराव बारुरां बुधारो भाणेज ।
१६८३. जायल खीची गोरघन वायारो व्याव कियो जद चारणानू कह्यो - कृपा कर गीत कहो ज्यामें जायल ठिकाणो वरस गुणवाळीसौ डायजै हाथी दियो इतो वरणन जरूर करसी ।
१६८४. गांगुरणरो घणी खीची भोज जिणरै राणी सकळादे जिणसू अचळदास पुत्र प्रगट हुवो ।

१६८५. खीची अचळदासरी मा सलहदे ।

१६८६. राणा मोकळरी बेटी पोहपावती अचळदास खीचीरो राजलोक ।

१६८७. मांडवरो पातसाह महमूद बेगडो माथै आयो जद संवत १४८२ खीची अचळ-
दास गढ गागूरण साको कियो ।

१६८८. खीची अचळदास राणी पोहपावती चितोडरा राणा मोकल लाखावतरी बेटी ।

१६८९. चापो १, माघो २, सादो ३- अँ चारण अचळदास कनै घेरामें ।

१६९०. गागो १, तिलोकसी २- दोय वाणिया अचळदास कनै राऊ १, सेऊ २ - अँ
डूव घेरामे ।

१६९१. पीपाजूके वंसमें, पीपा सम नृप लाल ।

भरम भजावै कै प्रगट, केहरि बुद्धि विसाळ ॥

१६९२. खीची राजा केहरिसिंघ भाखा ग्रंथ सीतारामचरित्र नामा अठारै प्रबध करि
बणायो. रामायणरी कथा है ।

हाडा चौहान

१६९३ हाडारी पीढिया लिखते- सोमेसर १, प्रथीराज २, जोधो ३, हाडो ४, ब्रह्म-
पाळ ५, माणकराव ६, अणखपाळ ७, साधारण ८, विजैपाळ ९, वाघो १०,
बूदी वाघै लिवी वाघारो देवो ११, केलण १२, केलणनू तूठो केदार समरसी
१३, पटो १४, हामो १५, वरसिंघ १६, वैरो १७, भाडो १८, नरवद १९,
अरजुण २०, सुरजण २१, भोज २२, रतन २३, गोपीनाथ २४, चत्रसाळ २५,
भावसिंघ २६, अनिरुधसिंघ २७, बुद्धसिंघ २८, उमेदसिंघ २९, अजीतसिंघ
३०, विसनसिंघ ३१, रामसिंघ ३२ ।

१६९४. हाडारी वसावळी लिखते - चहुवाण राजा सोमेसर १, प्रथीराज २, जोधो ३,
हाडो ४, हाडाथी हाडा कहाया. हाडारो ब्रह्मपाल ५, माणकराव ६, अणख-
पाळ ७, साधारण ८, विजैपाळ ९, वाघो १०, बूदी वाघो वसियो. वाघारो
देवो ११, केलण १२, समरसी १३, पटो १४, हामो १५, वरसिंघ १६, वैरो
भाडो १८, नरवद १९, अरजुण २०, सुरजण २१, भोज २२, रतन २३,
गोपीनाथ २४, चत्रसाळ २५, भावसिंघ २६, अनिरुधसिंघ २७, बुधसिंघ २८,
उमेदसिंघ २९, अजीतसिंघ ३०, विसनसिंघ ३१, रामसिंघ ३२ ।

१६९५. राव भाडारा बेटारी विगत - नरवद १, नराणदास २, साडो ३, नरसिंघ ४-
अँ च्यालुं भाई अँक माया ।

- १६९६ बूंदी राव भाडारो १, नारायणदास २, सूरजमल ३, प्रथीराज ४. भांडानू दुख दियो जिणसू हाडा प्रथीराजनू गादीसू हूर कियो ।
- १६९७ हाडो राव नरवद भांडावत गोड़ मोटमरावरो दोहितो ।
- १६९८ बूंदीराव नरवद भाडवतरा वेटारी विगत - उरजण १, भीम २, अखैराज ३, पूरो ४, हरराज ५, मोकळ ६-अँ छव वेटा नरवदरै वेटी करमावती चितोड़ सागा राणानू परणायी ।
- १६९९ अँ सातू सूरजमल खेमावतरा दोहिता ।
- १७०० बूंदीराव नारायणदासरो बडो भाई नरवद, नरवदरो उरजण ।
- १७०१ राव हाडा नारायणदास भाडावत जोधपुर सावतसी जोधावतरी वेटी खेतूवाई परणियो खेतूवाईरो वेटो सूरजमल राणा रतनसीनू मार मुवो ।
१७०२. सूर १, मलो २ - अँ दोय सोलंकी, असोकमल परमार चहुवाण पूरवियो पूरणमल अँक पग माहेसू सांकळारो काढणहार राणो रतनसी ४-इतानू मार हाडो सूरजमल मुवो ।

भळको लीघो भूखियो,
चाव करै चहुवाण ।
सूजै धनस सभाळियो,
अत समै अवसाण ॥

- १७०३ भूखियो भळको ओ ही त्रियावियो कहीजतो ।
- १७०४ सूरजमल नारायणदासोतरो वेटो प्रथीराज बूंदी राव जिणनू उथप हाडां अरजण नरवदोतनू बूंदी राव कियो ।
- १७०५ हाडो राव उरजण नरवदोत देवळियो सीसोदियो सूरजमल खीमावत जिणरो दोहितो ।
१७०६. हाडा राव उरजणजीरै वेटारी विगत - सुरजण १, रामजी २, काधल ३, अखैराज ४ ।
- १७०७ हाडै सांवत सेरसाहरी असवारीरो घोड़ो मैणा कनै चुराय मगायो. पातसाह खवर पाय हाडोती माथै आयो सावत मरण माडियो. पछै धूंधळीमलजी वर दियो - तू जाय नै सेरसाहरी फौजमें तरवार चलाय, फौज विगड़ जासी यूं हीज हुवो जद सेरसाहरै समररा जैतवार - ओ विरद हुवो सावतरानू ।
१७०८. राव सुरजण उरजणोत गहलोतांरो भाणेज ।

१७०९. संवत १६२५ पातसाह अकवरनू सुरजण रणथभोर सूपवी ।
१७१०. राव सुरजणरा वेटारी विगत - दूदो १, भोज २, रायमल ३ ।
१७११. दूदो सुरजणोत चापावत जैसिंघ भैइदासोतरो दोहितो राव सुरजनरै कवर दूदो वडै डील वडो रजपूत हुतो उणनू उणरा झारीवरदार बिरामण जिणरै हाथ कवर भोज सुरजणोत जहर दिरायो दूदारै बेटो नरहरदास ।
१७१२. बूदी राव सुरजण जिणरो वडो कवर दूदो जिणनू विख दे कंवर भोज मरायो राव सुरजण उदास रूप कासी गयो मणकरणकामें सिनान करता देह तजियो ।
१७१३. हाडा कवर दूदा सुरजणोतनू पातसाह अकवर सिरपाव दियो ।
१७१४. राव भोज सुरजणोत अहाडा राव जगमाल उदैसिंघोतरो दोहितो ।
१७१५. संवत १६६० पातसाह अकवररी मा मुयी आगरा माहे जद सारा राजा-राव भद्र हुवा. राव भोज हाडौ नै राव दुरगो चद्रावत अ भदर हुवा नही ।
१७१६. बूदी राव भोज वडो अडपदार सिरदार हुवो हाथीरो वडो असवार हुतो. पातसाहरा मसत हाथी किणीसू ही पकडीजता नही उवां हाथी राव भोज चढतो अकवर ज्यू ।
१७१७. राव भोज सुरजणोतरा वेटारी विगत - रतन १, रिदैनारायण २, केसोदास ३, मनोहरदास ४-अ च्यार वेटा भोज सुरजणोतरा ।
१७१८. राव रतन भोजरो बालोत सोळंकी ज्यारो भाणेज ।
१७१९. रावराजा रतन राव भोजरो बेटो बूदी वडो ठाकुर हुतो साहजादो खुरम पातसाह जहागीरसू वागी हुवो जद संवत १६८० साहजादो परवेज नै नबाब महोबतखां बुरहानपुरसू पूरवनू खाना हुवा खुरमनू हरावण तद बुरहानपुररो सूबो राव रतननू भोळायो पचहजारी मनसव दियो तदसू ठाकुराई बूदीरी वधी. पछे वादसाहजी दिखणमें खानजहा लारै बुरहानपुर गया सवत १६८७ बालासुर माहे राव रतन रामसरण हुवो ।
१७२०. कवर गोपीनाथ राव रतनरो कछवाहा भगवानदास भारमलोतरो दोहितो ।
१७२१. कवर गोपीनाथ राव रतनरो राव बैठा राम कह्यो राव सत्रसाल गोपी-नाथोत राव रतन आप बैठा इणनू रावाई दिवी. पातसाह बूदीरो टीको सत्रसालनू दियो राव रतनरी अरजसू सवत १६६३. राव सत्रसालरा वेटारी विगत ।

१७२२. कवर गोपीनाथरै वेटा - सत्रसाल १, राजसिंघ २, इंदरसाल ३, महोकम ४, महसिंघ ५, बैरीसाल ६, सूरजी ७, केसरीसिंघ ८, स्यामसिंघ ९, काकील काम आया ।
१७२३. राव चत्रसाल गोपीनाथोत सुनेर सोळकिया भिलै ज्यारो दोहितो ।
१७२४. वूदीरो घणी हाडो चतरसाल गोपीनाथोत सवत १६६२रा आसोज सुद १५ जनम संवत १७१४ जेठ सुद ८ आगरासू नजदीक धोलपुर वेढ हुई साहजादा दारासाहरै नै औरगजेबरै जद दारासाह साथै हुतो राव चत्रसाल औरगजेवसू लड काम आयो ।
१७२५. छव सतिया हुई राणिया. खवासा ३४ सती हुई. चत्रसालरी राजलोकां वासे रही ज्यारी विगत - जादम भारथसिंघरी मा १, सीसोदणी वहुंजी हाडीजीरी मा २, कछवाही भगवतसिंहजीरी मा ३ ।
१७२६. हाडो भारथसिंघ चत्रसालोत चत्रसाल साथै काम आयो ।
१७२७. वूदी रावराजा चत्रसालजीरो करायोडो महल चत्रमहल कहावै ।
१७२८. सत्रसालरा वेटारी विगत - भावसिंघ १, भीव २, भगवंतसिंघ ३, भारथसिंघ ४ भावसिंघ राठोड़ारो भाणेज, भगवतसिंघ नरुकारो भाणेज, भारथसिंघ यादवारो भाणेज ।
१७२९. वूदीरो घणी रावराजा सत्रसालजी ज्यारी वेटो कल्याणबाई महाराज जसवतसिंघजी परणिया सासरारो नाव जसवतदेजी ज्या कल्याणसागर तळाव करायो नाव श्रीमाळियारो नाड (?) दियो ।
१७३०. वूदी रावराजा भावसिंघ राणा जगतसिंघरो दोहितो ।
१७३१. रावराजा भावसिंघ चत्रसालोत राठोड़ दळपत राजा उदैसिंघ सालदेवोतरो जिणरो दोहितो ।
१७३२. वूदी अजे रावराजा भावसिंघजीरी आण कहीजै ।
१७३३. रावराजा वुधसिंघ अनरुधसिंघोत नाथावत सोळकी ज्यारो भाणेज ।
१७३४. रावराजा उमेदसिंघजी १, दीपसिंघजी २, दीपकवरवाई ३ - तीनू वेगमरा वणीरा भाणेज ।
१७३५. रावराजा उमेदसिंघ वुधसिंघोत वेगमरा चूडावतारो भाणेज ।
१७३६. रावराजा उमेदसिंघजी जोधपुर परणिया आया जद चवदा दिन नोलक रह्या दिन पाच फतैमहलमें रह्या. दिन ११ तळेटी रह्या ।

१७३७. ईसरीसिंघजी पाट बैठा जद हाडा रावराजा उमेदसिंघजी बूदीमे अमल करु जैपुररो नायब नारायणराव जिणसू जग कियो पैली जैपुररी फौज भागी पछै उणियारारे रावराजा सिरदारसिंघजी घोडारी वाग उपाडी उमेदसिंघ रावराजारो लोक काम आयो. पग हाडारा छूटा. घोडो रावराजा उमेदसिंघजीरो काम आयो ।
- १७३८ उमेदसिंघजी तेरै घोडासू इदरगढ गया देवीसिंघ इदरगढरो घणी सत्रु वहे निवडियो बूदी अपणाय देवीरी पूजारै मिस कबीला सहित इणनू उमेदसिंघ मारियो ।
१७३९. विखा माहे रावराजा उमेदसिंघजी हा जद ईडरिया राठोडा डोळो मेलियो. ओ पैलो व्याव उमेदसिंघजी कियो ।
- १७४० श्री जी उमेदसिंघजी देसूरी सैल करण पधारता जद भमरा वा कीपलारी कावडा जळेव वैती गावरा डावडा भागता ज्यानै कीपला भमरा दिरीजता ।
- १७४१ सिलामयीरो नै गोविंददेवजीरो दरसण कुंवर उमेदसिंघजी जैपुर पधारिया. महाराज प्रतापसिंघजी सामा पधारिया सनान कर अपर्समे होय गोविंददेवजीरो दरसण कियो फूल ठाकुरजीनू चढावण श्री जी वागमें गया, साथ महाराजा प्रतापसिंघजी जद श्रीजी आकोडियासू ब्रक्षरी डाळ नमायी, फूल प्रतापसिंघजी वीण लिया जद श्रीजी बोलिया कयाहीक दिना फल भुगतियो वीण तो प्रतापसिंघजी कह्यो — म्हारै तो आप ईसरीसिंघजी माघोसिंघजीरै ठिकाणै हौ ।
- १७४२ कापणरो महाराजा दीपसिंघजी जिकारी बेटी प्रतापसिंघजी परणिया श्रीजीरै भतीजी जिणसू मिलण श्रीजी जैपुररा रावळामे पधारिया. प्रतापसिंघजीरी राणिया सरबनै उमदा पौसाक दिवी सारी राणिया श्रीजीरो दरसण कियो छोटा भाईरी बेटीरै माथै हाथ फेरियो ।
- १७४३ प्रतापसिंघजी श्रीजीरै डेरै आय कह्यो — आप कहो तो कोटा-बूंदी माथै फौज ले हू आपरै सग चालू श्रीजी कह्यो — इण कामसू तो म्हारा घोळामें धूळ पडै, दोनू ठिकाणा दोनू म्हारा पोता है जिका माथै काई कोप करू ?
- १७४४ पूरबरा तीरथ कर श्रीजी बूदी पधारिया जद केदारनाथजी कनै आपरा डेरा उठासू प्यादल थका काधै गगाजळरी कावड लिवी, पगामे खडाऊं, हाथमें आसो सरब परिगह सहित रगनाथजीरै मंदिर पधारिया रगनाथजीनू गगा-जळ चढावणनू ।

- १७४५ श्रीजी साहब देव पूजता आ निसचै नही, आरै मुख इस्ट कुण देवता है ? अक दिन रगनाथजीनू श्रीजी पुसप चढावे है, पोतो रावराजा छानो थको लारै ऊभो जद दुरगारो मत्र पढ नै श्रीजी तुंलसी-दल रंगनाथजीनू चढायो. पछै देखै तो पोतो ऊभो है जद फुरमाया - भगतियाने मंत्र सुणियो काई ? आ अरज किवी - सुणियो. आप फुरमाया - विखामे मै ओ इस्ट धारण कियो हो, पाचूही देव अक करि जाणां छा ।
- १७४६ उमेदसिंघजीरै आठ राणिया हुई ।
- १७४७ रावराजा उमेदसिंघजीरा कवर अजीतसिंघजी, वहादुरसिंघजी दोनू रासरो धणी ऊदावत केसरीसिंघजी जिणरा भाणेज ।
- १७४८ अजीतसिंघजी, वहादुरसिंघजी दोनू रावराजा उमेदसिंघजीरा बेटा रासरा ऊदावत केसरीसिंघजीरा भाणेज ।
- १७४९ वळवतसिंघजी वहादुरसिंघजीरो बेटो केसोरायजी पाटण कोटा वाळा चूक कर मारियो ।
- १७५० उमेदसिंघजीरै बेटा मिरदारसिंघजी, रायसिंघजी ईडररा धणी जिणरा दोहिता ।
- १७५१ रावराजा अजीतसिंघ उमेदसिंघोत वांसवाळारा रावळरो दोहितो ।
- १७५२ हाडै रावराजा अजीतसिंघ अड़सी राणानू मारियो सो प्रसग लिखते. लालस पीरदान कह्यो हुई सर चेलो अल्लारो वारटनू ।
- १७५३ अजीतसिंघजीरी वूहरे यी वरछी दे मारियो सू राणारी पीठ फोड़ छाती फोड़ घोडाका घेरै आणी वरछी लागा राणो बोलियो कीका लागां. जद कीकै घायभाई अजीतसिंघजी माथे तरवार चलायी अजीतसिंघजीरो कमर-वघो कट चीलगत कट अजीतसिंघजीरै पसवाडारै खाणी ।
- १७५४ अजीतसिंघजीरी तरवारसू कीकारा घोड़ारो पग कटाणो ।
- १७५५ रावराजा पदवी अजीतसिंघजी तीन वरस भोगवी पछै राम-सरण हुवा ।
- १७५६ रावराजा विसनसिंघ वासवाळारा रावळरो दोहितो ।
- १७५७ रावराजा रामसिंघ विसनसिंघोत किसनगढरा राजा प्रतापसिंघ वहादुर-सिंघोतरो दोहितो ।
१७५८. हाडो हालू हरराजरो आरै रजपूत हुवो ।
- १७५९ वूदी डावी मिसल नाथावतां सोळकियारी जीवणी मिसल हाडारी ।

१७६०. बूदी मीरांजी जागतो पीर है. राव घणी मानता राखै जिणसू बूदीरा राव आगै सूर खावता. विखामे श्रीजी सूर खायो जिणसू हमै बूदी राव सूर खावै है ।
१७६१. हाडो राव बूदी तखत बैठो सो दारू न पीवै, भाई बेटा दारू पीवै ।
- १७६२ सथूर बूदी कनै स्थान जठै अदंतिका देवी विराजै है ।
१७६३. आगै बूदीरा रावराजा नवाब दरियाखारा नगारा खोस लिया अकरो नांव वैरीसाल, दूजा नगारारो नांव रणजीत केसरिया निसाण उण नवाबरो लियो जदसू बूदी केसरिया निसाण रहै है ।
१७६४. बूदी तळहटीरा महला विवाहादिक महोत्सव हुवै ।
१७६५. कोटारा महारावारी पीढिया लिखते — राव रतन १, माघोसिंघ २, मुकुंद-सिंघ ३, किसोरसिंघ ४, रामसिंघ ५, भीमसिंघ ६, दुरजणसाल ७, चत्रसाल ८, अजीतसिंघ ९, गुमानसिंघ १०, उमेदसिंघ ११, किसोरसिंघ १२ ।
१७६६. कोटारा महारावरी पीढि लिखते — राव रतन १, माघोसिंघ २, मुकदसिंघ ३, किसोरसिंघ ४, रामसिंघ ५, भीमसिंघ ६, दुरजणसाल ७, सत्रसाल ८, अजीतसिंह ९, गुमानसिंघ १०, उमेदसिंघ ११, किसोरसिंघ १२ ।
- १७६७ माघोसिंघ राव रतनरो रावजी बैठा पातसाहरी चाकरी लागी. रावजी काल कियो जद कोटो. पलाइतो पातसाहजी दियो सवत १६५६रा जेठ वद ३ जनम ।
१७६८. राव माघोसिंघरा बेटारी विगत — मुकदसिंघ १, मोवणसिंघ २, जुभार-सिंघ ३, राम ४, सूरसिंघ ५, राणो उमेदसिंघ ६ उदैपुर वसायो, उदैसागर तळाव करायो. सवत १६२८रा फागुण १५ राम कह्यो राणै उमेदसिंघ ।
१७६९. हाडो मोवणसिंघ माघोसिंघोत जिणरा बेटा पाच कछवाहा मारिया ।
१७७०. महा बूदी हेटेसू कोटा हेटै महाराव जीवसिंघजी घालियो ।
- १७७१ इण तरै महाराज अजीतसिंघजी कोटै रावराजा दुरजणसिंघजीरी गादी कोटै महाराव हुवो ।
- १७७२ चत्रसालजीरो बेटो न हुवो जद चत्रसालजीरी गादी चत्रसालजीरो भाई गुमानसिंघजी बैठो ।
- १७७३ महाराजकवार फतैसिंघजी जोधपुरसू पघार कोटै गुमानसिंघजी महारावरी बेटा परणिया महाराव त्याग आछो चारणा-भाटानू दियो घणा घोडा सिरपाव दिया. जस लियो ।

- १७७४ रामदत्त नै विजैमाणक दोनू हाथी कोटारा महाराव गुमानसिंघजीरा लड़िया ।
 १७७५ अजीतसिंघजीरो तीजो वैटो सरूपसिंघजी अणतै रह्यो ।
 १७७६. धधवाड़िया भोपतरामनू कोटारै माहरावजी कोटासू तीन कोस गाव कोटड़ी,
 तीन हजार घरारी वसती, उवा तावापतर कर दिवी. कोटारा राजमें
 जालमसिंघ पहला भोपतराम मुसाहिव हुतो ।
 १७७७ दिखणियांरी फौजसू जग्मे भागो सायद - भोपड़ो गूधरा तोड़ भागो ।

सोनगरा

- १७७८ चहुवाण कान्हडदे सावतसिंघरो वेटो जिण संवत १३६८ वैसाख सुद ६
 गुरुवार जाळोरगढ साको कियो ।
 १७७९ सवत १३५६ सोनिगरै कान्हडदे साको कियो जाळोर अलाउदीन लियो जद ।
 १७८० साचोर १, थिराद २, काकरणघर ३, वाराही ४, कछ ५, गेहडी ६,
 ऊमरकोट ७, वीकमपुर ८, जेसळमेर ९, वधनोर १०, पारकर ११, पूगळ १२,
 मारोठ १३, साळकोट १४, जांगळू १५, जाजासहर १६, सारण १७, हासेय
 १८, वावरो १९, सोजत २०, डोडियाळ २१, रीणक २२, काछेल २३,
 त्रिसीगडो २४, आवू २५, भीलडी २६, सिवाणो २७, तारंगो २८, राडब्रह
 २९, सूधो ३०, मेहवो ३१, भाद्राजण ३२, मंडोवर ३३, सूरचंद ३४ -
 इत्यादिक ठिकाणासू कान्हडदे भड तेडाया ।
 १७८१ सोनगरा कान्हडदेसू जाळोररा महाजनां अरज कीवी. रामो साफड़ियो
 वोलियो - मूग चोखा जव काठा गेहू साठ वरस ताई हू पूरीस. जैतसी दोसी
 कहै - कपडा साठ वरस हूं पूरीस. भोळै साह कह्यो - असी वरस तेल हूं
 पूरीस मोलहण साह वोलियो - तीस वरस ईधण हू पूरीस भीमैसाह कह्यो -
 म्हारै इतो गुळ है, अठारै वरस ताई ढीकली गुळरा हीज गोळा चलावो.
 सादूसाह कहै - म्हारै ढहीरा पहल भरिया है ।
 १७८२ जाळोररो गढ दहियै वीकै भेळायो अलाउदीनरा नायबांसू मिलनै ।
 १७८३. सोनगरा कान्हडदेरै भड - भाई मालदे १, वेटो वीरमदे २, जैत वाघेलो ३,
 जैत देवडो ४, लूणकरण माल्हण ५, सोभित देवडो ६, अजैसी ७, सहज-
 पाळ ८ - इत्यादिक ।
 १७८४. वीरमदे वांसै सुण काज, अउठ दिहाडा कीधो राज ।

जै सुकलीण साहसी, मुवा न मूकै माण ।
 मसतक-उपराठो हुओ, तणो विसलहू आण ॥
 अक असभव सुण लियो, जळ तिरिया परवाण ।
 मुवां अपूठो सिर फिरचो, दूजो अहे परमाण ॥

१७८५ कान्हडदेरै भाई मालदे, मालदेरो अबराजा, अबराजारो खेमसी, खेमसीरो अखैराजसू खत्री हुवो ।

१७८६ सिवाणै पहाडरी डाग ऊपर गढ चढता जीवणी तरफ गढरो नव चोकियारो गोख त्रिकळस कहीजै जूनी ख्यातामे अलाउदीन आयो जद चहुवाण सात त्रिकळस ग्राम बैठो हुरकणियारो नाच करायो हो ।

१७८७ सोनगरारी वसावळी - चाचगदेरो सावतसी, सांवतसीरो मालदे, मालदेरो वणवीर, वणवीररो रणधीर, रणधीररो लोलो, लोला नै राव रिडमलजी जेसलमेरसू आण वाई परणाय पटै पाली दिवी ।

१७८८. चाचगदे १, सावतसी २, मालदे ३, वणवीर ४, रणधीर ५, लोलो ६, सतो ७, खीवो ८, रणधीर ९, अखैराज १० राव मालदेजीरै काम आयो सूर पात-साहसू जग कियो जैताजी कूपाजी सामल समेळरै खेत ।

मानसिंघ अखैराजोतरो वंस

१७८९ मानसिंघ अखैराजरो राव चदरसेणजीरा विखामे राणा प्रतापरै गयो हो. पातसाही फौजासू हळदीघाटी राणारै वेढ हुई सवत १६६३ जद मानसिंघ राणारै काम आयो ।

१७९० राम मालदेवोत सवत १६२१ चैत वद ४ हसनकुलीखानू पाली माथै ले आयो जद मानसिंघ अखैराजोत राणाजीरै गयो ।

१७९१ जसवत मानसिंघोत वडो सिरदार हुवो मोटै राजा राणाजीरासू आणियो संवत १६२७ गावा २७ सू पाली पटै दिवी ।

१७९२ पालीरो गाव देईखेडो मागळियो धनराजरै पटै इण ठाय अहमदावादमे जसवतजी मोटा-राजाजीसू अरज करायी जद हजूर फरमायो - इण गावरै बदळै दूजो गाव देसी आ वात सुण सवत १६६५ राणाजीरै गया उठै हीज राम कह्यो ।

१७९३ सोनगरो जगनाथ जसवतोत सवत १६७७ राणाजीरासू आयो जद गांव मिणियारी विसीनू दिवी पछै गाव ११ पटै जगनाथजीनै दिया मिणियारीसू सवाय दिया ।

१७९४. दळानत जगनाथोत, भोजराज जगनाथोत ।
 १७९५ भाखरसी जसवतरो १, वाघो जसवंतरो २, माघोसिंघ जसवंतरो ३, सोनगरो स्यामसिंघ जसवंतरो ४, रामचद्र जसवंतरो ।
 १७९६ राजसिंघ जसवतोत राणाजीरासू आय जोधपुर चाकर रह्यो जद संवत १६६६ गुदोचरा पटारो गांव कुडनी दिवी ।
 १७९७ सवत १६७९ सिवाणारो गाव निवाई सोनगरा भाखरसी जसवंतोतरै पटै हुई ।

भाण अखैराजोतरो वंस

- १७९८ सवत १६३३ अकवररो उमराव सहवाजखा कुभळमेर लियो जद सोनगरो भाण अखैराजोत काम आयो राणा उदैसिंघरै ।
 १७९९ मोटा-राजा सोनगरा भाण अखैराजोतरी वेटी परणिया हुता सो मोटा-राजा साथ वळी ।
 १८०० सोनगरो नारायणदास भाणरो पहला पातसाही चाकर हुतो. पछै मोटा-राजाजी कनै आयो जद सवत १६४१ भाद्राजण पटै दिवी ।
 १८०१ सोनगरो नारायणदासजी राणाजीरै चाकर गांव खोड पटै जद जाळोररो साथ खोड माथै आयो नारायणदासजी निसरिया तुरका वसी वद किवी जद वंदमे चतरभुज नमियो वंदसू छूट दिन पाय महोवतखारै चाकर रह्यो. पछै महोवतखारासू छूट पातसाही चाकर हुवो पूरवमें जागीर पायी ।
 १८०२. मोटा-राजा सवत १६४५ सिरोही माथै पघारिया जद राव सुरताण कागद मेल नाराणदासजीनू बुलाया. नाराणदासजी राणाजीरै गया खोड पायी. उठै हीज राम-सरण हुवा ।
 १८०३. सोनगरो सावत नाराणदासरो भीम सावतसिंघोत राणाजीरै काम आयो ।
 १८०४ प्रताप १, सुजाणसिंघ २, अरजुण ३ - अही सावतसिंघरा वेटा ।
 १८०५ सोनगरो सातल नाराणदासोत रावळै चाकर सवत १६८६ भाद्राजण गाव २१ सू पटै पायी पछै सवत १६८३ नवसरो गाव १० सू दियो. पछै सवत १६८८ वुरहानपुररा डेरा छाड गयो ।
 १८०६. जैतसी सातलरो १, सूरसिंघ सातलरो २, जैसिंघ सातलरो ३ ।
 १८०७. सोनगरो किसनसिंघ सातलोत ।
 १८०८. सोनगरो मालदे नाराणदासोत, नाराणदास भाणोत ।

१८०९. सोनगरो चतुरभुज नाराणदासोत ।

१८१०. पातसाह साहजहारै हिंदू चाळीस मनसबदार ज्यामे सोनगरै चतरभुज नाराणदासोत ही गिणीजै है ।

१८११. चतुरभुजरै गरीवदास ।

१८१२. सोनगरो प्रथीराज नाराणदासोत रावळै चाकर सवत १६७८ गुदोचरा पटारो गाव अँदळा पटै सवत १६८९ कुरनो गुदोचरो गाव ४ सू पटै पायो ।

१८१३. सोनगरो केसोदास भाणोत ।

१८१४. माधोदास केसोदासोत भलो राजपूत हुवो. सवत १६९४ रावळाथी गांव भवराणी गावां १० सू दिवी हुती इणरा चाकर जैमल मुँहणोत खानाजगी किवी जद भवराणी छोड सवत १६८८ मोहवतखारै वसियो पछै अमर-सिंघजीरै पछै राजा जैसिंघरै वसियो माधोदास ।

१८१५. सोनगरो कल्याणदास भाण अखैराजोतरो ।

उदैसिंघ अखैराजोतरो वंस

१८१६. सोनगरो उदैसिंघ अखैराजोत. जिणरै सगतसिंघ, सगतसिंघरै मुकनदास हुवो. सवत १६८४ गाव दामण जाळोररो पटै पायो ।

१८१७. सोनगरो सूरजमल उदैसिंघ अखैराजोतरो जिण सवत १६५७ पालीरो पटो भाई सगतसिंघ उदैसिंघोत सामल पायो ।

१८१८. सोनगरो देवीदास सूरजमलोत वणवीर सूरजमलोत ।

भोजराज अखैराजोतरो वंस

१८१९. सोनगरो भोजराज अखैराजोत कूपाजीरै वास थो सो कूपाजी साथ काम आयो ।

१८२०. भोजराज अखैराजोत कूपाजीरै वास हुतो सो कूपाजीरै साथ काम आयो ।

१८२१. सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो भोजराज, भोजराजरो सिंघ, सिंघरो जसवत राजा दळपत रायसिंघोतरै काम आयो भटनेर ।

१८२२. भोजराजरो सिंघ, सिंघरो जसवत भटनेर दळपत रायसिंघोतरै काम आयो ।

जैमल अखैराजोतरो वंस

१८२३. सोनगरो जैमल अखैराजोत वीकानेर चाकर रह्यो ।

१८२४. जैमलरो अचळदास, अचळदासरो केसोदास जाटुअँ मारियो ।

१८२५. वळभद्र १, पिराग २, अनरूध ३ - अँ ही अचळदासरा ।

१८२६ सोनगरो सारगदे जैमलोत सारगदेरो नरहरदास ।

रतन अखैराजोतरो वंस

१८२७ रतनसी अखैराजोत कानो रतनसीरो ।

देवडा

१८२८ सोनगरा महणसीरै घरवासै देवी रहै उणरै पुत्र हुवो नाव देवो देवरा वसरा देवडा कहाणा ।

१८२९ महणसी रावरै दूजा च्यार वेटा हुवा ज्यारी विगत - वालोजी १ जिणरा वालोत, चीवो महणसीरो २ जिणरा चीवा है, महणसीरो अभो ३ उणरा अभो, वोडो महणसीरो ४ तिणरा वोडा - अँ च्यारू वेटा ।

१८३० सिरोहीरा रावारी वसावळी - कीतू १, समरसी २, महणसी ३, पतो ४, वीजड ५, लूभो ६, सलखो ७, रिडमल ८, सौभो ९, सैसमल १०, राव लखो ११, ऊदो १२, रणधीर १३, भाण १४, सुरताण १५, राजसिंघ, उदैसिंघ, चत्रसाल, मानसिंघ, जगतसिंघ, वैरीसाल, हमै सिवसिंघ ।

१८३१. कीतू १, समरसी २, पतो ३, वीजड ४, लूभो ५, सलख ६, रणमल ७, सोभो ८, सहसमल ९, राव लाखो १०, ऊदो ११, रणधीर १२, भाण १३, सुरताण १४, राजसिंघ १५, अखैराज १६, उदैसिंघ १७, सत्रसाल १८, मानसिंघ १९, जगतसिंघ २०, वैरीसाल २१, सिवसिंघ २२ ।

१८३२ देवडारी पीढिया लिखते - सवत १२१६ माह वद ११ परमारा कनासू देवडै कीतू आवू लियो ।

१८३३ सवत १५८९ राव सहसमल सिरोही वसायी. सीहनू मार वसायी जिणसू-सीहरोही नाव दियो आगै देवडा ईडररी चाकरी करता ।

१८३४ सिरोहीसे धणी आगै ईडररी चाकरी करतो ।

१८३५ लाखोराव १, राव जगमाल २, रतनसी ३, गोपाळदास ४, केसोदास ५ ।

१८३६ केसोदासरो नरहरदास जिण कुल खानत देवडा राम भेळी राख अखैराज मरायो ।

१८३७ कुवररा चावमे हरीदास नरहरदासोत, चापो प्रिथीराजोत सामल रै ।

१८३८. जगमाल १, हमीर २, साकर ३, माडण ४, ऊदो ५ - अँ पाचू राव लाखारा वेटा ।

१८३९. जगमाल १, हमीर २, साकर ३, माडण ४, ऊदो ५ - सिरौहीरा . . .
राव लखारै ।
१८४०. देवडो हमीर राव लाखैरो जिण राव जगमाल कनासू आध बटाय लियो.
हमीरनू जगमाल मारियो ।
१८४१. हमीर अपुत्र हुवो ।
१८४२. देवड़ारै अक अखैराज उडणो घणा भील मारिया घणा भोमियारी घरती
लिवी घरतीयांरा मरापसू मुवो ।
१८४३. उडणो अखैराज राव मालदेरो मामो ।
१८४४. अखैराजरै पाट दूदो अखैराजोत जिणनू ऊदै रायसिघोत भतीजै मारियो.
दूदो कहिय कसानीयो हो ।
१८४५. सवत १५७५रा पोस सुद ८रो जनम रायसिघ अखैराजोतरो. इणरी गादी
उदैसिघ वैठो सवत १६१६रा चैत वद ६ नै ।
१८४६. राव उदैसिघ, रायसिघ अखैराजोतरो रावजी गागाजीरी बेटी चपावाई
जिणरो बेटी ओ मुवा मानसिघ दूदा अखैराजोतरो सिरौही राव हुवो ।
१८४७. सवत १६२०रै आसोज सुद ११ पेट दूख उदैसिघ मुवो सिरौहीमे ।
१८४८. देवडो बीजो १, हरराज २, दूदो ३, तेजसी ४, आल्हण ५, भीवो ६, गजो ७,
झाझो ८, डूगर ९, रावत सहसमल १०, सोभो ११ ।
१८४९. ढीकरी देवो आयो कलो मार राव मानसिघनू मारियो. मानसिघ मरतै बीजा
हरराजोतनू कयो - सुरताण भाणरानू राव कियो ।
१८५०. मानसिघ पछै राव कलो सिरौहीरो घणी हुवो राव सुरताण देवडै बीजै गाव
कालदरी राड किवी कलानै कुभळमेरीमे हराय नै काढ दियो बीजै राव
सुरताणनू रावाईरो टीको दियो ।
१८५१. सवत १६४१ गाव नोसरा गाव २२ सू मोटो राजा दियो ।
१८५२. सवत १६६६ मोटै राजाजीनू परणाया सवत १६६७ सूरजसिघजीनू मथुरा-
जीमे परणाया राव कलै सवत १६६१ भाद्राजण राम कह्यो ।
१८५३. भाणरो सुरताण गाव पमैरा जठासू आण देवडै बीजै हरराजोत सिरौही
राव कियो. भाणरो सुरताण पामैरासू आण बीजै हरराजोत सिरौही राव
कियो ।
१८५४. राजा रायसिघ वीकानेरियै राव सुरताणरा कहणासू देवडा बीजा हरराजोतनू

सिरोही माहेसू काढ दियो पछे वीजो जगमाल उदैसिघोतसू मिलियो.
जगमालजी पातसाह कनासू सारी सिरोही ही लिखाय दिवी ।

१८५५ सवत १६४६ मोटा राजा पातसाही चाकर जामवेग जिणनू साथै ले वीजा
हरराजोतनू साथै ले राव सुरताण ऊपर गया, राव रायसिघजीरो वर
वालण ।

१८५६ वीजाजी आपरा साथसू आवूरी गाळमे गया राव सुरताणरै साथरा मारिया ।

१८५७ राव सुरताण सवत १६६७ रा असाढ वद ८ रामसरण हुवो नै राणी ७
रजपूत ५ साथै बळिया ।

१८५८ राव सुरताणरी गादी राजसिघ ।

१८५९ देवडो भैरव समरारो वडो रजपूत हुवो ।

१८६० महादेवजी जातानू राव राजसिघरी वारमे देवडा प्रथीराज सूजावतरा
भाई भतीजा मारियो ।

१८६१ राव सुरताणरो बेटो सूरसिघ जिणनू राव कियो अहमदावादसू दिखणरै
मुहिम पधारता महाराज सूरजसिघजी सिरोही पधारिया सवत १६६९ जद
सुरताणरी गादी राव रायसिघ हुतो जिणनू काढ दियो ।

१८६२ पछै राव रायसिघजी सिरोही लिवी सूरजसिघनू देस मायसू काढ दियो ।
सवत १६७२ रावळासू भाद्राजण पटै दिवी गाव २५ सू सवत १६७५ राव
सूरसिघजी भाद्राजण रामसरण हुवो ।

१८६३ सूरसिघरै बेटो सबळसिघ गावा २४ सू भाद्राजण पटै पायी पछै सवत १६७७
भाद्राजण छटी जद सबळसिघ राव अखैराजरै चाकर रह्यो गाव काछोली
दियो ।

१८६४ जगमालरो अखैराज उडणो राजसिघरो अखैराज पाडरो कहाणो ।

१८६५ सिरोही राव अखैराजरो कवर उदैभाण, महगसिया राठोडारो भाणेज
जिण रावनू पकड कैद कियो ।

१८६६ कवर उदैभाण गाव मठाड थाणो हुतो उठै रजपूतानू लालच दे आपरै
अधीन किया मुदै ठाकुर पाच - डूंगरोत रामो भैरवोत १, डूंगरोत ठाकुरसी
मैरावत २, डूंगरोत उगरो जसवत वीजावतरो ३, राजसी चीवो ४, उदैसिघ
दूदाणी ५, वीजा ही डूंगरोत सौ, चीवा सौ, देवळ वाघेला जेठुआ भेळा.
सीसोदियो साहिवखान, महेसदास गोपाळदासोत आधाइक मालणसू आनै
अवसी भेळा हुआ नही कवर उदैभाण मठाडसू चढ राणकवाडै डेरा किया.

रावनू लिखियो — भीलवाड़ा माथै जाऊ छू, सोर, सीसो मेलावसी राव
 मेलियो पछै हजार सवारासू चढिया सवत १७२० पोस वद १२ घडी
 अेक रात पाछली थका सिरोही आयो. रामा भैरवोतरो पोतरो साथ रामारो
 मेलियोडो सारा जिणसा लिया थका सिरोही पोळमे बैठा, हडवडाट सुण
 जाळीमे मूढो काढ रावजी पूछियो — साथ किणरो ? जद नारखान परबतोत
 वोलियो — साथ कवर उदैभाणजीरो है राव कह्यो अठी कठी जावो हो ?
 परबतोत कह्यो — कवरजीरा हुकमसू आवा हा, राव कह्यो — लालै म्हासू
 आ विचारी, कोई रामजीनै सदै सोदै नाहरखान कह्यो — रामजीरो पोतरो
 साथै है सारो साथ महलरै चौगिर्द फिरियो महलरै नीसरणी लागोडी राव
 ऊची खैच लिवी महलरा किवाड आडा जडिया जिणसू रावनू मार सकिया
 नही. पछै रावरा सारा माणस उण घरमे घालिया राव आडो ताळो जडियो
 ऊपर महोर छाप दिवी. कवर उदैसिधनू दूजा महलमे कैद कियो सूतो हो
 जठै हीज ताळो दे महोरछाप किवी पछै रामजी तिरवाडी, भगोतीदास
 पटणी हुजदार हुता सो यानू कैद किया, आपरी तरफरा नव हुजदार खडा
 किया रावजी सात दिन धान न खायो उदैभाण विचारियो — रामो भैरवोत
 रावनू मरण न दै जिणसू कैदमे हीज बैठा राखणो ठोड-ठोड कागद लिखिया
 ज्यामे लिखियो — जमीमे भोमिया, ग्रासिया धध मचायो, रावजी देसरी निगै
 राखै नही, जिणसू पाचा ठाकुरा मोनू चाटी भोळायी है सो हू करू छू पछै
 सवत १७२० रा माह वद ८ टीकारो महोरत हुतो सो रामो टीको होण
 दियो नही यू करता महीनो डोढ बतीत हुवो जद राणाजीनू चूक तेवडियो
 घोडा पाच ठाकुरानू दिया नै कह्यो जण पीठनू हजार रुपिया देसू राम
 भैरवोतनू, साहवखान परवतसिधोतनू, ठाकुरसी चीवानू, उदैसिधनू, उगरानू
 साठ सिरपाव दूजानू दिया आढो रुपो, आढो भीमराज दुरसावतरो, आसियो
 सुरताण मेघराजरो, चाचाळो देदो — अै चारण च्यार ज्यानू सिरपाव दियो,
 भाट सहसमलनू सिरपाव दियो सारा ही सलाम किवी हसमरो डोढो रातव
 कियो. रोज रुपिया ३००) भुजाईरा लागै सिसोदिया नाहरखान दुरजण-
 सालोतनू घोडो-सिरपाव दे मठाड थाणै मेलियो ।

१८६७. सीसोदियो साहवखान परबतोतनू राणैजीरा सारा समाचार लिखिया जद
 घोडो सिरपाव पाछा फेर पिंडवडै गयो. देवल वाघानै घोडो — सिरपाव
 दिया, नगारारी जोडी दिवी, डूमाणी गाव वधारै दियो जद रामो भैरवोत
 वेराजी हुवो — मो बरोवर देवळरो समाधान कियो ठोड-ठोडरा कागद
 रामाजीनू आया — रावजीनू बाहर काढो. रामाजीरी ठकुराणी राडघरी

जिणरी रावजीनू कह्यो - रावजीनू बाहर काढो. जद रामो भैरवोत सिरोही आयो माह सुद ११ कवर उदैभाण दाह पी नै जिण महलमे सूतो हो उण महलरै ताळो जड राव कनै रामो आयो जद राव जाणियो मोनूं मारण आयो जद राव पेट मारण कटारी काढी. जद रावरै राणी बाघेली अणमानैती तिण कह्यो - यूं काई करो हो, रामो थानै मारसी तो हूँ रामानू मारसू जद रामो हथियार छोड जाय रावरै पगा लागो कवर उदैसिध छूटो. दूजा ही रावरी तरफरा कैदसू छूटा. कवर उदैभाणनू कैद कियो. दूसरा उदैभाणरा चाकर माय हुता जिणनू अटकिया - उगरो जसवतोत १, ईसरदास नीवावत २, सीसोदियो नाहरखान परवतसिधोत ३, सीसोदियो नाहरखान दुरजणमानोत ४, मोहनदास मैरावत ५, माधो राजसीरो ६, जैसिधदे नाराणोत ७ अँ दिन सात कैदमें रह्या. कवर उदैभाण च्यार दिन जीमियो नही. सातवें दिन राव कवर उदैसिधनू विदा कियो इण जाय कवर उदैभाणनू मारियो. उदैभाणरा वेटा दोय मागिया अँक सीसोदिणी सुजाणसिध सूरजमलोत राणा अमरसिधरो पोतो तिणरी वेटी जिणरै पेटरो कवर कल्याणसिध वरस छवरो उदैभाणरो वेटी उदैसिध मरायो, दूजो वेटी उदैभाणरो च्यार मासरो जिणनू उदैसिध मारियो पछै सीसोदणीनू राणैजी बुलाय लीवी अखैगजरी गादी उदैसिध सिरोही धणी हुवो सो आवू माथै मुवो सवत १७३२ रा आसाढ सुद ११ ।

१८६८ सिरोही डावी मिसल राणावतारी, जीवणी देवडारी देवडांमे सिरै पाडीवरो धणी, उण हेटै कळदरी, उण हेटै प्रभूजीरा गाँवरो धणी, नेजावाळरो धणी वैसै ।

१८६९ तेजावत १, सागावत २, प्रथीराजोत ३, कलावत - इत्यादिक देवडा लाखावतारी खापा है ।

१८७० रणधीर देवडो जिणरै वेटा तीन - भाण १, सूजो २, प्रताप ३ ।

१८७१ सवत १६३० देवडो लाखावत सूजो रणधीरोत प्रथीराजरो पिता जिणनू डेरै बैठानू देवडै बीजै हरराजोत मारियो ।

१८७२ देवडो प्रथीराज सूजावत वखेल परणियो हुतो जिणसू सिरोहीरा राव छाडणो कर वेच लेनापर हुयो राव अखैराज देवडा जीवराजसीनू महल प्रथीराजनू चूक करायो ।

१८७३ चादै अखैराज राव कनै सिरोहीरो आव लियो ।

- १८७४ रणधीर १, पतो २, तेजो ३, मेघराज ४ ।
१८७५. मेघराजनू राव अखैराज राम साईदासोत भेलो मारियो. मेघराजरा भटाणै ।
- १८७६ मेघराज सीसोदियो परवतसिघरो जवाई ।
१८७७. देवडा मेघराजरा बेटारी विगत - नाटो १, भाखरसी २, डूगरसी ३, नरहरदास ४. नाटानू राम देवड़ारै बेटै मारियो भाखरसी चादा प्रथी-राजोत कनै छै नरहरदासनू राव भटाणो दियो ।
- १८७८ राव लखो १, जगमाल २, मेहाजळ ३, कलो ४, पतो ५, हरिदास ६ ।
१८७९. देवडो मेहाजळ राव जगमालरो भाखर माथै अखैगढ जठै रह्यो राव मानसिघ मेहाजळनू मरायो मानसिघ मुवो जद कलो मेवाजळरो सिरौही राव हुतो. काळदरी वेढ कर विजैजी राव सुरताण कलासू भाजियो ।
- १८८० मेहाजळग बेटारी विगत - कलो १, रायसल २, पचायण ३, जैनमाल ४, परवत ५ ।
- १८८१ देवडा मेहाजळ जगमालोतरा बेटारी विगत - राव कलो १, परवतसिघ २, जैतमाल ३, रायसल ४ ।
१८८२. लखावत राव कलो मेहाजळोत देवडो जिणरा बेटारी विगत - पातो १, आसकरण २, महेमदास ३ ।
- १८८३ पातारा वीमळपुर, आसकरणरा वाकली नै कोटडै, महेसदासरा अके गावमे है कोरटो जुआचार है ।
- १८८४ देवडा पता कला मेहाजळोतरै वालीसानू मार वीसळपुर लियो ।
- १८८५ देवडो डूगर १, रुदो २, नरसिघ ३, सिखरो ४, भैरव ५, रामो ६ ।
- १८८६ डूगर १, रुदो २, हरराज ३, बीजो ४, रामसिघ ५ ।
- १८८७ हरराज रुदावतरा बेटारी विगत - बीजो १, लूणो २, मानो ३, अजैसी ४, वणवीर ५, धनो ६, जैमल ७ ।
१८८८. देवडा हरराजरा बेटारी विगत - बीजो १, वणवीर २, धनो ३, अजैसी ४, भगवानीदास ५, मानो ६, लूणो ७ ।
- १८८९ देवडा बीजारा बेटारी विगत - रामसिघ १, अमरो २, जसवत ३, भोजराज ४ ।
- १८९० बीजैजी महाराणा जद जाम वेगरा भाईरै लहोडा लागा राव चद्रसेणरी बेटी जामवतीवाई बीजाजी लारै बळी ।

- १८९१ वीजारा वेटारी विगत - भोजराज १, खीवराज २, रामसिंघ ३, जसवंत ४, अमर ५ ।
- १८९२ देवडो केसोदास खीवराज वीजावतरो राव राजसिंघ साथै माराणो ।
१८९३. अमरावत १, वीजावत २, सूर्रावत ३, सिखरावत ४, मैरावत ५, कुंभा-वत ६ - अँ खापा देवडा डूगरोतारी सिरोहीमे ।
१८९४. रहवाडै अमरावत डूगरोत है ।
- १८९५ उयपण माचाळ वगेरै ठिकाणा डूगरोता मेरावतांरा है ।
- १८९६ रामपुगसू तीन कोस वररायो ठिकाणो देवडारो मालमराव वाजै अँ देवडा सामतसीहोत है चद्रावतारा चाकर ।
१८९७. राव पातसाह कनै गयो जद देसमे लूणा हरराजोतनू राख गयो हो. कटार मारी. अकवर राव सुरताणसू कहायो - लूणानू मार नाखजे राव सुरताण सिरोही महलामे लूणा हरराजोतनू मारियो मानो हरराजोत ही लूणा साथै माराणो.
- १८९८ लूणारो महेस, महेसरो भोपत ।
- १८९९ मानारो सादूळराव रायसिंघ साथै काम आयो. राव मया घणी राखतो ।
- १९०० सादूळरो ईसरदास ।
- १९०१ वणवीर हरराजोत राव सूरसिंह सुरताणोतरै काम आयो ।
- १९०२ घनो जैमल माहो-माहरी वेढमे माराणा ।
- १९०३ देवडो डूगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सिखरो ४, भैरव ५, रामो ६ ।
- १९०४ डूगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सूर्रो ४, सावतसी ५, जसवत ६, करण ७ ।
- १९०५ देवडा सूर्रा नरसिंघोतरा वेटा तीन - सावतसी १, तोगो २, पतो ३, वगडीरा घणी जैतावत वैरसल प्रथीराजोतरा वचनसू हटे मोटै राजा मारिया आप सिरोही ऊपर पधारिया तरै ।
- १९०६ सवत १६४४ मोटो राजा सिरोही साथै गयो जद देवडो सावतसी सूर्रावत, पतो सूर्रावत, देवडो तोगो सूर्रावत, राडधरो हमीर कूभावत, राडधरो वीदो सिखरावत, नेतो चीवो - अँ मारिया ।
- १९०७ आवू मत कर और तोपा, देखे फौजा डाणै ।
जव लग ऊभो पातडो, तव लग मूछा ताणै ॥
ओ दूहो पता सूर्रावतरो है ।
१९०८. नरसिंघ देवडारो वैटो कूभो, कूभारो मेगळ जिण देवडा वणवीरनू बाह दे आण मारियो ।

१९०९. डूगर १, रुदो २, नरसिघ ३, सूरु ४, कलो ५, मैरादो ६, ठाकुरसी ७ ।

चीवा देवड़ा

- १९१० चीवो १, खीमो २, जैतसी ३, दूदो ४, उदैसिघ ५, देवडा चीबारा बेटारी विगत - खेतसी १, खीवो २, रूपो ३, राजसी ४ ।
- १९११ चीवा चहुआण भीले सिरुही गाव महेसर जिणरो धणी चीवो खीमो जिण लखावत देवडा कलानू सिरुही रावाई दे गादी बैसाणियो ।
१९१२. खीमारो जैतो, जैतारो करमसी राव अखैराजरो उमराव करमसीरा बेटा दोय - गोयंददास नै भगवानदास ।

निरवाण देवड़ा

१९१३. देवड़ो निरवाण जिणरै वसरा निरवाण कहावै ।
कुकारसी डाहलिया कनैसू खडेलो लियो ।

वागडिया देवड़ा

१९१४. सिरुहीमे अेक खाप देवडा वागडिया कहीजै ।
- १९१५ देवड़ो केसरसिघ वैजनाथोत सिरुहीरै गाव फळवद हुवो. बडो सतपुरस. इणरै रसोलो चाकर हो ।

बोडा चहुआण

१९१६. बोडो चहुवाण, बोडारो लाखो, लाखारो बीकलदे, बीकलदेरो महीपाल, महीपालरो करमो, करमारो बीजो, बीजारा बेटारी विगत - वाघो १, वैरसाल २, सीहो ३ ।
- १९१७ वाघा बीजावतरी बेटा फूलाबाई महाराज सूरजमलजी परणिया ।
- १९१८ सवत १६७४ गावा १० सू गाव सवाणो नाराणदास वाघावतनू महाराजा दियो ।
१९१९. नाराणदासरै बेटा दोय - केसरीसिघ नै कल्याणदास, राव रतन महेसदासोत जाळोररो धणी हुवो जद कल्याणदास कनासू सवाणो खोस लियो ।
- १९२० हरीदास कल्याणदासोत सिरुही राव अखैराजरै चाकर रह्यो ।
१९२१. चहुवाणा के काल वार रजपूताने मार दोय सौ पैतीस गावासू वाव लिवी ।
- १९२२ चहुवाण बीकमसी राणुआ जातरा रजपूत मार पाच सौ सत्ताईस गावासू सूरचद लियो ।

१९२३. चहुवाण हाफो वीकमसी सगा भाई हाफे कालवानूं मार साचोर लिवी.
वीकमसी राणुवानू मार सूरचद लिवी ।

१९२४ भीनमाळ चहुवाण भिलै लाखणसीरा वसमे है ।

राणा नीवावतरो वंस

१९२५ चहुवाण राणो नीवावत राव मालदेजीरै चाकर रह्यो. सिवाणारो गाव
समदरडी पटै पायो ।

१९२६ राणारै वडो बेटो लूणो वडो रजपूत हुवो. १८९० चहुवाण माडण राणावत ।

१९२७ चहुवाण मेहकरण राणावत दळपत उदैसिघोतरो नानो तुरकाणीमें काम आयो ।

१९२८ चहुवाण महकरण राणावतरा बेटारी विगत - सिखरो १, देवीदास २,
रायसल ३, रतनसी ४, रावत ५, सावतसी ६ ।

१९२९. दळपत उदैसिघोतरो सगो मामो सावतसी ।

१९३०. चहुवाण सिखरो महकरणोत महाराज गजसिंघजीरो सुसरो ।

१९३१. सिखरा महकरणोतरा बेटांरी विगत - दयालदास १, रामसिंघ २ ।

१९३२ पीपरली चहुवाण देईदास महकरणोतरा है ।

१९३३. चहुवाण सावतसी महकरणोतरा बेटारी विगत - सादूळ १, गोपाळदास २,
बळू ३, अचळदास ४, भीव ५, कलो ६, अजो ७ ।

१९३४ सादूळ महोवतखानरै चाकर. दिखणमें काम आयो, गोपाळदास दोलतखान
आगै दोलतावाद काम आयो ।

१९३५. भीव जुभारसिंघ दळपतोत आगै काम आयो ।

१९३६ वळू सामतसीहोतरा तीन बेटा - नरहरदास १, सहसमल २, वेणीदास ३ -
आ तीनारै वसरा साचोररै परगनै चहुवाण है ।

१९३७ साचोरीमे वळू सावतसिंघोतरा बेटा तीन ज्यारी तडां तीन - नरहरदा-
सोत १, सहसमलोत २, वेणीदासोत ३ ।

१९३८. ईडरमें चहुवाण फतैसिंघोत है - देईदास १, फतैसिंघ २, प्रथीराज ३,
दयालदास ४ ।

१९३९ कागनडै चहुवाण भोजराज दयालदासोतरा है ।

१९४०. चहुवाण जैसिंघरो भैरूदास, भैरूदासरो जाजण, रावजी मालदेवजीरै चाकर
पहोकरण रहतो देवराजोतसू वेढ हुई जठै काम आयो ।

तेजसी वरजांगोतरो वंस

१९४१. वरजाग १, तेजसी २, प्रथूराव ३, वाघो ४, सिंघो ५, वणवीर ६, सूजो ७, रामो ८ ।
१९४२. राव वेगडो वरजाग, वरजागरो तेजसी, तेजसीरो प्रथमराव, प्रथमरै रावजी सूजोजी परणिया सेखोजी, देईदासजी प्रथम रावजीरा दोहिता ।
१९४३. प्रथूरावरो वाघो जिण कोढणावाटीमे वाघावास गाव वसायो वाघारै सिंघो, सिंघारै वणवीर, वणवीररै मोटो राजा परणियो ।
१९४४. वणवीररो सूजो, सूजारो रामो वडो सीकाई वडो रजपूत हुवो थोभरी खारडी पटै रही ।
१९४५. चहुवाण अजो प्रथूरावरो बेटो, देईदासजीरो मामो चित्तोड भिल्ला देईदासजीरै काम आयो ।

वागडिया चहुवाण

१९४६. सरणो देवी कुळदेवी वागडिया चहुवाणारै ।
१९४७. कालो भीमसिंघजी ईडर परणीजण जावै जठै महीरै घाट जान आयी. वागडिया प्रण माडियो उण घाटानू छोड दूजै घाटै जान उतरी.
१९४८. मही नदीरो अेक घाट वागडिया चहुवाण तोलक है उण घाट माथै वागडिया काम आया ज्यारी छत्रिया है ।
१९४९. राकसिया चहुवाण लवेरै भाटियारै पेटसू ठावा आदमी है ।
१९५०. दूहो—

रिपु भगतणरो राडियो, जाजक रिपु सी जाण ।

कोयलरो रिपु कागलो, चारण रिपु चहुवाण ॥

अै पूरबिया चहुवाण ।

चाविडा

१९५१. चावड़ा जादवामे मिलै सुणीजै है ।
१९५२. अणहल ग्वाळैरा कहणासू वनमे वनराज चावडै नगर वसायो, नाव अणहल-पुरो पटण. मुसलमान पीरान पटण कहै ।
१९५३. चावड़ारा ठिकाणा च्यार-माणसा १, वरोहीडो २, लाकरोडो ३, वसी ४, ५,

१९५४ चावडो रावळ आसो जिणरी लुगाई वाघेली उघळ नै राव मालदेजीरो बेटो गोपाळदासजी हेडर जाय रह्या जिणरा घरमे बैठी ।

तुंमर

- १९५५ तुवर चद्रवसी ज्यारी साख नव - जनवारीअट १, चांद २, लवो ३, डाणा ४, कळपा ५, भमर ६ - इत्यादिक ।
१९५६. यजुर्वेद माध्यदिनी साखा, पच प्रवर यग्योपवीतरा, व्याघ्रपद गोत्र, चील कुळदेवी खेजडी सहित आसोज सुद ८ रै दिन पूजीजै तुवरारै ।
- १९५७ खतान जातरो ढाढी, सीवोरो जातरो भाट, श्रीमाळ जातरो पुरोहित तुवरारै ।
- १९५८ दिलीमडळमे तुवरारी चौरासी है गाव दोयसौ गहलोतारा दिलीमडळमे है. राणो नरपतसिंघ उठै हुवो हमै अेक राणो वाजै, दूजा गहलोत चौधरी वाजै ।

अरजुणवंसी

- १९५९ डूगरपीठामे नूरपुर सहर है उठारो राजा चद्रवसी है अरजुणरा वसमे निसाण झडामे कपिरो चिह्न मांडीजै ।

कठोछ

- १९६० चद्रवसी सुसर्मा राजा जिणनू पाडव पकड़ियो आ कथा महाभारतमे है. सुसर्मारा वसज खत्री कठोछ कहावै है ज्वाळाजीरै राजा कठोछ है ।
- १९६१ ससारचद कठोछ ज्वाळाजीरो राजा जिणरा निसाण झडामें त्रिसूळरो चिह्न मडित हुवै ।
१९६२. सहसारचदरी गादी सहसारचदरो बेटो अनिरुधचद्र हमे है ।

झाला (मकुआणा)

- १९६३ मारकडे मुखर वसमे हुवा जिणसू मकुआणा कहाणा ।
१९६४. उत्तरमे कुतळपुर जठै राज कियो किताईक पीढी. उठासू उठ करांटा ठिकाणो जठै राज कियो पछै केहर मकुआणो गुजरातमे आयो केहर देहर पाळवण गूजरखड आया आसापद है ।
- १९६५ वाकानेररो घणी झालो राजा कहावै. घागधडे झालो महाराणो कहावै. नीवडी वढवाणरो घणी झालो ठाकुर कहावै ।
१९६६. हेम झालारै राजधानी घागधडो हहेल वदनी ।

१९६७ झाला जालमसिंघरो दादो माधोसिंघ झालावाडमे वढवाण ठिकाणो है जठासू सावर सगतावता कनै आयो सावररै धणी मोडी नावै गाव दियो सायद-
मोडी माधोसिंघरी, वतै न ऊजड थाय ।

१९६८ छोटी धांगड मुहरा सगतावत ज्यारो भाणेज झालो जालमसिंघ ।

१९६९ पछै कोटारा महारावजीनू बेटी परणायी कोटै नानतो ठिकाणो पटै पायो.
सायद-

माधो अटक न ऊतरै, माधो कटक न जाय ।

बेटी साटै वेगडो, घर बैठो घर खाय ॥

१९७० झालो जालमसिंघ कोटासू जाय राणा अडसीजीरै चाकर रह्यो जद सगता-
वतारो ठिकाणो गाव चीताखेडो पटै पायो ।

१९७१ उजैण माह राडसू झालो जालमसिंघ भागो मैदपुरमे दिखणिया पकडियो
पछै ईगाळियै त्रवकजी छोडाय कोटै पोचतो कियो ।

१९७२ वढवाणरा धर्णीरै बेटो हुवो नाम जालमसिंघ दियो आ वात सुण राजा
जालमसिंघ कोटै वेराजी हुवो - मो बैठा जालमसिंघ कवररो नाव वढवाण
दिरायो सो अनुचित काम कियो ।

१९७३. वडवो मुसलमान जिणरी बेटी झालै जालमसिंघ खवास किवी. वा जवारण
कहावती उणरो बेटो गोरधनदास ।

हुल

१९७४ हुलसार, हुलसाररै सीमाल, सीमालरै वाघल, वाघलरै जैतसी, जैतसीरै हरो,
हरारै गैनो, गैनारै मेलो, मेलारै सिखरो, सिखरारै कीतो, कीतारै करण,
करणरै भादो, भादारै पतो, पतारै केसोदास ।

१९७५ हुलसार १, सीमाल २, वाघुल ३, जैतो ४, हरो ५, गैनो ६, मैलो ७,
सिखरो ८, कीतो ९, करण १०, भादो ११, पतो १२, केसोदास १३ ।

१९७६. हुल करण कीताउत बडी वेढमे काम आयो ।

गोड

१९७७. गोडारै कुलदेवी नारायणी केळमे विराजै है केळा गोड न-खावै केळारा
पानरा दोनामें जीमै नही ।

१९७८ लाखण गोड भाट हुवो जिणरै वशरा लाखणोत भाट गोडारा व्रतेसरी ।

१९७९ करसाण जातरो ढोली गोडारो व्रतेसरी ।

१९८०. ढाकासू गोड राज वावनजी कछ राज दुवारका गया. पाछा आवता पुसकरजी कनै दहियानू मारियो प्रथीराज चहुवाण वहन परणायी दिली प्रथीराज गयो जद अजमेर गोडानू दे गयो ।

१९८१ कुतल आव न चक्खिया, थिरराज कटायो ।
आव काटि आवेररा, मारोठ मगाया ॥
थिरराज गोड मारोठ हुवो ।

प्रकीर्णक राजपूत वंश

वालीसा

१९८२ हाथी, सूजो, मूजो, तोगो, रणभू - अँ वालीसांमे ठावा हुवा खीमरो वालीसो नामजादीक हुवो ।-

वाला

१९८३ वालै धवचै पहला कुतबखाननू मारि पछै पुरदलखानू सिवाणचीमें मारियो ।

१९८४. धवेचा दासारै भाखरसी हुवो दहियारो भाणेज जिणनू पातसाह अकवर सांचोर सिवाणो अँ ठिकाणा दिया ।

१९८५. अभल वाली पडवाज घोड़ै चढि सेवड़ां मेह हिरणांरा सीगड़ां वधो जिको छुडावण गयो ।

१९८६ कावारो पडगनो लूखो कहावै. सताईस गावांरो. आवातरी कावारो दत्त सावळांरो गाव. सावळ कावारो वारट ।

बुंदेला

१९८७. राजा हरदेस बुंदेलै वंसीधर कनांसू उदारा लडणरा दूहा कराय रामचन्द्रिकामे घराया. केसोदासरा वणायोडा नही है ।

कासी

१९८८. कासीरो राजा वळवडसिंघ तगो, जिणरी मूछ माथै कागदी नीवू ठरतो ।

१९८९ वळवडसिंघ सूजा बुधौलारी सभामे गयो सूजा बुधोलो बोलियो - वनसीनद वळवडसिंघ समझियो नही मुनसी बोलियो नवाव फरमावै है वैठो वळवडसिंघ वैठो उण दिनसू फारसी पढणी सरू किंवो किताईक वरसां फारसी बोलण लागो वळवडसिंघ ।

१९९० वरान राजा कासीरो घणी नित्य पाच जवनारै गळै कराय उवांरी छाती माथै पग घर पछै जमी माथै पग घरतो. जवनां काळपीरै खेत वराननू

हटायो कासीरा कोटमे घालियो. पछै पीरां हल्लो कियो कासीरो कोट भेळण जद वरानरी तिरिया दासिया नगन कागर माथै चढी. पीरारै सनमुख हुई. पीरा पीठ फेरी कासीरो किलो पडियो. जमी भेलो हुवो. वरान परियह सहत दटि मुवो. कासीरी वसती विगड गयी ।

तिरहुत

- १९९१ वारै पुसकर तिरोहितमे राजा सिवसिंघ वणायो जळ तळजीरी हुवो. तळाव घोडा दोड अंक कोसरी गिरदमे वणायो उणमे कमळा नदी आय पड़ी ।
- १९९२ तिरोहितरै राजा सिवसिंघ अँराकी घोडारै अँड लगायी, ताजणारी दिवी, डोर काढी. घोड़ो सिवसिंघनू ले भागो सो आज आवसी ।

नेपाल

- १९९३ गणेशप्रसाद, भैरुप्रसाद, विष्णुप्रसाद इत्यादिक हाथियारा नाम नेपालरै राजारै ।
- नेपाल माथै चीणरो लसकर आयो हो जिणरो पार नही हुतो—नेपालरा कहै ।

मुसलमान रजपूत

- १९९४ परमार १, पडिहार २, खीची ३, तुवर ४, सोळकी ५, भुट्टा ६, सम्मा ७, जोइया ८, दहिया ९, मोहिल १०, जझा ११, चहुवाण १२—इत्यादिक रजपूत मुसलमानामे है वरसिंघ भाटी मुसलमान हुवा ज्यारा घर पूगळमे है ।
- १९९५ जैतमाल राठोड मुसलमान हुवा ज्यारा घर छै-सात नागोरमें है ।
- १९९६ बाघेलो वेट दहियो देसोत दीठो नही ।

जाट

- १९९७ कछवाहासू जग कर जाट जवारसिंघ अठारै दिन अलवर रह्यो जद अलवर जाटरै हुती ।

मराठा

- १९९८ दिखण डभोळथी सूरत खुसकीरै राह कोस १३० तठी सिवा दिखणीरो चाकर नैमूजी जादोराय तीन हजार असवार पाच हजार पाळा ले साथै नै सवत १७२० रा माह वद ५ सूरत मारी पाच दिन रह नै गाव लूटियो, बाळियो पचास लाखरी मता ले गयो केईक अधकी कहै छै ।

- १९९९ विलदा अगरेजियारी कोठी वची अँ सभ ऊभा रह्या ।
- २००० गाव बुदडादे सौ वाळियो पातसाही थाणादार हुतो जिण कोट पकड़ियो सो पातसाहजी दूर कियो पातसाहजी फुरमाया - च्यार लाख रुपया लगाय सूरन दोळो कोट करावणो अँक वरसरी जगात वोपारियानू माफ किवी ।
- २००१ बालाजी पडितरो बेटो पेशवो बाजेराव पिंगळिया जातरो मरहटो छत्रपतीरै पेशवो हो बाजेराव पहला ।
२००२. कोकणरै नै गुजरातरै विच डाभाडारो अमल हुतो ।
- २००३ त्रवकजी डाभाडानू बाजेराव पेशवो मारियो ।
- २००४ त्रवकजी डाभाडानू बाजेराव पेशवो मारियो हैदरावादरो नवाब आपरै माथासू पाग उतार दिवी कह्यो - हमारा दस्तार भाई त्रवकरावकू मारा जिणकू मार मै पाग बाधूंगा पछै बाजेराव नवाबसू मिलियो है. नवाबनू राजी कियो जद नवाब कह्यो - माग, तूठो. इण कह्यो - पाग बाध लीजै नवाब पाग बाध लिवी ।
- २००५ साहू राजारो नव बाजेराव सवा लाख रावत ले वगालै गयो. सरजंगनू भजायो, पछै लखणेऊरो नवाब मनसूरअली वसीण कनै अठार लाख रुपया पेशकसीरा लिया ।
- २००६ पूनै दिखसु आनि बाजेरावरै तीन बेटा हुवा - नानो १, भाऊ २, रुघनाथराव ३ ।
- २००७ नानारो बेटो वडो विसवासराव काका भाऊ साथै गिलजारी राड़में काम आयो ।
- २००८ सवत १७७२ छठ बुधवार दिखणी भाऊ माराणो अहमदसाह दोजथी जीतो ।
- २००९ अजमेररो सूवैदार सताजी वावळियो दिखणी भाऊरा जगसू कंगारै भेख किसनगढ छतरीमे आय बैठो हो. माळी कनासू मूळा मांग खाधा ।
- २०१० पेशवा नानारी गादी नानारो छोटो बेटो माधोराव बैठो ।
- २०११ पेशवा माधोरावरी गादी माधोरावरो बेटो नारायणराव बैठो ।
- २०१२ पेशवा नारायणरावरी गादी नारायणरावरो गरभावास छोटो माधोराव बैठो ।
- २०१३ नानो फडनवीस रात - दिनमे दोय घडीरी नीद लेतो ।
- २०१४ दोनू पेशवाका उमराव अम्रतरावजी कासी रहै, बाजेरावजी विठूर रहै ।

२०१५. मानकरी उमराव सवा सै पेसवारै हुता.
- २०१६ उभाड गायकुहाड़ा जोडैज हुता ।
२०१७. नागपुरका भोसळा श्रीवतका दिया हुआ मुलकमे मुहम मालकी करै. गाय-
कवाड ही अै से सीधिया हुलकर पेसवारा अमलमें सर्वत्र मुहम मालकी करै ।
२०१८. नागपुररा धणी वडा रघूजी, ज्यारै तीन बेटा हुवा - जानूजी १, मूधाजी २,
सोबाजी ३ ।
२०१९. मूधाजीरा बेटा तीन - रघूजी १, चिमना बापूजी २, मानिया बापूजी ३ ।
- २०२० रघूजीनू जानूजी खोळै लिया जानूजीरी राणी दरियाबाई ।
२०२१. सोबोजी खोळो उधामणनै फोज ले आया जगमे मूधाजीरै हाथरो घमाको
लूटो हाथी चढिया महावत नूरमोहमदरा कह्यासू सोबाजीरै गोळी लागी.
हाथीरै होदै खेत रहिया ।
- २०२२ लालप्यारो घोडो, नगीनो हाथी नागपुररा राजारी मरजीसू हुवा ।
२०२३. दस हजार घोडो सासतो नागपुर तबेलै हुतो ।
- २०२४ सिधिया दिखणी सावतारा पायपोस वरदार नै हुलकर सावतारा उमराव है ।
- २०२५ सिधियारो सेस - कुळ कहावै भडामें सरपरो चिह्न है आरै ।
- २०२६ सिधिया मानाजी फाकडा वडा बहादुर हुता टीपूरी नोकरी करी. करणा-
टकसू दरब रोजगारको जवरीसू दिखणमे लाया ।
- २०२७ मानाजी फाकडरा बेटा अगदराव फाकडा धाडा किया सिरजीत रावरा
मारणमें सामल हुता गुजरातमें गया, उठै हीज मुवा. अणदराव फाकडारा
बेटा मुकदराव हमै दोलतरावजीरै खोळै गादीनसीन हुवा ।
- २०२८ कनेर खेडासू उठ चमार गूदो सिधिया अपणायो चमार गूदारो नाव श्रीगूदो
प्रसिध दायो कियो ।
- २०२९ दिखणमें किनेरखेडी उत्तन सिधियारी जयाजी, जोत्याजी, दत्याजी तीनू
राणोजीरा बेटा राणोजी जनकूजीरा, जनकूजी दत्याजीरा ।
- २०३० जयाजीरै लुगाई सखूबाई, जोत्याजीरै लुगाई सगुणाबाई, दत्याजीरै लुगाई
भागीरथीबाई ।
- २०३१ सिधिया जमायानू लोक आयो कहै ।
- २०३२ दोलतरायरी वायकू बायजाबाई, सरजैरावरी बेटा, हीदूरावरी बहन
दूजी वायकू रुकमाबाई ।

- २०३३ सिधिया राणोजीरै खवासरो वेटो पटेल माघजी केदारजी. सिधियारी लुगाई मेणावाई जिणमू पुत्र प्रगट हुवो दोलतराय ।
२०३४. माघजी पटेळरी त्रिया पारवतीवाई जिण दोलतरायसू जग कियो ।
- २०३५ भाऊगरदी हुई जद पटेल माघजीरो पग कटाणो. पठाण राणैखां आपरै घोड़ै चढाय ले निसरियो पूनै गया पछै पटेळ वडो भाग पायो ।
- २०३६ दिखणी जगू वापूजी ओ दादोजी लखू ओ दादो किसनजी गोपाल भाऊ-
रायजी पटैल राणोजी वायडाण वगेरै माघजी पटैलरै ठावा आदमी हुता ।
- २०३७ हुळकर मलारराव दिखणमे वेटीरो व्याव कियो जद भेळपरै तावै बुलायोडा
व्याव ऊपर बूदीसू उमेदसिंघजी रात्रराजा दिखणमे गया हुता ।
- २०३८ सवत १८२३ रा वैसाख वद ११ मलारराव मुवो ।
- २०३९ धनगर नराणराव वारगळरी वेटी गोतमावाईनै विलाडै दिवाण मोहणदासरी
वेटी ननूवाई दोनू हुलकर मलाररावरी त्रिया सत कियो ।
- २०४० हुलकर मलाररावरी लुगाई गोतमावाई वेटी वेटो खाडेराव भरतपुररा
जाटा मारियो खाडेरावरै अहल्यासू पुत्र भालेराव पुत्र हुवो महा नीच उण
मुवा तकूजी खोळै आया ।
२०४१. अहल्यारै मूकतावाई वेटी फणसियानू परणायी ।
- २०४२ अहल्यारी वेटी ऊदावाई फणसियानू परणायी हुती ।
२०४३. कासीराय १, मलारराय २ - दोय वेटा तकूजी हुलकररै ।
- २०४४ माघवारो वेटो वापू हुलकर ।
- २०४५ सतावारो वेटो भीखाजी ।
- २०४६ तकूजीरी तिरियारो नाव रुकमावाई ।
- २०४७ तकूजीवा १, माघजीवा २, सताजीवा - अ तीत सगा भाई ।
२०४८. पाटणकर आभाजीराव वडो उमराव हुवो है पेसवारै उठणरो कुरब हुतो ।
- २०४९ गढमडळामे गूडरो राज हुतो सो दिखणिया खोसियो ।
२०५०. सोलापुररो राजा ढेढ है सो वेडर कहावै हमै हैदरावादरै नवाब सोलापुर
ले लियो ।

पिंडारा

- २०५१ पिंडारा करणाटकरा कदीमसू पछै करणाटकसू आया सावतारै चाकर
रह्या आ हिंदुस्थान माथै हुलकरानू विदा किया जद पिंडारा तईनात
किया जदसू हुलकरारा चाकर ठैरिया पिंडारा ।

२०५२. पिंडारारी बाईस ढाल हुलकररै तावीतमे हुती खरडारी राडमें हैदराबा-
दियानू लूटी पिंडारा घनाढच हुवा ।

सिख

२०५३. गुरु नानगरै बहन हुई नानगी ।

२०५४. चमार तेगबहादुररै सामल माराणो उणरा सिख रैदास कहावै रैदास गुरदे
पास ।

२०५५. मिरासी नाम मरदानो तेगबहादुररै साथ माराणो, जिणरा मिरासी मर-
दानारा पथरा सिख रवाबी है सिख हजारीरो माल उणानू दैवै ।

२०५६. चडाळ तेगबहादुररै साथ काम आयो उणरा सिख रगरेटा कहावै रगरेटा
गुरुदा वेटा ।

२०५७. लाहोररो राजा सिख रणजीतसिंघ जिणरै दोय कपू तिलगारा, अेक कपू
गोरखियारो, अेक कपू हिंदुस्तानियारो, जुमले च्यार कपू ।

२०५८. सिखारी हाल दस लाख बढ़क है ।

२०५९. सिख मसीतमे ग्रथसाहब पधराय मसीतनू मसूगढ कहै सेवापथी सिख दया-
वत विसेस हुवै, सबकी सेवा करै, दुखीकी विसेस सेवा करै भीख न मागै
बडी बट नै आजीवका करै ।

२०६०. गुरु नानकरा भेखमे अकाली हरामजादा हुवै ।

२०६१. सिख सिखनू कहै — मुडितका विसवास न करणा ।

२०६२. सिख चक्रवर्ती हुसी — ग्रथसाहब कहै है ।

२०६३. सिखारै ग्रथसाहबमें कहै है — चवदै सौ वरस ताई सिखरो प्रताप बधबो करसी ।

२०६४. चवदै सौ वरस सिखारो राज रहसी — यू सुणीजै है ।

जोगी

२०६५. द्वादस गुरु, द्वादस शिष्य, जुमलै चौबीस कापाळिक हुवा है ।

२०६६. उगरभैरव कापाळिकरै नै शंकराचार्यरै विवाद हुवो है ।

२०६७. जोगी गरीबनाथ सिववाडी आयो भागढभूतड थका रहै कहै हमीर पतर-
पुरो जिणकू सिववाडीका राज दै ।

२०६८. अेक दिन चापै पेटियो गरीबनाथजीनू दियो आं कह्यो तू सिहवाडीरो मालक
हुसी आ वात सुण रणधीर सिववाडी माहेसू चापानै काढ दियो. ओ नगर
जाय रावळ बीदारी चाकरीमे रह्यो ।

२०६९. जोगी गरीवनाथजी सोव आसण वाधियो चापा दूदावतरी वारमें. नागुड़दो भाडरवे गरीवनाथजीरा जोगी है ।
२०७०. गोरख टीलासू पीर नदीनाथजी अखड वस्ती अटकरै तट वारै तट जठे आण आसण वांधो. सवा लख हिंदू आरा सेवक है अटकसू किलासू मखड नजदीक है ।
२०७१. मखडा नवीनाथजीरी गादी पीर सीतळनाथजी. सीतळनाथजीरा चेला हुसियारनाथजी जोधपुर आया सवत १८८५रा सावण सुद १२ ।
२०७२. मखडा सीतळनाथजी पीर कहता - जोगी हमारे वरसमे अेक वार आवै सो हमेसा गुरुनै वरसमें दोय वार आवै सो हमारो गुरुभाई ।
२०७३. सवत १८८४रा आसोज सुद १५ आयसजी महाराज श्री लाडूनाथजी महा-मंदिर हाथी पचीस दिया. ज्यारी विगत - हाथी १ भाडियावासरा आसिया वाकीदासनू दियो, हाथी १ मूदियाडरा वारट अनाडसिघनू दियो, हाथी १ कोटडारा वणसूर भैरानू दियो, हाथी १ लोलावसरा वारट गोकळदासनू दियो, हाथी १ मोरटडकारा वारट चालगदाननू दियो, हाथी १ भदोरारा सांदू गिरवरदाननै दियो, हाथी १ कवाळियारा खडिया जालानू दियो, हाथी १ मिहूरु महीयारिया नदलालनू दियो, हाथी १ मयाणियारा वारट वगसीरामनू दियो, हाथी १ खुरलारा सुरताणिया वीजानू दियो, हाथी १ वडोईरा रतनू केहरानू दियो, हाथी १ खारावाररा वोगसा सुरतानू दियो, हाथी १ कसूवलारा वारट सिवदासनू दियो, हाथी १ धवूकडारा गूगा उदैरामनू दियो, हाथी १ भोजग मनोहरदास जोधपुररो जिणनू दियो, हाथी १ जोधपुररा भाटनू दियो, हाथी १ जोगियांरा भाटनू दियो ।
२०७४. नाटेस्वर पथरा जोगेस्वर सतोखनाथजी अंजा भादारो कोढ गमायो ।
२०७५. राजेन्द्रगिरजीरो चेलो उमरावगिरि, उमरावगिरिरो वेटो रूपगिरि खिताव दिलावरजग, रूपगिरिरो वेटो रामलालगिरि ।
२०७६. कोटै उत्तमगिरजीरा विसणूगिरजी, वखतगिर दोया चेलां भंडारो आछो कियो आं लारै ।
२०७७. विसणूगिरिरै चेलो दयागिरि वखतगिरिरो चेलो गैवगिरि ।
२०७८. सूळी घोडी कठपीजरो नागोर आग्या करि प्रभातगिरजी दूर करायो ।
२०७९. सन्यासी घूणीगिरि घूणीनाथ कहायो वीकानेर सूरतसिघजी आनू गुरु कर मानिया ।

२०८०. चितोडं माथै रावत भीमसिंघजी जद आ आगै समीचा खेडारा सध्यागिरिजी मनीजता ।

वैरागी

२०८१. पूरवमे मकसूदाबाद चद्रकाणै रामावतारा वडा असतळ है. दोय सै वैरागी सासता रहै, वडा सदावर्त दिरीजै है ।

२०८२. पूरवमे पढै वैरागी टकसाळी कहावै, अपढे अडबगी कहावै ।

२०८३. वरघमान, अरणघटा आ दोना ठिकाणा नीबावतारा वडा असतळ है, वडा सदावर्त दिरीजै है ।

२०८४. झालारो वाकानेर जठे कूबावतारो ठाकुरदुवारो है ।

२०८५. कबीर सवत पनरासैमे हुवो. दादू पहला सौ वरसा पातसाह सिकदरनू परचो दियो सिद्धपुरादिक ठिकाणा नेमीस्वर विहारादिक जिन-मदिर सप्रति कराया गजधर, अस्वधर, नरधर मडित जोतिसिया अरज किवी — आपरी आयु सौ वरसरी है सौ वरसरा छत्तीस हजार दिन हुवा छत्तीस हजार जिन-मदिर सप्रति कराया मातारा उपदेससू आपरी ऊमररा दिना जिता जिन-मदिर कराया. जुमलै सवा लाख जिन-मंदिर कराया राजा सप्रति नवासी हजार जिन-मदिररो जीर्णोद्धार करायो सगती राजा परमार कलौ भरत क्षेत्र राती क्षेत्र जीतो सिंघ सौवीर देसरो राजा उदई नाम सो साधू हुवो जैनी ।

जैन साधु

२०८६. हीरविजय सूरि तपगछमें श्रीपूज, जिनचद्रसूरि खरतरगछमे श्रीपूज, अंक समैमें हुवा अकबरनू परचा दिया ।

२०८७. विद्या खरतरारै विसेस, धन तपारै विसेस ।

२०८८. तपागछमें तेरै बैसणा है, खरतरगछमें इग्यारै बैसणा है ।

२०८९. विजयदेवसूरिरा वसरो श्रीपूज जिणरा जती तपामे घणा है उण पछै विजयाणद सूरिरा वसरा श्रीपूजरै जती घणा है ।

२०९०. तपगछरो जती जानविजै महाराज अजीतसिंघजीरो विद्यागुर ।

२०९१. ग्यानविजै तपगछरो जती महाराज अजीतसिंघजीरै विद्यागुरू पळासणी पटै हुती. उणरै सारा चेला कपूत हुवा ।

२०९२. ग्यानविजै अजीतसिंघरो गुरू, जिणरो चेलो वीरमविजै, घरमे त्रिया घाली ही. उणरी बेटी फळोधीरा मथेण श्रीचंदनू परणायी ।

- २०९३ हीरविजै जिनमतरो टीपणो वरतियो हो पछै सवत १८४१ रै वरस जागोरी लूकारा गछरा श्रीपूज हरखचद जिनमतरा टीपणारो वरतारो कियो ।
- २०९४ कछ देसमे कच्छी ओसवाळ कखसूरी किया उवै हमै आधाईक आंचळियामें वसै है, आधाईक तपामे वसै है ।
- २०९५ वीकानेरमे सात सौ घर खरतरगछरा स्नावकारा है ।
- २०९६ जिनदत्तसूरि परचा घणा दिया देवानुग्रहात् ।
२०९७. जिनदत्तसूरिरो पोतोचेलो जिनकुसळसूरि दादागुरु पोतोचेलो दोनू दादाजी कहावै ।
- २०९८ रूपो-रगो गुरु भाई रूपारा वडा खरतरा, रगारा रगविजया ।
२०९९. खरतरा जीवण जती अक महाराज अभैसिंधजी आगै मनीजतो चुगली घणी करतो चेला इणरै कपून हुवा ।

ओसवाळ

- २१०० रतनप्रभ सूरि पछै कवळैगछ कखसूरि हुवा ज्या बहतर गोत्र ओसवाळ किया वाघरेचा, वाघसार इत्यादीक ।
- २१०१ कवळैगछ रतनप्रभसूरी गाव ओसियामे अठारै गोत्र ओसवाळ किया — तातेड १, वापणा २, करणावट ३, वलह ४, मोराक ५, कुळहट ६, विरट ७, लोहडे साजने ८, श्रीश्रीमाळ ९, श्रेष्ठ १०, सचेती ११, आदित्यनाग १२ इत्यादिक ।
- २१०२ श्रेष्ठ गोत्र साखा — वैद्य १, विरट गोत्र साखा भुरट २, बहल गोत्र साखा चोरडिया ४ ।
- २१०३ साह भैसो माडूगढ, हमीर लालाढो इलवर तजारै, सुराणो सोम सैभरै, लोढा रामो भैरव दोनू भाई आगरै, कोठारी रणधीर मेडतै, मुहणोत जैमल जाळोर, कोठारी आसकरण मेडतै, परवत लूणियो जाळोर, कांकरियो वाली कुभळमेर, रतनसी गाधी जाळोर, मलकसी विहारी आगरै, थिरो भंडसाळी जेसळमेर, वछावत करमचद सगरामोत वीकानेर, कावडियो भाभो भार-मलोत उदैपुर—अै आछा दाता हुवा ।
- २१०४ जगदेव परमाररो वेटो मधुदेव, मधुदेवरो सुर जिणनू श्रीपूज घरमघोस्त-चार्य वाणियो कियो सुररै वसरा सुराणा कहाणा ।
- २१०५ सवत १११५ सुराणा नागोर वसिया ।
- २१०६ नागोररै सुराणै सहदेव चूहडमलोत लाख रुपिया आफरा घरसू राजमे भर मुहणोत नैणमी सुदरदासरा छोरु कवीला कैदस् कढाया ।

- २१०७ नागोररो सुराणो पूजो, पूजारो कुजो, कुजारो सतीदास, सतीदासरी बेटी सुसाणी जिणरी सगाई दुगडारै किवी ही उवा कवारी हीज बीकानेररै गाव मोरखानै जमीमे प्रवेस कर गयी इणरो वडो देवळ है - मूरखानै इणनू सुराणा दुगड दोनू पूजै है ।
- २१०८ खाटूरो परमार खीवसी जतीरा उपदेससू वाणियो हुवो उणरै वसरा खीवसरा बीसळपुर अेकण जोधपुररा अेकणरा उदैपुर राणाजीरा कामेती है ।
- २१०९ पूगळियो मुहतो फळोधी राव हमीररो कामेती राव हमीररी सभामे बैठो उणरै बेटो हुवो जद वधाई दिवी उण वेळा भैरवी बोली. रावजी पूगळिया मुहतानू कह्यो - इणरो नाम कोचर दीजो, इणरो घणो परवार वधसी, ओ भागधारी हुसी, यू हीज कियो कोचर मुहतारा हमै मारवाडमे तीन सै घर है ।
- २११० अेक जगडू वधमानरो, दूजो जगडू सोलावत हुवो ।
२१११. विमळसा उदै भाणरो पोरवाळ ।
- २११२ वसतुपाळ, तेजपाळ, मालदे, लूणा - च्यारु आसराजरा बेटा ।
- २११३ वस्तुपाळ तेजपाळ देलवाडै जिणमदिर करायो जिणनू अठारै करोड रुपिया लागा ।
- २११४ आबू मार्यै गाव देलवाडो विमळसाह जिणमदिर करायो जिणनू नव किरोड नै किताईक लाख रुपिया लागा है ।
- २११५ खरवै तपरो बेटो भैसोसाह आभानगरी हुवो ।
- २११६ माडूरो नाम आभानगरी है ।
- २११७ भैसोसाह जातरो गधइयो हो जिण सवत ९८८ ।
- २११८ अणलपुर पाटणमे गुजरातरा वाणियानू वैक छकिया ।
- २११९ रायमल वैद मुहतो सोजत हुवो वीरमदेजीरै काम आयो सिर पड़िया जूझियो कबध हुय बेटानू मारियो सायर -
- मुहता माटी मारका, घररा गणै न पारका ।
- २१२० पतो वैद मुहतो सिवाणै कला रायमलोतरै काम आयो ।
- २१२१ वैद मुहतो पतो अजावत सिवाणै कलाजीरै काम आयो सायर -
- पडियै सिर दीघो पातो कुभट गिरवर ।

- २१२२ पता वैद मुह्तारै नराणदास ।
- २१२३ पळसी वैद मुहतो महाराजकुमार गजसिंघजी जाळोर लियो जद विहारियांरै काम आयो ।
- २१२४ सवत १६८५(?) करमचद डोसी सैत्रुजयरो जीरणोद्वार कियो उदैपुरवासी ।
- २१२५ मुहणोत नैणसी जाळोर आमल जद वाडमेररो कामदार कुमो जिणरी वेटीरी सगाई नैणसीजीसू किवी नैणसी परणीजणनै गयो, खाडो वाडमेर मेलियो कमो मूसळ खडग सामो मेलियो डावडी औरठै परणायी जिण कारणसू नैणसी वाडमेर हदवाट मेलियो वाडमेर प्रोळरै कगाररै काठरा किंवाड हुता जिके आण जाळोर गढरी पोळ चढाया. सायर—

वाहडमेर जुगा लग डूवो, कमला - तणी कमाई ।

- २१२६ मुहणोत सुदरदास जैमलोत गाव कवळै सीधल सीधलारा आदमी कट पाच सै जणा मारिया पचीस सती हुई वडो राहचक हुवो ।
- २१२७ गाव सूजासररो वाणियो जात भडसाळी करणीरै दरसण आयो इणरो रग भूरो हुतो आप फरमायो — आव म्हारा भूरिया ! जदसू उणरो नाव भूरो प्रसिद्ध हुवो भूरारै वसरा भूरा कहावै देसणोकमे माताजीरा खजानारी कूचिया आ कनै रहै छै ।
- २१२८ जगनाथ १, रायमल २ — अँ दोय वेटा लूणा गोरावतरा ।
- २१२९ भडारी जगनाथजीरा वेटा दोय — अँक जीवराज, दूजो हेमराज ।
- २१३० चतुरभुज भडारी जीवराजोत है ।
- २१३१ गगारामजी नै वछराजोत भडारी — अँ हेमराजोत ।
- २१३२ सिवाणै भडारी मेघराज रावडैरारी पीढिया लिखते — लूणो १, जगनाथ २, हेमराज ३, वछराज ४, खीवराज ५, जुझारमल ६, मेघराज ७, जीवमल ८ ।
- २१३३ मेडनारो लूणियो तिलोकचद जिण रुपिया तीन हजार आपरा घरसू दिख-
णियानू दे नै पुरोहित हरजीवण, भडारी सोभाचद नै मुहणोत ग्यानमल,
मुहता वाकीदास वगेरै जोधपुररा मुसद्दी आगरै ओळिया हुता ज्यानू
छुडाया ।
२१३४. भडारी भगवानदास रायमलोत वीठळदासरो पिता खैराडू राड़ सईदासू
हुई जठै काम आयो ।

२१३५. साहजी सय्यद पटैलरै मुखतार हो जिणरो वेटो मोहमद मीरखा दिली फिरगीरी सिरकारसू पाच सौ रुपिया महीनारा - महीनै पावै. सिकल अकल आछी है ।
२१३६. सीघोजी वाघोजी दोनू भाई मारवाडमे आया. सीघोजीरै पारसजी नै चापसीजी दोय वेटा ।
- २१३७ पदमोजी राणोजी. भैरूजी, सोभोजी दोनू पदमाजीरा ।
- २१३८ सुखमालजी १, रायमलजी २, रिडमलजी ३, प्रतापमलजी ४, प्रिथीमलजी ५, नथमलजी ६, सुखमलजीरा ।
२१३९. प्रिथीमलजीरा वेटा दोय — विजैमलजी १, ' ' ।
- २१४० सीघोजी १, पारसजी २, पदमोजी ३, सोभोजी ४, सुखमलजी ५, प्रिथीमलजी ६, विजैमलजी ७, तखतमलजी ८, धीरजमलजी ९, तिलोकमलजी १०, सुमेरमलजी ११ ।
२१४१. भीमराजोत चापसीजीरा जोरावरमलोत राणाजीरा ।
- २१४२ फतैचदजीरा रायमलोत पीपाडरा सिघवी ।
- २१४३ चैत वद ९ सिघवी धनराज चलियो चैत सुद ९ सिघवी भीमराज चलियो ।
- २१४४ वनो वाघनेर हालाकूडी इत्यादिक ठिकाणा सिंधमे ओसवाळ रहै है ।

सरावगी

२१४५. जैपुर सरावगी मनीराम टूकियो वडो धनाढ्य रहै दोलतरामरा लसकरसू वाधियो ।

ब्राह्मण

- २१४६ सुव द्राविड पचधा — वडम द्राविड १, अकडतिमड द्राविड २, वृहच्चरण द्राविड ३, अष्ट सहस्र द्राविड ४ इत्यादि ।
२१४७. श्रीमाळी ब्राह्मण ज्यारा चवदै गोत्र चीरासी अवटक है श्रीमाळिया अणहल्ल-पुर पाटणसू आणि भीनमाळ सोळकियानू वसाया ।
- २१४८ श्रीमाळियारै च्यार फेरा वीद-वीदणी साथ परणै जिण दिन फिरै दूजै दिन कसाररा लाडूरा कवा सात वीद वीदणीरा मुखमे दियै, इता ही कवा वीदणी वीदरा मुखमे देवै छै वीदणीनू कळाया माथा लेनै च्यार फेरा फिरै ।
- २१४९ किणहीक सह्रमें पाच जणा श्रीमाळी श्रीमाळियारी पचायती करता उवै देवाजोगसू पाचू ही सरीरपात हुवा किताईक वरसा माहोमाह मतो कियो —

पंचायती कियानू आपानू घणा वरस हुवा सो हमै निहचो करो, पंचायती करणी आपै भूला क न भूला इत्तामे एक ब्राह्मण विनती किवी - आज म्हारै घर आरोगजो जद आं कह्यो - थारी मा डाकण है जिणसू थारै घर न जीमां. जद उण कही - इण वातरी मोनू प्रतीत नही आं कही तू जागतो सोय घोरावजे, आ थारो रानरै समै मूडो सूघसी ।

२१५० त्रिवेदी १, चतुर्वेदी २, जैठी ३, घीरेजा ४ - इत्यादिक खट मोढ ।

२१५१ नेड़ियाभू पीपरलो पीयरई - अँ पलीवाळारा गांव तैमडा कनै है ।

२१५२ पलीवाळ जाट घाम नाम तोतो जिण वीकमपुररी हृदमे गाव बाप वसायो. तोनारा वेढारी विगत - भवड़ो १, लखो २, वेहरो ३, मेघो ४ - बापमे मेघड़ासर तळाव करायो ।

२१५३ कनोजियामे व्यास पदवी नही, सरवरिया व्यास कहावै है ।

२१५४. गौतम-गोत्री श्रीमाळी, गर्ग-गोत्री पोहकरणा ।

२१५५. महेस्वरियारी साढी सात जातरी विरत पोकरणा छोगाणियारै है हाल तक ।

२१५६. व्यास तेजो, गंगो, तिलोकसी तीनू सगा भाई तेजारो तापी, गगारो गिरघर, तिलोकरो कछरो ।

२१५७. गंगाराम - सुतेनाय्यं द्विजेन हरिशर्मणा ।

कृतस् तार्क्ष-पुराणस्य सारोद्धार-समुच्चय ॥

२१५८ गगारामरो वेढो पारीक हरदेव ज्यारा वंसमे प्राणनाथ वीकानेर दरवारमे कथा करै हमै ।

२१५९ हरजीजी, हरदेवजी सगा भाई. मेड़तै लोकमणजी आरै कडूवै भाई-भतीज लागै ।

२१६०. डडी श्रीधर चितोड़ा नागररो दूध हुतो ।

२१६१ पारख गोकळ मोढ जातरो वाणियो हो गुजरातरा सेठ खुसालचद अभया-दासरो गुमासतो दोलतराय आगै कुलकुलां ।

२१६२ भागरा जातरा रैवारी खारोडा हुवा. उवारै हाथ देवळजीरा खजानारी कूचियां रहती ।

२१६३. मारोतरा जातरा, मलिक खिताव, सगा भाई दोय ललू १, जगता २ बडा वनाढ्य मुलतानमे हुवा ज्या खत्रियारै वहन वेटीरो नातो होण दियो नही, पातसाही आग्या उयापी ।

२१६४. नाहर डैररा भील सिंदूररी आड किया, कमरे गूघरमाळा बाधिया बैस नै पगा घुणामे पाल तीर चलावै. झगडै गाढा अलवाणा पगा अेक वैत च्यार आगळ भाळ तीररी, अढाई आगळ भोई ।
२१६५. पहाडमें नीवार जात हिंदू भैसो मार खावै है. नीबारानू मार नै सिसोदियां नैपाळ लियो ।
२१६६. धनगरारी जाता लिखते — हुलकरी १, वारगल २, वाघ ३, वाघमारिया ४, ढमढेरिया ५, भागवत ६, सैनगिया ७, खोळिया ८, गाडला ९, धोरापत १०, खटकिया ११ इत्यादिक गाडरी धनगर कहीजै ।

चारण

२१६७. दागल १, गोलमा २, मीसण ३ — अै तीनू भाई है ।
- २१६८ टापरिया १, मिहड २, केसरिया ३ — तीनू मकुआणा माहेसू निसरिया. माहेमाहे सवघ हुवो छै ।
२१६९. रोहडियारी वारै साखा — रोहडिया १, घूना २, कुरडिया ३, पाथेड ४, धीरण ५, सावळ ६, मीकस ७, कळहट ८, हाहणिया ९, वीठू १०, भाणू ११, गूगा १२ ।
२१७०. महियारियांमे सुदरवाई बैलाई कहावै कदीमसू कुळदेवी जाणराव सांडुवारै महमाय वरदेवी छै ।
२१७१. पहला नरुका मुजरो करै, पछै आढा सुभराज करै ।
२१७२. सोरठिया वडा चारण है सासणारा घणी ।
२१७३. वारट ईसर सूरवत, सूरु दीतावत ।
२१७४. सीचाणो १, हाफा २, वीरवद्रका ३, राजपीपळा ४, कुहाटिया ५, इत्यादीक ईसर पोतारा गाव हालाहारमें ।
२१७५. सांडू गोयद १ राव गागाजीरै काम आयो ।
२१७६. सांडू चागारो गोयद, गोयदरो ऊदो, ऊदारो मालो, मालारै च्यार बैटा हुवा — जसवत १, सावतसी २, ईसरदास ३, आसकरण ४ ।
२१७७. लाडणू परै गाव जोगलियै सामोरारो वास जठारै सामोर महसदास महाराज गजसिंघजीनू राजी कियो ।
२१७८. इणरो भतीज हेमो गणसदासरो बेटो जिण जोबनेर जाय महाकाळीरो वर पायो, चत्रभाख रूपग वणाय गजसिंघजीनू रिझाया ।

- २१७९ भीमराजरा वसमे आसिया हरराम उदैमाणोत हुवो ।
- २१८० गाव जोगलियारो सामोर महेसदास जिण महाराज गजसिंघजीनू जीभ दिखाडी महाराज सामोरारी जातसू ऊदावत हुवा. महेसदासरो भतीजो हेमो, गणेशदासरो वेटो जोवनेर जाळपादेवीरी क्रिपासू विद्यावान हुवो भाखा चत्र रूपग महाराजरो वणायो ।
- २१८१ वेलारो अमरो, अमरारो राणो, राणारो सूरु, सूरारो करमसी, करमसीरो वैंरो नै कावल, कावलरै भीमराज जिण दारोली नै जीतावास दोय सासण पाया ।
२१८२. वैंलो १, अमरो २, राणो ३, सूरु ४, करमसी ५, कावल ६, भीमराज ७, अखैराज ८, उदैमाण ९, हरराम १० जीतावत हुवो ।
- २१८३ भारमल १, सादूळ २, जगमाल ३, किसनो ४, कमो ५ - पांच वेटा आढा दुरसारै हुवा ।
२१८४. भारमलरा गाव पेसुवै १, जगमालरा गाव झारवा २, सादूलरा गाव लुगीमे, किसनारा गाव पाचेटियै, रायपुरियै ।
- २१८५ भारमल दुरसावतरै च्यार वेटा हुवा - रूपजी १, भीमजी २, नदोजी ३, चदोजी ४, वडी डोढी रूपजीरी चालक नै चरोमढ रूपजीरो डोढीमे ।
- २१८६ वरायळ १, हीगोळो २, लासोळ ३, पाचेटियो ४ - च्यार गाव किसनै दुरसावत पाया किसनारै वेटा दोय - महेसदास १, मेघराज २. वरायळ, हीगोळो मेघराजरै रह्या पाचेटियै ।
- २१८७ पसायत गाडणरी वेटा नाम मेली आढानू परणायी मेलीरो सावकुत वेटो हो जिणनू मार पसायतरा वेटा आढारी जमी अपणाय गाडणा वसायी वाय कनै ।
- २१८८ लालस पीरदानरी वहन नाम कामळ उवा गाव खारडै महेवामे वारट कुभानू परणायी हुती वडो धन हुतो लालसजी कहाणी. वडा लाहा लीघा ।
- २१८९ सवत १७८४ जेठमें राणै अजैसी सोदा वारूनू प्रोळपात कियो चितोड ।
- २१९० महपैरा धववाडियै धववाडासू चितोड जाय सागा राणानू रिझाय गाव ढोकळियो लियो सवत १५५३ सासण पायो ।
- २१९१ मूळीरै धणी सोढै रतन ऊगा-आथविया ताई मीसण परवतनू कोड़पसाव दिथो पचास लाख नगद, पचास लाखरो भरणो नै लाख रुपियारो माल नवैनगर वाई सोढीनू मेलियो ।

- २१९२ गाव राड्रहरो दुगहदो महिरेळण रायपाळ धूहडियारो दत्त चंद पायो ।
२१९३. महावड निकस काछेलानू कूपै मलीनायोत दियो ।
२१९४. कपार तळाव मडावेर काछेलारो वीत जीवण सादू कूपैजी खिणायो ।
२१९५. राणै परताप लखा वारटनू गाव मनसुओ दियो ।
- २१९६ कवियो गगादास रूपसिघोत गाव वासणीसू उठ गोड वीठळदासजी कनासू गाव कुभारियो तावापत्र दियो ।
- २१९७ रावत वळू नगर हुवो जिण देवानू गाव मुडरवळो दियो ।
- २१९८ गाव धूधाउर रावत खीमकरण जैतमालोत रोहडिधा कान्हनू दीनो ।
- २१९९ गाव वोर रावत खीमकरण जैतमालोत चारण कूपानू दियो ।
- २२०० गाव पडगनै वडगाव सासण चारणानू गाव कुहाडी आसिया दला सोभावतनू देवडै रामै मेघराजोत दियो ।
- २२०१ गाव डोडवाडियो सवत १६९१ देवडै चतुरै चारण पता जोधावतनू दियो ।
२२०२. गाव जालहेडो देवडा राव मानसिघ, दूदा, अखैराजोत, जगमोतरो दत्त चारण त्रिभवणनू ।
- २२०३ गाव पुळियो राव सुरताण भाणरै दियो ।
- २२०४ महियारिया लिखमीदासनू रावजी माघोसिघजी चौईस गावासू तुणपुर दियो ।
- २२०५ कोटारै राव माघोसिघचौईस गावासू तुणपुर लखमीदास महियारियानू दियो ।
- २२०६ मीसण ईसरदासनू गाव बाटासू हीरणा कवरपदै भोज दिवी हाडावा नेग दियो ।
- २२०७ ठीकरियो मिहडू वळूनू रावराजा चत्रसाळजी दियो ।
- २२०८ नीलराहडो कविया गगादासजीरै पटै हुतो सो श्रीजी उमेदसिघजी मिहडवानू दियो ।
- २२०९ बारा गावसू गाव हिरणा मीसण ईसरदासनू दियो भोज कवरपदै बूदीरा नेग दिया ।
- २२१० कवियो गगादास रूपसिघोत वासणीसू उठ गौड वीठळदासनू रिझाय गाव कुभारियो मालपुरारो सासण पायो ।
२२११. इणनू गाव मोरटूहको राजा भोज सासण दियो. नीलहडो पटै दियो ।
- २२१२ सेसपुरी बाबी वनबा — अँ वूदीरा रावराजारा दियोडा गाव सगेलिया भावूनू ।

२२१३. मीसणनू सासण खडेला खडीसो अंक, पुररा घोडा दो वूदीरी हईन गांव हरियाणा हाडारो दियोडो ।
२२१४. चावड़ पूजै वनरलोत सासण देवरा हरण दियो ।
२२१५. राव खगार कछमें तूवेरानू साठ सासण दिया ।
२२१६. मोटेरो १, सैग्रावडो २, पीपार गुडो ३, माणको ४ - इत्यादिक गांव कल-हरारा घाणावारमे बिहारियारा दियोडा ।
२२१७. हरभमरो पातल, पांतलरो दासो, दासारो भाखरसी जिण गाव आगडाऊओ रोहडियानू दियो ।
२२१८. हूदा जोधावत कनै वारट पातो महाराजोत खोरीसूं गयो जद चारणवास दूदैंजी पाताजीनू दियो ।
२२१९. नागोररो गाव डैहरवो सूंडायचानू राणै सगर उदैसघोत दियो ।
२२२०. सरवाड़रै परगनै गांव गुंदाळी भादानू परमारा दियो ।
२२२१. सेखावत मनोहरपुररै राव पालावत वारट गिरधरदासनै गोविंदपुरो दियो. भूधरदासनू हणमतियो दियो, केसवदासजीनू किसनपुरो दियो, वनमाळी-दासजीनू कल्याणपुरो दियो ।
२२२२. कछवाहै रूपसी वैरागर कविया अलूजीनू गांव जसराणो सासण कर दियो. सो मारोठरा गेडां जसराणो वैताळीस जवत राखियो. पछै मेड़तिया रुधनार्थसिधजीनू मारोठ पटै हुई जद रुधनार्थसिधजी जसराणो कवियानू दियो ।
२२२३. मकराणारो घणी कछरो करमचंदोत जिण चौरासी गावरी चौथाई चारण, भाटा, वामणानू दिया ।
२२२४. हरळायां वघाउड़ै घोडारणियै दासोड़ी भोजा रतनू है ।
२२२५. मीसण अणंदनू घायलजी पोळपात कियो ।

भाट

२२२६. राजोरा भाटानू सुरताणपुरो वेदळारा रावरो दियोडो है, सुरजणियावास राजाजीरो दियोडो है ।
२२२७. टाक जातरा भाट ज्या माहे पाळूपोता सेखावतारा ताटीसेवी ।
२२२८. टाक बिष्णुदासोत राजावतारा ताटीसेवी. टाक काळू करमसीरा नरुकारा ताटीसेवी ।

प्रकीर्णक

२२२९. अक सौ तुरी अकै दिवस सूरै सपलाण दिया, मेवाडरो गाव आदोळो जठै गलूडियो सूरौ नगराज हासावतरो जिण भोजगानू सौ घोडा अक दिन दिया ।

२२३०. मगतो ओसवाळ ओसवाळारो है जिको वीकानेरमे भ्यारियो कहावै ।

२२३१. अतक ओसवाळ आगे झालर बजावै. उवै ओसवाळ उवानू पुप्परौ दै ।

मुसलमान

२२३२. नजूमियां अगाऊ नजूमरी किताबामे लिखियो हो — आखर जमानारो पैगंबर सुतर सवार होसी ।

२२३३. सो मुहम्मद हुवो मक्कासू कुरेसी तीन सै तेरह मुहम्मदरै साथ मदीनै आया. उवै शेख मुहजर कहाया ।

२२३४. अगाऊ नजूमिया किताबमे लिखियो हो इत्ता वरसां आखर पैगबर जनमसी, सुतुर सवार होसी ।

२२३५. नबियामें सुतर सवार महमद हुवो ।

२२३६. नजूमिया प्रमुख मेछा ज्यारो वचन है — आसमानरी जबरी देखो मसूरान्न खावा वाळो, ओठो दूध पीवा वाळो अरबरो आदमी आपरी किवी किताबरो जहानमे मत चलावण लागो ।

२२३७. मौलवी डग्यारै कबीला सहित महसद साथै मदीनै आय वसिया ।

२२३८ तीहामा गावरो वासी महमद पैगबर मक्कासू महमदरै साथ आया मदीनै उवै शेख मुहाजर मदीनारा शेख अनसारी कहावै महमदरी उमत ।

२२३९ मदीनारा शेख अनसारी कहावै ।

२२४० दुहु कुतुब आसमानरा आधार है — नजूमि कहै ।

२२४१ जवनारा नजूममे कहै है — आसमानरो बारमो है सो बुरज खरबूजा है लकीर ज्यू यू आसमानरै बुरज है रासरो नाव बुरज जावन्या ।

२२४२ मुसलमानरै किताबामें लिखै है — अगरेजारै आगे रुमरो पातसाह भाजि हिलबमे जावसी, पछै इमाम महदी हुसी, कित्ताहीक वरस पातसाही करसी, पछै अगरेजारै हाथ ओ सहीद पछै कयामत हुसी ।

२२४३. मक्कारो नाम अरबीमे असरब ।

२२४४. मदीनारो नाम बतहा ।

- २२४५ मुहमद मुवा पछै छटै महीनै खातून जन्तत हुई ।
- २२४६ मुरकव सैपुर कैवरारी लडाईमे महमदरै आयो हो सो महमद मुवां पछै घास दाणो पाणी तज तीजै दिन मुवो ।
- २२४७ अलीरा खुदा न मे दानम अज खुदा जवो न मे दानम ।
- २२४८ अहमद महमूद औ दोय नाम पेकवररा फरेस्ता पढै. महमद ओ नाम पैगवररो जमी ऊपररा लोक पढै ।
- २२४९ फार कलीता ओ महमदरो नांव तोरेतमे है, याजुन माजुन ओ नाव महमदरो अजीलमे है ।
२२५०. मैहम नवीनै वडै पीर किणनू ही सराप न दियो मुहम्मद ईसम, अवुल वासुम लकव, मुस्तफा खिताव ।
- २२५१ सूरत नूर १, सूरत फिजर २, सूरत इखलास ३, सूरत तुलवर ४ इत्यादीक सूरतां कुरानमे है ।
२२५२. कुरानमे खुदा कहै है - ब्रूल महमद खुदा १, खुदा किसीसे पैदा हुवा नही २, खुदासू कोई पैदा हुवा नही ३, जात जमातसू पाक खुदा ४ ।
- २२५३ कुरानमे कहै है - रोजा राखै, नमाज पढै, नित खुदारो जिकर करै सो खुदा कहै, म्हारो वदो ।
- २२५४ कुरानमे कहै है - मुसलमानरी त्रिया विधवा हुवां पछै मनमे आवै तो च्यार महीना दसा दिना पछै अन्य पुरससू निका करै, दूसन नही ।
- २२५५ सेख, मुगल, पठाण - आं तीन खांपारै आ रीत है - कुराणरी अग्या मुजव पितारो चाळीसो कर अवृद्धा मातानू पुत्र जाय कहै - म्हारो पिता थारो भरतार मर गयो उण माथै ईमान राख तू वैठी रहै तो भला ही, नही तो थारा मनमे आवै जिणसू निका कर पछै उणरी मातारै मनमे आवै ज्यू करै ।
२२५६. अळी जीवता खातून जनमता मर गयी जिणसू सईदारै आ रीत नही ।
- २२५७ मुसलमानारै कहै है किनावमे - पुरख आपरी त्रियासू भोग करै गुदा तरफ तो उणसू कियो जिका सो टूट जावै ।
२२५८. यवनरै चाळीस हाथ कपडो चाहीजै अतक सरीरमे. जनाजा कहै अतक-रथीनू यवन ।
- २२५९ ईदुलजुहा वकरीदरो नाम ईदुलफितर रोजा ईदरो नाम ।
- २२६० चित्र लिखणो, मूरत वणावणी मुसलमानारै मनै है ।

२२६१. यमनरा पातसाहरी ब्रेटी परीजादी, बलकिस नाम, जिणनू पातसाह सुलेमान परणियो ।
२२६२. बलकिसरी भुवारी नजर घणी दूर पहुचती ऊची जायगा माथै बैठी निगा राखती, कित्ताईक कोसा नजर पहुँचती पर चक्ररी खबर देती. अेक समै सत्रुवा वृक्ष काटि हाथमें ले लिया इण देखि भाई पात जिणानू कह्यो— वृक्षारो लसकर आवै है उण बात न मानी पर चक्र सहरमे आयो फतै पाय ऊभो बलकिसरी भुजानू पकडी पूछियो— इत्ती रोसनी चसमरी किण कारणसू इण कह्यो— पहला म्हारी मा आखामे सुरमो घालियो जिणसू दूर नजर दोडै सत्रुवा इणरी आखा काढि निगै कीवी आखारै हेटै सुरमारो दळ जमियोडो हो ।
२२६३. याकूत जजीरामे आदमनू खुदा पैदा किया उठै गेहू पैदा कियो उठासू काढि सरनदीप जजीरामें आदमनू राखियो ।
२२६४. याकूत जजीरामे रूमरा पातसाहरो अमल है आगै तुरगारी बढी आफत हुती इण जजीरामे ।
२२६५. अथ यवनारा तीर्थ लिखते — मक्को १, मदीनो २, करबलो ३, बगदाद ४, स्थान जफ ५, काजमैन ६, मसहद ७, रुकनावाद ८, वैतुलमुकद्दस ९, तखत रबुल आलमीन १०, कोहनूर ११, दमिस्क १२, कोहे लुवनान १३ ।
२२६६. अथ नवी पीरा प्रमुख यवनारो प्रसग दोलतावादरो जामे पीर जरजरी जर वकस १, दोलतावादरै किलामे पीर साकडै सुलतान २, औरगावादमे पीर बुरहानुद्दीन ३, अेलचपुरमे पीर रहमान सादुला ४, गिडदमे पीर बाबा फरीद ५, अलवरमे पीर ईमानसाह ६, वासममे पीर दावलसाह दरियाई ७, हैदरावादमे मुरतजा अली ८, मिरचमे पीर मीदासमत्ता ९, पूनामे सेख सलाउद्दीन १०, पूनामें बुरहानसाह ११, बीजापुरमे पीर अमीनुद्दीन आला १२, नजरवागमे पीर आमानसाह १३ ।
२२६७. गोरा १, कलदर २, कुतब ३, अबदाल ४ — इत्यादीक अवलियारा भेद है ।
२२६८. अउलियाकी करामात पैअबरकी मोज जो कहावै लात मन्नात उजाती तीनू वोत मकामे होती ।
२२६९. नासीरुद्दीन चिराक दिहलवी दिली अवलिया हुवा है ।
२२७०. सुरतान तारकीन कुतुब साहिब दोनू मुरीद खाजा मुईनउद्दीनरा ।
२२७१. नागोर हीरावाडीरी पौसाळामे हमीनुद्दीन रह्या तिण जतीरा भेखमें ऊमर पूरी करी इणनू दफनायो हमीनुद्दीन नागोरी ।

२२७२. सेख हमीदुद्दीन रेहानी १, सेख हमीदुद्दीन खोही २, सेख हमीदुद्दीन खालिस ३, सेख हमीदुद्दीन मुवैलिस ४, सेख हमीदुद्दीन कासालेस ५ — यां हमीदारी रैलत नागोरमे हुई सेख हमीदुद्दीन नागोरीरी रैलत दिलीमे हुई जवन कहै सातू हमीदारी रेलत नागोरमे होती तो नागोर खुर्द मक्को होय जातो ।
२२७३. खाजाजीरै चौरासी सागिर्द ज्या माह तरकीनजी गिणीजै सारासू छोटा ।
२२७४. खाजैजी सुलतान, सुलतान तारकीन कहि वतळाया अरथ पातसाह त्यागियूका ।
२२७५. खाजैजी जमान सहिन नमाजमे रजू होते जद तारकीनजी इमाम होते नमाज गुजरा मरवा दवा मागि ऊचो जोवते जद अरसको कागरो साराकै नजर आवतो ओ भेद पाय खाजैजी सुलतान तारकीननू कह्यो — तुम हमको ठगे सो हमकू आपका सागिर्द न किया आप हमारे सागिर्द होय ने फेर कह्यो — तुमारी औलादकै अर हमारी औलादकै परसपर परणीजणा परणावणा होहिगा ।
२२७६. खाजाजीरा पोता नै खाजाजीरा मुजावर सारा सीया होय गया हमै आगै च्यार वारी हुता ।
२२७७. गुजरातमे तुरकिया बोहरा सारा सीया है मुसलमान कहै — सीयारै मुकर दोलत होय, सुन्नी फतैनसीव होय ।
२२७८. इलवरस्याई रसूलस्यारी गादी हिनीफस्या, हिनीफस्यारी गादी फिदाहसन, फिदाहसनसू खलना कीवी रावराजा वखतावरसिघ ।
२२७९. पातसाह लोदी वहलोलखा जिण मुलतानमे मोलवी सेख यूसफनू वेटी परणाय दिवी नै कह्यो — वन्य भाग म्हारी वेटीरो जिणरै इसो विद्यावान भरतार ।
२२८०. मिघमे लकारी सइयदारी मानता विसेस है ।
२२८१. अमान हजरत अघासकू लखनऊरो नवाव विसेस मानै ।

महदी

२२८२. पूरवमे जीवणपुर सहर जठै महदी हुवो नवीअत महमद ऊपर खतम हुई. व बलायत महदी ऊपर खतम हुई ।
२२८३. महदवी कहै — कुराणमे आयत है महमदकी रैलतसूं नव सै पाच वरसां महदी दावो करसी ।
२२८४. किताबमे महदी कहै — जिण दुनियामे महमदनू भेजियो उणरो भेजियोड़ो हू ही दुनियामे आयो छू ।

२२८५. नवाज गुजारनै हाथ पसारै नही महदवी ।
२२८६. रमजानरी सत्ताईसवी तारीख सारी तारीखामे उत्तम मानै ।
२२८७. दूजा मुसलमान सारा महीनारी सत्ताईसवी तारीख उत्तम गिणै ।
- २२८८ महदी नावमे बैठा तरीरै राह किणही विलायतनू जावै इणरा मुरीद नाव बैठा किताईक कोस गया नाव दरियावमे डोलण लागी नावमे बैठा जिका धूजिया. महदी कह्यो — यूनस पैगवरनू मच्छी सात दिना पेटमे राखियो, पछै खुदारी आग्या उगळ दियो, मोनू निवाजस हुई नही जद वही हुई — महदीरो तोनू दीदार होसी इण वचननू साचो करण खुदा नावनू ऊची करै है, मच्छी जळ माहेसू परवत परिमित सरीर जाहिर कियो है सो मोनू देखी जलमे लीन होय जासी, नाव डुलनी रह ज्यासी यूहीज हुवो ।
- २२८९ महदीरी औलादसू आल बहोत है महदीरै वंसरा पीरजादा कनै महदवियारा दिनरी किताव है ।
- २२९० पठाण महदवी विसेस है ।
- २२९१ कुराणरा हदीसरा सरारी विद्वत भेटण महदी जनमियो — महदवी कहै ।
- २२९२ महदवी दरवेसारो थान दायरो कहावै, तकियो कहावै नही ।
- २२९३ गुजरातमे महदवी घणा रहै दिखणमे घणा रामराजारा देसमे. देसमे महदवी है ।
२२९४. कपडा बगेरै चीजारो व्यापार ज्यादा करै ।
- २२९५ रातरो भजन विसेस करै ईरानी तूरानी गैरमहदी कहै महदवियानू ।
- २२९६ हैदरावादरा नवावरै कानडी वेगम उणरो गुरु मौलवी महदविया मारियो. चदूलाल हैदरावाद माहेसू लोक चढायो महदवियारो गाव चतुर गुडा माथै गयो महदी मारिया गया लाखा रुपियारी दोलत लुटाणी ।

पठाण

- २२९७ वनी इसराइल यूसफरो भाई जिणरै वसरा पठाण — पठाणरी जात लिखते —
 रुरी १, सरवानी २, किरवानी ३, लोदी ४, वात्रर ५, गिलजी ६,
 मीराजी ७, तोपा ८, करमली ९, करली १०, लंगा ११, मोहा १२,
 अमालजई १३, ईसपजई १४, महमदजई १५, बारकजई १६, सदोजई १७,
 कमालजई १८, दबाजई १९, काकडजई २०, तोआजई २१, उसतरानी २२,
 समानी २३, गोरी २४, खिलजी २५, आकोज २६, उमरबेल २७,
 आफरीदी २८, खद्क २९, बगस ३०, नूरजई ३१, लोहानी ३२, बाबी ३३;

विहारी ३४, पणी ३५, गजफूर ३६, तरनी ३७, मुसाखेल ३८, बुदैलवार ३९, दिलाजाक ४० ।

२२९८ अक समै हसनवसरी १, वीवीरा विया २, सेखमकी कवलकी ३, मालिक-दीनार ४ - च्यारु अवलियारो मिलबो हुवो हो ।

२२९९ पणी पठाणारी वावन खेल है ।

२३०० पणी सेरसाहरै बखतरो है विलायतसू हिंदमे आया ।

२३०१ पणी नागड भाई है ।

सीदी

२३०२ अवर कवर अयाज रयाज बगेरै सीदियारा नाम है ।

२३०३. अयाजनू केई कहै सीदी केई कहै कसमीररा राजारो कवर, खूबसूरत । -

ख्वाजैजादा

२३०४. कासमीररा उठियोडा मुसळमान ख्वाजैजादा कहावै ।

तुरकारी जात

२३०५ उजमक १, किलमाक २, कजलवास ३, ताजी ४, चगेजखानी ५, हस्तर-खानी ६, सीरानी ७, ऊव ८, मुगल ९, चिकता १०, गुरगानी ११, सुवतगी १२ ।

अलाउद्दीन खिलची

२३०६ अलाउद्दीन कहो - गोड १, चोळ २, गाजणो ३, कनोज ४, मरहट ५, पलाड़ ६, सिंघ मपादल ७, गूजर ८, सोरठ ९, माळवो १०, चदेरी ११, मांडव १२, सारगपुर १३, रणथभोर १४, चितोड १५, नागोर १६, मणिपुर १७, मथुरा १८, अतरवेद १९, काकपुर २०, भुजपुर २१, उडीसो २२, हिंदुसथान २३, जाळघर २४, कसमीर २५, कामरू २६, हिमाचल २७, खुरासाण २८, ठठा २९, मुलताण ३०, चीण ३१, भोट ३२, तिलग ३३, वग ३४, विदरभ ३५ - इत्यादिक ठिकाणा अलाउद्दीन जीतो ।

२३०७ तुग्वं वतै हिंदुआं गमियां न जाय २० वतै हुत ।

२३०८ रळियो भायल आगेवाण होय भीनमाल माथै अलाउद्दीनरी फोज ले गयो पैताळीस हजार श्रीमाळियारा घर घनाढ्य चहुवाणारी वणायो ब्रह्मपुरी ।

२३०९ देवगिरिरै राजा रामदे वेटी दिवी अलाउद्दीननू ।

२३१०. अलाउद्दीन गिलची लोक खिलची कहै ।

तैमूर

- २३११ अमीर तिहमूर बलख सहरमें पाट बैठो ।
 २३१२ अमीर तिहमूररो बेटो मीरासाह साहजादो थको मुवो ।
 २३१३. जात मुगल बरलास नख चकता गोरगा ।

बाबर

- २३१४ हिंदरो पातसाह लोदी इब्राहीम, सुलतान-सिकदररो बेटो, सुलतान बह-लोलरो पोतो, जिणनू बाबर मारियो ।
 २३१५ सुलतान इब्राहीम दाना वजीरनू मारियो, अनहरखा काकानू उदास कियो, कोल तोडन लागो, झूठ बोलण लागो, दारू पियै थो, पर स्त्रियासू गवन करतो, जगतनू बेराजी कियो. बाबर जिसी आफत इब्राहीम माथै आयी ।
 २३१६ पांच हजार बरकदार, वारै हजार सवार उजबक मुगलारा साथ ले काबुलसू पाणीपत आयो उठै ही सुलतान इब्राहीम आयो. सात हजार पठाणासू खेत पडियो सुलतान इब्राहीम फतै बाबररी हुई ।
 २३१७. बीकानेर, सिरौही, मेडतो, गागुरण, बूदी, भीलवाडो, आंबेर, मेवाड, माळवो, रायसेण, चदेरियारा ठिकाणारा मालक, अजमेररा जमीदार, मेवाडरो लोक...सू सागै सीकरी बाबरसू जग कियो जोधपुररो धणी साथ नही हुतो जिणसू फतै हुई नही सागा राणारी सुलतान इब्राहीमरो साहजादो, डूगरपुररो रावळ—अै पिण सागा राणा कनै हुता ।
 २३१८. सेरसाह तमाम पठाणासू अेको कर विहार देसमे फिसाद किवी दिलीरो राह बंद कियो हुमायूँ अै समाचार सुण चाकरारी सलाह लोपी, बरसातमें सेरसाहसू जग करण चालियो सेरसाह जग करि जण.नै खिस गयो, पछै पाछली रात प्रभातरो पाछडी ऊपर आय पडियो हुमायूँ सभाय सकियो नही कवीला छोड भागो नीठ लाघि नीठ बचियो घणो लोग नदीमे डूब मुवो ।
 २३१९. माळवा-गुजरातमें, बगालमें पहलै हुमायूँरो अमल होय गयो हो गुजरातरा थाणा छोड हुमायूँरो भाई मिरजा असकरी जाय सेरसाहसू मिळियो ।
 २३२० हुमायूँ दिली आयो भायारी फूटसू नै सेरसाहरा डरसू सिंघमें गयो भाई इणरो लाहोर पातसाह होय बैठो ।
 २३२१. सेरसाह दिली आय पातसाह हुवो पछै लाहोर गयो लारै घर माहसू हुमायूँरा भायानू काढ दिया सिंघ मुलतानां ई जबत किवी ।

- २३२२ हुमायू सिंधसू राव मालदेजीरो बुलायो फळोवी चिराई आयो वात दगा भरी देखी उमरकोटनू गयो पछै सिंध लाघि ईरानमे इसपाहन गयो ।
- २३२३ ईरानरै पातसाह खंधार गजनी काबुलमे वदखसां हुमायूरो अमल कराय दियो ।
- २३२४ गुजरात घघ विण सौ देम लडि-लडि लिया सेरसाह ।
- २३२५ काळिजररै गढ लागो सेरसाह उरड आघो गयो गढ माहला हल्लारै वखत सोररा होका उपरसू नाखिया नीचै सार हुतो सू आरा पडनासू भभकियो सोरसू वळ सेरसाह मुवो ।
- २३२६ सेरमाह साचो, सीळवत, आदिल, नेक, नीतवत, खबरदार अवलियो रैतरो पोहर, सिपाहरो मित्र, चाकरा ऊपर मिहरवान वडो पातसाह हुवो ।
- २३२७ पाट इसलामसाह बैठो वडो पातसाह हुवो सो देस वारे पजवनमे रह्या. इण मुवा इणरै पाट इणरो बेटो गढ गवालेर बैठो पछै इण डावडारो मामो सेरसाहरो भतीज नै जमाई सो इसलामसाहरो बेटानू मार गादी व्रैठो जिणसू दिली, लाहोरमे सेरसाहरो भतीजवाई पातसाह होय बैठा पूरवरा ठोड-ठोड जुदा-जुदा पठाण आप मतै हुवा जद पातसाह हुमायू सोळै चरसरो विखो काढ दिली ऊपर आयो. सिकंदरसाह जंग करण आयो. सो जगमे घणा पठाण मराय भागो ।
- २३२८ हुमायू दिली आय तखत बैठो कितोईक कनलो देस जवत कियो सिकंदर-साह लाहोररा पहाडामें पैठो इण ऊपर साहजादो अकबर नै बहरामखा हुवा जाय लाहोर लिवी पहाडां ऊपर चलाया उण समै पातसाह हुमायू दिली पुराणीरा कोटरी मैडीसूं पडि मुवो आ खबर लाहोर पहोची कलानोरमे अकबर तखत बैठो ।
- २३२९ दिलीमे सूवै उमराव हुमायूरा हुता ।
- २३३० गवाळेर मवारजसाह अदली पातसाह हुतो तिणरै सारो चलण वाणिया हेम दूसरो हुतो तिको वडो दातार, जूभार सिरदार हुतो तिण वडी-वडी लडाया करी पठाण जेर किया मवारजसाह दुखी हुतो जिणसू वडो सामान करि दळ वळ करि हेमू दूसर दिली ऊपर आयो ।
- २३३१ दिलीसूं अकबररा उमराव दळ ले हेमु सामा आया युद्ध हुवो आखर हेमू जीतो अकबररा उमराव हुमायूरी लोथ ले, पातसाहारा कबीला ले, अकबररी तरफ चालिया हेमू दिलीमे अमल कियो मवारजसाहरै पूत नही हो नै आप चाकर नही हुतो जिणसू हेमू दूसर दिली तखत बैठो राजा विक्रमाजीत कहायो ओ खिताव पायो ।

२३३२. आ खबर पाय अकबर आगै फोज मेली दिली तरफ बहरामखारी सलाह उदी अकबर पाछै आवै हेमूनू खबर हुई उण समै हेमू कनै पचास हजार सवार, बीस हजार पाळा, हजार हाथी, हजार गाडी तोपखानारी ।

२३३३ अकबरनू दूर जाणि मसलत चूकि तोपखानो अकबररी फोज सामो पहला बहीर कियो सो तोपखानो दिलीसू तीन कोस पाणीपत पाथो हेमू चढणरी तयारी करतो हो उण समै अकबररी फोजरा हरोळ हलकार करि अजाणिया तोपखाना माथै आय पडिया लोक तोपखानो छोड भागो ।

२३३४ पातसाह अकबर आपरी जणणीनू काध दियो हो ।

२३३५ सिपहसालार खानखानारो खिताब ।

२३३६. सिपहसालार ओ खिताब खानखानानै अकबर दियो ।

२३३७ मुमारज नाम पहलवानरो है मुमारजुद्दीनखा खानखानारो खिताब है ।

२३३८ अतजादुलमुलक खिताब खानखानारो अतभुजरी अतजाद कहावै ।

२३३९. उम्दतुलमुलक राजा टोडरमलरो खिताब ।

२३४० सवत ९९० पातसाह अकबर फिरगरा पातसाह कनै सय्यद मुजफ्फरनू वकील मेलियो, खत लिख दीनो, तोरात अजील जबूर आ कितावारो तरजुमो मगायो ।

२३४१ सिपहसालार खानखानारो खिताब मुमारज पहलवान मुमारजुद्दीन खानखानारो नाम ।

२३४२ वीरवल माराणो जद पातसाह अकबर कसमीर हुता खानखा गुजरातमे हुता खानखानू खत इनायत कियो अकबर जिणमे लिखियो — म्हारी सभानू नजर लागी जिणसू म्हारी सभारी जेब वीरवल माराणो हू वीरवलरी लोथ काधै ले बाळतो तो उणरी चाकरीसू उरिण होतो खुदा-तालारी कपासू वीरवल मोनू मिलियो हो म्हारा दिल माहली बात बाहर आणतो दारु ज्यू म्हारा सुखनवाण सवारणनू खुरासाण हुतो वीरवल जीव तन रूप मागियोडो पड त्यजने दो अधल पडदा मोनू हमै सामो कनैसू निवाजस पाया करो हू तोसू फायदा लेबो बरु हमेसा खुदारी महरसू म्हारी नजर तो माथै पडै म्हारा जलाल महलरो तू थभ है वीरवलरो जीव तन रूप मागियोडो पडदो त्यज अधल पडदामे दाखल हुवो ।

२३४३ पेसवा अगसर खिताब है ।

२३४४ बड़ी फोज जैस जावन्या ।

- २३४५ खानखानारी अरज कसमीर आयी गुजरातरो मालक मुजप्फर गुजराती चाळीस हजार सवारारो धणी जगमे पकड कैद कियो है सेख इब्राहीमखा सीकर वाळनू अठै मेलसी सो ओ सूवो उणनू भोळायनै हू दिखण माथै जाऊ ।
- २३४६ च्यार गुजरातरा उमराव ज्यानू मै वचन दिया है सो उवानू नवाजस कीजै. जाम खगार १, ऊदो २, जगन्नाथ ३, साहिमखा ४. आप दिखणरा हाथी मगाया सो दुरस्त पिण प्रतीत वाळा हाथी - महावत अठै मेलजे साथ हाथी मेल देसू ।
- २३४७ पातसाह अकबर बेराजी हुवो खानखानासू जद खानाखान राव कल्याणरै सरणै वीकानेर आयो हुतो ।
- २३४८ अकबर कसमीरमे जद खबर मक्कारी हज करण मुसळमान जाता हा हिंदसू ज्यानू वलोचा लुटिया. आ बात सुणता ही अकबर नाक सळ घालियो तीरै मार वफादार राजा वीरवल वलोचां माथै विदा होतो हुवो ।
- २३४९ नीराह १, विजो २ वगेरै च्यार ठिकाणा जवर वलोचारा वडा पहाडारा घेरमे राजा वीरवल फोज ले गयो पहाडारा घाटा भाजिया वलोचानू मारिया पकडिया, गाव लूटियो फोज धनसू अभरी हुई फतै कर पाछी वली वलोच पहाडा चढिया. घाटा वद किया मारगमे खांडा खणिया फोज ले वीरवल घाटामे आयो जद तीर, गोळी, गोफणासू पत्थर वलोच लावता हुवा भाठारी लाग वीरवर मुवो सिंपाह वेसुमार माराणो आ बात सुण अकबर राजा टोडरमलनू जैस दे नै विदा कियो इण वलोचारो देस ले लियो वलोचारा ठिकाणा तोडिया ।
२३५०. तिरीह १, विजोर २, किकली ३, दतोर ४ - अँ च्यार ठिकाणा वलोचारा जैस वडी फोज, नीराह, तरवारा, आछी घडीजै है ।
२३५१. मिरजो सरफुद्दीन अलवर किलेदार हुतो, अकबररो उमराव आवेररा राजारा भाईवेटा दोय सरफुद्दीन पकडिया ।
२३५२. दोसारा डेरा भगोतसिंघजी, जैमलजी, जगमालजी, आसकरणजी वगेरै सात कछवाहा पातसाह अकबररा पगा लागा ।
- २३५३ माहम नगा नामा अकबररी घाय जिणरी मारफत सैभररा डेरा कछवाहा अकबरनू डोळो दियो ।
- २३५४ दोय वडी नोवत, दोय वडी देग रकवाई घडियाल, सोनारी पीलसोज, रुपारा किवाड चितोडसू आण अकबर अजमेर खाजैजीरै भेट किया ।

२३५५ जोरागढ अकबररा उमरावा लियो जद राजा वीरसिंघ गढपतीरी राणी कळावती भली तरै गढ भिलता काम आयी. आऊ गढ हमै नागपुर हेटै है ।

२३५६ पातसाह अकबररै वारह सूबा हुता ।

२३५७ भारतरो तरजुमो फारसीमे अकबर करायो, नाम रजवनामो रसायणरा सोनारी लाखा मोहरा अकबर पडाय अेक ही ओरियामे राखी हुती, आखर-वत दान सारु अकबर अकसमात मर गयो जहागीर वागी थको प्रयागमें हुतो मोहरा घरी हीज रही

धरे धराये रह गये, चौकुटे अर गोळ ।

२३५८ अकबर कुटवाळानू लिखियो - लुगाईनू घोडा माथै चढण मत दीजो ।

२३५९ विन घगरो नगरो गये, अकबर साह जलाल ।
लाल कहै इक तालम, भये विराणे माल ॥

२३६० सवत १६७८ साहजादा खुरम भीव सीसोदियानू मेडतो दिरायो ।

२३६१ राजा ईदो राड सवत १६९१ काती सुदमे भीम परवेजसू मोहवतखासू जग कर काम आयो खुरम आगै ।

२३६२ भीवरै कुवर किसनसिंघ मेडतै रामसरण हुवो ।

२३६३ सवत १६८३ परवेज वुरहानपुर मुवो ।

२३६४ दसहजारी दारासिकोह नवहजारी साहसुजो नवहजारी औरगजेब. पाच-हजारी मुरादवकस ।

२३६५ साहजादा दारासिकोहरो बेटो सुलेमान सिकोह ।

२३६६ हरिवसरो, योगवासिस्टरो, सिहासणवत्तीसी वररुचि कृत जिणरो फारसीमे तरजुमो दारासिकोह करायो नाम गुलपसा ग्रन्थ राजावळी मिस्र विद्याधर कृत, ग्रन्थ राजतरगिणी पडित रुघनाथ कृत फारसीमें तरजुमो दारासिकोह करायो ।

२३६७ श्रीमत भागवतरो ही फारसीमे तरजुमो दारासिकोह करायो राणा रतनसेनरो नै पदमावतीरो अहवाल फारसीमे करायो दारासिकोह. नाम किताबरो रतनसेन-पदमावती ।

२३६८ भिदारियै राजा ओरगजेबनू चाबळ पगार वतायी उणरा चाबळ उतरि घोळ-पुर आ ओरगजेब जग कियो साहजहारी फोजसू ।

२३६९ घोळपुररा झगडामें गोळासू पजि हाथी भागो, चाबळमे पैठो ओरगजेबरो साहजादो जहादारसाह हुतो सो चाबळरा पाणीमे डूब मुवो ।

२३७०. गुमा वीवी नोरगजेवरै मरजीरी वेगम हुती ।
२३७१. सवत १६७३ रा फागुण सुद १ ओरगजेव फोत हुवो ।
२३७२. नादिरसाहरो वकील दिली हो उण नादिरसाहुनू लिखियो - वेगा पधारिजे मारगमे काटो भाटो है नही ।
२३७३. नादर पातसाहुनू महमदसाह मिरजा कहतो महमदसाहुनू नादरसाह मिरजो कहतो ।
२३७४. ईरानिया धन वास्तै दिलीरी जायगावा अति ऊडी खणी, जमीरा हाड काढ लिया हा ।
२३७५. अहमदसाह दुरानी लाल किलामे विलायती याकूबखानू राखियो पातसाह अलीगोहर जद पूरवमें हुतो याकूबखा कनै पनरै हजार सिपाह हुतो ।
२३७६. साहग़ालम नाम अलीगोहररो है ।
२३७७. दिलीरा हिंदुवानू लाल किला मांहली जायगावा पातसाही वाग, याकूबखां दिखाया, जस लियो ।
२३७८. ईब्राहीमखा और मल्हारराव हुलकर भाऊ सामल न हुवा अजी तै अहमद-साह अवदाली भाऊसु जग न कियो ।
२३७९. दोयसै तोपा वारह हजार गारदां इबराहीमखा तालकै हुती ।
२३८०. च्यार दस्ता साह कनै हुता जुमलै चाळीस हजार असवार साह कनै हुता ।
२३८१. हाफिज रहमतखा नजीमखा रूहेलो, अहमदखा बगस लगडा बावनहजारी सुजा बुधोलो इत्यादिका मिल भाऊसू जगडा किया फतै न पायी अहमदसाह अवदाली मदत आया जव न जीता ।
२३८२. दिलीसू नजदीक साहरी फोजसू दिखणियारै जग हुवो साहवसिंघ १, दस्ता २, काम आया जनकू भरतपुर आयो पेसवानू अरज लिखी - म्हारी मदत कीजै नही तो साह दिखण माथै कमरबन्धी करसी ।
२३८३. आ वात सुणनै पेसवै विस्वासरायनू नै भाऊनू हिंदुस्थान माथै बडी फोज दे विदा किया दिखणसू दिली आया जुमा मसजिद ऊपर इबराहीमखा गारदी तोपा चढायी लाल कोटमे गोळा पडण लागा याकूबखा मरहटारी ब्राह्मे लेने लाल किला वारै निसरियो लाल किलामे भाऊरो अमल हुवो. भाऊ दिखणी नारुसकरनू लाल किलामे राखियो ।
२३८४. दिली लाल किलामें खास दिवाणरी छत मोनारी हुती उवा नादिरसाह लेगो. आम दिवाणरी छत रुपारी भाऊ ले लीवी ।

२३८५. भाऊ दिली निगमबोधरा घाट ऊपर यग्य करायो. देवीरी आग्या हुई- हमै भाऊ पाछो दिखणनू परो जावै, दूजै महीनै आय साहसू जंग करै तो भाऊरी फतै हुवै. विरामणा ओ व्रत्तात्त भाऊनू सुणायो. भाऊ न मानियो ।

२३८६ साहरी फोज भाऊ माथै आयी भाऊ विसवासराय सामा मोरचा माडिया. बहरामखा गारदी आरावो दागियो. अहमदसाहरो लोग गोळासू घणो खेत पडियो खधारियारै भाजणरी ताकीद ही. इतै सुतरनाळरो गोळो लाग विसवासराय हाथीरा होदामें मुवो आ खबर पाय भाऊ विसवासरायरै मोरचै जावणनू हाथीसू उतरियो लोका जाणियो भाऊरै ही सुतरनाळरो गोळो लागो खधारिया घोड़ा उठाया भाऊ काम आयो. दिखणी घणा माराणा भाऊरी कतल भाऊ-गरदी कहाणी ।

[पातसाहां, वजीरां, नवाबांरा प्रसंग]

सिंध

२३८७ सिंधरो मिया नूरमहम्मद जिणरो नाम स्याहकुली नादरसा दियो ।

२३८८ अखैराज १, हदैराम २, जगतसिंध ३, अभजी ४, सेरसिंधजी ५, महमद ६, अलीपास सिंधमे आयो सगासू नूरमहमदरो वडेरो ।

२३८९ आरै मुहमदस्या इनायत फकीरनू मारनै शोक नामै ठिकाणो लियो ।

२३९०. स्या इनायतनू लोग इनायतुल्ला कहै ओ बारह सय्यदारो मुरसद हो ।

२३९१ पैगबररो काको मीर हमजा जिणरी औलादमें बलोच है ।

२३९२ मीर बहरामरो बेटो मीर बीजड, दूजो मीर सोभदार. सोभदाररो बेटो पर-मीर फतैअली बीजडरी बेटो परणियो ।

२३९३ इलायरो धणी माडणोत हरनाथसिंध १, करणरो धणी पातो मोहकमसिंध २, लाडणूरो धणी गैनू साखलो ३, धीरो सहलोत ४, मथाणियारै बारट जोगी-दास - आ पाचा खुदाबादमें मीर बीजडनै मारियो ।

२३९४ बीजडरो बेटो मीर अबदल्ला, सोभदाररी बेटो परणियो अबदल्लारो मीर गुलाम, सोहराबरै परणियो ।

२३९५ मीर सोहराबनू फतैअली मिलवानू तेडियो - इण चूक तेवडनै फतैअली कनै आवण लागो सोराब जद बैरी फतैअलीरी मा सोराबनू कहायो - मीर बीजडनू चूक हुवानू किता वरस हुवा तोनू याद है कै नही ? अँ समाचार सुण पाछो सोराब वावडियो फतैअलीसू मिलियो नही ।

२३६६. सोराव फकीर कहावै, कागदामे फकीर लिखीजै है जईफ है कडप करावै नही सलूकरी कितावा सुणै है, आदल सखी जिणसू ।
- २३६७ सोरावरै च्यार भाई, पाचवो आप अंक भाई मीर सोरावरो ऊमरकोट काम आयो हो मीर सोरावरा मुलकसू दिखण हैदरावाद आथमणो सिंधुरो दरिया पचनद मिल हुवो जिकै उत्तर दाऊद-पोहरा, पूरव जेसळमेर ।

पालणपुर

- २३६८ हयातखारै वसरा बिहारी पालणपुररा घणी ।
२३६९. पालणपुररो दीवाण कमालुद्दीखा, जिणरै वेटो पीरोजखा पीरोजखारो करमखा पातर-जादो पालणपुर दीवाण हुवो जिण धधवाडिया दुवारकादासनू खासो घोडो दियो गुजरात पधारता अभैसिंधजीरा डेरा पालणपुर जद ।
- २४०० दीवाण पीरोजखारो वडो वेटो फतैखा पालणपुर दीवाण हुवो ।

नागौर

- २४०१ सन ७८५ ममसखा विजदुलमुलकरो वेटो गुजरातसू नागौर आय मालक हुवो ।

काळपी

- २४०२ काळपी मुसळमान काम आया ज्यारी चौरासी गुमटी है ।
- २४०३ जवन कहै-पाच पीर जो काळपी जुझनै मरता तो काळपी मक्को हुतो ।

लखनऊ

- २४०४ लखनऊरो नवाव गाजूरदी हैदर जहापना कहावै सात करोड रुपियारो मुलक लखनऊ हेतै हुतो आघो मुलक अगरेजा अपणाय लियो साढी तीन क्रोडरो मुलक वजीररै रहतो ।
२४०५. हस्तरजाखा हैदरवेगखा आसदोलारै मुखतार हुता तासीन १, अपरीन २, डल्यास - तीन खोजा मनीजना आसदोलारै ।

हैदरावाद

- २४०६ हैदगवादरा नवावरै नव क्रोडरो मुलक हो क्रोड रुपियारो मुलक अगरेजा लीवो आठ क्रोड रुपियारी पैदासरो मुलक हैदरावादरा नवावरै है ।
२४०७. वहराई छव हैमारी नागपुर हेतै ही, दस हैमारी हैदरावाद हेतै हुती हमै मारी हैदरावाद हेतै है ।

२४०८. हैदरावाद मीर आलम तीन लाख रुपिया लगाय भारी तळाव करायो. सहरमें जळरो पुर हो गयो ।
- २४०९ कनकरी १, ओळचपुर २ पठाणारै पटै है हैदरावादरा नबाबरा दियोड़ा ।
- २४१० हैदरावाद मीर आलम वजीर हो उणरो भाई मीरसाह टीपूरो वजीर हुवो ।
- २४११ घोडोर, परेडी, आसरे - अ किला हैदरावादरा नबाब कनासू सतारारै घणी लिया ।

टीपू

- २४१२ टीपू आपरा देसरो धन परायें देस जावण देतो नही सिपाह वगेरा इणरा अमलमे हीज रहता ।

[फिरंगी]

- २४१३ अग्रेज १, पुर्तगीज २, विलदेज ३, फरासीस ४, फिरंगी ५, डीगमार ६, गुरजी ७, इस्काटलैंड ८, जरमनी ९, चिलबी १०, कुतबी ११, उरैसी १२- अ बारै टोपी निसारारी ।
२४१४. चीणा पटणरा नबाबनू अगरेज किंग करनाटक कहता. पछै उणरो राज खोस लियो ।
- २४१५ आगै सूरतमे च्यारारो अमल हुतो नबाबरो १, अगरेजरो २, गायकवाडरो ३, पेसवारो ४ ।
- २४१६ पटेल गवालेर तोडियो जद पापन साहब फिरंगी पटैलसू जग कियो ।
२४१७. अगरेज कपतान मिस्टर आन स्काट साहब नै वगलरामरै मोलविया दोनू मिल हफ्त अकलीम किताब वणायी जिणमें कहै है कितीक जमी भडा हेटै, कि पहाड हेटै, कि बरफ हेटै, कि खारमय, कि आधारा माहे, कि जळ हेटै, कि बळियोडी है ।
- २४१८ पूरबमे गगारै तट किलकत्रासू बारह कोस उलदे जाच चौडो सहर वसायो फरासीसा फरासडागो सहर वसायो दोनू सहारा अधकोस बीच है ।
- २४१९ पहला लालमडी सहर हो गगारै तट महा काळी देवी विराजै जठै सहर कलकत्तो अगरेजा वसायो ।
- २४२० नेघडालन साहब नीमचरी छावणी मुवो ।
- २४२१ मिसटर मटकलबरो छोटो भाई तामस मटकलब ।
- २४२२ इफ अवरगेस नाम गवर जेलरो, व्यासजी जिणसू मिळिया ।

- २४२३ फरासीस मरियमनू मानै, अगरेज ईसानू मानै. फरासीस कहै जमीसू आछी वसत प्रगट हुई उण वसतरी तारीफ नही, जमीरी तारीफ है ।
- २४२४ अगरेज कहै सीपसू मोती प्रगट हुवै सीपनू चीर मोती लोक लियै तैरी ऊपर काड्या पवन ऊपर है इणनू पायदार मत जाणो मास खाणो ईसे कितावमे कह्यो है नही नै थे सरव जतुआरो मास खावो सो क्यो ? ओ प्रन्न कियो अगरेज उतर दियो - कासमीरियारै घरमरी कितावामें त्रियारै माथै पाग बाधणी न कही है, पिण कासमीरमे सरदी बहोत, इण कारणसू प्रथम अेक औरत पाग बाधी, पछै देखादेखीसू सारी कासमीरणिया पाग बाधी, हमै देसातरमे रहै जिकेही कासमीरणिया पाग बाधै है, परपरा ठैरायी, यू फिरगमे सरदी बहोत जिणसू हकीमा मास खाणो अगीकार कियो, अब देसातरमे ही फिरगी मास खावै है ।
- २४२५ अगरेज अेक अजमेर छावणी हुतो व्यापारी सो महा भूठो हो अेक चाकूरै मोलरा पचास रुपिया कहतो दूजा चाकुवा जिसा उणरै चाकू हुता ।
- २४२६ अेक कुत्तारा मोलरा हजार रुपिया करतो ओ अगरेज. दो सै रुपिया तो घणा जणा धामिया हुता ।
- २४२७ जैपुर अगरेज रहतो असटरजी जिणगे अेक हाथ टीपूरी राडमे गोळासू बढ गयो हो ।
२४२८. अगरेज कहै - छोटा मछनू मोटा मछ गिळ जावै, छोटा मछनू क्या सुख हुवा ।
- २४२९ फिरगमें डूक पदसू वडो पद किंगरो है ।
२४३०. तुरमनामो अगरेजारै वाजो हुवै ।
२४३१. वाजा जितरा फिरगमें इता वाजा और विलायतमें नही ।
- २४३२ अगरेज हुडीनू बिल कहै ।
- २४३३ अगरेजारै वीवी मेम साहब कहावै ।
२४३४. फिरगण वीवी मुतसद्दी अगरेजनू अगीकार न करै, जगी अगरेजनू अगीकार करै ।

[प्राचीन इतिहासरी वातां]

नंद

२४३५. पाटलीपुत्र पुरै राजा नवनद हुवो (? हुवा) ज्यारी लक्ष्मी दानाभावात् गगा तीरे पीत पाखाण हुई अजू है ।
- २४३६ जैनरा ग्रथामे कहै है नव ही नद श्रेणकरा वसमे जनमिया ।
- २४३७ राजा नदरा ठावा आदमिया वनमें पाटला बखरी डाळ बैठा पखी नीळ टाच, जिणरा मुखमें विना उद्दम किया लटा पडै, जिका देखिया हा. विचारियो - अठै सहर वसावजै तो इण सहररा लोकनू आपहीनू रजक मिळै. पछै सहर [वसायो] पटणो कहै मुसळमान अजीमाबाद कहै ।

विक्रमादित्य

- २४३८ विक्रमार्कनू अगनी वेताळ दोय सोनारा पोरसा दिया था जिणसू जगन अन्हण (?) कियो हो ।
- २४३९ विक्रमार्क सहज दानविधि आरतियानू हजार, जिणनू वतळावै उणनू दस हजार, वाणी सुण हसै तिणनू लाख, जिणरी विक्रम तारीफ फुरमावै उणनू क्रोड सोनइया दिरीजै ।
- २४४० गळीमें पडियो अन्नकण जिणनू गजसू उतरि विक्रम माथै मेलियो जद अन्न - धिष्ठानको लक्ष्मी वर दियो तेण वरेण माळवै दुर्भिक्षाभाव ।
- २४४१ सू गळीमे पडियो धानकण गजसू उतरियो विक्रम माथै धरियो. धान देवतारो वर हुवो माळवामे दुकाळ पडै नही ।
- २४४२ विक्रमादित्यनू राजा साळवाहण मारियो कठैईक लिखै - समुद्रपाळ जोगी, जिण मारियो केई कहै विक्रमार्कनू साळवाहण मारियो, कोई कहै समुद्रपाळ जोगी मारियो ।

[धार्मिक वातां]

वैदिक धर्म

- २४४३ गगाजीरै वाहण कूर्म, जमनाजीरै वाहण मच्छ ।
- २४४४ नैमखार मिश्रमें सर्व तीरथ आया, पुसकर प्रयाग न आया. अेक गुर, अेक राजा, तीरथारो जिणसू ।
- २४४५ अरबुदवासी भील मरि नळ हुयो, भीलणी मरि दमयती हुई, सन्यासी मरि हस हुवो ।

- २४४६ राजा सागर पुत्रासू घापो नही ।
२४४७. रामचद्र दस हजार वरस राज कियो ।
२४४८. पुराण लिखै है - आनै ग्यानवापीरो जळ आगला जुगांमे कासीमे लोक पीवता आमैं ग्यानलिंग प्रगटी लोक त्रिभग हो जातो ।
- २४४९ पुराणमें कळपातर मानै. पूरव मीमांसामे होणहार मानै. वेदातमे ईश्वरेच्छा मानै ।
२४५०. वेदातमे वावन मत है ज्यामें अद्वैतवाद प्रवळ है ।
२४५१. अद्वैतवादी चक्रवर्ती कहावै ।
- २४५२ सोयगकार यथा सोय देवदत्त ।
२४५३. नैयायिक भनित मानै सव्दनू ।
२४५४. सेय दीपज्वाळा स्मद स्यात् दीसै न तु वास्तव ।
- २४५५ मीमांसक वैयाकरण सव्दनू नित्य मानै ।
२४५६. न्यायरा प्राचीन पंडितोरा मतमे नै आधुनिक पंडितारा मतमे फरक है ।
२४५७. दक्षिणात्याका न्याय, मैथिलूका न्याय, वंगालियूका न्यायमे कही-कही फरक है ।
- २४५८ वनमे आठ वरसरो खोडो ब्रामणरो डावडो आयो उण समैं सिविकारूढ समाज समेत कुमारळ भट्ट उण वनमे आय निसरिया, इण डावडासू पूछियो गाव अठासू नेडो है कै दूर है ? जद ओ बोलियो - हू वालक छू, खोडो छू, बकरिया वित्त है, दिन किंचित आय रह्यो है, गाव अति नेडो है जिणसू अजे वनमें खडो छू अकलसू लोक ईश्वरनै जाणै है, मोनू वनमें खडो देख गाव अति नेडो जाण लेणो. इण डावडानू कने राख पढाय भट्ट प्रभाकर नाम दियो इणरो कुमारळ भट्ट ।
- २४५९ कवीर सवत पनरासैमे हुवो, दादू पहला सौ वरसा पातसाह सिकदरनू परचो दियो ।

जैन-धर्म

२४६०. जिनागममे कहै है - सैत्रुजा ऊपर दस कोड मुनिराज काती सुद १५ सीधा ।
२४६१. सारी तीरथामें आमाक श्रेष्ठ तीरथ है ।
२४६२. जिन प्रतिमा जिन सरावी, कही जिनागम मांहि ।
ये जाकै दूखन लगै, वदनीय सो नाहि ॥

२४६३. धुलेव रिखभदेव केसरियानाथ कहावै सोळ जणा फरासी पंखारा चाकर है ।
 २४६४. दोय जणा दोय पंखा फरासी सासता धुलेव रिखभदेवजीरै चलायवो करै ।
 २४६५. बीइंद्रिया त्रीइंद्रिया प्राणी कहावै ।
 २४६६ पचेंद्रिया जीव कहावै ।
 २४६७. नख भूत कहावै. अन्य सत्त्व कहावै ।
 २४६८. अेक घडीरी साठ पळ, पळरा साठ उपपळ जिन मते ।
 २४६९ अेक वरसरा तीन सै चौपन दिन मानै जिनमते ।
 २४७० जिनमते पाच वरसरो जुग मानै ।
 २४७१ भरत चक्रवर्ती आपरी हाथरी मूदरीरा माणकमें आदीस्वररी प्रतिमा खुदायी.
 नाम उणरो माणिक्य स्वामी दक्षिण देसमे कुलापाक नगरी जठै अज्यू
 विराजै सुवर्णद्वय पुरुष प्रसादात् विज्ञक जगत अनृण कियो ।
 २४७२ सैणक मरता पुत्र माथै कोप कियो जिणसू पहली नरक गयो चौरासी हजार
 वरस नरक में रहसी ।
 २४७३ घर आगण आयो उठै ।
 श्री सैणक महाराज ॥
 २४७४ राजा सप्रति माळवेस्वर हुवो ।
 २४७५ सौलै हजार मुगटबध राजा सेवा करता सप्रतिरी ।
 २४७६. सवा क्रोड जिनविव कराया राजा सप्रति ।

[भौगोलिक वातां]

राजस्थान

- २४७७ जोधपुर ईदगाह दिखण तरफ है, उत्तरनू पहाड है जिणसू ।
 २४७८ मडोवरमे भैरू विराजै है ।
 २४७९ परमार भवसेन राजारी बेटी सेजळदेवी हुती सोजतमें सेजळरै नामै सोजत
 सहर वसियो हो ।
 २४८० लाडणू डाहळिया रजपूत वसायो डाहळिया पछै जोहिया मालक हुवा.
 जोइया कनासू मोहिला, मोहिला कनासू रावजी मालदेवजी लाडणू ठिकाणो
 लियो ।
 २४८१ वडला जातरा जाटा ओ गाव वसायो जिणसू वडलू नाम प्रगट हुवो ।
 २४८२ वडलू पहाडीरी गुफामे भूतेस्वर विराजै है, नदवाणा ब्रामण सेवा करै है ।
 २४८३. मेडतै चतुर्भुजजीरा मदिर कनै मदिररा कोट माहे सोनगरो सूरजमलजी
 पूजीजै है चतुर्भुजजीरै भोग लागोडो थाळ सूरजमलजीरै भोग लागै, पछै
 ओ थाळ ठाकुरजीरा रसोवडा दाखल हुवै ।

- २४८४ गुडामे सोनार ठगारा सगसू ठग-विद्या करै है ।
- २४८५ गुडारो ठग महमदियो करणाटक माहेसू साडी तीन मण सोनो लायो हुतो सोजतरा डेरा वडा महाराजरै पगा लागो अस्सी मोहरा नजर किवी गुडा छोड वातै वसियो आठवारा सिरदार सिवसिंघजीनू मनवार किवी हुती ।
- २४८६ थेटू ठगारा घर वगडीमे हुता जैतावत सूरजमल वगड़ीसू गुडा वमियो जद ठगारा घर साथै ले गयो ।
- २४८७ वगडीसू ठग देवगढ जाय वसिया घर डग्यारै सिरयारी जाय वसिया ।
- २४८८ गाव धारवी कोटडारो है ।
- २४८९ आगै ठठारो मारग कोटडा होय निसरतो लाव्वारो माल वहतो. दाण कोटडारा घणीरै घणो आवतो ।
- २४९० आगै वापडाऊ नामै गाव हुतो उण जायगा नवो वाहडमेर वसियो दोय कुवा तीस पुरस घणो पाणी, मीठो पूठनू भाखर छै भाखर निरुखो छै जूनो वाहडभेर जठै पहाड है गढ छै भाखररै आधोफरै भाखररी गिरद वाई कोस पररै छै भाखरमे गढमे कुवा, तळाव, झरणा, वावडी घणा छै भाखर निपट सझाडो छै थोहर, वोर, गूदी, गागडी, लोकस, गूगळ निपट सझाडो छै ।
- २४९१ वाहडमेरथी पचीस कोस वाळेतो, पचीस कोस नीवळो, तीस कोस ऊमरकोट, वाहडमेरथी कोस छव विसाळो, तीस पुरस, मीठो पाणी, त्रणो ।
- २४९२ कोटडो गढसू भाखरी ऊपरै कुवा गढमे छै, तीस पुरस मीठो घणो पाणी अक कुवो गावमे है ।
- २४९३ फळोधी किरडारो जोहड जठै नाना प्रकाररी सुगध आवै लोक कहै इणमे पोसता रहै है ।
- २४९४ वाळारा पाणीसू महेवा मे गेहू हुवै ज्या गेहूवारी साखमें पाणीरो हासल हाथी वाळीसै लियो वैडारो घणी ।
- २४९५ भूरीघाट ऊपर पाबूजीरो थान है अठै माडरो नै मालाणीरो काकड है ।
- २४९६ गुडा हेटै वाडमेर हेटै केईक गाव सूरचदरा, केईक सोढा दाविया ।
- २४९७ सूरचदरा गाव २७ सासण, ५०० सूरचदरा घणीरै सूरचदरा गाव पाच सौ सत्ताईस ।
- २४९८ डैराठरसू अघकोस ऊपरै ठिकाणो जोधो है उठै मधु राज करता, ओ मधुरो राजस्थान हो हमै जोधो सूनो है ।
- २४९९ वीकमपुर कनै लूडीरो हैडर कहीजै है ऊ विक्रमादित्य गाया, भैंसा, साढा, छाळियासू भिळायो आपरो पण राख लियो ।

- २५०० सिवाणै गढ सीह लको है, सरापियल जायगा है ओ किलो कडतोडो है जिणसू राजवियारै रहण योग्य नही ।
- २५०१ सिवाणारो खेडो पहला पोरवाळा वसायो. मुसळमानारा वासमे सोनाणारा पत्थररो जिनमदिर नै आथूणो भाखरी हेटै सिवाणारो सिंदूरियो पत्थर जिण रचित पारसनाथरो मदिर, जुमलै दोनू जिनमदिर सिवाणै ।
- २५०२ गाधो तेरारोप छाड परा गया पछै जाळोरीरो गाव वाघरो जठासू वाघरेचा ओसवाळ आय सिवाणै वसिया ।
- २५०३ भीनमाल नगर रतन महेसदासोतरै समै स्वप्न देनै श्री वराहजी प्रथी बाहर आया ।
- २५०४ जुजाळासू गुसाईंजी सेघाळै प्रगटिया भाखर माथै मदिर है सेखलासू खिरजा प्रगटिया मीठो नेवज चढै भैसा चढै गुसाईंजीनू गुसाईंजी घोडे असवार रहै. आ मूरत देवळमे गोगादे गुसाईंजीनू पूजै ।
- २५०५ जेसळनेरसू खाडाळ पश्चिमनू है ।
- २५०६ खाडाळसू आथमणा वरूरा मदिर है कुत्ता घणा राखै गाया, भैसा, साढियारी वार चढै जद डोर माहसू कुत्ता काढ देवै कुत्ता दौड आपडनै धाडैतारा घोडा ज्यारा अडकोस पकड लै पछै घोडा चढिया मैहर आवै वारू परै वनमे अेक जाळ है उण जाळ कनै वारूरा भाटियारै नै वारूरा मैहरारै सत वडा झगडा हुवा है, सैकडा मानस माराणा है ।
- २५०७ ऊटडिया महादेवसू बारह-बारह कोस चौतरफ हर वरस सुगाळ रहै ।
- २५०८ बीकानेरीमे कोडमदेसर तळाब है, गाव नही है ।
- २५०९ काकरोळीरा गुसाईंजी ज्यारा सेवक आनू पूजै, और गुसाईंजीरा बाळकनू न पूजै हरिरायजीरै घररा सेवक हरिरायजीरै वसरा गुसाईं ज्यानू पूजै, दूजा गुसाइयानू न पूजै गोकुळेमजीरा सेवकही इण हीज प्रकाररा है ।
- २५१० उदैपुर आथमणो पीछोळो है, उगवणै सहर वसै है पीछोळारी पाळ रडो है, माटी नही है रडा माथै राणाजीरा महल है ।
- २५११ कलाळियो पीछोळारो अेक देस ।
- २५१२ जगमदिर जगनिवास पीछोळै मे रडो जिण ऊपर राणै जगतसिंघजी कराया ।
- २५१३ राणोजी जगमदरा जावै सारी असवारीरो लोक चटकमा मोरचाँ पीछोळामे हगै पीछोळारो पाणी सहर पीवै ।
- २५१४ उदैपुर माछळारै आकार छोटो डगर है - उत्तरनू पूछ दिखणनू मूडो ऊ माछळो मगरो कहावै ।
- २५१५ वघेरै वराहजीरो मदिर वेगमरै धणी रावत वडै मेघ करायो ।

- २५१६ भीलवाडो मेवाडरो जठारा भील माथारा केस खुलियां झगडो करै, पीठ लारै ऊभी भीलड़िया बोलै - धीरो पाखरिया ।
- २५१७ मेवाडी गाव दूधुवो जठै वालो वघेरामे रावत मेरो ।
- २५१८ तोडासू च्यार कोस पहाड ऊपर वनासरा दरहछवाळ नाडी ऊपर सिसोदिया रायसिंघ भीम अमरसिंघोतरै महल कराया, गाव वसियो जिणरो नाव राजमहल ।
- २५१९ ईंदावाटीमे घूतावर गाव चीमड विराजै खाडो देवळ वडो देवळ है ।
- २५२० ईंदावाटीमे गाव दूगर माता दुगाय भाखरमे विराजै है हाल तक ।
- २५२१ जागळी नामे भील राठोड राजानू बेटी परणाय आवू दियो राठोड कनासू आवू गोहिला लियो दोय सै वरस गोहिलारै रही गोहिला कनासू परमारा लियो परमारा कनासू प्रीतू देवडै लियो ।
- २५२२ अवायजी अक सिरोहियो दरवाजो है ।
- २५२३ अवावजीरी सेवा करै उदवर जातरा वामण ।
- २५२४ दातारा घणीरी दुकान अवायजीरा पगा है घृतादिक वस्तु यात्री उण दुकानसू खरीदै ।

मालवा

२५२५. मालवै सहर रुणीजो जठै देवडा मोकळोतरो राज है, भोजकराव वाजै आ माडवारा पातसाहरा चाकर हुता ।

गुजरात

- २५२६ गुजरात मे वडा-वडा तळाव है ।
- २५२७ हडियारो घाट १, मडोळोररो घाट २ सतवासरो घाट ३, मरदानारो घाट ४, घोडा घाट ५, इत्यादिक त्याहीरा घाट है ?
- २५२८ आवारो पेड, महुवारो पेड, रायणरो पेड, आमलीरो पेड, गुजरातमे करसणी थीत गिणै ।
- २५२९ गुजरातमे गरवो गावै - वेगळो रहे वरणागिया रे, वरणागियो रसियो ।
- २५३० महतारी गरवारी तुक अक वार कहै, दूजी त्रिया दोय वार कहै ।
- २५३१ गुजरातमे रोवणनू रडनो कहै ।
- २५३२ गुजराती काकानै काचा कहै ।
- २५३३ गुजराती आपरी त्रियारो जार होण आवै विणनू कहै - च्यार रुपिया आलसै तो अमानी बेर दोय सेर सोनो पहर तुमारे पास आवसै, रुपियामे दोय सेर सोनो घसावसै नही ?

- २५३४ कुणवी गुजरातमे हाड माडै, मनोती करै, करसण करै, सालवी पणो करै, छेसाई पणो करै ।
२५३५. गुजरातमें पालीसूको बदर कहावै ।
- २५३६ डंड, मुड अर डाम — द्वारकानाथरी यात्रारो वर्णन ।
- २५३७ कोरी न नाल मुल द्वारका ।
- २५३८ वेचराजीरा चरणा कूकडा है ज्यानू मिन्नी न मारै ।
- २५३९ पावानी पटराणी भवानी काळिकारै लोग गरवा रियै ।
- २५४० डभोईरो भलो तळाव है तेलरो भलो तळाव है वडनगर, वीसळनगर वडा तळाव है ।
- २५४१ डभोई सहरी पच महालामे है ।
- २५४२ नादोल राउपीपळा अेक घर है ।
- २५४३ राधणपुररो परगणो वढियार कहियै आवूरो पाणी वढियारमें लावै इण पाणीसू गेहू चणा सेवज हुवै अर वढियारमे आवूरा पाणीरो हासल लियो राव अखैराज भालो पाण ।
- २५४४ आलीराजपूर १, उदैपुर २, वारियो ३ — अँ ठिकाणा चहुवाणारा गुजरातमे ।
- २५४५ आली मोहण राठोडारा ठिकाणा आ ठिकाणासू नजदीक है ।
- २५४६ सवत १७१६ भावनगर वसियो ।
- २५४७ गुजरातजी नटवरजी वाळा ब्रजरायजीरा पुत्र ब्रजभूखणजीरै खोळै ब्रजभूखणजी गुजरातमे काकोजी कहावै ।
- २५४८ नीमाणियासू ब्रजभूखणजी, ब्रजरायजी, रुघनाथजी पालणपुर सेरखा दीवान भूतडी गावमे खोसिया ।
- २५४९ गोरखमढी प्यारनाथजीरा घरमे बासणी गिरनारी है ।
- २५५० पाटणमे वैजनाथ बाबू वडो धनवान है, वल्लभकुलरो सेवक है ।
- २५५१ रेलत कूचरो नाम लुणावडा कनै वीरपुर वसती है जठै हाजी मोहमद दरियाईरी वडी दरगा है हजारो ज्यास्तनू आवै है ।
- २५५२ नवसारी १, घणदेवी २ — अँ परगना कोकण सूरत विचै-ज्यामे लारला दिना गायकवाडरो अमल हुतो ।
- २५५३ मही वडी नदियामे गिणीजै है ।
२५५४. अँमदावाद बाभियारो वधायोडो काकरियो तळाव वडो सरोवर है ।
- २५५५ अँमदावाद चवदै दरवाजा है इत्ता ही दरवाजा सूरत है ।

- २५५६ सावपुररो, खेडारो, अमदावादरो विली-दरवाजो, वडो दरियो दरवाजो, समतोडियो दरवाजो, कळूपुररो दरवाजो - इत्यादीक चवढे दरवाजा अमदावादरा है ।
- २५५७ अमदावादरा आठ दरवाजा सावरमती नदी वहै है अमदावाद जुमे-महजीनरो वडो कमठो है ।
- २५५८ समोई दरवाजो, वरियारो दरवाजो इत्यादीक चवढे दरवाजा मूरतरा है ।
- २५५९ वरिया परिया दोय वडा सहर है मूरत कने ।
- २५६० हमै माडवै रजपूतारो राज है ।
- २५६१ ईडररी हदमें सावळियै भील सावळियो सहर वसायो ।

दक्षिण

- २५६२ गुजरातमू दिवण ऊची है ।
- २५६३ पडरपुरमे प्रथम परचाधारी नामदे छीपो हुवो ।
- २५६४ कोकणम खानदेसमें वगलाणानू वांगलाण कहै ।
- २५६५ देव पूजामे ही विरामण तमाखू वाटियोड़ी सरव दिखणरा विगमण तमाखू सूघै ।
- २५६६ मूळा १, मोठा २-अ दोय नदी पूना हेटे वहै है ।
- २५६७ दिखणमे भीम नदी भीम सकरी कहावै ।
- २५६८ कृष्ण वेणी कृष्णा कहावै ।
२५६९. दक्षिणमें वेदारण तीरथ है ।
२५७०. इकावरेस्वर पृथ्वीरा लिंग १, जवुकेस्वर जळ-लिंग २, त्रिण मळय वहे-लिंग ३, काळाम्बि वायु-लिंग ४, चिदवरेस्वर आकासलिंग ५, चिदवरेस्वर द्वितीय नाम सभापती ।
२५७१. कावेरीरै तट पाच वडा सिवरा थान है-पचनद १, कुभको २, मय्यार्जुन ३, मायुर ४ स्वेताणय ५ ।
२५७२. वाळार्क १, सिघार्क २, तरुणा ३, वाघार्क ४, सिघार्क पिगळस्वामी कहै ।
२५७३. अक सिघलदीपमें कुवो है उणमें नर-नारी जाकै जद माहेसू काकरा चालिया आवै जाणजे कोई मनुस्य माहेसू काकरा चलावै है ।
२५७४. हैदरावादमें गुजरातियारो पुरो कारवान कहावै. कैई गुजराती वणिक जैनी, कैई वैसनव है. केसोमदनू क्रोड़ीमल वगेरे ठावा आदमी हुता ।
२५७५. मसीरुलमुलक उमरतुल उमराव असतु जहा प्रमुख छार्डस मसीरुलमुलकनू हैदरावादरै नवाव दिया ।

२५७६. मोहार बंधार बराडरा सूबा माहे छै, लारला वरसा बंधाररो धणी गोड भीमेस्वरजी ज्यारी बेटी वेगमरा धणीरो छोटो भाई सकतसिंघजी परणियो हो ।
- २५७७ नर्मदारो अेक देस धारा-क्षेत्र है जठै वाणनाथ सिव नीसरै है, रेवाककर ।
- २५७८ नर्मदा माहेसू नीसरी कावेरी जिका कुवा कहावै पुराणमे ।
- २५७९ हुसगावाद हडिया गाम सत वास प्रमुखाकै थाटू लसकर उतरते है ।

सिंध

- २५८० सिंधमे माथैलो मैहरारो वतन है ।
- २५८१ मीर वाह, नसीर वाह, कतूर वाह, बहराम वाह, इत्यादीक वाह सिंधमे है ।
- २५८२ मुराद गजै वाह चलायो सो मुराद वाह कहायो सिंधमे ।
- २५८३ मुराद गजो वेवै भव जद फकीरणीनू इण कह्यो—हमकू दवा कीजै इण कह्यो घोडा सियाररो मालक हुसी फेर कह्यो—दवा करो इण कह्यो फीरोज जग हुसी इण कह्यो—फेर दवा करो जद फकीरणी कह्यो—फासीसू थारी मोत हुसी ।
- २५८४ खैरपुर मीर सोराब वसायो ।
- २५८५ खुदावादनू महमद वसायो ।

पंजाब

- २५८६ बहावलपुरसू आबी मुलक सरू हुवा कसमीर ताई सीसमरा वृक्ष उठै बहोत घणा छाया है ।
- २५८७ वगपुर १, हसपुर २, सामपुर ३, मुलतानपुर ४—अे च्यार नाम च्यार जुगरा है मुलतानरा ।
- २५८८ मुलतानरा किलारै च्यार दरवाजा है—रेडी १, सीरवी दूजो २, खिदरी तीजो ३, दे चौथो ४ ।
- २५८९ केसोपुरी मुलतानी जैमल बट आबादानी ।
- २५९० केसोपुरी मुलतानी जीवता मुलतानमे समाध लिवी रामतीरथ है जठै ।
- २५९१ पीर बहाबुलहकरो रोजो मुलतानरा किलामे पीर साह कुल आलमरो ही रोजो मुलतानरा किलामे है ।
- २५९२ मुलतानरा किला माहसू रणजीतसिंघरै हाथ धन घणो आयो ।

दिली

२५९३. दिलीमे राजा आरपुरो, लालपुरो, जसवतपुरो, जैसिंघपुरो, बीठलपुरो इत्यादीक ।

- २५६४ दिली सहर मैना बाहर पठाणारी करायोडी ईदगा है, साहजीरी करायोडी ईदगा है, महम्मदसाहरी करायोडी ईदगा है, दिलीसू दिखण तरफ. जुमलै तीन ईदगा हदीसमे कहै है ईदगा सहर उत्तर तरफ करावणी दिली ईदगा दिखण दिस है उत्तर दिस जमना आयी जिण कारणसू ।
- २५६५ लाट समसुद्दीन मुतसल दरगाह कुतुबसाह मुतसल, समीप ।
- २५६६ सुई प्रमुख सजातीय वारह वसतां मिलियोडी दरजन कहावै दिलीमे ।
- २५६७ दिलीनू आगरैरा रणवासमे जोगमायारो थान हुतो पका कुडमे सिर्वालिंग जिसी सभ उठाऊ जोगमायारो सम्प है ।

पूरव

२५६८. फतैपुर पातसाह अकबर वसायो ।
- २५६९ मय दाणवरो वसायोडो मकान, मेरट ।
- २६०० गणमुक्तेस्वरनू गढमुक्तेस्वर लोक कहै ।
२६०१. काळपीरा बावन पुरा है ।
- २६०२ ब्रदावन हेटै जमना सोभा घणी दे, गगा कासी हेटै सोभा घणी दे ।
- २६०३ तिल भडेस्वरी १ सूल टकेस्वर २, प्रयाग राजेस्वर ३, औ तीन सिव प्रयाग बट कनै है ।
- २६०४ सध्यावट हेटै हणूमान पौढै है, बडी मूरत है ।
- २६०५ वेणीमाधव प्रमुख चवदै माधव है प्रयागे ।
२६०६. सरस्वतीकूपरो जळ लाल है प्रयागे ।
- २६०७ लोपा मुद्रा दोय देवी प्रयागे ।
- २६०८ मणिकर्णिकेस्वर सिव मणिकर्णिका विसै ।
- २६०९ कर्दमेस्वर सिवकाम्या ।
- २६१० दुर्गेस्वर सिवकाम्या ।
- २६११ केदारेस्वर काम्या ।
२६१२. कुमार राज विनायक कासी समीपे कपिल समीप ।
- २६१३ कासीमे उदैपुररा राणारी करायोडी जायगा खालसैपुरो बाजै है ।
- २६१४ बूदी रावजीरा करायोडा महल कासीमे राजमदिर कहावै हाडारो बगीचो कासीमे है ।
- २६१५ कासीमे कछवाहै मान महल करायो, उवै मानमदिर कहावै ।
- २६१६ सेहरमाह जवन पूरवमे जवनेद्र हुवो जिणरा आतकसू कासी सूनी हुई । विरामण विस्वेस्वररो लिंग जमी ऊडी खिण भडार दियो पाछै किताईक वरमा दिग्वणसू विरामणां देसन्थ रामेस्वर भट्ट बेटा नारायणभट्ट सहित

स-कुटुम्ब कासी आय वसियो जवनरी कन्यान् जवख लागो हुतो सो नारायण भट्ट काढ दियो जवनेद्रन् रिझाय इण कासी वसावणरो आरभ कियो कासी-वासी जमीदार कासी तेडिया कह्यो-सारा अठै आय वसो, जवनेद्र आपोरी रछिपाल करसी पछै कासीमे वस्ती होण लागी डूब परपरासू कासीमे वसै है उवै कासी डजाड हुवाही कासीमे रह्या उवारा कहणासू विस्वनाथरो लिंग बाहर थापवा जमी देखी सिर्वलिंग नही पायो जद कासी-वासी तीन दिन अनसन ले बैठा सिव सप्रेम आज्ञा किवी-ऊ लिंग कैलास गया और रैवास कर आणि उठै स्थापित करो यू-ही-ज कियो ।

२६१७ वैद्यनाथ सिव वैजनाथ कहावै ।

२६१८ भूलनारो उत्तमव ठाकुररो बगाली विसेस करै हजार रुपिया खरच करै ।

२६१९. जलापानात् अंक वा दोनू चरण ब्रसव-गळ-स्थूळ हुवै बगालियारै ।

विलायत

२६२० कधार खुरासाणरी हदमे है, काबुल हिंदरी हदमे है ।

२६२१ विलायतमे खातून जन्नतरो नाम आख मीचनै लेवै ।

२६२२ कमरकोहसू नील नदी चालै मगरवमे होय, जगवारमे होय, मिसरमे होय, रूमरा समुद्रमें मिलै ।

२६२३ अमरीके वरसन नवी दुनियारो नाम है ।

२६२४ नवी दुनियामे उत्तरनू अगरेज है, दिखणनू इसपेन है ।

विविध स्थानांरी प्रसिद्ध वस्तुवां

२६२५ खुटिया लखनऊको, गटा कनोजको, पेडा मथुराको ओळा सिकदराका अदभुत हुवै है ।

२६२६ अम्रक कपूर लोबान कृष्णागुरु प्रमुख यवनारै देसासू हिन्दमे आवै ।

२६२७ कासी पीतळ प्रमुख धातु मारवाडसू सिधमे जावै ।

२६२८ वीकानेररा जोहडरी घोडिया हमेसा जगळमे चरै हिरणिया ज्यू ।

२६२९ जैसळमेर भूरो पत्थर सावटू कहावै नै भूरै पत्थरमे घोळासा चाढा हुवै सो वीछियो कहावै खरळ वीछियारी आछी हुवै ।

२६३० जैसळनेर वाडीरो वाग जठै मिसरी नामै आंबो है घणा मीठा मोटा आवा लागै केतकी इण वागमे है ।

२६३१ वीकमपुररी हदमे सुगनी आछा है उठै गायारो राव जिसो दूध है ।

२६३२. कछ्मे चितराणा अगियारा ऊट आछा हुवै है ।
 २६३३ सिंघरी तमाखू नव सेर विकै १) री, जठै माळवण सेर विकै ।
 २६३४ आवा मुळतान आछा हुवै ।
 २६३५ गुजरातमे चद्रकळा साडी उमदा हुवै धनवतारी त्रिया ओढै ।
 २६३६ पावागढरो पाखाण गुजरातमे है इण पत्थर सिवाय और खाणरो पत्थर नही ।
 २६३७ सूघणी तमाखू पूनै अति चोखी हुवै है पाच रुपिया सेर विकै ।
 २६३८ काफरी बटूका दुरपलारी दिखणमे बोह मोली ठावा बहादुरा कनै पावै ।
 २६३९ पाच सेर घास पाच सेर दाणो उजवकारो घोडो आठ पहरमे खावै अकमे सौ कोस जावै ।
 २६४० मरकव यवन देसा वाहण हुवै सो नित सौ कोस जावै घोडासू ही मजबून हुवै है रुमयोडो कान, आवाज गधारै सरीसी ।

प्रसिद्ध गीत

- २६४१ ब्रह्म-मूहूर्त्त समै लाखो फूलाणी गवीजै दोय घडी दिन चढिया घनासरीमे बाघो कोटडियो, तीसरै पोर सामैरीमे रिडमल, रातरो सोढो महदरो गीत गवीजै ।
 २६४२ दोय घडी रात लारली रहै सो ब्रह्म-मुहूर्त्त. इण वेळा विभास वेळावळमे लाखों फूलाणी गवीजै - प्रह लाखो सु विहाण ।
 २६४३ दोय घडी दिन चढिया घनासरीमे कोटडियो गवीजै ।
 २६४४ सामहरीमे दुपहरी पछै रिडमल गवीजै ।
 २६४५ जेही मावत जनमियो, लाखणसी सोनल्ल । गागणियाणी जेहीरै मावत बेटो हुवो लाखो फूलाणी सोनल अपछुरारी कूख जनमियौ ।
 २६४६ पच्छमरा गावा वीद चवरीसू परणीज उतरै जद, चारणारै रीत है, लाखो फूलाणी गवीजै, रुपियो गायक पावै ऊ लाखाणीरो रुपियो कहावै ।

प्रसिद्ध व्यक्ति और वस्तु

- २६४७ जाम तमाईची नूरी गवीजै, हीर-राज्ञो गवीजै, पनो ससुई गवीजै, मिहर-सोहणी गवीजै, मूमल महदरो गवीजै, मारवी ऊमर गवीजै सिधमे ।
 २६४८ नूरी मीर बहररी बेटा, जाम तमाईची घरमें घाली हीर-राज्ञारा गीत जोग कहावै तमाईची नूरीरा गीत कामेमन कहावै ।

- २६४६ विरामणरै बेटी हुई जोतिसिया कह्यो इणरो पत मळेछ हुसी जद सिंदूकमे घाल दरियामे वहाय दिवी आगे धोबी वडो धनवान हो उण पाळ मोटी किवी नाव ससुई दियो केचमे बलोचामे जातहोत वसमे पनो होत हुवो, जिण केचसू आण ससुई परणी ।
- २६५० भेंसारो चरावा वाळो मिहर कहावै सिधमे मिहरसू सनेह हुवो सोहणीरै ।
घडो भागो तो घोलियो, भग्गो जान घडीह ।
उणो मझा अमी चवै, कर दरियाव दडीह ॥
- २६५१ जैसळमेर परै मूमलरी मेडी है — काकनै ऊपर मूमल, सूमल, सहजा अैं तीन वहना है ।

प्रसिद्ध गढ़

- २६५२ आमेर १, गवाळेर २, चितोड ३, चापानेर ४, भाभेर ५, माडव ६, सालैहर ७, माल्हेर — अैं वडा गढ़ है ।
- २६५३ चहुवाणा सातल सोमरै घर जनम हुवो गढ़ सिवाणैरो ।
- २६५४ जाळोर सोनगरा कान्हडदे घर जनम हुवो ।
- २६५५ रणथभोर चहुवाण हठीला हमीररै घर जनम लियो ।
- २६५६ चितोड राणा अडसीरै घर जनम हुवो ।
- २६५७ सिहोर गोहिलारै घर जनम हुवो ।
- २६५८ जेसळमेर दूदा तिलोकरै घर जनम हुवो ।
- २६५९ गागुरण खीची अचलदासरै घर जनम हुवो ।
- २६६० अकबर चितोड लियो जद राणारै घर जनम हुवो ।
- २६६१ सिवाणो कला रायमलोतरै घर जनम हुवो ।

प्रसिद्ध हाथी-घोड़ा

- २६६२ श्रीकलस हाथी सिधराव जैसिघरै, दळवादळ आसफुदोलारै, श्रीप्रसाद नैपालरा राजारै, जसतिलक उदयपुर, फतै मुमारख जोधपुर — अैं हाथी वडा कारणीक हुवा ।
- २६६३ पाबूरै घोडी काळवी, बहलिमारै पीवळी, दूदा जसहडोतरै रीमी, सागणरै वैरवोर, भोजरै बोळी, वीरमरै समाध, वैरसी रायपाळोतरै ताजण, वालणरावरै हिरणी—इत्यादिक अग्यारै घोडी जग-जाहर हुयी ।

प्रसिद्ध राजा, वादसा, मंत्री आदि

- २६६४ हैदराबाद मसीरुलमुलक १, नागपुर देवजी बापू २, पूनै सखाराम बापू ३ — अैं तीनू वडे मंत्री भये है ।

- २६६५ सितारो १, मलैवार २, हैदरावाद ३, श्रीरंगपट्टण ४ - अँ च्यार राज श्रीसै छक हुता लारला वरसा ।
- २६६६ श्री रंगमे टीपू, सितारै भोसळो राजा, मलैवार रामराजा, हैदरावादमे वतगान हजरत मुडा पातसाह नवाव ।
- २६६७ आसामरो मालक १ नैपाळ पती २ रणजीतसिंघ लाहोर - पती ३ - अँ हिंद अहद अकलीममे वडे जोर है ।
- २६६८ इण जमानामें चीणरा पातसाहरो नै असतवोलरा पातसाहरो वडो जोर है लसकर खजानो जर रुपियारो पातसाह असतवोलरो मालक ।

मुमलमान

- २६६९ साह अब्बास ईरानरो पातसाह १, अबदुल्ला उजबक तूरानरो पातसाह २, अकवर हिंदरो पातसाह - तीनू अँक वक्तमें हुवा ।
- २६७० ख्वाजा हाफिज, अत्तार फरीदुद्दीन, मौलाना रूमी वगैरै अँक सदीमे हुवा ।
- २६७१ सतरजरी रामत, केसारो कळप, पचाख्यान ग्रन्थ - अँ नौसेरवारै वक्त तीन चीजा हिंदसू ईरानमें गयी ।

प्रसिद्ध कवि और लेखक

- २६७२ काळीदास नामै पंडित तीन हुवा है अँक काळीदास विक्रम आगै, दूजो भोज आगै, तीजो काळीदास वळे हुवो है ।
- २६७३ कविरमरु कविरमरु ।
२६७४. उत्तरराम चरित्र नाटक राजा भोज व भवभूती दूना मिले कियो ।
- २६७५ पुरसोतमदेव पुरसोतमपुरीरो राजा जिण नवा सिलोक वणायनै गीतगोविंदरी अस्तपदियारै अत धरिया, च्यार सौ सिलोक भागवतरा अध्यायरै आदि अत धरिया ।
- २६७६ अब्दुरहमान जामी मसनवी ऊपर टीका किवी ।
- २६७७ खडियै तेजमी भोपतोत मुजाण-रासो वणायो है जिणमे सुजाणसिंघजीरा परवाडा है ।

इतिहास

- २६७८ तवारीख साहबुद्दीनी, तवारीख नासिरुद्दीनी, तवारीख अलाउद्दीनी, तवारीख फीरोजसाही, तवारीख अफगानी ।
- २६७९ तैमूरनामो, जफरनामो, तैमूररी तवारीख है ।
- २६८० तवारीख अकबरसाही, अकबर-नामो, तवकात-अकवरी, इकवालनामो जहागीर, जहागीर नामो, जहागीर आप वणायो, तवारीख साहजहानी, तवारीख

आलमगीरी, तवारीख कासमीरी, तवारीख बहादुरसाही, जिणमे गुर्जरेस, मालवेस, सिंधुपति, मुलतानपति, दिखणरा पातसाह ज्यारो हाल है ।

२६८१. इतिहास पुराणाभ्यां वेदार्थ-निर्णयो भवति ।

विविध

२६८२. सौ सुरंगामे अेक सपूत नै सौ कुमेतामे अेक कपूत ।

२६८३. सुरग रग पायदार है ।

२६८४. सुख १, सफेद २, रग दोनू ही होय सो करडो रंग कहावै ।

२६८५. स्याह चमर, स्वेत चमर, स्याह - स्वेत चमर हुवै है ।

२६८६. सुरह गायरी ग्रीवा इण गायसू लावी हुवै. वैलै ही लावी छै सुरह गाय इण गायसू १३ लाख चमर प्रमुख देसासू हिंदमें आवै है ।

२६८७ घनेरियो पछी कबूतर जिसो हुवै लाल पग हुवै, पाखा लावी हुवै, दिनरो दिखायी न देवै, रातरो वोलै, सवदवेधी बटूक चीडननू मारै, उणरी पाखवा, उणरो मास वा रुधिररो चीथरो पाणीमे उकाळ त्रियानू पाया सूवा-रोग हरै ।

२६८८ विहारी, गूदडियो, कागदी तीन जातरा नीवू ।

२६८९. हीगमे, किसतूरीमें मेळ हुवै इसो और चीजमे न हुवै ।

२६९० राळनू रायाळ कहै यवन रायाळनू गाळै जद सोमलरी वास आवै धुवामे रायाळ घाले वडो जतन आखियारो राखनै सोनार ।

फुटकर वातां

२६९१. ईसवर निरकुस है, चाहै स करै ।

२६९२ खुदा इरादो करै अेक चीजको, पैदा करै असवाब उसको ।

२६९३ खुदा तालारी पातसाही वे जवाल है ।

२६९४ अैतजादुल मुलक ।

२६९५ ईस्वरमे सतसाधन फोडा मिल जावणो ओ काम आछो नही ।

२६९६ पच वकारसू पडित पूज्य होय - सुवपु करि, वित्त करि, वाणी करि, विद्या करि, विनय करि ।

२६९७ जाहल इलम विन सोभै नही, पातसाह अदल विन सोभै नही ।

२६९८ असील विद थकोही लोगारी अदब वजावै, कमीना आडै दिनही अदब वजावै नही ।

२६९९ पातसाह कह्यो आलैकम सलाम आघै साह ।

उण कह्यो - आलैकम, पातसाह !

वजीर कह्यो - आधै फकीर !

इण कह्यो - कहो, वजीर !

काजी कह्यो - अधे राजी !

उण कह्यो - काजी !

२७०० श्राढो पाणी पीनै खुदारी सुकरगुजारी न करै जिणनू परलोकमे खुदा मजा दै ।

२७०१ पोसाक, धन, पुत्र, त्रिया दुनिया नही है, खुदानू न जाणनो आ दुनिया है ।

२७०२ बलकी घोडै न चढणो, वासतो न पहरणो, मैदारी रोटी न खाणी, जवन कहै तीन चीजा अै अगीकार किया बढो मौत बीसर जावै ।

२७०३ सूरज यू न कहै मै सूरज नू जगत उणनू सूरज कहिनै वादै है ।

२७०४. आपमे दूसण हुवै सो दूसण औरमे काढिया बढो निरदूसण हुवै नही ।

२७०५ तू बडाई न पावै जित्तै बडांरी ठोड वैस मत ।

२७०६. उठ मत जो उठनै चालै तो सनै सनै चाल । अेक पग हेटै हजार जीव जावै है ।

२७०७ वाकरो कहै मै काटा खाधा जिणरो गळो करीजै है, सदा खीर खाड खावै ज्यारो काई हाल होसी ?

२७०८ न दखल होहिगा विच बहिस्त बहिस्त कै दयूस ।

२७०९ जहान तव कामो फलक यार बाद जहां आफरीन त निगाह दार बाद ।

२७१०. हकीम सिकदरनू कहै गुप्तदान दै, असमानसू आवै जिका आफत गुप्त-दानरा पुण्य प्रभावात मिटै ।

२७११. गुप्तदानसू खुदा प्रसन होय ।

२७१२ स्व बस रकपण ही भलो, नहिं पर बस रगरोळ ।

चर पोतानी पातळी, नही परायो घोळ ॥

२७१३. सोगात पत्र भेलणो, जाय मिलणो, तारीफ करणी, मदत करणी प्रगट मैत्री ।

२७१४ दिलसू भलो चाहिवो, दिलरी प्रीत - गुप्त मैत्री ।

२७१५. आपरो नही जिणनू आपरो मित्र जाणनो आ नादानगी है. कुळक्षयकार कुळागार कहावै ।

२७१६ बहादुरी, सखावत, आदली - अै तीन गुण अवस्य पातसाहमे चाहिजै ।

- २७१७ नेक सिरदार ज्यानू लाजम है आप जिसा आदमी कनै राखै ।
२७१८. राजा पातसाह कनै खुसामद गोय अवस्य रहै, आ कनासू खुसामदगोय दूर होणरो उपाय ही नही - अबुलफजल कहै ।
- २७१९ मालिकनू लाजिम है चाकर चाकरीसे वेपरवाह होय जाय इत्तो चाकरांनू न देणो ।
- २७२० कुलीन, क्तिग्य, साधु, कार्यार्थीसू सामोपाय करणो ।
- २७२१ नृपरो अत्य हुवै, बाधव हुवै, अत पुरचारी सेनापति हुवै वो जिणसू दामोपाय करणो ।
- २७२२ वित्रादीव व्यसनी होय ज्यासू दामोपाय करणो ।
२७२३. भय उपजाय भेद उपाय करणो ।
- २७२४ रणमाल सो राजासू रूसै ।
राजा सो रणमाल विधूसै ॥
- २७२५ नीत - सास्त्ररो रहस्य अेक पादमे कह्यो - लाभादल्पतरो व्यय ।
- २७२६ दुनिया मकररूप है मकरसू वस होती है ।
- २७२७ तू बिना वतलाया सभामे बोलै है सो दातवसोलैसू सुखन मोतीनू फोडै है ।
- २७२८ ईखरा करसण सिवाय करसण नही, हाथरा वणज सिवाय वणज नही ।
२७२९. सुदर तो दाता नही, दाता तो नहिं सूर ।
सैद फतामें तीन गुण, सुदर, दाता सूर ॥
२७३०. अेकसौ वरस जीवै सो बाणूँ क्रोड सास लेवै ।
- २७३१ गीतायां 'पडिता समदर्शिन' न तु 'सम-वर्त्तिन' ।
- २७३२ मुरगी आण, मुरगा खाव ।
- २७३३ मीर बहर मुहाणो नै माछी माही फरोस - अै नांव कीररा सिंघमें ।
- २७३४ लसणियारो नाव अैनुलहीर है, अैनुलहूर नही ।
२७३५. सिकम पेटनूँ कहै फारसीमे ।
- २७३६ खुर्द छोटानू कहै, कला वडानू कहै ।
- २७३७ खिलवत गोसै वैसेणो ।
- २७३८ जिलवत चोडै वैसेणो ।
- २७३९ निक्कार धिक्कार अेक अरथ है ।
- २७४० देवदत्तस्य गुरो कुल देवदत्तगुरु कुलम् ।
- २७४१ पाणीपतरा मारगमें अेक सिपाह राहजनारै हाथ मारियो गयो । सो लारला वरसा बोलतो - अे सिपाह सिरोही तलवार मत राखज्यो, राखै तो दोय राख इणनू सिरोही तरवार दगो दियो जाणीजै है ।

वात, दूहा, श्लोक आदि

२७४२ गीत—

वीरा रस तणो न भावै वरणण,
 नह भावै मोनू जस - गीत ।
 गरज नही म्हारै गीतारी,
 गढवा ! काय सुणावै गीत ?

मोद मचै कर चढिया माया,
 माथा - पच नह मोद मचै ।
 रच थारा घरकांरा रूपग,
 रूपग म्हारा काय रचै ?

खोटी हुवै, किसूँ गुण खोलै,
 गाठ वांधिया राख गुण ।
 वणियो तू कायवरो वकता,
 कायव - सोता अठै कुण ?

आखर वावन करे अकठा,
 तै कागळ लिख कीना तयार ।
 लापरपणो कियो तो लडसू,
 चिडसू दियू न कोडी च्यार ।

२७४३. फूला ! थारो फूलियै, वळोवळी जस वाग ।
 तू सिध पुरख महत तै, भारथिया सिर भाग ॥

२७४४ डाढी डाढाळाह, चांपा चहराडी नही ।
 की तिल - तिल काळाह, दुजडा मुहडै देदउत ॥

२७४५. तूटै नीर तळावडा, खूटै आकां खीर ।
 भाणू वन पावै भुटो, नगियो पालर नीर ॥

२७४६. भोजन देहि, राजेंद्र ! घृतगाकसमन्वितम् ।
 माहिष च गरच्चंद्रचंद्रिकाधवलं दधि ॥

२७४७. धिक् धिक् गक्रजिता प्रबोधितवता, किं कुभकर्णेन वा ।

२७४८ पंचाशत्पचवर्षाणि सप्तमासान् दिनत्रयम् ।
 भोजराजेन भोक्तव्यं..... ॥

शेष रयोडी, अस्पष्ट और अधूरी बातें

- २७४६ सायजादो अंक डोळीसू आयो, जिणनू तीन सलाम कर कतुह सेरा विछायत माथै बैठा ।
- २७५० अंक कागद वाच आप फुरमायो — ठाकुरजी दाढी वाळारो मूडो नही दिखावै ।
- २७५१ गुजराती नटणी उमेदी जिणरी जात बडगूजर दे उमट अचळसिंघ घरमे घाली ।
- २७५२ गुजरारी नटणी उमेदीनू उमट अचळसिंघ खवास किवी जात बडगूजर-दिवी ।
- २७५३ झामर राड हुई जद सूरजमलजी हरीसिंघजी खाटूरो धणी, वातारो धणी इत्यादिक पहोर दिन चढिया काम आय गया सेख वगैर समसत ताप खाय रह गया फेर जग कीधो नही ।
- २७५४ झामर राड हुई जद सारा सिरदारारी असवारीमे देसी घोडा हुता उवा खता किवी ।
- २७५५ रणमल वीलवै हुवो खावडिया वीलवो छोड गराव वसिया ।
- २७५६ रेवासागररै सनान जाता पीपळा दसरावारो प्रबन्ध दीठो जिणसू आने भाई भावनगर दसरावारो बडो उच्छव ठैरायो चारणा-भाटारो समाधान आछी विध है ।
- २७५७ वहेडारा धणी राणावत ज्यारी वसावळी लिखते—१ राणो प्रतापसिंघ, २ चतुर भुज, ३ महासिंघ, ४ रामसिंघ, ५ अनोपसिंघ, ६ सिरदारसिंघ, ७ उदैसिंघ, ८ बीरमदे, ९ विसनसिंघ, १० दौलतसिंघ, ११ हेम राणो धणी है ।
- २७५८ सवत १५११ वैसाख वदीमे नीम दिराणी ।
- २७५९ जफर यार फीरोज जग ।
- २७६० वारू भुटो नगो ।
- २७६१ सीराजी लुझा परीरूहा ।
- २७६२ सैफ सू घोट तरवार ।
- २७६३ हदीक तुलई कालीम ।
- २७६४ रतवती गदला नेछ गुजरै गत तत्रैव मृत ।
- २७६५ भीवसिंघ कह्यो—प्रतापसिंघजीरे हथाहरी बेटीरा म हाडो व आनै कुळकी पडदायतरो रथ खडावसू ।
- २७६६ धीराजी बेटो सिवमिंघ सहर जूनागढरा नवावरो हाल देवेजी गुडळवारघो लियो गोपालजी कामेतीरी सलाडी ।

- २७६७ नवमा नद नाईसू घर वस रहियो पछै न रहियो ।
- २७६८ लिज महासतीरी कोर दरोतरा लोक थळरा सोवै पाण पर मुख कोई विख-
थर वता न करै ।
- २७६९ काळाउवा वड तळाई जठै पोळ माथै चूडोजीरो करेहे सी अजू पुलके ले नही ।
- २७७० नेमसुख खवासनु रुको राजा अजवेसादूळ दियो जिणमे अति निर्लज्ज समाचार ।
- २७७१ साडा सोडारा मूसा मालारा !
- २७७२ आपो आपी जद वोडा जाळोर भेळायो ।
- २७७३ सूजो मूजो हाथी तोगो वाजीसामे सपूत हुवो ।
- २७७४ जीवणसिघ पाहाड दिली राज कियो ।
- २७७५ गाव नजीणरी वेटी राणी रूपादे वाजा परमारा भिळै नदी गोमती राणै ।
- २७७६ वखतावरसिघ वडारो भाई रामसिंह ।
-

